



आ.व. २०७४/०७५

# वार्षिक प्रतिवेदन



नेपाल सरकार

राष्ट्रिय योजना आयोग

सिंहदरवार, काठमाडौं, नेपाल



राष्ट्रिय योजना आयोग (गठन तथा कार्य सञ्चालन) आदेश,  
२०७४ को दफा (२३) को व्यवस्था अनुसार प्रस्तुत आयोगको

# वार्षिक प्रतिवेदन

(आ.व. २०७४ / २०७५)

यस प्रतिवेदनमा राष्ट्रिय योजना आयोगको २०७४ श्रावण १ देखि २०७५ आषाढ ३१  
सम्मका प्रमुख काम कारवाही तथा हासिल उपलब्धिहरू समेटिएका छन् ।



नेपाल सरकार

राष्ट्रिय योजना आयोग

सिंहदरवार, काठमाडौं, नेपाल

वार्षिक प्रतिवेदन २०७४/०७५

प्रतिलिपि अधिकार © राष्ट्रिय योजना आयोग

प्रकाशक

नेपाल सरकार

राष्ट्रिय योजना आयोग

सिंहदरवार, काठमाडौं, नेपाल

टेलिफोन नं: +९९७-१-४२११००४, ४२१११३२

[www.npc.gov.np](http://www.npc.gov.np)

# राष्ट्रीय योजना आयोग



श्री के.पी. शर्मा ओली  
सम्माननीय प्रधानमन्त्री एवम् रा.यो.आ.को अध्यक्ष



प्रा.डा. पुष्पराज कँडेल  
उपाध्यक्ष



डा. कृष्णप्रसाद ओली  
सदस्य



डा. उषा झा  
सदस्य



डा. दिलबहादुर गुरुङ  
सदस्य



डा. सुशील भट्ट  
सदस्य



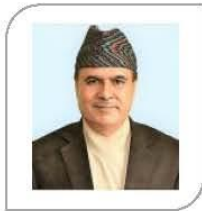
श्री मीनबहादुर शाही  
सदस्य



डा. रामकुमार फुयाँल  
सदस्य



श्री लोकेश्वर रेग्मी  
मुख्य सचिव एवम् पदेन सदस्य



श्री राजन खनाल  
अर्ध सचिव एवम् पदेन सदस्य



श्री लक्ष्मण अर्याल  
सदस्य सचिव

# कृतज्ञता

नेपालमा तीव्र आर्थिक प्रगति र सन्तुलित तथा दिगो विकासका लागि दूरगामी सोच सहितको विकास नीति तथा योजनाको तर्जुमा, कार्यान्वयनमा सहजीकरण, तहगत समन्वय, अनुगमन र मूल्याङ्कन गर्ने उद्देश्य सहित राष्ट्रिय योजना आयोगको गठन तथा पुनर्गठन हुँदै आएको हो ।

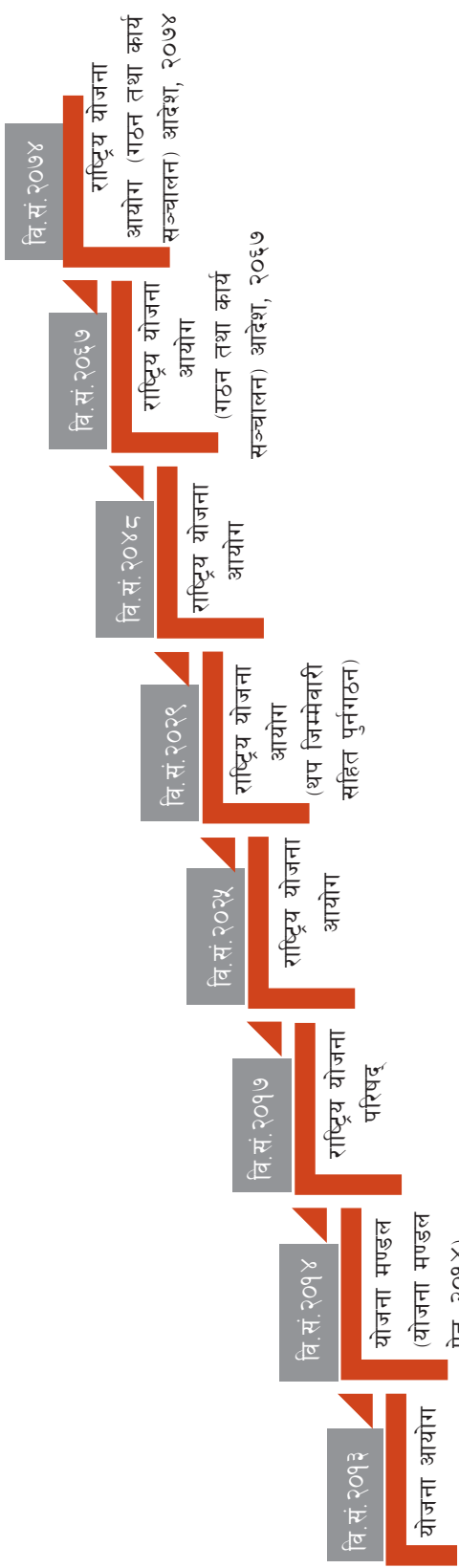
राष्ट्रिय योजना आयोग (गठन तथा कार्य सञ्चालन) आदेश, २०७४ ले तोके बमोजिमको काम, कर्तव्य र अधिकार क्षेत्र भित्र रही आयोग आफ्नो लक्ष्य एवम् उद्देश्य पूरा गर्ने तर्फ निरन्तर लागी परेको छ । गठन आदेशको परिच्छेद ७, दफा २३ बमोजिम आयोगले प्रत्येक वर्ष वार्षिक प्रतिवेदन तयार गरी आर्थिक वर्ष समाप्त भएको तीन महिनाभित्र नेपाल सरकार समक्ष पेश गर्नुपर्ने व्यवस्था रहेको छ । सोही व्यवस्था अनुरूप आयोगले आर्थिक वर्ष २०७४/७५ मा सम्पन्न गरेका प्रमुख कार्य र सोको उपलब्धि, मुलुकको आर्थिक विकासका अवसर तथा सम्भावना र विकासका प्राथमिकताहरूलाई समेटेी यो प्रतिवेदन तयार गरिएको छ ।

यस प्रतिवेदन तयारीमा संलग्न टोली एवम् प्रतिवेदनलाई अन्तिम रूप दिन सहयोग पुऱ्याउनु हुने आयोगका सम्पूर्ण सदस्यहरू र कर्मचारीहरूप्रति आयोग हार्दिक आभार व्यक्त गर्दछ । साथै, आगामी दिनमा आयोगलाई प्रदत्त जिम्मेवारीहरू थप प्रभावकारी एवम् कुशल ढङ्गमा सम्पादन गर्दै लगी वर्तमान सरकारले लिएको **‘समृद्ध नेपाल, सुखी नेपाली’** को लक्ष्य पूरा गर्ने अभियानमा सार्थक भूमिका निर्वाह गर्ने प्रतिवद्धता समेत व्यक्त गर्दछौं ।

**राष्ट्रिय योजना आयोग**

२०७४ असोज २९ गते, सोमबार

# ऐतिहासिक विकासक्रम



# विषय-सूची

## परिच्छेद-एक

### परिचय.....१

|  |   |
|--|---|
| १.१ पृष्ठभूमि.....   | १ |
| १.२ राष्ट्रिय योजना आयोगको परिचय .....                                       | २ |
| १.२.१ ऐतिहासिक विकासक्रम .....   | २ |
| १.२.२ राष्ट्रिय योजना आयोगको गठन व्यवस्था र कार्य सञ्चालन आदेश .....         | ४ |
| १.२.३ आयोगको संगठन संरचना र जनशक्ति व्यवस्था .....                           | ५ |
| १.३ राष्ट्रिय योजना आयोगको काम, कर्तव्य र अधिकार.....                        | ५ |
| १.३.१ राष्ट्रिय योजना आयोगको (गठन तथा कार्य सञ्चालन) आदेश, २०७४ .....        | ५ |
| १.३.२ प्रचलित कानून तथा अन्य आदेशमा लेखिएका काम, कर्तव्य र अधिकार.....       | ७ |
| १.४ आयोगको गठन आदेशमा व्यवस्था भएको अन्य संस्थागत तथा कार्यगत व्यवस्था ..... | ८ |
| १.४.१ राष्ट्रिय विकास परिषद.....   | ९ |
| १.४.२ राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समिति.....                               | ९ |

## परिच्छेद - दुई

### समष्टिगत आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति, विकासको

### विद्यमान अवस्था, संभावना तथा प्राथमिकताहरू.....११

|  |    |
|--|----|
| २.१ समष्टिगत आर्थिक तथा सामाजिक अवस्था ..... | ११ |
| २.१.१ प्रमुख नतिजा सूचक तथा लक्ष्यहरू.....   | १४ |

## परिच्छेद - तीन

### आयोगबाट सम्पादित प्रमुख कार्यहरू एवम् उपलब्धि.....१५

|  |    |
|--|----|
| ३.१ विषयक्षेत्रगत कार्यसम्पादन प्रगति.....   | १५ |
| ३.१.१ दीर्घकालीन सोच, तथ्यपरक नीति तथा योजना तर्जुमा र<br>कार्यान्वयनमा समन्वय तथा सहजीकरण ..... | १५ |
| ३.१.२ अनुगमन, मूल्याङ्कन तथा अनुशिक्षण .....   | १९ |
| ३.१.३ तहगत समन्वय एवम् सहकार्यात्मक संघीयताको सुदृढीकरण .....                                    | २२ |
| ३.१.४ अध्ययन, अनुसन्धान तथा अन्वेषण.....   | २४ |
| ३.२ चौधौँ योजनाको दुई आर्थिक वर्षको प्रगति स्थिति.....   | २५ |



|  |    |
|--|----|
| ३.३ अन्य विषय क्षेत्रगत कार्यसम्पादन तथा उपलब्धि ..... | २८ |
| ३.४ गणना, सर्वेक्षण तथा राष्ट्रिय लेखा अनुमान .....    | ३० |
| ३.५ तथ्याङ्क सम्बन्धी अन्य गतिविधिहरु .....            | ३३ |

## परिच्छेद - चार

### समस्या, चुनौती तथा भावी कार्यदिशा ..... ३५

|   |    |
|---|----|
| ४.१ समस्या तथा चुनौती .....   | ३५ |
| ४.२ विकास व्यवस्थापनको विद्यमान अवस्था, समस्या तथा संभावना एवम् प्राथमिकता .....                  | ३७ |
| ४.२.१ विकास व्यवस्थापनसम्बन्धी समस्या .....   | ३७ |
| ४.३ विद्यमान योजना तथा बजेट प्रणालीको अवस्था, कमजोरी तथा अपेक्षित लक्ष्य प्राप्तिका आधारहरु ..... | ३८ |
| ४.३.१ योजना तथा बजेट प्रणालीको अवस्था .....   | ३८ |
| ४.३.२ योजना तथा बजेट प्रणालीको कमजोरी .....   | ३९ |
| ४.३.३ योजना तथा बजेटबाट अपेक्षित लक्ष्य प्राप्तिका लागि तत्कालै गर्नु पर्ने सुधारहरु .....        | ४० |
| ४.४ भावी कार्यदिशा .....  | ४१ |
| ४.४.१ योजना तर्जुमा तथा व्यवस्थापन .....  | ४१ |
| ४.४.२ सहकार्यात्मक संघीयता, तहगत समन्वय एवम् वित्तीय संघीयता .....                                | ४३ |
| ४.४.३ आयोजना व्यवस्थापन .....   | ४४ |
| ४.४.४ सुशासन तथा संगठन व्यवस्थापन .....   | ४५ |
| ४.५ सुशासन, विकास र समृद्धिका सम्भावना एवम् प्राथमिकता र अपेक्षित लक्ष्य प्राप्तिका आधार .....    | ४५ |
| ४.५.१ राष्ट्रिय लक्ष्यको मापनको लागि विकासका सूचकहरु .....  | ४६ |

### अनुसूचीहरु .....

|  |     |
|--|-----|
| अनुसूची-१ राष्ट्रिय योजना आयोगको स्वरूप .....  | ४८  |
| अनुसूची-२ राष्ट्रिय योजना आयोगको संगठन स्वरूप .....  | ४९  |
| अनुसूची-३ राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको स्वरूप .....   | ५१  |
| अनुसूची-४ दिगो विकास लक्ष्य वर्तमान अवस्था र भावी मार्गचित्र २०१६-२०३० .....                                     | ५२  |
| अनुसूची-५ बहुआयामिक गरिवी सूचकांक प्रतिवेदन, २०७४ .....  | ६३  |
| अनुसूची-६ बहुक्षेत्रीय पोषण योजना - दोश्रो (२०७५/७६-२०७९/८०) को सारांश .....                                     | ६६  |
| अनुसूची-७ बुढीगण्डकी जलविद्युत आयोजनाको लगानी खाका पेश गर्न गठित समितिको सिफारिस .....                           | ७१  |
| अनुसूची-८ राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ४०औं, ४१औं र ४२औं बैठकका निर्णयहरु एवम् कार्यान्वयन स्थिति ..... | ७३  |
| अनुसूची-९ आन्तरिक र तेश्रो पक्ष मूल्याङ्कन प्रतिवेदनहरुको सारांश .....   | ७५  |
| अनुसूची-१० छानिएका आयोजनाहरुको स्थलगत अनुगमन प्रतिवेदनको सारांश .....  | ९९  |
| अनुसूची-११ एकीकृत सहरी विकास मापदण्डको कार्यकारी सारांश .....  | १०७ |

|   |     |
|---|-----|
| अनुसूची-१२ काठमाडौं उपत्यका कृषक बजार, कृषि सहकारी बजार सम्भाव्यस्थल छनौट<br>अध्ययन प्रतिवेदनको सारांश.....     | ११९ |
| अनुसूची-१३ राष्ट्रिय सहकारी आवास नीति .....   | १२३ |
| अनुसूची-१४ दिगो शहरी विकास सूचकांक (SUDI: Sustainable Urban Development Index) ..                               | १२४ |
| अनुसूची-१५ २०७४ श्रावण महिनामा आएको बाढी पश्चातको पुनःउत्थान सम्बन्धी<br>आवश्यकता आँकलन प्रतिवेदनको सारांश..... | १२६ |
| अनुसूची-१६ मध्यमकालीन खर्च संरचना (आ.व. २०७५/७६-२०७७/७८).....   | १२९ |
| अनुसूची-१७ चिया खेती सर्वेक्षणको नतिजा .....  | १३३ |
| अनुसूची-१८ आ.व. २०७४/७५ को राष्ट्रिय लेखा.....  | १३४ |
| अनुसूची-१९ नेपाल प्रामाणिक भू-संकेत (Nepal Standard Geo-Codes) .....  | १३६ |
| अनुसूची-२० विनियोजित बजेट तथा खर्चको अवस्था.....  | १३९ |
| अनुसूची-२१ आयोगबाट भएका निर्णयहरु.....  | १४१ |

# संक्षेपीकरण

|              |   |
|--------------|---|
| आ.व.         | आर्थिक वर्ष   |
| मे.ट.        | मेट्रिक टन  |
| मे.वा.       | मेगा वाट  |
| मे.सु.       | मेडिकल सुपरिटेन्डेन्ट                                       |
| रा.यो.आ.     | राष्ट्रीय योजना आयोग  |
| रा.वि.स.स.स. | राष्ट्रीय विकास समस्या समाधान समिति                         |
| CGE-GEMPACK  | Computable General Equilibrium Model                        |
| CUPS         | Center for Urban Planning                                   |
| DPR          | Detail Project Report                                       |
| GIS          | Geographic Information System                               |
| GoN          | Government of Nepal   |
| ICIMoD       | International Center for Integrated Mountain Development    |
| LDC          | Least Developed Countries                                   |
| LLDC         | Landlocked Developing Countries                             |
| LMBIS        | Line Ministry Budget Information System                     |
| LPCD         | Liters per Capita per Day                                   |
| MISC         | Multi Indicators Cluster Survey                             |
| MPI          | Multidimensional Poverty Index                              |
| MTEF         | Medium Term Expenditure Framework                           |
| NC           | Nepalese Currency   |
| NEA          | Nepal Electricity Authority                                 |
| OPHI         | Oxford Poverty and Human Development Initiative             |
| PPP          | Public Private Partnership                                  |
| SAWTEE       | South Asian Watch on Trade, Economic and Environment        |
| SCADA        | Supervisory Control and Data Acquisition                    |
| SDG          | Sustainable Development Goals                               |
| SEAS         | South Asian Economic Summit                                 |
| SIA          | Second International Airport                                |
| SUDI         | Sustainable Urban Development Index                         |
| SUDIGGAA     | Sustainable Distributed Generation and Grid Access for All  |
| SUN          | Scaling Up Nutrition  |
| TNA          | Training Need Assessment                                    |
| TOR          | Terms of Reference  |
| TOT          | Training of Trainers  |
| UNDESA       | United Nations Department of Economic Social Affairs        |
| UNESCAP      | United Nations Economic and Social Council for Asia Pacific |



## परिच्छेद - एक

## प्रारम्भिक

## १.१ पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले परिलक्षित गरेको दिगो शान्ति, सुशासन, विकास र समृद्धिको आकांक्षा पूरा गर्न राष्ट्रिय अर्थतन्त्रलाई आत्मनिर्भर बनाउँदै समाजवाद उन्मुख अर्थतन्त्रको विकास गर्ने आर्थिक उद्देश्य हासिल गर्नुपर्ने प्रमुख दायित्व सरकारसामु रहेको छ । पुर्नसंरचित राज्यको तीनै तहमा आर्थिक सामाजिक विकासका प्रयासलाई राष्ट्रिय विकास योजनासँग आवद्ध गर्दै, सहकारिता, सहअस्तित्व र समन्वयका आधारमा अगाडि बढाउने राष्ट्रिय कार्यसूची रहेको छ । नेपालको संविधानको क्रमशः पूर्ण कार्यान्वयनको प्रारम्भ र विश्वमा देखापरेका परिवर्तित सन्दर्भमा विकासका आयाम र विषयगत क्षेत्रको दायरा फराकिलो बन्दै गएका छन् । राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय वित्तीय दायराभिन्न रही समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम गरी संघीय वित्त प्रणालीलाई सुदृढ बनाउँदै विकास वित्तको परिचालन गर्नुपर्ने अवस्था विद्यमान रहेको छ । उपलब्ध श्रोत साधनको न्यायोचित बाँडफाँट तथा उपयोग गरी नागरिकको गुणस्तरीय सेवा र मर्यादित जीवन प्रवर्द्धन गर्ने दिशामा विकासका योजना तथा कार्यक्रम छनौट गर्ने र नतिजाको सुनिश्चितताका लागि सम्पूर्णतामा पूर्ण कार्यान्वयन गर्नुपर्ने हुन्छ । संघीय राज्य व्यवस्था अनुकूलका राज्य सञ्चालनका संरचनाको पुर्नसंरचनासँगै राष्ट्रिय योजना आयोगको गठन, भूमिका, तथा कार्य सञ्चालनमा समेत समय सापेक्ष परिवर्तन भएको छ । संघीय शासकीय प्रणालीमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका विकास प्रयासलाई राष्ट्रको समग्र विकाससँग आवद्ध गरी लैजान दीर्घकालीन सोचसहितको कार्यान्वयनयोग्य आवधिक योजनाको तर्जुमा, नीतिगत तथा कार्यक्रमिक कार्यान्वयनमा देखापर्ने जटिलताको प्रभावकारी समन्वय, सरलीकरण, स्रोतको आँकलन, पहिचान र प्राथमिकीकरणका आधारमा न्यायोचित वितरण, वित्तीय संघीयताको कार्यान्वयन र मध्यमकालीन खर्च संरचनाको सुदृढीकरण, नतिजामूलक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन पद्धतिको विकास र तथ्याङ्क प्रणालीलाई वैज्ञानिक, भरपर्दो र पहुँच योग्य बनाउने कार्यलाई प्राथमिकताका साथ आयोगले अगाडि बढाउँदै लगेको छ । विकास प्रकृत्यामा नागरिकको सार्थक सहभागिता, तहगत सरकारका बीचमा सुदृढ समन्वय र सहकार्यमा जोड दिँदै आयोगले विकासको सोच र कार्यप्रणालीलाई सुशासनमुखी र समाधानकूल बनाउँदै लगेको छ ।

नेपालको संविधानले व्यवस्था गरे अनुरूप निर्वाचन पश्चात संघीय शासकीय संरचनाहरू क्रियाशील भएका छन् । संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका संरचनालाई विधि र प्रणालीबाट कार्यमूलक बनाउन सुरुवात भएको छ । मुलुक साभ्ता अधिकार र आर्थिक अधिकारको बाँडफाँट, जनशक्ति र सार्वजनिक सम्पत्तिको विन्यासको सङ्क्रमणकालीन अवस्थामा रहेको छ । सहकारितामा आधारित

वित्तीय संघीयताको कार्यान्वयनको क्रममा आउने जटिलताहरूलाई क्रमशः सम्बोधन गर्दै जानुपर्ने छ । विगतको एकात्मक राज्य प्रणालीका विधि र पद्धतिलाई संघीयता अनुकूल बनाउन निर्वाचन पछिको सरकारबाट महत्वपूर्ण कार्य सम्पादन भइरहेका छन् । सबै प्रदेश र स्थानीय तहको आर्थिक वर्ष २०७५/७६ को नीति तथा कार्यक्रम सहितको बजेट कार्यान्वयनमा आएको छ । संघीय सरकारका साथै प्रदेश र स्थानीय तहसमेत दीर्घकालिन सोच सहितको आवधिक योजनाको तर्जुमाको चरणमा प्रवेश गरेका छन् । नेपालको राष्ट्रिय विकास लक्ष्यको रूपमा 'समृद्ध नेपाल, सुखी नेपाली' रहेको छ ।

## १.२ राष्ट्रिय योजना आयोगको परिचय

नेपालको समग्र विकासको लागि दीर्घकालिन सोच सहितको योजना तर्जुमा गर्ने, अध्ययन अनुसन्धानका आधारमा तथ्यपरक क्षेत्रगत नीति एवम् रणनीतिहरू तयार गरी विकासका कार्यक्रमलाई लक्षित दिशामा निर्देशित गर्न सघाउने, राष्ट्रिय गौरव र प्राथमिकता प्राप्त कार्यक्रम तथा आयोजनाको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन गरी तथ्यमा आधारित पृष्ठपोषण उपलब्ध गराउने, विकास प्रकृत्यामा अनुभूत गरिएका वा सम्भावित समस्या एवम् व्यवधानको सहजीकरण गर्ने र नेपाल सरकारको विकास सल्लाहकारको भूमिका निर्वाह गर्नका लागि विशिष्टिकृत केन्द्रीय निकायको रूपमा राष्ट्रिय योजना आयोग रहँदै आएको छ । विकासको निमित्त आवश्यक स्रोत साधनको आँकलन र विनियोजन गर्ने कार्यका साथै चक्रीयरूपमा तयार गरिने मध्यमकालीन खर्च संरचनाको माध्यमबाट वित्त संरचनालाई सुदृढ बनाउँदै लग्ने जिम्मेवारी आयोगको रहेको छ । विकाससम्बन्धी नीति, योजना तथा कार्यक्रमको आवश्यकता, सान्दर्भिकता र उपलब्धिका बारेमा अध्ययन, अनुसन्धान र मूल्याङ्कन गर्ने कार्य समेत आयोगबाट निरन्तर हुँदै आएको छ । राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय विकासका समसामयिक विषयमा वृहत्, छलफल र अन्तरक्रियाका माध्यमबाट नीति संवाद मञ्चको भूमिका पनि आयोगले निर्वाह गर्दै आएको छ । साथै विकास नीति, योजना तथा कार्यक्रमको प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि समन्वयात्मक र सहजीकरणका लागि समेत आयोगको भूमिका महत्वपूर्ण रहेको छ । यस बाहेक नागरिक समाज, गैरसरकारी संस्था र निजी क्षेत्रका समस्याको विश्लेषण गरी समाधान गर्ने कार्यमा पनि आयोगले योगदान पुऱ्याउँदै आएको छ ।

### १.२.१ ऐतिहासिक विकासक्रम

नेपालमा योजनावद्ध विकास प्रक्रियाको अवधारणासहित सर्वप्रथम वि.सं. २०१३ सालमा तत्कालीन प्रधानमन्त्री स्वर्गीय टंकप्रसाद आचार्यको अध्यक्षतामा योजना आयोगको गठन भएको थियो । स्थापनाकालदेखि नै योजनावद्ध विकास प्रयासको थालनी गर्न प्रथम पञ्चवर्षीय योजना (२०१३-२०१७) तर्जुमा गरी कार्यान्वयनमा ल्याईएको थियो । यो योजनाले योजनावद्ध विकासको आधारशीला तयार गर्न सहयोग पुऱ्यायो । वि.सं. २०१४ सालमा योजना आयोगलाई अझ बढी सक्षम र प्रभावकारी बनाउन योजना मण्डल ऐन, २०१४ जारी गरी योजना मण्डलको स्थापना

भएको थियो । योजना मण्डललाई योजना तर्जुमा गर्ने जिम्मेवारीका साथै विविध कार्यकारी अधिकार समेत सुम्पिएको थियो । वि.सं. २०१३ सालमा योजना आयोगको स्थापनादेखि हालसम्म मुलुकमा भएका प्रमुख राजनीतिक परिवर्तनसँगै यसको गठन, भूमिका, कार्यक्षेत्र, नेतृत्व गर्ने पदाधिकारी, सदस्यको संख्या तथा संगठन स्वरूपमा परिवर्तन हुँदै आएको छ ।

वि.सं. २०१७ सालमा तत्कालीन राजाले बहुदलीय व्यवस्थाको अन्त्य गरेसँगै राजाकै अध्यक्षतामा राष्ट्रिय योजना परिषद्को स्थापना भयो । उक्त परिषद्को निर्णयलाई मन्त्रपरिषद्को निर्णय सरहको मान्यता दिई आर्थिक योजना तथा नीति निर्माणको लागि सबैभन्दा अधिकार सम्पन्न निकायको रूपमा राखियो । यस परिषद्लाई सहयोग गर्न एउटा छुट्टै सचिवालयको समेत स्थापना भएको थियो । वि.सं. २०१९ सालमा आर्थिक विकास मन्त्रालयको स्थापना भएपश्चात सोही मन्त्रालयले परिषद्को सचिवालयको कार्य गरेको थियो । साथै विकास बजेट एवम् वैदेशिक सहायतासम्बन्धी क्रियाकलाप राष्ट्रिय योजना परिषद् अन्तर्गत ल्याइएको थियो । वि.सं. २०२० सालमा साविकको राष्ट्रिय योजना परिषद् विघटन गरी सोही नाम गरेको केन्द्रीय योजना निर्माण गर्ने निकायका रूपमा नयाँ केन्द्रीय संगठनको व्यवस्था गरी यसको अध्यक्षता मन्त्रपरिषद्को अध्यक्षले गर्ने र सबै मन्त्रीहरू पदेन सदस्य हुने व्यवस्था गरियो । यससँगै आर्थिक विकास मन्त्रालयलाई आर्थिक योजना मन्त्रालयको रूपमा पुनर्गठन गरियो ।

वि.सं. २०२५ सालमा विकास बजेट र वैदेशिक सहायतासम्बन्धी सबै कार्य आर्थिक योजना मन्त्रालयबाट अर्थ मन्त्रालयमा सारियो र राष्ट्रिय योजना परिषद्लाई विघटन गरी प्रधानमन्त्रीको अध्यक्षतामा राष्ट्रिय योजना आयोग गठन गरियो र आयोगलाई सघाउ पुऱ्याउन छुट्टै सचिवालयको व्यवस्था गरियो । वि.सं. २०२९ सालमा केन्द्रीय योजना निर्माणसम्बन्धी कार्य तथा जिम्मेवारी दिने गरी राष्ट्रिय योजना आयोगलाई पुनर्गठन गरियो ।

वि.सं. २०४६ सालमा बहुदलीय प्रजातान्त्रिक व्यवस्थाको पुनर्स्थापनापछि वि.सं. २०४८ सालमा आयोगको अध्यक्षता प्रधानमन्त्रीले गर्ने र पूर्णकालीन उपाध्यक्षसहितको पाँच जना सदस्यहरू र एक जना सदस्य सचिव रहने गरी राष्ट्रिय योजना आयोग गठन गरियो । यसमा नेपाल सरकारका मुख्य सचिव र अर्थ सचिवसमेत पदेन सदस्यको रूपमा रहने व्यवस्था गरियो ।

वि.सं. २०६२/६३ को लोकतान्त्रिक आन्दोलनको परिणामस्वरूप पुनर्स्थापित प्रतिनिधि सभाले सामन्ती, निरङ्कुश, केन्द्रीकृत र एकात्मक राज्यव्यवस्थालाई अन्त्य गर्दै नेपाल संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक व्यवस्था सहितको राज्य भएको घोषणा गर्दै नेपालको अन्तरिम संविधान जारी गरेसँगै तत्कालीन सरकारले आयोगको गठन तथा कार्य सञ्चालन विधिलाई व्यवस्थित गर्न राष्ट्रिय योजना आयोगको गठन तथा कार्य सञ्चालन आदेश, २०६७ जारी गर्‍यो । यस गठन

आदेशमा आयोगको अध्यक्षता सम्माननीय प्रधानमन्त्रीले गर्ने तथा एक जना पूर्णकालीन उपाध्यक्ष र बढीमा सात जना सदस्य रहने व्यवस्था गरेको थियो । उक्त गठन आदेशले आयोगको गठन तथा काम, कर्तव्य र अधिकारलाई स्पष्ट गर्नुका साथै आयोगको कार्य सञ्चालन विधिलाई पनि थप प्रभावकारी बनाउन सघाउ पुऱ्यायो ।

वि.सं. २०७२ साल असोज ३ गते संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था सहितको नेपालको संविधान जारी भए पछिको निर्वाचित सरकारले विगतको गठन आदेशलाई खारेज गरी नयाँ गठन तथा कार्य सञ्चालन आदेश, २०७४ बमोजिम राष्ट्रिय योजना आयोगको पुनर्गठन गरेको छ । सम्माननीय प्रधानमन्त्रीको अध्यक्षतामा गठित राष्ट्रिय योजना आयोगको हालको संगठनमा पूर्णकालीन उपाध्यक्ष, एक जना महिला सहित बढीमा छ जना सदस्यहरू र एक जना सदस्य सचिव रहने व्यवस्था छ । विद्यमान आयोगमा पनि नेपाल सरकारका मुख्य सचिव र अर्थ सचिव पदेन सदस्यको रूपमा रहने व्यवस्था छ । संगठनको स्वरूप र काम, कर्तव्य, अधिकारमा समयक्रमसँगै पटक पटक भएका सुधारको नतिजास्वरूप राष्ट्रिय योजना आयोगको हालको संगठन स्वरूप तयार भएको हो ।

### १.२.२ राष्ट्रिय योजना आयोगको गठन व्यवस्था र कार्य सञ्चालन आदेश

नेपाल सरकार, मन्त्रिपरिषद्को मिति २०७४/११/२८ को बैठकले नेपालमा तीव्र आर्थिक प्रगति र सन्तुलित तथा दिगो विकासका लागि नेपालको संविधान बमोजिम दूरगामी सोचसहितको विकास नीति तथा योजनाको तर्जुमा, कार्यान्वयनमा सहजीकरण र अनुगमन तथा मूल्याङ्कन गरी नेपाल सरकारलाई अनुसन्धान वा विश्लेषण गरिएका सूचनाका आधारमा सल्लाह र सहयोग प्रदान गर्ने विशिष्टीकृत निकायका रूपमा काम गर्ने गरी देहाय बमोजिमको आयोग रहने व्यवस्था सहितको राष्ट्रिय योजना आयोग (गठन तथा कार्य सञ्चालन) आदेश, २०७४ स्वीकृत गरेको छ ।

राष्ट्रिय योजना आयोग (गठन तथा कार्य सञ्चालन) आदेश, २०७४ को दफा ३ को उपदफा (२) मा देहाय बमोजिमको आयोग रहने व्यवस्था उल्लेख छ ।

|  |              |
|--|--------------|
| (क) प्रधानमन्त्री  | - अध्यक्ष    |
| (ख) नेपाल सरकारबाट नियुक्त एक जना                              | - उपाध्यक्ष  |
| (ग) नेपाल सरकारबाट नियुक्त कम्तीमा एकजना महिलासहित बढीमा छ जना | - सदस्य      |
| (घ) मुख्य सचिव, नेपाल सरकार                                    | - सदस्य      |
| (ङ) सचिव, अर्थ मन्त्रालय                                       | - सदस्य      |
| (च) सचिव, राष्ट्रिय योजना आयोग                                 | - सदस्य-सचिव |



यस गठन आदेशले उपरोक्त उल्लेख गरिए अनुसार खण्ड (ग) बमोजिमका सदस्यको नियुक्ति गर्दा आर्थिक विकास, सामाजिक विकास, भौतिक पूर्वाधार, जलस्रोत तथा उर्जा, अन्य प्राकृतिक स्रोत र मानव स्रोत व्यवस्थापन, र सुशासन तथा व्यवस्थापन लगायतको विषय क्षेत्रको प्रतिनिधित्व हुने गरी विज्ञता र समावेशी आधारमा गरिने व्यवस्था गरेको हुँदा सबै महत्वपूर्ण विषय क्षेत्रको प्रतिनिधित्व रहेको छ भने खण्ड (ख) र (ग) बमोजिमका उपाध्यक्ष र सदस्यले आयोगको पूर्णकालीन पदाधिकारीको रूपमा कार्य गर्ने व्यवस्था गरेको छ। नेपाल सरकार, मन्त्रपरिषद्को मिति २०७५/१/११ को बैठकले माथि उल्लिखित व्यवस्था अनुसार गठन गरेको आयोगको स्वरूप अनुसूची-१ मा दिइएको छ।

### १.२.३ आयोगको संगठन संरचना र जनशक्ति व्यवस्था

नेपाल सरकार, मन्त्रपरिषद्बाट मिति २०७५/२/६ मा स्वीकृत आयोगको वर्तमान संगठन संरचना अनुसार गठन आदेशको दफा १७ को व्यवस्था अनुरूप आयोगको प्रशासनिक नेतृत्व नेपाल सरकारको निजामती सेवाको विशिष्ट श्रेणीको सचिवले गर्ने गरी कूल १०५ जनाको दरबन्दी रहेको छ। आयोगका प्रशासकीय प्रमुखको रूपमा रहने सचिवले आयोगको सदस्य सचिवको समेत कार्य संपादन गर्नुपर्ने व्यवस्था रहेको छ। हालको संगठन संरचना अनुसार आयोगमा नेपाल प्रशासन सेवाको राजपत्रांकित प्रथम श्रेणीका सहसचिवको नेतृत्व रहने गरी चारवटा विषयगत महाशाखाहरू र महाशाखा अन्तर्गत विभिन्न १३ वटा शाखाहरू रहेका छन्। आयोगको प्रशासनिक संगठन संरचना र दरबन्दी तैरीज अनुसूची – २ मा प्रस्तुत गरिएको छ। साथै, नेपालमा तथ्याङ्क प्रणालीको सञ्चालन, व्यवस्थापन तथा विकास गर्नका लागि केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग र अन्तर्गतका कार्यालय आयोगको मातहतमा रहेका छन्।

### १.३ राष्ट्रिय योजना आयोगको काम, कर्तव्य र अधिकार

१.३.१ राष्ट्रिय योजना आयोगको (गठन तथा कार्य सञ्चालन) आदेश, २०७४ मा उल्लेख गरिए अनुसार आयोगको काम, कर्तव्य र अधिकार देहाय बमोजिम रहेका छन्।

(क) दीर्घकालीन सोच, तथ्यपरक नीति तथा योजना तर्जुमा:

१. मुलुकको समग्र समृद्धिका लागि दूरगामी सोचसहितको दीर्घकालीन लक्ष्य, मार्गचित्र, नीति तथा योजना तर्जुमा गरी त्यसको कार्यान्वयनको सहजीकरण गर्ने,
२. आर्थिक विकास, सामाजिक विकास, भौतिक पूर्वाधार, जलस्रोत तथा उर्जा, अन्य प्राकृतिक स्रोत, मानव स्रोत व्यवस्थापन, सुशासन र व्यवस्थापन लगायतका क्षेत्रमा रणनीतिक प्रकृतिका आवधिक नीति तथा योजना तयार गर्ने,
३. सम्बन्धित मन्त्रालय तथा निकायसँगको समन्वयमा संघीयस्तरका नयाँ विकास कार्यक्रम तथा आयोजनाहरूको लेखाजोखा, पूर्व मूल्याङ्कन तथा परिक्षणसमेत गरी सहमति दिने,

४. लाभ लागत लगायतका विविध विश्लेषणको आधारमा आयोजना बैंक (प्रोजेक्ट बैंक) निर्माण गर्ने, गराउने,
५. राष्ट्रिय स्रोतको अनुमान, प्रक्षेपण र वितरण, आयोजनाको आर्थिक, सामाजिक वित्तीय, प्राविधिक र वातावरणीय विश्लेषणको लागि राष्ट्रिय मापदण्ड तयार गर्न लगाउने,
६. अध्ययन, अनुसन्धान तथा तथ्यपरक नीति निर्माण प्रक्रियालाई अवलम्बन गरी विभिन्न क्षेत्रगत नीतिहरूको निर्माण तथा तिनको कार्यान्वयनको समन्वय र सहजीकरण गर्ने,
७. अर्थतन्त्रका समष्टिगत क्षेत्रहरूमा अध्ययन गरी त्यस बमोजिमको नीति तथा योजनाहरूको तर्जुमा गर्ने, गराउने,
८. राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय नीति संवाद तथा लगानी मञ्चको विकास, सञ्चालन, समन्वय र सहजीकरण गर्ने,
९. अन्तर्राष्ट्रिय मापदण्ड अनुकूल राष्ट्रिय तथ्याङ्क प्रणालीको विकास र संप्रेषण गर्ने, गराउने ।

**(ख) अनुगमन तथा मूल्याङ्कन :**

१. मुलुकको विकाससम्बन्धी नीति, योजना, कार्यक्रम तथा आयोजनाको कार्यान्वयन, प्रतिफल तथा प्रभावको विश्वसनीय र प्रभावकारी अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीको विकास गर्ने तथा त्यसलाई नेपाल सरकारका विभिन्न निकायहरूमा लागू गरी संस्थागत गराउने,
२. मूल्याङ्कनका लागि आवश्यक मापदण्ड र प्रक्रिया निर्धारण गरी विषयक्षेत्रगत नीतिहरू र प्राथमिकताप्राप्त कार्यक्रम तथा आयोजनाहरूको प्रभाव मूल्याङ्कन गर्ने, गराउने र त्यसको आधारमा नीति तथा कार्यान्वयनको तहमा गर्नुपर्ने सुधार गराउने,
३. अनुगमन तथा मूल्याङ्कनको विषयमा सरकारी, सार्वजनिक, स्वतन्त्र मूल्याङ्कनकर्ता तथा विषयगत पेशागत संघ संस्था, नागरिक समाज र विकासका साभेदारबीच सञ्जालको विकास र यससम्बन्धी अनुभवको आदान प्रदान गरी विशेषज्ञताको विकास गर्ने, गराउने ।

**(ग) तहगत समन्वय :**

१. संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको विकाससम्बन्धी नीति तथा योजना तर्जुमा र कार्यान्वयनमा समन्वय, सहयोग र सहजीकरण गर्ने ।

**(घ) अध्ययन, अनुसन्धान तथा अन्वेषण :**

१. कुनै राष्ट्रिय नीतिको सान्दर्भिकता वा विकास योजना तथा कार्यक्रमका विभिन्न पक्षको विषयमा स्वतन्त्र विज्ञ व्यक्ति, निकाय वा संस्थाबाट अन्तर्राष्ट्रियस्तरको शोध तथा अनुसन्धान गर्ने गराउने र तत्सम्बन्धी प्रणालीको विकास गर्ने ।

२. प्राज्ञिक, सार्वजनिक, निजी क्षेत्र तथा गैर सरकारी क्षेत्रको साभेदारीमा नीति तथा योजनाको विकास तथा कार्यान्वयनको क्षेत्रमा हुने अनुसन्धान तथा अध्ययनमा प्रोत्साहन तथा सहजीकरण गर्ने ।
३. आर्थिक विकास, सामाजिक विकास, भौतिक पूर्वाधार, जलस्रोत तथा उर्जा, प्राकृतिक स्रोत व्यवस्थापन र सुशासन तथा व्यवस्थापन लगायत विभिन्न विषयगत क्षेत्रको उत्पादन र व्यवसायको संरचना, ढाँचा तथा प्रविधिमा रूपान्तरण गर्नुपर्ने विषयका लागि तथ्यपरक नीति, सुझाव तथा प्रस्तावहरू सिफारिस गर्ने ।

### १.३.२ प्रचलित कानून तथा अन्य आदेशमा लेखिएका काम, कर्तव्य र अधिकार

राष्ट्रिय योजना आयोगको (गठन तथा कार्य सञ्चालन) आदेश, २०७४ मा उल्लेख गरिए बाहेक देहायका कानून तथा नियमावलीमा आयोगको काम, कर्तव्य र अधिकारका बारेमा देहाय बमोजिमका व्यवस्था रहेका छन् ।

(क) **आर्थिक कार्यविधि ऐन, २०५५ को दफा ५ को उपदफा (४)** मा मित्रराष्ट्र र अन्तर्राष्ट्रिय संघ संस्थाबाट अनुदान र ऋणस्वरूप नेपाल सरकारलाई प्राप्त हुने नगदी वा जिन्सी सहायता लिनु अघि त्यस्तो सहायता योजना तथा वार्षिक कार्यक्रमले निर्धारण गरेको प्राथमिकता, नीति तथा कार्यक्रम अनुरूप छ, छैन सो सम्बन्धमा सामान्यतया राष्ट्रिय योजना आयोगको परामर्श लिई अर्थ मन्त्रालयको स्वीकृती लिने र सोको विवरण तयार पारी अर्थ मन्त्रालयमा पेश गर्ने कर्तव्य लेखा उत्तरदायी अधिकृतको हुनेछ, भन्ने व्यवस्था रहेको छ ।

(ख) **अन्तर-सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४** को दफा १७ अनुसार नेपाल सरकार, प्रदेश सरकार तथा स्थानीय तहले खर्चको विवरण तयार गर्दा आगामी तीन आर्थिक वर्षमा हुने खर्चको प्रक्षेपण सहितको मध्यमकालीन खर्च संरचना तयार गर्नु पर्ने र दफा २२ अनुसार राजश्व र व्ययको अनुमान पेश गर्दा मध्यमकालीन खर्च संरचना समेत पेश गर्नुपर्ने व्यवस्था रहेको छ ।

(ग) **आर्थिक कार्यविधि नियमावली, २०६४** मा राष्ट्रिय योजना आयोगले गर्ने कामको सम्बन्धमा देहायको व्यवस्था गरिएको छ ।

१) **आयोजना स्वीकृत गर्ने गराउने:** नियम २२ को उपनियम (१) बमोजिम विकास आयोजनाको बजेट तर्जुमा गर्दा प्रस्तावित आयोजनाको सम्भाव्यता अध्ययन र आर्थिक, प्राविधिक, वातावरणीय तथा प्रशासकीय उपयुक्तताको आधारमा त्यसबाट हुने प्रतिफलको समेत विचार गरी नेपाल सरकारबाट त्यस्तो आयोजना स्वीकृत भएको हुनु पर्नेछ । जिल्लास्तरीय आयोजना राष्ट्रिय योजना आयोगको नीतिभिन्न रही सम्बन्धित मन्त्रालयका सचिवले र केन्द्रीयस्तरीय आयोजना राष्ट्रिय योजना आयोगले स्वीकृत गर्नुपर्नेछ । आयोजना स्वीकृत गर्ने आधार अनुसूची-३ मा उल्लेख भए बमोजिम हुनेछ । यसरी स्वीकृत आयोजना कार्यान्वयन गर्नको

लागि विस्तृत सर्वेक्षण, ड्रइङ्ग, डिजाइन, लागत अनुमान र सो अनुसार वार्षिक कार्यक्रम निश्चित गरी सोही आधारमा वार्षिक बजेट तर्जुमा गर्नुपर्नेछ ।

## २) कार्यक्रम स्वीकृत गर्ने:

- १) कार्यालयको उद्देश्य, नीतिगत लक्ष्य र स्वीकृत बजेटअन्तर्गत नियम २२ को उपनियम (१) को अधीनमा रही आफ्नो मन्त्रालय र अन्तर्गत सञ्चालन हुने कार्यक्रम मन्त्रालयले स्वीकृत गर्नुपर्नेछ । यसरी स्वीकृत भएको कार्यक्रम केन्द्रीयस्तरको भएमा मन्त्रालयले सोको जानकारी राष्ट्रिय योजना आयोगलाई दिनुपर्नेछ ।
- २) सम्बन्धित मन्त्रालयले उपनियम (२) बमोजिम स्वीकृत वार्षिक कार्यक्रमको जानकारी सम्बन्धित कोष तथा लेखा नियन्त्रक कार्यालय र राष्ट्रिय योजना आयोगलाई दिनु पर्नेछ । साथै सम्बन्धित मन्त्रालयले खर्च गर्ने अख्तियारीको जानकारी सम्बन्धित कोष तथा लेखा नियन्त्रक कार्यालयलाई दिनुपर्नेछ ।
- ३) कार्यक्रम संशोधन गर्ने: नियम २४ को अधिनमा रही कार्यालयले स्वीकृत कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्ने सिलसिलामा स्थानीय परिस्थितिलाई समेत ध्यानमा राखी त्यस्तो कार्यक्रमको उद्देश्य, लक्ष्य, स्वीकृत बजेट र आवधिक योजना अनुकूल हुनेगरी त्यस्तो कार्यक्रमलाई संशोधन गर्न आवश्यक ठानेमा संशोधन गर्नुपर्ने स्पष्ट कारण खोली तालुक मन्त्रालयको स्वीकृति लिई लागत नबढ्ने गरी त्यस्तो कार्यक्रममा आवश्यक संशोधन गर्न सक्नेछ । यसरी कार्यक्रममा गरिएको संशोधनको जानकारी सम्बन्धित मन्त्रालय र कार्यालयले राष्ट्रिय योजना आयोगलाई दिनुपर्नेछ ।
- ४) वैदेशिक सहायता बजेट विवरणमा समावेश गर्ने: नियम २७ को अधिनमा रही कुनै पनि कार्यालयले विदेशी संघ, संस्था, एजेन्सी वा राष्ट्रहरूबाट कुनैपनि किसिमको नगदी वा जिन्सी सहायता प्राप्त गर्दा वा प्राप्त गर्ने सम्झौता गर्दा राष्ट्रिय योजना आयोगको परामर्श लिई अर्थ मन्त्रालयको स्वीकृति लिनुपर्नेछ ।
- ५) अर्थ मन्त्रालयले बजेट तथा कार्यक्रमलाई अन्तिम रूप दिने: उपनियम (१) बमोजिम बजेट तथा कार्यक्रमलाई अन्तिम रूप दिँदा नियम २० बमोजिम तयार गरी पेश हुन आएको बजेट विवरण माथि अर्थ मन्त्रालयले मुलुकको आर्थिक स्थिति विचार गरी सम्बन्धित मन्त्रालय र राष्ट्रिय योजना आयोगसँग परामर्श गरी थपघट गर्न सक्नेछ ।

## १.४ आयोगको गठन आदेशमा व्यवस्था भएको अन्य संस्थागत तथा कार्यगत व्यवस्था

### १.४.१ राष्ट्रिय विकास परिषद्

राष्ट्रिय योजना आयोग (गठन तथा कार्य सञ्चालन) आदेश, २०७४ को दफा ७ मा आयोगले तर्जुमा गरेको दीर्घकालीन वा आवधिक विकास नीति वा योजनामा छलफल गरी मार्गदर्शन दिनका

लागि सम्माननीय प्रधानमन्त्रीको अध्यक्षतामा एक राष्ट्रिय विकास परिषद् रहने व्यवस्था छ। उक्त परिषद्मा नेपाल सरकारका मन्त्री, राज्यमन्त्री, संघीय संसदमा प्रतिनिधित्व गर्ने संसदीय दलका नेता, प्रदेश सरकारका मुख्यमन्त्रीहरू, संघीय संसदका समितिका सभापतिहरू, नेपाल राष्ट्र बैंकका गभर्नर, प्रदेश सरकारका योजना हेर्ने मन्त्रालय वा निकायका प्रमुख सदस्यका रूपमा र जिल्ला समन्वय समितिका प्रमुख, स्थानीय तहका प्रतिनिधिहरू, कानून बमोजिम स्थापना भएका विभिन्न संघ संस्थाका प्रतिनिधिहरू र निजी क्षेत्रलगायत विभिन्न क्षेत्र, वर्ग र समुदायको विशेषज्ञ एवम् विज्ञहरूको प्रतिनिधित्व रहने गरी नेपाल सरकारबाट मनोनित पच्चीस जना सदस्य रहने व्यवस्था छ। दीर्घकालीन वा आवधिक विकास नीति वा योजना तर्जुमा गर्ने समयमा आयोगले तयार गरेको खाकामा सरोकारवाला सबै पक्षको छलफलका लागि परिषद्को बैठक बस्ने गरेको छ। यस परिषद्मा छलफल गरिसकेपछि मात्र परिषद्को निर्देशन अनुसार दीर्घकालीन विकास नीति वा आवधिक योजना नेपाल सरकार मन्त्रिपरिषद्को स्वीकृतिका लागि प्रस्तुत गर्ने व्यवस्था रहेको छ।

#### १.४.२ राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समिति

विकास नीति, योजना, कार्यक्रम तथा आयोजनाको नियमित रूपमा अनुगमन तथा मूल्याङ्कन गर्न र तिनको प्रगति समीक्षा, समस्याको समाधानलगायत नीतिगत विषयको काम गर्नका लागि अनुगमन तथा मूल्याङ्कनसम्बन्धी सर्वोच्च संयन्त्रका रूपमा मन्त्रिपरिषद्को मिति २०४९/०४/८ को निर्णयानुसार राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समिति रहने संस्थागत व्यवस्था गरिएदेखि हालसम्म यस समितिले कार्य गर्दै आएको छ। सम्माननीय प्रधानमन्त्रीको अध्यक्षतामा रहेको यस समितिको संरचना अनुसूची – ३ मा उल्लेख गरिएको छ।

राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समिति (राविससस) का कार्यहरू देहाय अनुसार रहेका छन्।

- (क) विभिन्न मन्त्रालय अन्तर्गत सञ्चालित कार्यक्रम/आयोजनाहरूको कार्यान्वयन स्थितिको समीक्षा गर्ने।
- (ख) मन्त्रालयमा हुने मन्त्रालयस्तरको विकास समस्या समाधान समितिको बैठकबाट समाधान हुन नसकेका समस्याको समाधानका लागि उपयुक्त निर्णय लिने।
- (ग) कार्यक्रम/आयोजनाको कार्यान्वयन तहमा भएका अन्तरमन्त्रालय समन्वय सम्बन्धी विषय, नीतिगत एवम् कानुनी विषयवस्तुहरूका सम्बन्धमा देखिएका समस्याहरूको समाधान गर्ने।
- (घ) कार्यक्रम/आयोजनाको कार्यान्वयनमा देखिने गरेका एकै प्रकृतिका समस्याको स्थायी समाधानका लागि अध्ययन, अनुसन्धान तथा मूल्याङ्कन गराउने र प्राप्त सुझावका आधारमा नीतिगत निर्णय लिने।

उल्लिखित कार्यका लागि राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको बैठक प्रत्येक चौमासिक अवधि अन्त्य भएको दोस्रो महिनाको तेस्रो हप्ताको उपयुक्त मितिमा बस्ने व्यवस्था छ। त्यसैगरी मन्त्रालयस्तरबाट समाधान हुन नसकी राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको बैठकबाट समाधान गर्नुपर्ने प्रकृतिका देखिएका समस्याहरूको बारेमा छलफल र विश्लेषण गरी समाधानका लागि उपयुक्त सुझाव तयार गर्ने र अनुगमन तथा मूल्याङ्कनसम्बन्धी कार्यलाई समन्वय गरी व्यवस्थित गर्न र आवश्यक मार्गदर्शनका लागि राष्ट्रिय योजना आयोगका उपाध्यक्षको अध्यक्षतामा राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान उपसमिति रहने व्यवस्था छ। सो उपसमितिको बैठक राविससको बैठक बस्नुपूर्व सम्बन्धित चौमासिकमा एकपटक बस्ने गर्दछ।

आयोगको गठन आदेशमा उल्लेखित काम, कर्तव्य र अधिकारका क्षेत्रभित्र रही माथि उल्लिखित संस्थागत तथा कार्यगत व्यवस्थाका अतिरिक्त आयोगले आफ्नो कार्यक्षेत्र भित्र पर्ने जिम्मेवारीहरू तथा नेपाल सरकारको निर्णयद्वारा आफूलाई सुम्पने कार्यजिम्मेवारी सम्पादन गर्नेक्रममा आयोगको बैठकबाट पनि निर्णय गरी कार्य सम्पादन गर्दै आएको छ। आर्थिक वर्ष २०७४/७५ को अवधिमा भएको आयोगको बैठकका निर्णयहरू अनुसूची - २१ मा प्रस्तुत छ।

## परिच्छेद - दुई

# समष्टिगत आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति, विकासको विद्यमान अवस्था र संभावना तथा प्राथमिकताहरू

## २.१ समष्टिगत आर्थिक तथा सामाजिक अवस्था

विगत दुई दशकको अवधिमा मुलुकको आर्थिक तथा सामाजिक अवस्थामा न्यून सुधार हुँदै गएको छ । आर्थिक वर्ष २०४७/४८ मा गरिबीको रेखामुनि रहेको जनसंख्या ४९ प्रतिशत रहेकोमा २०७२/७३ मा २१.६ प्रतिशतमा झरेको र बहुआयामिक गरिबी २०७१ मा २८.६ प्रतिशत रहेको छ । आर्थिक वर्ष २०४७/४८ को प्रति व्यक्ति आय अमेरिकी डलर २०४ बाट आर्थिक वर्ष २०५४/५५ मा २१३ र आर्थिक वर्ष २०७४/७५ मा १००४ अमेरिकी डलर पुगेको छ । आर्थिक वर्ष २०४७/४८ देखि २०७४/७५ सम्मको औषत आर्थिक बृद्धिदर ४.३ प्रतिशत रहेको छ । न्यून आर्थिक बृद्धिदरका कारण प्रति व्यक्ति आय कम भएको हुनाले नेपाल अति कम विकसित मुलुकको रूपमा रहेको छ । विगत १७ वर्षमा औद्योगिक क्षेत्रको औषत बृद्धिदर ३.२ प्रतिशत रहेको र उत्पादन क्षेत्रको योगदान ९ प्रतिशतबाट ५.४ प्रतिशतमा घटेको हुँदा कृषिमा आश्रित जनशक्ति औद्योगिक क्षेत्रमा स्थानान्तरण हुन सकेन । युवा जनसंख्याको बाहुल्यता भएता पनि ३० प्रतिशत भन्दा बढी श्रमशक्ति अर्ध बेरोजगार रहेको र ४० लाख भन्दा बढी युवा वैदेशिक रोजगारीमा रहेको अवस्था छ । अर्थतन्त्रमा सेवा क्षेत्रको तीव्र विस्तार एवम् वास्तविक क्षेत्रको न्यून तथा उतारचढावयुक्त बृद्धिले गर्दा कुल गार्हस्थ्य आय तथा विप्रेषण आयका कारणबाट सिर्जित आन्तरिक मागलाई आन्तरिक उत्पादनले धान्न नसक्दा एकातर्फ निर्यात खुम्चिन पुग्यो भने अर्कातर्फ आयात चुलिँदै गयो । निर्यातको कुल गार्हस्थ्य उत्पादनसँगको अनुपात आ.व. २०४७/४८ मा ६.२ प्रतिशत रहेकोमा आ.व. २०५४/५५ मा ९.२ प्रतिशत र आ.व. २०७४/७५ मा २.७ प्रतिशत एवम् आयातको सोही अनुपात क्रमशः १९.३ बाट २०.४ र ३८.६ प्रतिशत पुगेको छ । व्यापार घाटाको कुल गार्हस्थ्य उत्पादनसँगको अनुपात सोही अवधिमा १३.१ प्रतिशतबाट २०.४ र ३८.६ प्रतिशत पुगेको छ । आ.व. २०४७/४८ मा प्राथमिक तहमा खुद भर्नादर ६४ प्रतिशत रहेकोमा आ.व. २०७४/७५ मा ९७.२ प्रतिशत, बाल मृत्युदर १०८ बाट ३९ प्रति हजार जीवित जन्ममा, मातृ मृत्युदर ८५० बाट २३५ प्रति लाख जीवित जन्ममा पुगेको छ ।

आ.व. २०७३/७४ मा रु. २,६४३ अर्ब रहेको कूल गार्हस्थ्य उत्पादन आ.व. २०७४/७५ मा रु. ३,००७ अर्ब पुगेकोमा आ.व. २०७५/७६ मा रु. ३,४८७ अर्ब पुग्ने अपेक्षा छ। आ.व. २०७२/७३ को विनाशकारी भुकम्प र दक्षिण सिमानामा भएको व्यापार अवरोधका कारण ०.२ प्रतिशतमा खुम्चिएको आर्थिक बृद्धि दर आ.व. २०७३/७४ मा उच्च हुन पुगी ७.४ प्रतिशतमा रह्यो। लामो समयपछि हासिल भएको उच्च आर्थिक बृद्धिदर पछिल्लो आ.व. को उच्च आर्थिक बृद्धिको ठूलो आधार एवम् कृषि क्षेत्रमा सिर्जना हुन पुगेको प्रतिकूलताको कारण आ.व. २०७४/७५ मा घट्न गई ५.९ प्रतिशत रहेको अनुमान छ। आ.व. २०७३/७४ मा ४.५ प्रतिशत रहेको मूल्यबृद्धि आ.व. २०७४/७५ मा ६ प्रतिशत कायम हुन पुग्यो। आ.व. २०७५/७६ मा ७.९ प्रतिशतको आर्थिक बृद्धिसँगै मूल्य बृद्धिलाई ६.५ प्रतिशतमा सीमित राख्ने लक्ष्य लिइएको छ। मुलुकले लिएको उच्च आर्थिक बृद्धिको लक्ष्य अनुरूप आर्थिक क्रियाकलापमा बृद्धि हुँदा मूल्य बृद्धिमा चाप पर्ने भएकोले ६.५ प्रतिशतमा मुद्रा स्फितिलाई सीमित राख्नु निकै नै चुनौतीपूर्ण रहेको छ।

सार्वजनिक वित्ततर्फ आ.व. २०७३/७४ मा रु. ८३७.२ अर्ब कूल खर्च भएकोमा २९.४ प्रतिशतले बृद्धि हुँदै आ.व. २०७४/७५ मा रु. १,०८३ अर्ब पुगेको छ। आ.व. २०७४/७५ मा चालु तर्फ रु. ७३९ अर्ब, पुँजीगत तर्फ रु. २३४.६ अर्ब र वित्तीय व्यवस्था रु. १०९.४ अर्ब खर्च भएको थियो जुन कूल खर्चको क्रमशः ६८.२ प्रतिशत, २१.७ प्रतिशत र १०.१ प्रतिशत हुन आउँछ। राजस्व तर्फ आ.व. २०७३/७४ मा रु. ६०९.२ अर्ब र आ.व. २०७४/७५ मा रु. ७३०.१ अर्ब पुगेको छ। राजस्वको वार्षिक बृद्धिदर आ.व. २०७३/७४ र २०७४/७५ मा क्रमशः २६.४ प्रतिशत र १९.८ प्रतिशत रहन पुग्यो। आ.व. २०७४/७५ मा कुल आन्तरिक ऋण र बाह्य ऋण क्रमशः रु. ३८८.३ अर्ब र रु. ४५४.६ अर्ब रहेको छ। संघीय व्यवस्थामा सरकारको खर्च बढेको तर सोही अनुपातमा राजस्व संकलन र आय बढ्न समय लाग्ने भएकोले वित्तीय सन्तुलनमा पर्ने असरलाई कम गर्नु प्रमुख चुनौती हुनेछ भने कूल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा राजस्व २४.३ प्रतिशत रहेको आयातमा आधारित राजस्व माथिको अत्यधिक निर्भरता र अनियन्त्रित व्यापार घाटा नियन्त्रण गर्दै राजस्व समेत बृद्धि गर्नु अर्को प्रमुख चुनौती रहेको छ। संविधानले स्पष्ट अधिकारक्षेत्र निर्धारण गरे तापनि कार्यक्षेत्रगत स्पष्टता नहुँदा हाल विभिन्न तहका सरकारहरूबीच राजस्व असुलीमा विवाद देखिन थालेकाले यसलाई समयमै समाधान गर्नु आवश्यक देखिन्छ।

आ.व. २०७३/७४ मा २,२९९.८ अर्ब रहेको कूल निक्षेप आ.व. २०७४/७५ मा १८.३ प्रतिशतले बृद्धि हुँदै रु. २,७२१.७ अर्ब पुगेको छ। आ.व. २०७४/७५ मा निजी क्षेत्रतर्फको कर्जा ७९.७ प्रतिशत र सरकारतर्फको खुद कर्जा १२.३ प्रतिशतले बृद्धि भएको छ। अर्थतन्त्रमा चलनचल्तीको मुद्रामा १३.५ प्रतिशतले बृद्धि भएको छ जहाँ संकुचित र विस्तृत मुद्राप्रदायमा क्रमशः २१.६ र १०१.७ प्रतिशतको बृद्धि भएको छ।



रु. अर्बमा

| परिसूचक  | २०७०/७१      | २०७१/७२      | २०७२/७३      | २०७३/७४         | २०७४/७५         |
|--|--------------|--------------|--------------|-----------------|-----------------|
| <b>१. वास्तविक क्षेत्र</b>                             |              |              |              |                 |                 |
| <b>यथार्थ कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (आधारभूत मूल्यमा)</b> | <b>६७४.२</b> | <b>६८४.३</b> | <b>६८५.७</b> | <b>७४७.१</b>    | <b>७८१.१</b>    |
| कृषि   | २३७.५        | २४०.१        | २४०.७        | २५३.२           | २६०.३           |
| उद्योग   | १०७.८        | १०९.४        | १०२.४        | ११५.१           | १२५.३           |
| सेवा   | ३५७.७        | ३३४.३        | ३८३.१        | ४११.६           | ४३८.९           |
| यथार्थ कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (उत्पादकको मूल्यमा)      | ७३९.८        | ७६४.३        | ७६८.८        | ८२९.६           | ८८१.८           |
| कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (प्रचलित मूल्यमा)               | १९६४.५०      | २१३०.१०      | २२५३.२०      | २६४२.६०         | ३,००७.२०        |
| कुल राष्ट्रिय आय (प्रचलित मूल्यमा)                     | १९९७.३०      | २,१६४.४०     | २,२८७.२०     | २,६७३.६०        | ३,०३१.४०        |
| कुल राष्ट्रिय खर्चयोग्य आम्दानी (प्रचलित मूल्यमा)      | २,६२८.८०     | २,८७४.३०     | ३,०६५.४०     | ३,५२५.४०        | ३,८७७.३०        |
| कुल उपभोग  | १,७३०.३०     | १,९३४.००     | २,१६१.५०     | २,३२६.९०        | २,५५५.९०        |
| कुल लगानी  | ८०८.८        | ८३२          | ७६३.४        | १,२०८.७०        | १,५५६.४०        |
| कुल स्थिर पूँजी निर्माण                                | ४६२          | ५९५.८        | ६४७.३        | ८४०.७           | १,०२५.६०        |
| सरकारी   | ९५           | ११०.३        | १६०.५        | १६९.५           | २३३.६           |
| निजी   | ३६७          | ४८५.६        | ४८६.८        | ६७१.२           | ७९२             |
| कुल गार्हस्थ्य बचत                                     | २३४.२        | १९६.१        | ९९.६         | ३१५.७           | ४५५.३           |
| <b>कुल राष्ट्रिय बचत</b>                               | <b>८८८.५</b> | <b>८४०.३</b> | <b>८०३.८</b> | <b>१,१८८.५०</b> | <b>१,३२१.४०</b> |
| <b>२. सार्वजनिक वित्त</b>                              |              |              |              |                 |                 |
| राजस्व   | ३५६.६        | ४०५.९        | ४८२.०        | ६०९.२           | ७३०.१           |
| कुल सरकारी खर्च  | ४३५.१        | ५३१.६        | ६०१.०        | ८३७.२           | १०८३.०          |
| चालु खर्च  | ३०३.५        | ३३९.४        | ३७१.३        | ५१८.६           | ७३९.०           |
| पूँजीगत खर्च   | ६६.७         | ८८.८         | १२९.३        | २०८.७           | २३४.६           |
| वित्तीय व्यवस्था                                       | ६४.८         | १०३.३        | १०६.५        | १०९.९           | १०९.४           |
| <b>३. मुद्रा तथा बैकिङ</b>                             |              |              |              |                 |                 |
| आन्तरिक कर्जा  | १३१४.४       | १५२७.३       | १८०५.७       | २१७७.८          | २७९०.४          |
| निजी क्षेत्रतर्फको कर्जा                               | ११५०.८       | १३७३.९       | १६९२.३       | १९९७.२          | २३९४.८          |
| सरकार तर्फको खुद कर्जा                                 | १४२.०        | १२७.२        | ८७.८         | १४९.५           | ३७०.८           |
| संकुचित मुद्रा प्रदाय (एम१)                            | ३५४.८        | ४२४.७        | ५०३.३        | ५६९.४           | ६४९.१           |
| मुद्रा (चलन चल्तीको)                                   | २२७.५        | २७०.१        | ३२७.५        | ३६१.७           | ४०५.२           |
| विस्तृत मुद्रा प्रदाय (एम२)                            | १५६६.०       | १८७७.८       | २२४४.६       | २५९१.७          | ३०५८.२          |
| कुल निक्षेप  | १४०६.८       | १६८८.८       | २०१६.८       | २२९९.८          | २७२१.७          |
| <b>४. बाह्य क्षेत्र</b>                                |              |              |              |                 |                 |
| निर्यात (वस्तु)  | ९२.०         | ८५.३         | ७०.१         | ७३.०            | ८२.६            |
| आयात (वस्तु)   | ७१४.४        | ७७४.७        | ७७३.६        | ९९०.१           | १११४.१          |
| व्यापार बचत (+)/घाटा (-)                               | -६२२.४       | -६८९.४       | -७०३.५       | -९१७.१          | -११११.५         |
| पर्यटन आय  | ४६.४         | ५३.४         | ४१.८         | ५८.५            | ७९.०            |
| विप्रेषण आय  | ५४३.३        | ६१७.३        | ६६५.१        | ६९४.५           | ७३०.२           |
| चालु खाता बचत (+)/घाटा (-)                             | ८९.७         | १०८.३        | १४०.४        | -१०.१           | -१९८.३          |
| शोधनान्तर बचत (+)/घाटा (-)                             | १२७.१        | १४५.०        | १८९.०        | ८२.२            | ०.९६            |
| विदेशी विनिमय संचिति                                   | ६६५.४        | ८२४.१        | १०३९.२       | १०७९.४          | १०७९.४          |

स्रोत: अर्थ मन्त्रालय, २०७५

## २.१.२ प्रमुख नतिजा सूचक तथा लक्ष्यहरू

आर्थिक वर्ष २०७५/७६ देखिको तीन वर्षको मध्यकालीन खर्च संरचनाले लिएको उत्पादनशील रोजगारी उन्मुख र न्यायपूर्ण वितरणसहितको उच्च आर्थिक बृद्धिद्वारा द्रुत गरिबी न्यूनीकरण गर्दै आर्थिक सामाजिक रूपान्तरणको उद्देश्य हासिल गर्न समष्टिगत लक्ष्यहरूको विद्यमान स्थिति र आगामी तीन वर्षको प्रक्षेपण निम्नानुसार गरिएको छ।

### प्रमुख विषय क्षेत्रगत सूचक तथा लक्ष्य

| क्र.सं. | सूचक/लक्ष्य   | एकाई            | २०७३/७४ सम्मको उपलब्धि | २०७४/७५ को उपलब्धि | मध्यकालीन लक्ष्य |         |         |
|---------|---|-----------------|------------------------|--------------------|------------------|---------|---------|
|         |   |                 |                        |                    | २०७५/७६          | २०७६/७७ | २०७७/७८ |
| (क)     | खाद्यान्न बाली उत्पादन  | मे.टन (लाखमा)   | ९७.७                   | १००.१              | १०३.१            | १०७.५   | ११०     |
| (ख)     | काठको उत्पादन   | घन फिट (लाखमा)  | ५०                     | ३०                 | ४०               | ६०      | ६०      |
| (ग)     | उद्योगहरूबाट रोजगारीको सिर्जना                                      | संख्या (हजारमा) | ११२                    | १७४                | १८१              | १८२     | १८३     |
| (घ)     | निर्यात आयात अनुपात   | अनुपात          | १:१.०                  | १:९.३              | १:८.६            | १:८     | १:७.५   |
| (ङ)     | पर्यटन आगमन   | संख्या (हजारमा) | ७५३                    | १०००               | १२००             | १६००    | २०००    |
| (च)     | पर्यटन क्षेत्रमा रोजगारी  | संख्या (हजारमा) | ९५                     | ११६                | १३३              | १५०     | १६०     |
| (छ)     | राष्ट्रिय विद्युत प्रणालीबाट विद्युतमा पहुँच प्राप्त गर्ने जनसंख्या | प्रतिशत         | ६४                     | ६९                 | ७५               | ८०      | ८५      |
| (ज)     | जलविद्युत उत्पादन क्षमता  | मे.वा.          | ९६८                    | १,०४५              | १,८०५            | २,११४   | २,४४६   |
| (झ)     | प्रसारण लाइन निर्माण  | कि.मी. (हजारमा) | ३८.२                   | ३९.५               | ४१.६             | ४८.२    | ५३.६    |
| (ञ)     | सिंचित क्षेत्रफल  | हेक्टर (लाखमा)  | १२.५६                  | १३.१३              | १३.३३            | १३.६७   | १४.१२   |
| (ट)     | सडक निर्माण   | कि.मि. (हजारमा) | २९.७३                  | ३०.४               | ३१.१             | ३१.६    | ३२.१    |
| (ठ)     | जनता आवास   | संख्या (हजारमा) | १०.२                   | २६.४               | ३७               | ३५      | ४५      |
| (ड)     | इन्टरनेट ग्राहकको घनत्व   | प्रतिशत         | ५२.७                   | ५५                 | ६०               | ६५      | ७०      |
|         | क) आधारभूत तह (कक्षा १-५) प्रतिशत                                   | प्रतिशत         | ९७                     | ९७.२               | ९७.५             | ९९      | ९९.५    |
|         | ख) आधारभूत तह (कक्षा १-८) प्रतिशत                                   | प्रतिशत         | ९१                     | ९२.३               | ९४               | ९६      | ९७      |
|         | ग) माध्यमिक तह कक्षा (९-१२) प्रतिशत                                 | प्रतिशत         | ४२                     | ४३.९               | ४५               | ५०      | ५३      |
| (ढ)     | मातृ मृत्युदर (प्रति लाख जीवित जन्म)                                | जना             | २३९                    | २३५                | १४५              | १२५     | १२५     |
| (ण)     | बाल मृत्युदर (प्रति हजार जीवित जन्म)                                | जना             | ३९                     | ३९                 | ३०               | २८      | २६      |
| (त)     | आधारभूतस्तरका खानेपानीबाट लाभान्वित जनसंख्या                        | प्रतिशत         | ८७                     | ९०                 | ९२               | ९३      | ९४      |

## परिच्छेद - तीन

# आयोगबाट सम्पादित प्रमुख कार्यहरू एवम् उपलब्धि

नेपाल सरकार, मन्त्रिपरिषद्को मिति २०७४/११/२८ को बैठकले स्वीकृत गरेको राष्ट्रिय योजना आयोग (गठन तथा कार्य सञ्चालन) आदेश, २०७४ को दफा ६ मा 'आयोगको काम, कर्तव्य र अधिकार' मा उल्लेख भएअनुसार आयोगको कार्यक्षेत्र देहाय बमोजिम चारवटा रहेका छन् : (क) दीर्घकालीन सोच, तथ्यपरक नीति तथा योजना तर्जुमा, (ख) अनुगमन तथा मूल्याङ्कन, (ग) तहगत समन्वय र (घ) अध्ययन, अनुसन्धान तथा अन्वेषण । आर्थिक वर्ष २०७४/७५ को अवधिमा आयोगबाट सम्पादित मुख्य-मुख्य कार्यहरू एवम् सोबाट हासिल उपलब्धीलाई यिनै चार वटा कार्यक्षेत्र अन्तर्गत यस परिच्छेदमा उल्लेख गरिएका छन् ।

## ३.१ विषय क्षेत्रगत कार्यसम्पादन प्रगति

**३.१.१ दीर्घकालीन सोच, तथ्यपरक नीति तथा योजना तर्जुमा र कार्यान्वयनमा समन्वय तथा सहजीकरण**  
वि.स. २०१३ सालमा आयोगको स्थापना भएदेखि आर्थिक वर्ष २०७४/७५ सम्मको छ दशकभन्दा बढीको योजनावद्ध विकासको इतिहासमा आयोगको प्रमुख कार्यक्षेत्रमध्ये राष्ट्रको समग्र विकासका निमित्त दीर्घकालीन विकास योजना तर्जुमा, विषय क्षेत्रगत नीति निर्माण, तिनीहरूको निर्माणमा तथ्यपरक सल्लाह सुझाव उपलब्ध गराई सहजीकरण तथा ती नीति एवम् योजनाहरूलाई नतिजामूलक कार्यक्रम तथा आयोजनाहरूका माध्यमबाट कार्यान्वयनमा लैजाने र समन्वय तथा सहजीकरण गर्ने कार्यमा आयोगको अहम् भूमिका रहँदै आएको छ । आयोगले हालसम्म नौवटा पञ्चवर्षीय र पाँच वटा त्रिवर्षीय आवधिक योजना तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गरिसकेको छ भने हाल चौधौं योजनाको अन्तिम आर्थिक वर्ष कार्यान्वयनको चरणमा छ ।

नेपालको संविधानमा व्यवस्था भएका मौलिक हक, राज्यका निर्देशक सिद्धान्त एवम् नीति तथा दायित्वहरूको पूर्ण कार्यान्वयनका लागि दीर्घकालीन सोच सहितको राष्ट्रिय विकास योजना कार्यान्वयनमा लैजानु जरुरी भएको छ । त्यसैगरी, वि.सं. २०७९ साल सम्ममा नेपाललाई अल्पविकसित राष्ट्रबाट स्तरोन्नति गर्दै वि.सं. २०८७ सालसम्ममा मध्यम आय भएको मुलुकमा पुऱ्याउन र अन्तर्राष्ट्रियस्तरमा नेपालले गरेको प्रतिबद्धता अनुरूप सन् २०३० सम्ममा दिगो विकासका लक्ष्यहरू हासिल गर्ने दिशामा अबको विकासका प्रयासहरू निर्देशित हुनुपर्ने आवश्यकता रहेको छ ।

यस दिशामा विगत केही वर्षयता आयोगबाट प्रयासहरू हुँदै आएको भएतापनि राजनैतिक संक्रमण, संविधान निर्माण हुने क्रममा रहेको र स्पष्ट दिशानिर्देश नभइसकेको अवस्थामा मुलुकको दीर्घकालीन सोच तर्जुमा गर्ने कार्यले मूर्तरूप लिन सकेन । यद्यपि मुलुकको समग्र विकासका लागि दूरदृष्टि सहितको योजना तथा क्षेत्रगत नीतिहरू तर्जुमा गरी संचालित विकास कार्यक्रम तथा आयोजनाको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन गरी तथ्यमा आधारित भएर सरकारलाई आवश्यक सल्लाह दिने केन्द्रीय निकायको रूपमा राष्ट्रिय योजना आयोगले आफ्नो भूमिका निर्वाह गर्दै आएको छ ।

नेपालको संविधान जारी भएसँगै संविधानमा उल्लेखित राज्यको दायित्वहरू पुरा गर्ने सन्दर्भमा आयोगले विषय क्षेत्रगत नीति तथा योजना निर्माण, नयाँ कार्यक्रम र आयोजनाहरूको तर्जुमा र कार्यान्वयनमा समन्वय एवम् सहजीकरण गर्दै आएको छ । हालको निर्वाचित सरकारले समृद्ध नेपाल, सुखी नेपाली को लक्ष्य निर्धारण गरी नीति तथा कार्यक्रमका माध्यमबाट यसको आधार तयारीको कार्य प्रारम्भ गरेको छ । साथै, संविधान प्रदत्त मौलिक हक तथा जनताको विकास र समृद्धिको आकांक्षालाई दीर्घकालीन सोच र सो अनुरूपको आवधिक राष्ट्रिय योजना र तदनुसंगको वार्षिक विकास कार्यक्रम तर्जुमा गर्ने कार्ययोजनाका साथ वर्तमान आयोग क्रियाशील रहेको छ ।

यस पृष्ठभूमिमा आर्थिक वर्ष २०७४/७५ मा आयोगबाट यस विषय क्षेत्रमा सम्पादन गरिएका मुख्य मुख्य कार्यहरू एवम् प्रमुख उपलब्धिहरू देहायमा उल्लेख गरिएका छन् ।

- (क) चौधौँ योजनाले लिएको सामाजिक न्यायसहितको लोककल्याणकारी राज्य हुँदै मध्यम आय भएको मुलुकको स्तरमा पुग्ने लक्ष्य तथा उत्पादनशील रोजगारीउन्मुख र न्यायपूर्ण वितरणसहितको उच्च आर्थिक वृद्धिद्वारा द्रुत गरिबी न्यूनीकरण गर्दै आर्थिक सामाजिक रुपान्तरण गर्ने उद्देश्य हासिल गर्ने गरी आ.व. २०७५/७६ को वार्षिक विकास कार्यक्रम तथा बजेट तयार गर्नका लागि आयोगका उपाध्यक्षको अध्यक्षतामा स्रोत समितिको बैठक बस्यो । उक्त समितिले स्रोत पहिचान तथा आँकलन, कूल बजेटको आकार र विषय क्षेत्रगत तथा निकायगत बजेट सीमा निर्धारण, नेपाल सरकारको वार्षिक विकास कार्यक्रम तथा बजेट र मध्यमकालीन खर्च संरचना तयार गर्ने सम्बन्धी मार्गदर्शन, २०७४ जारी गरेको थियो ।
- (ख) आ.व. २०७३/७४ देखि आ.व. २०७५/७६ सम्मको अवधिका लागि कार्यान्वयनमा रहेको चौधौँ योजनालाई आधार लिई नतिजा सूचकसहितको आ.व. २०७५/७६ को वार्षिक कार्यक्रम तथा बजेट तर्जुमा गरी संघीय संसदबाट स्वीकृत भए अनुसार कार्यान्वयनमा ल्याएको छ ।
- (ग) अन्तर-सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ को दफा १७ अनुसार नेपाल सरकार, प्रदेश सरकार तथा स्थानीय तहले सार्वजनिक खर्चको विवरण तयार गर्दा आगामी तीन आर्थिक वर्षमा हुने खर्चको प्रक्षेपण सहितको मध्यकालीन खर्च संरचना तयार गर्नुपर्ने र दफा

२२ अनुसार राजश्व र व्ययको अनुमान पेश गर्दा मध्यकालीन खर्च संरचना समेत पेश गर्नुपर्ने व्यवस्था भए बमोजिम पहिलो पटक नेपाल सरकारको तीन आर्थिक वर्ष अवधिकालागि मध्यकालीन खर्च संरचना (आर्थिक वर्ष २०७५/७६-२०७७/७८) तयार गरी संघीय संसदमा प्रस्तुत गरिएको थियो ।

- (घ) दिगो विकासका लक्ष्यलाई नेपालको योजनावद्ध विकासको प्रकृत्यामा समाहित गर्दै आगामी दिनमा ती लक्ष्य प्राप्त गर्नेगरी आवधिक योजना तथा वार्षिक विकास कार्यक्रम तर्जुमा र तिनको कार्यान्वयन, र सोका लागि श्रोत साधनहरूको बाँडफाँटमा सुनिश्चितता गर्न सम्माननीय प्रधानमन्त्रीज्यूको अध्यक्षतामा दिगो विकास सम्बन्धी राष्ट्रिय निर्देशन समिति, सरकारी, निजी, सहकारी, गैह्रसरकारी क्षेत्रको प्रतिनिधिहरू समेत सदस्य रहने गरी आयोगका उपाध्यक्षको अध्यक्षतामा कार्यान्वयन तथा समन्वय समिति र सोही अनुरूप आयोगका सम्बन्धित विषयगत क्षेत्र हेर्नुहुने सदस्यहरूको संयोजकत्वमा छ, वटा विषयगत समिति क्रियाशील रहँदै आएका छन् । विषयगत समितिले सरोकारवाला निकायसँग छलफल तथा अन्तर्क्रिया गर्दै दिगो विकास लक्ष्यको आन्तरिकीकरण, स्थानीयकरण, लागत अनुमान, लगानी खाका र वित्तीय रणनीति तर्जुमाको कार्य गरिरहेको छ ।
- (ङ) दिगो विकासका लक्ष्यलाई नेपालको योजनावद्ध विकासको प्रयाससँगै पूर्णरूपमा कार्यान्वयनमा ल्याउन ती लक्ष्यहरूलाई समेटी नेपालको सन्दर्भमा स्थानीय लक्ष्यहरू र तिनको आधारभूत तथ्याङ्कसहितको नेपालको दिगो विकास लक्ष्यहरूको आधारभूत अवस्था र भावी कार्यदिशा सम्बन्धी प्रतिवेदन (Nepal: SDGs Status and Road Map: 2016-2030 Report), तयार गरी प्रकाशित गरिएको छ । उक्त प्रतिवेदनमा विश्वव्यापी एवम् राष्ट्रिय सूचकहरूसहित आवधिक रूपमा प्रतिवेदन गर्न मिल्ने गरी अनुगमन तथा मूल्याङ्कनको खाका समेत तयार गरिएको छ । यस प्रारूपरखाकाले आगामी योजना, कार्यक्रम तथा आयोजनालाई तथ्यमा आधारित भएर वस्तुगत अनुगमन एवम् मूल्याङ्कन गर्न सघाउने अपेक्षा गरिएको छ । यस प्रतिवेदनको सारसंक्षेप अनुसूची - ४ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।
- (च) मुलुकको योजना प्रणालीलाई संघीय व्यवस्था अनुरूप समायोजन गरी राष्ट्रिय योजनासँग तादम्यता कायम गर्न संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको योजना तर्जुमा र कार्यान्वयन विधिमा समन्वय, सहजीकरण र सहकार्य गर्नका लागि स्थानीय तहको आवधिक योजना तर्जुमा दिग्दर्शन तयार गरिएको छ ।
- (छ) नेपालमा पहिलो पटक आयोगले प्रदेशगत बहुआयामिक गरिवी सूचकको मापन सहितको नेपाल बहुआयामिक गरिवी सूचक प्रतिवेदन (Nepal Multidimensional Poverty Index, 2018) तयार गरी प्रकाशन गरेको छ । यस प्रतिवेदनले गरिवीका विभिन्न आयामहरूमा नागरिक कुन स्तरमा रहेका छन् र स्तरोन्नतिका लागि के-कस्ता नीति, योजना तथा कार्यक्रमहरू तर्जुमा गरी कार्यान्वयनमा ल्याउनु आवश्यक रहेको छ, भन्ने विषयमा तथ्यगत प्रामाणिक सूचना उपलब्ध गराएको छ । उक्त प्रतिवेदनको सारसंक्षेप अनुसूची - ५ प्रस्तुत गरिएको छ ।

- (ज) वि.सं. २०६९ देखि वि.सं. २०७३ सम्म (सन् २०१३ - २०१७) पाँच वर्ष अवधिका लागि कार्यान्वयनमा रहेको बहुक्षेत्रीय पोषण योजना को समीक्षा गरी थप प्रभावकारी र नतिजामुखी बनाउन आवश्यक सुधारहरू सहित सन् २०१८ देखि पाँच वर्षका लागि “बहुक्षेत्रीय पोषण योजना दोस्रो २०७५/७६ - २०७९/८०” (Multi-Sector Nutrition Plan II) तर्जुमा गरी नेपाल सरकार, मन्त्रपरिषद्को मिति २०७४/०८/१ को बैठकबाट स्वीकृत भई कार्यान्वयनमा आएको छ। यसै सन्दर्भमा पोषण अभियान कार्यक्रमलाई अभिवृद्धि गर्ने कार्यमा सक्रिय र महत्वपूर्ण योगदान पुऱ्याए वापत सन् २०१५ नोभेम्बर ८ मा आइभरी कोष्टमा आयोजना भएको SUN Global Gathering कार्यक्रममा नेपाललाई ‘Scaling up Nutrition Champion Award, 2017’ प्रदान गरिएको थियो। यससम्बन्धी थप विवरण अनुसूची - ६ मा उल्लेख गरिएको छ।
- (झ) विभिन्न निकायबाट विविध प्रकृतिका कार्यक्रम तथा आयोजना सञ्चालन गर्नुपूर्व प्रचलित कानूनमा रहेको प्रावधान अन्तर्गतको विभिन्न सुविधाका लागि आयोगबाट राष्ट्रिय प्राथमिकता प्राप्त कार्यक्रम/आयोजना भनी निर्धारण गर्नुपर्ने व्यवस्थाको लागि आयोजनाको राष्ट्रिय प्राथमिकता निर्धारण सम्बन्धी आधार, २०७४ तयार गरी लागू गरिएको छ।
- (ञ) नेपाललाई सन् २०२२ सम्ममा अतिकम विकसित राष्ट्रबाट स्तरोन्नति गर्ने सम्बन्धमा हालसम्म भएका प्रगति एवम् अध्ययन प्रतिवेदनलाई आधार लिँदै तेस्रो पक्षबाट समेत अध्ययन गराई नेपालको औपचारिक धारणा संयुक्त राष्ट्र संघमा प्रस्तुत गरियो। यस सम्बन्धमा संयुक्त राष्ट्र संघीय व्यवस्था अनुसार सन् २०१३ को अवस्था विश्लेषणमा नेपाल अतिकम विकसित राष्ट्रबाट स्तरोन्नति हुन लागू हुने तीन निर्धारक सूचकहरू मध्ये दुईवटा सूचकहरूमा मापदण्डभन्दा माथि पुगिसकेको भएतापनि आर्थिक विकास र समृद्धिका लागि महत्वपूर्ण र संवेदनशील मानिने प्रतिव्यक्ति आय सूचकमा भने अझै धेरै अन्तर रहेको र नेपालको भौगर्भिक, भौगोलिक एवम् भूराजनैतिक अवस्थितिका कारण समष्टिगत आर्थिक परिसूचकमा दिगो प्रकृतिको प्रगतिमूलक र स्थायी विकासक्रम नदेखिसकेको अवस्थामा सन् २०२२ सम्मका लागि पछि सार्ने नेपाल सरकारको धारणा प्रस्तुत गरिएको छ।
- (ट) राष्ट्रिय योजना आयोग र संयुक्त राष्ट्रसंघीय टोली नेपाल, बीच सन् २०१८ देखि पाँच वर्षका लागि संयुक्त राष्ट्रसंघीय निकायहरूबाट प्राप्त हुने सहायतालाई राष्ट्रिय लक्ष्य एवम् प्राथमिकता अनुकूल हुने गरी निर्देशित गर्न संयुक्त राष्ट्रसंघीय विकास सहयोग प्रारूप २०१८-२०२२ (United Nations Development Assistance Framework) दुवै पक्षबाट हस्ताक्षर गरी कार्यान्वयनमा ल्याइएको छ। यसले २६ वटा संयुक्त राष्ट्रसंघीय निकायहरूद्वारा सन् २०१८ देखि सन् २०२२ सम्म परिचालित हुने सहयोगलाई १. समावेशी आर्थिक वृद्धि, २. सामाजिक विकास, ३. जलवायु परिवर्तन अनुकूलन र विपद् जोखिम न्यूनीकरण, ४. सुशासन, कानूनको शासन र मानव अधिकार गरी चार बृहत क्षेत्रहरूमा प्रदान हुने ६३ करोड ५० लाख अमेरिकी डलर बराबरको सहायता प्याकेजलाई समेटेको छ। यस खाकाले नेपालले लिएको

राष्ट्रिय प्राथमिकता र सन् २०३० सम्म कार्यान्वयनमा रहने दिगो विकास लक्ष्य हासिल गर्नमा थप सहयोग पुग्ने अपेक्षा गरिएको छ ।

- (ठ) दीर्घकालीन सोच, आवधिक योजना, क्षेत्रगत नीति तथा रणनीतिक कार्यक्रम तर्जुमा गर्दा अपेक्षित नतिजा हासिल गर्न तत्कालीन समयमा प्रभाव पार्नसक्ने सम्भावित विभिन्न तत्वहरूलाई के-कस्तो रूपमा प्रयोग गर्दा नतिजा हासिल गर्न सकिन्छ भनेर समष्टिगत आर्थिक मोडल तयार गर्न सीजीआई(जेम प्याक (CGE-GEM PACK) सम्बन्धी तालिम प्रदान गरिएको र नेपालको समष्टिगत आर्थिक मोडल (GEMNeW) तयार गरिएको छ ।
- (ड) नेपाल सरकारको मिति २०७४/८/८ गतेको निर्णयानुसार बूढीगण्डकी जलविद्युत आयोजना निर्माण सम्बन्धमा लगानीको खाका तयार गर्न आयोगका उपाध्यक्षको संयोजकत्वमा गठित समितिले बूढीगण्डकी जलविद्युत आयोजना निर्माण गर्न आवश्यक पर्ने आयोजना निर्माणको मोडालिटी सहितको “लगानी खाका” नेपाल सरकारलाई प्रस्तुत गरेको थियो । प्रतिवेदनमा जलविद्युत लगानीको वर्तमान अवस्था, आगामी १० वर्षभित्र विद्युत क्षेत्रमा आवश्यक लगानी, माग र आपूर्तिको अवस्था, जलाशययुक्त आयोजनाको आवश्यकता, बूढीगण्डकी जलाशययुक्त जलविद्युत आयोजनाको लागत, ठेक्काको मोडालिटी, आर्थिक सम्भाव्यता, लगानीका विकल्प, आयोजनाबाट समष्टिगत आर्थिक स्थितिमा पर्ने प्रभाव लगायतका विषयहरू समावेश गरिएका छन् । यससम्बन्धी थप विवरण अनुसूची - ७ मा उल्लेख गरिएको छ ।
- (ढ) आर्थिक वर्ष २०७५/७६ को लागि नेपाल सरकारको वार्षिक नीति तथा कार्यक्रम र बजेट तथा कार्यक्रममा रहेका आयोगको कार्यक्षेत्रमा पर्ने कार्यहरू समेटी कार्य जिम्मेवारी सहितको राष्ट्रिय योजना आयोगको वार्षिक कार्यान्वयन कार्ययोजना, २०७५ आयोगबाट स्वीकृत गरी कार्यान्वयनमा लिएको छ । यस कार्ययोजनामा उल्लेखित आ.व. २०७५/७६ मा आयोगबाट सम्पादन गरिने राष्ट्रिय महत्वका र दूरगामी प्रभाव राख्ने महत्वपूर्ण कार्यहरूमा चालु चौधौँ योजनाको दुई वर्षको समीक्षा, नेपालको दीर्घकालीन सोच २१०० र पन्ध्रौँ योजनाको तर्जुमा, राष्ट्रिय तथ्यगत विवरणको तयारी, आर्थिक पूर्वसावधानी प्रणालीको विकास तथा स्थापना, आयोजना बैंकको तयारी तथा स्थापना, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीको सुदृढिकरण तथा विस्तार, राष्ट्रिय तथ्याङ्क विकास रणनीति तर्जुमा तथा कार्यान्वयन एवम् योजना तर्जुमा तथा विकास व्यवस्थापन सम्बन्धित कार्यहरू रहेका छन् ।

### ३.१.२ अनुगमन, मूल्याङ्कन तथा अनुशिक्षण

आयोगले अनुगमन, मूल्याङ्कन तथा अनुशिक्षणका माध्यमबाट विकाससम्बन्धी नीति, योजना, कार्यक्रम तथा आयोजनालाई उपलब्ध गराइएको साधन श्रोतको उच्चतम उपयोग गर्दै तोकिएको समयमा कार्यसम्पन्न गरी लक्षित उद्देश्य हासिल गर्न गराउन विभिन्न नीतिगत, कानुनी तथा संस्थागत प्रयास गर्दै आएको छ । यस सम्बन्धमा आर्थिक वर्ष २०७४/७५ मा भएका प्रमुख कार्य एवम् उपलब्धि देहाय बमोजिम रहेका छन् ।

- (क) आयोगको गठन आदेशको दफा ६ को खण्ड (ख) 'अनुगमन तथा मूल्याङ्कन' अन्तर्गत मुलुकको विकास सम्बन्धी नीति, योजना, कार्यक्रम तथा आयोजनाको कार्यान्वयन, प्रतिफल तथा प्रभावको विश्वसनीय र प्रभावकारी अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीको विकास गर्ने तथा त्यसलाई नेपाल सरकारका विभिन्न निकायहरूमा लागू गरी संस्थागत गराउने कार्यदेश अनुरूप सरकारी निकायहरूमा अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणाली, पद्धति र प्रकृतिलाई संस्थागत एवम् व्यवस्थित गर्दै कानूनद्वारा निर्देशित गर्न अनुगमन तथा मूल्याङ्कन सम्बन्धी विद्येयकको मस्यौदा तयार भएको छ ।
- (ख) संघीयता कार्यान्वयनको सन्दर्भ र दिगो विकासका लक्ष्यको अनुगमन तथा आवधिक रूपमा प्रगति समीक्षा गर्न र राष्ट्रिय प्राथमिकता एवम् राष्ट्रिय महत्वका आयोजनाहरूको अनुगमन तथा मूल्याङ्कनलाई थप प्रभावकारी बनाउन विद्यमान अनुगमन तथा मूल्याङ्कन दिग्दर्शन, २०७० लाई परिमार्जन गरिएको छ ।
- (ग) राष्ट्रिय अनुगमन मूल्याङ्कन दिग्दर्शन, २०७० को प्रावधान बमोजिम अन्तर मन्त्रालय प्रकृतिका विकाससँग सम्बन्धित समस्याहरूलाई समाधानका सही उपायहरू पहिल्याइ समयमै उचित निकास दिन र लक्षित नतिजा हासिल गर्न सम्माननीय प्रधानमन्त्रीज्यूको अध्यक्षतामा राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ४०औं, ४१औं र ४२औं बैठक गरी तीन पटक बैठक सम्पन्न भएका छन् ।

राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ४०औं बैठक मिति २०७४ भाद्र १९ मा बसेको थियो । उक्त बैठकले स्थानीय तहको प्रशासनिक संरचना स्पष्ट नहुँदा जनशक्ति व्यवस्थापन र सेवा प्रवाहमा समस्या परेकोले सामान्य प्रशासन मन्त्रालयले संयोजन गरी संघीय मामिला तथा स्थानीय विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि विकास, पशुपन्छी विकास, महिला, बालबालिका तथा समाज कल्याण, उद्योग, सहकारी तथा गरिबी निवारण, भौतिक पूर्वाधार, खानेपानी तथा सरसफाई र सिंचाइ मन्त्रालयको प्रतिनिधित्व रहने कार्यदल गठन गर्ने निर्णय गरेको थियो । त्यसैगरी इच्छुक भूकम्प प्रभावितलाई पूर्व घोषणा बमोजिम सहूलियतपूर्ण रूपमा र सामूहिक जमानीमा निर्व्याजी ऋण उपलब्ध गराउने सम्बन्धमा अर्थ मन्त्रालय र नेपाल राष्ट्र बैकले नीतिगत व्यवस्था गर्ने निर्णयहरू भएको थियो ।

समितिको ४१औं बैठक मिति २०७४ पौष २१ मा बसेको थियो । बैठकले मन्त्रालयहरूबाट स्थानीय तहमा हस्तान्तरित कामका विषयमा आ-आफ्नो विषयगत क्षेत्रमा आवश्यकता अनुसार शाखागत कार्य जिम्मेवारी, नमूना कानून, मापदण्ड तथा कार्यविधि तयार गरी सबै गाउँपालिका तथा नगरपालिकालाई २०७४ माघ मसान्तभित्रमा उपलब्ध गराउने, स्थानीय तहले प्राप्त अनुदान रकमबाट विषयगत क्षेत्रका कार्यक्रम सञ्चालनका लागि गरेको बाँडफाँट, कार्यान्वयन सम्बन्धी व्यवस्था, कार्यरत जनशक्ति तथा तिनीहरूको क्षमता, सेवा प्रवाहमा रहेका सवाल लगायतका विषयमा राष्ट्रिय योजना आयोगको संयोजकत्व तथा अर्थ र संघीय मामिला तथा स्थानीय विकास



मन्त्रालयको संलग्नतामा २०७४ माघ मसान्तभित्र केही स्थानीय तहको अध्ययन गराई आवश्यक नीतिगत व्यवस्थाका लागि सुभाब दिन लगाउने निर्णय भएका थिए ।

समितिको ४२ औं बैठक २०७५ जेठ २९ गते बसेको थियो । उक्त बैठकलाई निर्देशन दिने क्रममा सम्माननीय प्रधानमन्त्रीबाट विषयगत मन्त्रालयको आफ्नो कार्य क्षेत्र सम्बन्धी विषयमा प्रोफाइल तयार गर्ने, मन्त्रालयसँग सम्बन्धित क्षेत्रमा नीतिगत, प्रक्रियागत एवम् बिहंगम प्रकृतिका समस्या तथा सवाल भए सो पहिचान गरी समितिमा पेश गर्न निर्देशन भएको थियो । तदनुरूप प्रोफाइल तयार गर्न र त्यस्ता समस्याहरूको सुची तयार गर्न लगाई २०७५ श्रावण समान्तभित्र आयोगलाई उपलब्ध गराउन सम्बद्ध सबै मन्त्रालयलाई पत्राचार गरिएको छ । उल्लिखित तीनवटै बैठकका निर्णय तथा कार्यान्वयनको स्थिति अनुसूची - ८ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

(घ) आयोगलाई प्राप्त कार्यादेश अनुसार मूल्याङ्कनका सन्दर्भमा गत आ.व. मा आयोगबाट तीनवटा कार्यक्रम र आयोजनाको आन्तरिक मूल्याङ्कन र तीनवटा कार्यक्रम/आयोजनाको तेस्रो पक्षबाट मूल्याङ्कन गरी प्राप्त प्रतिवेदनका आधारमा आवश्यक सुधारका लागि कार्यान्वयनको प्रकृया अधि बढाइएको छ । दुईवटा कार्यक्रम/आयोजनाको तेस्रो पक्षबाट मूल्याङ्कन कार्य प्रारम्भ गरिएको छ । यी मूल्याङ्कनहरूको संक्षिप्त विवरण तल तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ ।

### तालिका १: आ. व.२०७४/७५ मा कार्यक्रम/आयोजनाहरूको आन्तरिक र तेस्रो पक्ष मूल्याङ्कनसम्बन्धी विवरण

| क्र.स. | मूल्याङ्कन गरिएको विषय             | मूल्याङ्कनको किसिम     | मूल्याङ्कन खर्चको स्रोत | मूल्याङ्कनको अवस्था                                |
|--------|------------------------------------|------------------------|-------------------------|--|
| १.     | पर्यटन पूर्वाधार विकास कार्यक्रम   | आन्तरिक मूल्याङ्कन     | आयोगको स्वीकृत बजेट     | सम्पन्न भई प्रतिवेदन प्राप्त भइसकेको               |
| २.     | राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र  | आन्तरिक मूल्याङ्कन     | आयोगको स्वीकृत बजेट     | सम्पन्न भई प्रतिवेदन प्राप्त भइसकेको               |
| ३.     | सहलगानी खानेपानी तथा सरसफाई आयोजना | आन्तरिक मूल्याङ्कन     | आयोगको स्वीकृत बजेट     | सम्पन्न भई प्रतिवेदन प्राप्त भइसकेको               |
| ४.     | विद्यालय क्षेत्र विकास कार्यक्रम   | तेस्रो पक्ष मूल्याङ्कन | ३ie को सहयोग            | आधारभूत प्रतिवेदन तयार भएको                        |
| ५.     | प्रारम्भिक बाल विकास कार्यक्रम     | तेस्रो पक्ष मूल्याङ्कन | यूनिसेफको सहयोग         | अन्तिम प्रतिवेदन प्राप्त                           |
| ६.     | गरिवी निवारण कोष                   | तेस्रो पक्ष मूल्याङ्कन | विश्व बैंकको सहयोग      | अन्तिम प्रतिवेदन प्राप्त                           |
| ७.     | कृषि तथा खाद्य सुरक्षा आयोजना      | तेस्रो पक्ष मूल्याङ्कन | FPSN आयोजनाको सहयोग     | मूल्याङ्कनकर्ता छनौट भई मूल्याङ्कन कार्य भैरहेको । |

उल्लिखित मूल्याङ्कन प्रतिवेदनहरूको संक्षिप्त निष्कर्ष अनुसूची - ९ मा उल्लेख गरिएको छ ।

- (ङ) अनुगमन तथा मूल्याङ्कन सम्बन्धी ५ वर्षे कार्ययोजना (सन् २०१६-२०२०) तर्जुमा गरिएको छ । उक्त कार्ययोजनाका आधारमा वार्षिक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन योजना २०७४/७५ तयार गरी कार्यान्वयन गरिएको थियो । राष्ट्रिय गौरवका आयोजनाहरूको आ.व. २०७४/७५ अवधिको प्रगति प्रतिवेदन तयार गरी प्रकाशन गर्ने चरणमा रहेको छ ।
- (च) आ.व. २०७४/०७५ मा आयोगका पदाधीकारीहरूबाट देहायका कार्यक्रम/आयोजनाहरू सञ्चालनको अवस्थाको अनुगमन गरी प्रतिवेदन पेश भएको छ ।
- मेलम्ची खानेपानी आयोजना
  - नारायणघाट-मुगलिङ सडक आयोजना
  - व्यवसायिक कृषि तथा व्यापार आयोजना
  - प्रधानमन्त्री कृषि आधुनिकरण परियोजना, तरकारी जोन, चितवन
  - सुपरजोन कार्यान्वयन इकाई (धान), वनियानी भापा
  - कस्टम हायरिड सेन्टर, भापा
  - गोरखाली र इलामेली चिया उत्पादन संस्था, फिक्कल, इलाम
  - पूर्वाङ्क डेरी उद्योग- भापा, अर्जुनधारा
  - घरेलु तथा साना उद्योग विकास समिति (स्याङ्जा)

उपरोक्त अनुगमन प्रतिवेदनका सारांश अनुसूची-१० मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

### ३.१.३ तहगत समन्वय एवम् सहकारीत्मक संघीयताको सुदृढीकरण

- (क) राष्ट्रिय विकासका लक्ष्य तथा राष्ट्रिय आवधिक योजनासँग प्रदेश र स्थानीय तहले तर्जुमा गर्ने विकास कार्यक्रमको तादात्म्यता र सामञ्जस्यता कायम गर्न प्रदेश तथा स्थानीय तहका आवधिक योजना तथा वार्षिक विकास कार्यक्रम तर्जुमा पद्धति र प्रकृत्यालाई व्यवस्थित गर्दै तीनै तहका योजना र कार्यक्रमहरूका बीचमा परिपूरकता र साभेदारीलाई अभिवृद्धि गर्ने गरी योजना तर्जुमा दिग्दर्शन तयार गरिएको छ ।
- (ख) प्रदेश सरकारहरूले आर्थिक वर्ष २०७५/७६ को वार्षिक बजेट तथा कार्यक्रम तर्जुमा सँगै अन्तर-सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ मा व्यवस्था भएअनुसार तयार गर्नुपर्ने तीन आर्थिक वर्षको मध्यमकालीन खर्च संरचनाको दस्तावेज तयारी कार्यमा समन्वय तथा सहजीकरण गरिएको थियो ।
- (ग) अर्थ मन्त्रालयबाट तयार गरिएको सार्वजनिक निजी साभेदारी ऐनको मस्यौदामाथि सार्वजनिक निजी साभेदारी नीति, २०७२ मा उल्लेख भएको सार्वजनिक निजी साभेदारी निर्देशक

समितिमा पुनरावलोकन गरी ऐनमा राष्ट्रिय योजना आयोगका उपाध्यक्षको अध्यक्षतामा छरितो समिति बनाउने र नीतिमा उल्लेख भएको सार्वजनिक निजी साभेदारी नियमन समितिमा राष्ट्रिय योजना आयोगका माननीय सदस्यको अध्यक्षतामा समिति गठन गर्न सम्बद्ध निकायलाई लेखी पठाउने सुभाब प्रस्तुत गरिएको । सार्वजनिक निजी साभेदारी नीति, २०७२ मा उल्लेख भएको सार्वजनिक निजी साभेदारी केन्द्र राष्ट्रिय योजना आयोगमा रहने गरी केन्द्रका कार्यमा समन्वय, सहजीकरण, अध्ययन तथा अनुसन्धान, निर्देशन र दिग्दर्शन तयारी, सम्भाव्यता अध्ययन, खरिद कागजात र नमूना आयोजना सम्भौता अध्ययन लगायतका कार्यहरू स्पष्ट रूपमा राख्ने तर कार्यकारी कार्यहरू समावेश नगर्ने गरी ऐनमा समावेश गर्ने सुभाब दिइएको ।

- (घ) आयोगको मिति २०७४ साल माघ ७ गतेको निर्णय अनुसार निजगढ अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल निर्माणका लागि प्रस्तावित विकल्पमध्ये नेपाल सरकारको समेत लगानी हुनेगरी प्रतिस्पर्धात्मक विधि अपनाई इन्जिनियरिङ, खरिद र निर्माण (Engineering, Procurement and Construction) मोडलमा अधि बढाउन उपयुक्त हुने र विमानस्थल निर्माण भएपछि विश्वसनीय अन्तर्राष्ट्रिय तथा स्वदेशी निजी लगानी सहितको सार्वजनिक निजी साभेदारी मोडल अपनाउन उपयुक्त हुने भनी संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्ययन मन्त्रालयमा राय प्रस्तुत गरिएको थियो ।
- (ङ) गौतमबुद्ध अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलको सञ्चालन र व्यवस्थापनका सम्बन्धमा विमानस्थल निर्माणपश्चात सञ्चालनका लागि नेपाल सरकारको तत्काल उपलब्ध साधन र श्रोतले नभ्याउने अवस्थामा प्रतिस्पर्धात्मक आधारमा विश्वसनीय अन्तर्राष्ट्रिय तथा स्वदेशी लगानी सहितको सार्वजनिक निजी साभेदारी मोडल अपनाउन उपयुक्त हुने, सार्वजनिक निजी साभेदारी मोडल अपनाउँदा राष्ट्रिय हित र सुरक्षा, गुणस्तरीय सेवा, सामाजिक आर्थिक पक्ष, राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय कानून एवम् सार्वजनिक र निजी क्षेत्रको जिम्मेवारी, लागत लाभ बाँडफाँट, जोखिम पक्ष समेतको विश्लेषण गरी जिम्मेवारी र काम कर्तव्यको स्पष्टता हासिल गर्ने राय प्रस्तुत गरिएको ।
- (च) पश्चिम सेती आयोजना, खिम्ती तथा ढल्केवर सबस्टेशनसम्बन्धी प्रगति, काठमाडौं तराइ-मधेश द्रुतमार्ग आयोजना, रेल आयोजना, माथिल्लो तामाकोशी जलविद्युत आयोजना लगायतका विषयहरूमा सरोकारवाला निकायहरू सहितको समन्वयात्मक बैठक गरिएको ।
- (छ) प्रादेशिक तथा स्थानीय तहमा स्थानीय तहका पदाधिकारी, कर्मचारी, निजीक्षेत्र, नागरिक समाजका प्रतिनिधिहरूलाई इलाम, म्याग्दी, स्याङ्जा र कैलाली जिल्लामा सार्वजनिक निजी साभेदारी सम्बन्धी अभिमुखीकरण गोष्ठी सञ्चालन गरिएको ।
- (ज) नेपालमा खाद्य तथा पोषण सुरक्षाको रणनीतिक समीक्षा गर्ने कार्य सम्पन्न गरिएको ।
- (झ) अलैंची विकास नीति, समृद्ध किसान समृद्ध समाज परियोजना, सहकारीमार्फत गरिबी निवारण कार्यक्रम तथा खाद्य तथा पोषण सुरक्षा आयोजना लगायतका विभिन्न विषयगत कार्यक्रम/आयोजनाहरूका सम्बन्धमा राय प्रदान गरिएको ।

- (ज) शिक्षा मन्त्रालयमा प्राविधिक शिक्षा र व्यवसायिक तालिमको मार्गचित्र (टीइभेट रोडम्याप), राष्ट्रिय व्यवसायिक योग्यता प्रारूप र टीइभेट कोष तयार गर्ने कार्य अघि बढाइएको ।
- (ट) राष्ट्रिय कृषि नीति २०६१ को पुनरावलोकन, राष्ट्रिय रोजगार नीति २०७१, राष्ट्रिय व्यवसायजन्य सुरक्षा र स्वास्थ्य नीति २०७४, बालश्रम निवारण सम्बन्धी राष्ट्रिय गुरुयोजना २०७४( २०८४, युथ भिजन २०७५, अपाङ्गतासम्बन्धी १० वर्षे राष्ट्रिय नीति (२०७४-२०८३) उपर विषयगत मन्त्रालयलाई राय प्रदान गरिएको ।

### ३.१.४ अध्ययन, अनुसन्धान तथा अन्वेषण

- (क) सबैका लागि उर्जाको पहुँच पुर्याउने उद्देश्य हासिल गर्न स्थानीय तहको सहभागितामा मुलुकभरका सबै स्थानीय तहमा विद्युत्को उत्पादन तथा तिनलाई राष्ट्रिय विद्युत् वितरण प्रणालीमा आवद्ध गर्ने सम्भाव्यता सहितको 'Optimal Distributed Generation Resource Placement Planning with Grid Interconnection Considering Energy Access to all with Participation of Local Level Governments' विषयक अध्ययन गरिएको । सो अध्ययन प्रतिवेदन आवश्यक कार्यान्वयनका लागि जलस्रोत, उर्जा तथा सिंचाइ मन्त्रालयमा पठाइएको छ । साथै, Analysis of Capacity Factor of Nepalese Hydropower Plants Owned by NEA and Private Sector सम्बन्धी अध्ययन गरिएको छ ।
- (ख) 'एकीकृत सहरी विकास मापदण्ड' तर्जुमा गरी प्रकाशन गरिएको छ । 'राष्ट्रिय सहकारी आवास नीति' र 'खाद्य हरियाली शहरसम्बन्धी निर्देशिका एवम् कार्यविधि' तयार गरी कार्यान्वयनका लागि सहरी विकास मन्त्रालयमा पठाइएको छ । 'काठमाडौं उपत्यकामा कृषक बजार, कृषि सहकारी बजारको सम्भाव्य स्थल छनौट' सम्बन्धी अध्ययन गरिएको छ । 'ग्रामीण दूरसञ्चार कोषको उपयोगिता' सम्बन्धमा अध्ययन कार्य गरिएको छ । उल्लिखित अध्ययन प्रतिवेदनहरूको सार संक्षेप क्रमशः अनुसूची - ११, अनुसूची - १२ र अनुसूची - १३ मा राखिएको छ ।
- (ग) दिगो सहरी विकास सूचकाङ्क (Sustainable Urban Development Index, SUDI) सम्बन्धी निर्देशिका/कार्यविधि तर्जुमा गरिएको छ । सो को आधारमा दमक नगरपालिकाको सूचकाङ्क नमूना मापन गरिएको छ । उक्त प्रतिवेदनको सार संक्षेप अनुसूची - १४ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।
- (घ) २०७४ साउन २७ देखि ३० सम्म नेपालमा लगातार आएको भिषण वर्षा र त्यसपछिको बाढीले पुऱ्याएको क्षतिको अनुमान तथा बाढीपश्चातको पुनर्उत्थान आवश्यकता आँकलन (Post Flood Recovery Needs Assessment) तयार गरी सम्माननीय प्रधानमन्त्रीसमक्ष प्रस्तुत गरिएको । यस सम्बन्धी प्रतिवेदनको सार संक्षेप अनुसूची - १५ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।
- (ङ) सार्वजनिक निजी साभेदारीको अवधारणा, मान्यता, सिद्धान्त, विगतका प्रयासहरू र भावी संभावनाहरू समेटिएको जानकारीमूलक सार्वजनिक निजी साभेदारी स्रोत-पुस्तिका प्रकाशन गरिएको छ ।

### ३.२ चौधौ योजनाको दुई आर्थिक वर्षको प्रगति स्थिति

चौधौ योजनामा स्वाधीन, समुन्नत तथा समाजवाद उन्मुख राष्ट्रिय अर्थतन्त्र एवम् समृद्ध नेपाली सोच उल्लेख भएको छ। यो योजनाको उद्देश्य उत्पादनशील रोजगारीउन्मुख र न्यायपूर्ण वितरण सहितको उच्च आर्थिक वृद्धिद्वारा द्रुत गरिबी न्यूनीकरण गर्दै आर्थिक सामाजिक रूपान्तरण गर्ने रहेको छ। सो अनुसार देहायका पाँच प्रमुख रणनीति रहेका छन्।

- (क) कृषि क्षेत्रको रूपान्तरण, पर्यटन, औद्योगिक एवम् साना तथा मझौला व्यवसायको विस्तार मार्फत उत्पादन बृद्धि गर्ने।
- (ख) ऊर्जा, सडक तथा हवाई यातायात, सूचना तथा सञ्चार र ग्रामीण-सहरी तथा त्रिदेशीय आबद्धता विकासका लागि पूर्वाधार निर्माण गर्ने।
- (ग) सामाजिक विकास र सामाजिक सुरक्षा एवम् सामाजिक संरक्षणमा जोड दिँदै मानव विकासमा उच्च तथा दिगो सुधार गर्ने।
- (घ) आर्थिक, सामाजिक एवम् शासकीय सुधार, कुशल एवम् जवाफदेही सार्वजनिक वित्त, स्वच्छ, पारदर्शी र जनमैत्री सार्वजनिक सेवा एवम् मानव अधिकारको संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्दै समग्र सुशासन प्रवर्द्धन गर्ने।
- (ङ) लैङ्गिक समानता, समावेशीकरण, वातावरण संरक्षण, विज्ञान तथा प्रविधिको उच्चतम प्रयोग तथा संस्थागत क्षमता बढाउने।

सो अनुसार समष्टिगत लक्ष्यहरूको अवस्था तालिका २ मा प्रस्तुत गरिएको छ।

**तालिका २: प्रमुख समष्टिगत सूचकको चौधौ योजना अवधिको लक्ष्य तथा पहिलो दुई वर्षको प्रगति**

| क्र.सं. | सूचक/लक्ष्य                         | एकाई    | आव<br>२०७२/७३<br>को अवस्था | योजना<br>अवधिको लक्ष्य | २०७३/७४<br>को<br>उपलब्धि | २०७४/७५ को<br>अनुमानित<br>उपलब्धि |
|---------|-------------------------------------|---------|----------------------------|------------------------|--------------------------|-----------------------------------|
| १       | वार्षिक आर्थिक बृद्धिदर             | प्रतिशत | ०.८                        | ७.२                    |                          | ५.९                               |
|         | कृषि                                |         | १.३                        | ४.७                    | ५.२                      | २.८                               |
|         | गैरकृषि                             |         | ०.६                        | ८.४                    | ८.५                      | ७.१                               |
|         | उद्योग                              |         |                            | १०.६                   | १२.१                     | ९.३                               |
|         | सेवा                                |         |                            | ७.८                    | ७.५                      | ६.७                               |
| २       | मद्रास्फिति दर                      | प्रतिशत | ९.५                        | ७.५                    | ४.५                      | ६.०                               |
| ३       | गरिबीको रेखामुनि रहेका<br>जनसङ्ख्या | प्रतिशत | २१.६                       | १७.०                   | -                        | -                                 |

| क्र.सं. | सूचक/लक्ष्य                                   | एकाई          | आव<br>२०७२/७३<br>को अवस्था | योजना<br>अवधिको लक्ष्य | २०७३/७४<br>को<br>उपलब्धि | २०७४/७५ को<br>अनुमानित<br>उपलब्धि |
|---------|---|---------------|----------------------------|------------------------|--------------------------|-----------------------------------|
| ४       | बहुआयामिक गरिबीको सूचकांक                     | सूचकांक       |                            |                        | -                        | २८.६                              |
| ५       | १५ देखि २४ वर्ष उमेर समूहको साक्षरता दर       | प्रतिशत       | ८८.६                       | ९२.०                   | ८८.६                     | ९०                                |
| ६       | मानव विकास सूचकांक                            | सूचकांक       | ०.५४                       | ०.५७                   | ०.५५८                    | -                                 |
| ७       | लैङ्गिक सशक्तीकरण सूचकांक                     | सूचकांक       | ०.५६                       | ०.५८                   | -                        | -                                 |
| ८       | आर्थिक जोखिम सूचकांक (EVI)                    | सूचकांक       |                            |                        | -                        | २८.४                              |
| ९       | मानव सम्पत्ति सूचकांक (HAI)                   | सूचकांक       | ६८.७                       |                        | -                        | ७१.२                              |
| १०      | गार्हस्थ्य प्रतिव्यक्ति आम्दानी (GDP per cap) | रु.<br>हजारमा |                            |                        | ९२.०                     | १०३.३                             |

विगतका वर्षहरूमा प्रायः लक्षित उच्चदरको आर्थिक वृद्धि हासिल हुन नसके पनि गत आ.व. २०७३/७४ मा ७.४ प्रतिशत वृद्धि भएको अनुमान छ । तर, मनसुनमा भएको ढिलाइ र तराई-मधेशमा आएको बाढीका कारण वर्षे बालीको उत्पादनलाई असर परेको र हिउँदे वर्षा नभएका कारण हिउँदे बालीको उत्पादनमा पनि कमी आउने भएकाले कृषिमा अपेक्षित वृद्धि नहुँदा चालु आ.व. २०७४/७५ मा करिब ५.९ प्रतिशतसम्मको वृद्धिदर हासिल हुनसक्ने प्रारम्भिक अनुमान छ ।

वर्तमान सरकारले सिर्जना गरिरहेको उच्च आर्थिक वृद्धिको आधारशीलालाई मध्यनजर राख्दै आगामी तीन वर्षमा औसत आर्थिक वृद्धिदर आधारभूत मूल्यमा औसत ७.९ प्रतिशत हुने लक्ष्य राखिएको छ । यस अनुसार कृषि क्षेत्रको औसत वृद्धिदर ५.२ र गैर कृषि क्षेत्रको औसत वृद्धिदर १०.१ प्रतिशत हुने अनुमान गरिएको छ । यस अवधिमा मुद्रास्फिति दर ६.५ प्रतिशतभित्र रहने अनुमान छ । आगामी तीन वर्षको अवधिमा गरिबीको रेखामुनि रहेका जनसंख्या करीब १४ प्रतिशतमा झर्ने र मानव विकास सूचकाङ्क करिब ०.६१ पुग्ने अनुमान छ ।

आर्थिक वृद्धिदर आँकलन गर्दा स्थिर सरकार, संघीय संरचना अनुसार तीन तहका सरकारबाट प्रभावकारी रूपमा हुने कार्यक्रम तथा बजेटको कार्यान्वयन, उर्जा उपलब्धतामा हुने उल्लेख्य वृद्धि, केही बृहत आयोजना सम्पन्न हुने अवस्था, पुननिर्माण, निर्माण कार्यमा तीव्रता, पर्यटक आगमनमा उल्लेख्य वृद्धि जस्ता सकारात्मक परिवर्तन हुने अनुमान गरिएको छ । यसबाट नेपाल सरकारको

नीति कार्यक्रमले राखेको आगामी ५ वर्ष भित्र दुई अंकको आर्थिक वृद्धि गर्ने लक्ष्य प्राप्त हुनेछ । साथै आगामी ५ वर्षमा हालको प्रतिव्यक्ति आय दोब्बर भई मुलुकलाई दश वर्षभित्र मध्यम आयस्तर भएको मुलुकमा स्तरोन्नति हुन समेत सहयोग पुग्नेछ ।

### तालिका ३: प्रमुख विषय क्षेत्रगत सूचक तथा लक्ष्य

| क्र.सं. | सूचक/लक्ष्य   | एकाई            | आव<br>२०७२/७३<br>को अवस्था | योजना<br>अवधिको<br>लक्ष्य | २०७३/७४<br>को<br>उपलब्धि | २०७४/७५ को<br>अनुमानित<br>उपलब्धि |
|---------|---|-----------------|----------------------------|---------------------------|--------------------------|-----------------------------------|
| १       | खाद्यान्न बाली उत्पादन  | म. टन (हजारमा)  | ८१००                       | २९५९३                     | ९,७७१                    | १०,००९                            |
| २       | काठको उत्पादन   | घन फिट (लाखमा)  | ११                         | ९५                        | ५०                       | ३०                                |
| ३       | उद्योगहरूबाट रोजगारीको सिर्जना                                      | संख्या (हजारमा) | ३१९७                       | ५२३                       | ३३०९                     | १७४                               |
| ४       | निर्यात आयात अनुपात   | अनुपात          | १:११                       | १:९.९                     | १:१०                     | १:९.३                             |
| ५       | पर्यटक आगमन   | जना (हजारमा)    | ७१०                        | १२००                      | ७५३                      | १०००                              |
| ६       | पर्यटन क्षेत्रमा रोजगारी  | जना (हजारमा)    | ९०                         | ११०                       | ९५                       | ११६                               |
| ७       | राष्ट्रिय विद्युत प्रणालीबाट विद्युतमा पहुँच प्राप्त गर्ने जनसंख्या | प्रतिशत         | ५८                         | ७०                        | ६४                       | ६९                                |
| ८       | जलविद्युत उत्पादन क्षमता  | मे.वा.          | ८५१                        | २३०१                      | ९६८                      | १०४५                              |
| ९       | प्रसारण लाइन निर्माण  | कि.मि. (हजारमा) | ३७.४                       | ४०.५                      | ३८.२                     | ३९.५                              |
| १०      | सिंचित क्षेत्रफल  | हेक्टर (हजारमा) | ११५.४                      | १३१.५                     | १,२५६.४                  | १३१२.९                            |
| ११      | जम्मा सडक निर्माण   | कि.मि. (हजारमा) | २९                         | ३१                        | २९.७                     | ३०.४                              |
| १२      | जनता आवास   | संख्या (हजारमा) | ६.२                        | २६.२                      | १६.४                     | २६.४                              |
| १३      | इन्टरनेट ग्राहकको घनत्व   | प्रतिशत         | ४६.५                       | ६५                        | ५२.७                     | ५५                                |
| १४      | खुद भर्ना दर  |                 |                            |                           |                          |                                   |
|         | क) आधारभूत तह (कक्षा १-५)   | प्रतिशत         | ९६.६                       | ९८.५                      | ९७                       | ९७.२                              |
|         | ख) आधारभूत तह (कक्षा १-८)   | प्रतिशत         | ८९.४                       | ९४                        | ९१                       | ९२.३                              |
|         | ग) माध्यमिक तह (कक्षा ९-१२)   | प्रतिशत         | ३७.७                       | ४५                        | ४२                       | ४३.९                              |
| १५      | मातृ मृत्युदर (प्रति लाख जीवित जन्म)                                | जना             | २५८                        | १४५                       | २३९                      | २३५                               |
| १६      | बाल मृत्युदर (प्रति हजार जीवित जन्म)                                | जना             | ३८                         | ३०                        | ३९                       | ३९                                |
| १७      | आधारभूतस्तरका खानेपानीबाट लाभान्वित जनसंख्या                        | प्रतिशत         | ८३.६                       | ९०.०                      | ८७.०                     | ९०.०                              |

दुई वर्ष सम्पन्न भएकोमा यस अवधिसम्ममा भएका विषयगत क्षेत्रका प्रगतिका साथै आगामी तीन वर्षको लक्ष्य सहितको मध्यमकालीन खर्च संरचना अनुसारको विवरण अनुसूची - १६ मा उल्लेख गरिएको छ ।

### ३.३ अन्य विषय क्षेत्रगत कार्यसम्पादन तथा उपलब्धि

- (क) सन् २००८ देखि सार्क सदस्य राष्ट्रहरूको सहभागितामा प्रत्येक वर्ष आयोजना हुँदै आएको क्षेत्रीय विकास, आर्थिक एकीकरण तथा सहयोगका सम्भावनाहरूलाई अभिवृद्धि गर्ने साभा मञ्चका रूपमा रहेको “दक्षिण एसिया आर्थिक सम्मेलन (South Asia Economic Summit – SAES)” को दशौं संस्करण काठमाडौंमा मिति २०७४।०८।२८ देखि २९ (तदनुसार १४-१६ नभेम्बर, २०१७) सम्म आयोजना गरियो । यस सम्मेलनको मूल विषय दक्षिण एशियामा समावेशी तथा दीगो विकासका निम्ति आर्थिक एकीकरणलाई बलियो तुल्याउने रहेको थियो । उक्त सम्मेलनमा अन्तर क्षेत्रीय व्यापार तथा लगानीको सम्भाव्यता एवम् अवसरको खोजी, दीगो विकास लक्ष्यको कार्यान्वयनमा सहकार्य एवम् समन्वय, मौसम परिवर्तन तथा विपद् जोखिम न्यूनिकरणमा क्षेत्रीय सहकार्य, व्यापार, पारवहन तथा यातायात र उर्जामा क्षेत्रीय आवद्धता लगायत क्षेत्रीय आर्थिक, सामाजिक एवम् पूर्वाधार विकासका क्षेत्रमा सहकार्य र एकीकरणका विषयमा चारवटा विशेष पूर्ण सत्रहरू र १८ वटा विषयगत सत्रको माध्यमबाट गहन छलफल तथा अन्तर्क्रिया भएको थियो । उक्त सम्मेलनमा सार्क सदस्य राष्ट्रहरूका मन्त्रीहरू, सभासदहरू, सरकारी अधिकारीहरू, प्राज्ञिक एवम् अध्येताहरू, आर्थिक क्षेत्रसंग सम्बद्ध प्रवुद्ध व्यक्तिहरू, गैरसरकारी तथा निजी क्षेत्रका प्रतिनिधिहरू सहित करिब ७० विदेशी प्रतिनिधिहरू तथा २०० भन्दा बढी स्वदेशी प्रतिनिधिहरूको सहभागिता रहेको थियो । यसका अतिरिक्त यूरोपेली यूनियन र सार्क पर्यवेक्षक मुलुकहरूबाट समेत प्रतिनिधित्व रहेको थियो ।
- (ख) राष्ट्रिय योजना आयोगको कार्यादेशमा राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय नीति संवाद तथा लगानी मञ्चको विकास, सञ्चालन, समन्वय र सहजीकरण गर्ने जिम्मेवारी समेत भएअनुसार राष्ट्रिय महत्व एवम् प्राथमिकता तथा समसामयिक अन्तर्राष्ट्रिय रणनीतिक महत्वका विषयहरूमा आयोगले नीति संवादको कार्यक्रम आयोजना गर्दै आएको छ । यस क्रममा गत आर्थिक वर्षमा देहायका विषयहरूमा नीति संवाद कार्यक्रम आयोजना गरिएको थियो ।

१. **नेपालमा प्रत्यक्ष वैदेशिक लगानी** : नेपालमा प्रत्यक्ष वैदेशिक लगानीको अवस्था तथा सम्भावना विषयमा २०७४ असोज २ गते नीति संवाद कार्यक्रम आयोजना भएको थियो । आयोगका उपाध्यक्षको अध्यक्षतामा सम्पन्न उक्त कार्यक्रममा लगानी बोर्डका प्रमुख कार्यकारी अधिकृतलेनेपालमा प्रत्यक्ष वैदेशिक लगानी र त्यसका सवालहरू विषयमा प्रस्तुति गर्नुभएको थियो । साथै, निजी क्षेत्रको तर्फबाट होङ्सी शिवम् सिमेण्ट प्रा.लि. र सोलु हाइड्रोपावर प्राइभेट लिमिटेडको प्रस्तुति रहेको थियो । नेपाल सरकारका सम्बन्धित विषयक्षेत्रका मन्त्रालय एवम् विभागका पदाधिकारीको सहभागिता रहेको कार्यक्रममा प्रत्यक्ष वैदेशिक लगानीको क्षेत्रमा देखापरेका समस्या, चुनौति र लगानी आकर्षित गर्नसक्ने अवसरका क्षेत्रहरूका बारेमा गहन अन्तर्क्रिया भएको थियो ।

२. **नदीजन्य निर्माण सामग्रीहरूको व्यवस्थापन** : २०७४ कार्तिक २१ गते नेपालमा ठूला पूर्वाधारसम्बन्धी आयोजना सञ्चालनका सम्बन्धमा महत्वपूर्ण निर्माण सामग्रीको



रुपमा रहेको नदीजन्य निर्माण सामग्रीहरूको उचित एवम् प्रभावकारी व्यवस्थापनको विषयलाई समेटेर नीति संवाद कार्यक्रम आयोजना गरिएको थियो। उक्त कार्यक्रममा डा. उदयरज शर्मा र श्री डिल्ली बहादुर सिंहले कार्यपत्र प्रस्तुत गर्नुभएको थियो। कार्यक्रममा नेपाल सरकारका सम्बन्धित विषयक्षेत्रका मन्त्रालय एवम् विभागका पदाधिकारीहरूको सहभागिता थियो।

३. **यातायात पूर्वाधार** : नेपालले हालैका समयमा भोग्दै आएको यातायात पूर्वाधारसम्बन्धी समस्यालाई मध्यनजर गर्दै प्रतिनिधिसभाका सदस्य, नेपाल सरकारका सचिव, विज्ञ एवम् सरोकारवालाको सहभागितामा २०७४ पौष १४ गते नीति संवाद कार्यक्रम आयोजना गरिएको थियो। कार्यक्रममा व्यवस्थापिका संसदका सदस्य एवम् पूर्व स्वास्थ्य मन्त्री माननीय श्री गगन थापाले सहरी पूर्वाधार विकासका मोडल र विधिका सम्बन्धमा प्रस्तुति गर्नुका साथै सो सम्बन्धी अध्ययन प्रतिवेदन आयोगलाई हस्तान्तरण गर्नुभएको थियो।

४. **“Economic and Social Survey of Asia and the Pacific 2018” र “Countries with Special Needs Development Report for Asia and the Pacific 2018”** : यूएनस्क्र्यापले तयार गरेको उल्लिखित दुईवटा प्रतिवेदनहरूलाई लिएर सरोकारवाला सरकारी, दातृ निकाय तथा विकास साभेदार निकाय, गैह्र सरकारी तथा विषय विज्ञहरूको सहभागिता रहेको नीति संवाद कार्यक्रम आयोजना गरीएको थियो। उक्त कार्यक्रममा यूनस्क्र्यापका आर्थिक मामिला अधिकृत डा. युसुके टाटेनोले प्रस्तुति गर्नुका साथै प्रतिवेदनले समेटेका विषयहरूमा गहन छलफल तथा अन्तर्क्रिया भएको थियो।

- (ग) एसियाली विकास बैङ्कको प्राविधिक सहयोगमा आयोजना व्यवस्थापन कार्यविधिसम्बन्धी उच्चस्तरीय कार्यशाला र दीर्घकालीन सोचसम्बन्धी गोष्ठी आयोजना गरिएको थियो। गोष्ठीको पृष्ठपोषणबाट आयोजना व्यवस्थापन सम्बन्धी कार्यविधिको मस्यौदा तयार गरिएको छ।
- (घ) समष्टिगत आर्थिक क्षेत्र, विकासका समसामयिक विषयहरू तथा आयोगको गतिविधिहरू समेटि नेपाल टेलिभिजनबाट दश श्रृंखलाको विकास बहस कार्यक्रम सञ्चालन गरियो। त्यसैगरी, सार्वजनिक निजी साभेदारीको अवधारणा, बिद्यमान अवस्था, समस्या, सम्भावना र भावी गन्तव्य समेटि जानकारीमूलक डकुमेन्ट्री तयार गरिएको थियो।
- (ङ) स्वयम् सेवक परिचालन कार्यविधि, २०७४ तयार गरी लागू गरिएको र सो कार्यविधि वमोजिम राष्ट्रिय विकास स्वयम् सेवक सेवाका कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिएको, स्वयमसेवक सेवा सम्बन्धी वृत्तचित्र निर्माण गरी स्वयमसेवकहरूको अभिमुखीकरण कार्यक्रम तथा क्षमता विकासका कार्यक्रमहरूमा सन्दर्भ सामग्रीको रूपमा प्रयोग गरिएको, स्वयम सेवा प्रवर्द्धनका लागि बहस पैरवी सम्बन्धी २५ वटा कार्यक्रम सम्पन्न गरिएको र राष्ट्रिय विकास स्वयम् सेवक सेवाको प्रभाव मूल्याङ्कनसम्बन्धी कार्य गरिएको थियो। हालको नयाँ सांगठनिक पुनसंरचना अनुसार राष्ट्रिय विकास स्वयम सेवक सेवा कार्यक्रम युवा तथा खेलकुद मन्त्रालय अन्तरगत सातवटै प्रदेशका सामाजिक विकास मन्त्रालयबाट हेर्ने गरिएको छ।

- (च) सार्वजनिक प्रशासनलाई स्वच्छ, पारदर्शी एवम् सुशासनयुक्त गर्ने उद्देश्यसहित सूचना प्रविधिको उच्चतम उपयोग गर्दै आयोगको परिचय, कार्यक्षेत्र, जिम्मेवारीहरू तथा आयोगले गरेका निर्णय तथा कामकारवाहीहरूका सम्बन्धमा सर्वसाधारण जनताको सहज र सरल पहुँचका लागि प्रयोगकर्तामैत्री बनाउन वेबसाइटमा सुधार गरियो। हाल आयोगका गतिविधि, समाचार तथा सूचना र प्रकाशनहरू नियमित रूपमा वेबसाइटमा राख्ने गरिएको छ।
- (छ) कोलम्बो प्लान, संयुक्त राष्ट्र संघको एसिया तथा प्रशान्त क्षेत्रका लागि आर्थिक तथा सामाजिक परिषद् (UNESCAP), संयुक्त राष्ट्र संघीय आर्थिक तथा सामाजिक मामिला विभाग (UNDESA), अल्प विकसित राष्ट्र (LDC), भूपरिवेष्ठित विकासशिल राष्ट्र (LLDC) को नेपालको सम्पर्क बिन्दु र सचिवालयको रूपमा आयोगले कार्य गर्दै आएको छ।

### ३.४ गणना, सर्वेक्षण तथा राष्ट्रिय लेखा अनुमान

#### (क) राष्ट्रिय आर्थिक गणना २०७५

नेपालको तथ्याङ्कीय इतिहासमा पहिलोपटक मिति २०७५ साल वैशाख १ गतेदेखि ज्येष्ठ मसान्तसम्म आर्थिक गणना कार्यक्रम सञ्चालन गरिएको थियो। यस अन्तर्गत स्थलगत तथ्याङ्क संकलनको कार्य सम्पन्न भएको छ। देशका ७७ वटै जिल्लामा जिल्ला आर्थिक गणना कार्यालय स्थापना गरी उद्योग, व्यवसाय, सहकारी, बैंक तथा वित्तीय संस्था, गैरसरकारी संस्था, अस्पताल, स्कुल, कलेज, धार्मिक संघ संस्था लगायतका आय तथा व्ययको हरहिसाब हुने दर्ता भएका वा नभएका प्रतिष्ठानहरूको समेत तथ्याङ्क संकलन गरिएको छ। यसबाट देशमा अस्तित्व वा सञ्चालनमा रहेका आर्थिक प्रतिष्ठानहरूको आकार, स्वरूप, रोजगारीको अवस्था, मुख्य आर्थिक क्रियाकलाप, उत्पादनका प्रकार, ऋणको पहुँच तथा विद्यमान समस्याहरूबारे तथ्याङ्क प्राप्त भई समग्र अर्थतन्त्रको आकार एवम् स्वरूप थाहा हुन गई आर्थिक नीति तथा योजना तर्जुमाको लागि महत्वपूर्ण तथ्याङ्कहरू प्राप्त हुने अपेक्षा गरिएको छ। यस गणनामा नेपालमा पहिलोपल्ट नयाँ प्रविधि अर्थात् इ-सेन्सस विधि पनि अवलम्बन गरिएको थियो। आर्थिक गणनाको प्रारम्भिक नतिजा चालू आ.व. २०७५।७६ मा प्राप्त हुने अपेक्षा गरिएको छ। आर्थिक गणनामा २०७५ साल वैशाख १ गतेको दिनलाई सन्दर्भ दिन मानिएको छ।

#### (ख) नेपाल श्रमशक्ति सर्वेक्षण

रोजगारी, बेरोजगारी, अर्धबेरोजगारीका तथ्याङ्क तथा सूचकहरू प्राप्त हुने गरी आ.व.२०७४/७५ मा नेपाल श्रमशक्ति सर्वेक्षण सञ्चालन गरिएको छ। श्रमको अल्प उपयोग, बालश्रम, सम्भावित श्रमशक्ति (Potential labour force), अनुपलब्ध श्रमशक्ति (Outside labour force) र जबर्जस्ती श्रम (Forced labour) जस्ता तथ्याङ्कहरू यस सर्वेक्षणबाट प्राप्त हुनेछन्। जबर्जस्ती श्रमलाई पहिलोपल्ट नेपालमा समावेश गरिएको हो। विगतको श्रमशक्ति सर्वेक्षणभन्दा यस सर्वेक्षणमा अन्तर्राष्ट्रिय

प्रचलन अनुसार श्रम र श्रमशक्तिको अवधारणा र परिभाषामा केही परिवर्तनहरू गरिएका छन् । मनाङ जिल्ला बाहेक देशका सबै जिल्लामा कुल १८००० घरपरिवारहरू बाट तथ्याङ्क संकलन कार्य गरिएको थियो । हाल संकलित प्रश्नावलीको लगत प्रशोधन कार्य भइरहेको र चालू आ.व.को प्रथम चौमासिकको अन्त्यसम्ममा अन्तिम नतिजा प्रकाशन गर्ने लक्ष्य रहेको छ ।

### (ग) व्यावसायिक चिया खेती सर्वेक्षण

केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग र राष्ट्रिय चिया तथा कफी विकास बोर्डको सहकार्यमा पहिलो पटक आ.व. २०७४/७५ मा व्यावसायिक चिया खेती सर्वेक्षण सञ्चालन गरियो । यस सर्वेक्षणका प्रमुख उद्देश्यहरू (क) व्यावसायिक चियाखेती गर्ने कृषक तथा व्यवसायहरूको संख्या यकिन गर्नु, (ख) चियाखेतीको अवस्थिति, क्षेत्रफल, हरियोपत्तीको उत्पादन तथा मूल्यसम्बन्धी तथ्याङ्क उपलब्ध गराउनु, (ग) चियाको प्रकार सहित उत्पादन, परिमाण र मूल्यको तथ्याङ्क प्राप्त गर्नु, र (घ) रोजगारीको स्थिति तथा राष्ट्रिय अर्थतन्त्रमा यस क्षेत्रको योगदान अनुमान गर्नु रहेका थिए । इलाम, भ्वापा, धनकुटा, ताप्लेजुङ्ग, तेह्रथुम, संखुवासभा, भोजपुर, पाँचथर, मोरङ्ग, रामेछाप, दोलखा, सिन्धुपाल्चोक र ललितपुर सहित देशका १४ वटा जिल्लामा यो सर्वेक्षण सञ्चालन गरिएको थियो । सर्वेक्षणबाट देशमा कुल ९,२२६ व्यावसायिक चिया खेती एकाइहरू रहेको देखियो भने कुल १२ हजार हेक्टरमा लगाइएको क्षेत्रफलबाट सन्दर्भ अवधिमा १० करोड किलो हरियो चियापत्ती उत्पादन भएको पाइयो । सर्वेक्षणको मुख्य नतिजा अनुसूची - १७ मा उल्लेख गरिएको छ ।

### (घ) नेपाल बसाइसराइ सर्वेक्षण २०७४/७५

तत्कालीन जनसंख्या तथा वातावरण मन्त्रालयको सहकार्यमा केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागले सञ्चालन गरेको यस सर्वेक्षणको स्थलगत तथ्याङ्क संकलनको कार्य सम्पन्न भई हाल लगत प्रशोधन (तथ्याङ्क प्रविष्टि) को कार्य भइरहेको छ । चालू आ.व. मा यसको नतिजा राष्ट्रियस्तर र ७ वटै प्रदेश तहमा उपलब्ध हुनेछ । सर्वेक्षणका लागि देशका २६ वटा जिल्लाका कुल १२,००० घरपरिवार छानिएका थिए । यस सर्वेक्षणको मुख्य उद्देश्य आन्तरिक बसाइसराइ अर्थात एक जिल्लादेखि अर्को जिल्ला र ग्रामीणदेखि शहरी र शहरीदेखि ग्रामीण क्षेत्रमा हुने बसाइसराइ प्रवृत्ति मापन गर्नु रहेको छ । त्यस्तै, अन्तर्राष्ट्रिय बसाइसराइतर्फ वैदेशिक रोजगारीमा जानेहरूको संख्या अनुमान गर्नु, वैदेशिक रोजगारीमा जाने विभिन्न गन्तव्य देशहरू थाहा पाउनु, बसाइसराइ गरी अन्तर्राष्ट्रिय रोजगारीमा गएकाहरूको आम्दानी, त्यहाँ उनीहरूको कामको प्रकृति, त्यसतर्फ जाँदा अपनाइएको माध्यम, उनीहरूले नेपालमा पठाएको विप्रेषण र स्वदेश फर्किसकेपछि उनीहरू के कस्तो काममा संलग्न भए भन्ने जस्ता विषयहरूको तथ्याङ्क पनि यस सर्वेक्षणबाट प्राप्त हुनेछन् ।

### (ङ) राष्ट्रिय लेखा अनुमान

राष्ट्रिय लेखा अनुमान वि.सं. २०१७ देखि सालबसाली रूपमा तयार गर्दै आइएको छ । वार्षिक अनुमानका साथसाथै केही वर्षदेखि त्रैमासिक अनुमानहरू तयार गर्ने कार्य पनि आरम्भ गरिएको

छ । राष्ट्रिय लेखा अनुमानमा देशको कुल गार्हस्थ उत्पादन, कुल राष्ट्रिय उत्पादन, उपभोग, वचत, लगानिका साथसाथै समष्टिगत आर्थिक सूचकहरू समावेश हुँदै आएको छ । राष्ट्रिय लेखा अनुमानले अर्थतन्त्रमा विभिन्न क्षेत्रहरूको योगदान तथा ति क्षेत्रहरूको वृद्धिदरका आँकडाहरू उपलब्ध गराउँछ । हाल १५ वटा आर्थिक क्षेत्रहरूको वस्तु तथा सेवा उत्पादनमा योगदान तथा वृद्धिदर सम्बन्धी तथ्याङ्क प्रकाशन हुँदै आएको छ । विभागले चालु आ.व.को ६ देखि ९ महिनासम्मको उपलब्ध तथ्याङ्क र बाँकी अवधिका लागि सामान्य अवस्था रहने मान्यताका आधारमा वस्तु तथा सेवा उत्पादनको अनुमान गरी लेखा तयार गर्दै आएको छ । सो अनुमानसँगै विगत आ.व.को संशोधित अनुमान र त्यस भन्दा अघिल्लो आ.व.को अन्तिम अनुमानसमेत प्रकाशन गरिन्छ । यस्ता अनुमानहरू प्रचलित र स्थिर मूल्य दुवैमा प्रकाशन गर्ने गरिएको छ । नेपालको राष्ट्रिय लेखा अनुमान आ.व. २०७४/७५ मा पनि तयार गरियो । राष्ट्रिय लेखा अनुमान विधि र केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागले गरिरहेको अभ्यासका सम्बन्धमा विश्वविद्यालयका प्राध्यापकहरूलाई राष्ट्रिय लेखा अनुमान सम्बन्धी सैद्धान्तिक र प्रायोगिक ज्ञानबारे जानकारी दिने उद्देश्यले प्रशिक्षण कार्यक्रम पनि सञ्चालन गरियो । आ.व. २०७४/७५ को राष्ट्रिय राष्ट्रिय लेखा अनुमान र विगत केही वर्षका मुख्य आँकडा अनुसूची -१८ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

### (च) राष्ट्रिय जनगणना २०७८

प्रत्येक दश दश वर्षमा सञ्चालन हुने जनगणनाले हरेक परिवार र व्यक्तिहरूको पारिवारिक, जनसांख्यिक, सामाजिक र आर्थिक विवरण संकलन गरी तयार गरिएका तल्लो प्रशासनिक एकाइसम्मका आँकडाहरू प्रदान गर्दछ । यसले देशमा विद्यमान जनसंख्याको आकार, वनावट, वृद्धि र वितरणका सूचकहरू उपलब्ध गराउँछ । संवैधानिक महत्वसमेत रहेको यस गणनाका आँकडाहरू निर्वाचन पद्धति, स्रोत विनियोजन, योजनबद्ध विकासलगायत सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्रका क्रियाकलापहरूमा आधार सूचकका रूपमा प्रयोग हुँदै आएका छन् । जनगणना सञ्चालनको क्रममा १२ औं तथा संघीय शासन पद्धति अनुरूपको पहिलो राष्ट्रिय जनगणना आगामी २०७८ सालमा सञ्चालन गर्ने कार्यक्रम रहेको छ । यस गणनाको तयारीका प्रारम्भिक क्रियाकलापहरू आरम्भ गरिएका छन् । यस क्रममा जनगणनाबाट सरोकारवालाहरूको अपेक्षा तथा यसले सम्बोधन गर्नुपर्ने विषयवस्तुबारे पृष्ठपोषण तथा सुझाव प्राप्त गर्ने उद्देश्यले आगामी राष्ट्रिय जनगणना २०७८ को तयारीको सिलसिलामा राष्ट्रिय तथा जिल्लास्तरमा सरोकारवालाहरूसँगको अन्तरक्रिया कार्यक्रम सम्पन्न गरिएको छ । उक्त अन्तरक्रिया मूलतः जनगणनाको विधि, प्रविधि, प्रश्नावली र अन्य प्रशासनिक तयारी सम्बन्धमा केन्द्रित थियो । काभ्रेपलाञ्चोक, गोरखा, कास्की, बाँके, र सुर्खेतमा यसप्रकारका गोष्ठी सञ्चालन गरिएका थिए ।

**(छ) स्थायी बालीको उत्पादन लागत सर्वेक्षण**

प्रमुख ४ वटा स्थायी बालीहरू स्याउ, केरा, आँप र सुन्तलाको उत्पादन गर्दा लागेको लागतसम्बन्धी प्रमुख आँकडाहरू प्राप्त गर्ने उद्देश्यले हिमाल, पहाड र तराईका गरी कुल २६ जिल्ला समेटि उत्पादन लागत सर्वेक्षण सम्पन्न भएको छ। यसबाट प्राप्त हुने नतिजा राष्ट्रिय लेखाको अनुमान, कृषकहरू र नीति निर्माताहरूको लागि उपयोगी हुने विश्वास लिइएको छ। यसको नतिजा तयारीका लागि हाल सर्वेक्षणमा संकलित तथ्याङ्कको प्रशोधनको कार्य भइरहेको छ। आ.व. २०७५/७६ मा दूध तथा मासुको उत्पादन लागत सर्वेक्षण गर्ने कार्यक्रम रहेको छ।

**३.५ तथ्याङ्क सम्बन्धी अन्य गतिविधिहरू****(क) राष्ट्रिय तथ्याङ्क परिषद्**

देशको समग्र राष्ट्रिय तथ्याङ्क प्रणालीको विकास, सृदृढीकरण र समन्वय गर्ने उद्देश्यले गठित राष्ट्रिय तथ्याङ्क परिषद्को ३२ औं बैठक २०७५ साल असार १९ गते राष्ट्रिय योजना आयोगका उपाध्यक्ष प्रा.डा. पुष्पराज कँडेलको अध्यक्षतामा बस्यो। बैठकले राष्ट्रिय तथ्यगत विवरणको तयारी र राष्ट्रिय तथ्याङ्क विकास रणनीति सम्बन्धमा छलफल गरी विभिन्न निर्णयहरू गरेको थियो।

**(ख) राष्ट्रिय तथ्याङ्क दिवस**

केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागको स्थापनाको अवसर पारेर तथ्याङ्कका सरोकारवालाहरूबीच तथ्याङ्कको महत्व, आवश्यकता, आपूर्ति, गुणस्तर, समन्वय आदि विषयमा पैरवी र अन्तरक्रिया गर्ने उद्देश्यले २०७४ पुष १७ गते विभाग तथा अन्य प्रमुख सरोकार निकायका प्रतिनिधिहरूको उपस्थितिमा राष्ट्रिय तथ्याङ्क दिवस मनाइएको छ। आगामी वर्षदेखि तथ्याङ्क ऐन जारी भएको दिनलाई राष्ट्रिय तथ्याङ्क दिवसका रूपमा मनाउन नेपाल सरकारसमक्ष प्रस्ताव लैजाने गरी आवश्यक तयारीहरू भइरहेको छ।

**(ग) नेपाल प्रामाणिक भू-संकेत**

तत्कालीन संघीय मामिला तथा स्थानीय विकास मन्त्रालयको सहकार्यमा केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागले तयार गरेको 'नेपाल प्रामाणिक भू-संकेत (Nepal Standards Geo-Coding)' स्वीकृत गरी लागू गरिएको छ। पाँच अंकका संकेतमा सात वटा प्रदेश र अन्तर्गतका जिल्ला, गाउँपालिका/नगरपालिकाहरूको एकल संकेत (Unique Code) तयार गरिएको छ। पहिलो एक अंकले प्रदेश, त्यसपछिका दुई अंकले जिल्ला र लगत्तै पछिका दुई अंकले गाउँपालिका तथा नगरपालिकाहरूको संकेत गर्दछन्। वडा तहसम्मको संकेत तयार गर्न स्थानीय तहका संकेतमा दुई अंकको वडा संकेत थप गर्न समेत सकिनेछ। नेपाल प्रामाणिक भू-संकेतसम्बन्धी विवरण अनुसूची - १९ मा उल्लेख गरिएको छ।

- (घ) नेपालको राष्ट्रिय तथ्याङ्क प्रणालीलाई सुदृढीकरण गर्ने उद्देश्यले तर्जुमा गरिएको पञ्चवर्षीय राष्ट्रिय तथ्याङ्क विकास रणनीतिपत्रको मस्यौदा तयार गरिएको छ। रणनीतिपत्र कार्यान्वयनमा आइसकेपछि राष्ट्रिय तथ्याङ्क प्रणाली सबल, सुदृढ, समन्वययुक्त हुने अपेक्षा गरिएको छ र यसले अन्ततः तथ्यमा आधारित नीति तथा योजना तर्जुमाको लागि बलियो आधार दिने विश्वास लिइएको छ। तथ्याङ्कीय पूर्वाधार तथा तथ्याङ्क क्षेत्रमा कार्यरत जनशक्तिको वृत्ति र क्षमता विकासमा पनि यो रणनीति प्रभावकारी हुने विश्वास गरिएको छ।
- (ङ) तथ्याङ्क प्रयोगकर्ता सन्तुष्टि सर्वेक्षण, २०१७ सम्पन्न गरिएको छ। उक्त सर्वेक्षणको अन्तिम प्रतिवेदन लेखन कार्य भइरहेको छ। साथै, कृषि उत्पादन लागत, २०७३ तथा माछा उत्पादन नतिजा सर्वेक्षण र जलवायु परिवर्तन सर्वेक्षण, २०७३ को नतिजा सार्वजनिकीकरण गरिएको छ।

## परिच्छेद - चार

## समस्या, चुनौती तथा भावी कार्यदिशा

### ४.१ समस्या तथा चुनौती

राष्ट्रिय योजना आयोगको आफ्नो काम कारवाहीको सिलसिलामा देहाय अनुसारका प्रमुख समस्या तथा चुनौतीहरू अनुभूत गरिएका छन् ।

#### समस्या

- (क) आयोगको काम, कर्तव्य र अधिकार ऐनबाट व्यवस्थित हुन नसक्दा आफ्नो कार्यक्षेत्र भित्रका कतिपय समस्या समाधानका विषयहरूमा पहिचान गरेका उपायहरू आयोगबाट प्रभावकारी ढङ्गमा समयमै कार्यान्वयनमा ल्याउन नसकिएको ।
- (ख) राष्ट्रिय गौरवका आयोजना तथा राष्ट्रिय प्राथमिकता प्राप्त कार्यक्रम तथा आयोजना निर्धारण गर्ने सम्बन्धमा स्पष्ट कानुनी आधार र मापदण्डको अभाव रहेको छ । जसको कारण ती कार्यक्रम तथा आयोजनालाई दिनु पर्ने सुविधा एवम् अवसरका बारेमा समेत अन्यौलता रहँदै आएको छ । आयोजनाको विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन तयारी विना नै कार्यान्वयनमा लैजाने र खरिद गुरुयोजना अनुसार बजेट विनियोजन नभएका कारण अनन्तकालसम्म आयोजना कार्यान्वयनकै चरणमा रहने हुँदा श्रोत साधन र समयको कुशलता र आयोजनाको उपादेयता माथि नै प्रश्न गर्नुपर्ने अवस्था सृजना भैरहेको छ ।
- (ग) मध्यमकालीन खर्च संरचना तर्जुमा तथा आवधिक योजनाको नतिजा खाकाका आधारमा प्रगति समीक्षा गर्ने सम्बन्धमा अधिकांश निकायहरूले गम्भीरतापूर्वक कार्यान्वयन नगरेको पाइएको छ ।
- (घ) परिवर्तित सन्दर्भ र संघीय शासकीय प्रणालीअनुरूप आयोगलाई प्राप्त कार्यादेशको प्रभावकारी सम्पादन गर्न आयोगको समयानुकूल सांगठनिक एवम् व्यवस्थापकीय पुनःसंरचना गरी श्रोत साधन सम्पन्न बनाई क्रियाशील बनाउने कार्य अपेक्षाकृत रूपमा हुनसकेको छैन । आयोगको जनशक्ति एवम् साधन श्रोतको विषयमा उचित ध्यान पुऱ्याउन सकिएको छैन । जसको कारण सूचनामा आधारित भएर नीतिगत विश्लेषण, दूरगामी सोचपत्र तर्जुमा गर्ने र आयोजना तथा कार्यक्रमहरूको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन गरी वस्तुनिष्ठ पृष्ठपोषण प्रदान गर्ने कार्य अपेक्षितरूपमा हुन सकेको छैन ।
- (ङ) कतिपय निकायले आयोगबाट स्वीकृत ढाँचा अनुसारको विभिन्न फाराम प्रयोग गर्ने नगरेको, गरे पनि आयोगले मागेको सूचना तथा प्रतिवेदन तोकिएको ढाँचामा समयमा नपठाइदिँदा समीक्षा तथा मूल्याङ्कन गर्न कठिनाई भैरहेको छ ।

- (च) आयोगको कार्यप्रकृति नीति, योजना तथा कार्यक्रमको विश्लेषण तथा तर्जुमा र अनुगमन, मूल्याङ्कन एवम् अध्ययन लगायतका प्रशासनिक भन्दा बढी बौद्धिक र अनुसन्धानात्मक कार्यमा लाग्नु पर्ने हुँदा कर्मचारीहरूका लागि पर्याप्त उत्प्रेरणाका आधारहरू नहुँदा आयोगको कार्यसम्पादनमा प्रभावकारिता एवम् कार्यदक्षता अभिवृद्धि गर्न सकिएको छैन। साथै, कर्मचारीको बारम्बार हुने सरुवाले कर्मचारीको विषय विशेषज्ञता विकास हुन सकिरहेको छैन।
- (छ) आयोगको आफ्नै भवन नहुँदा र जनशक्ति एवम् जिम्मेवारीको अनुपातमा सवारी साधन लगायत अन्य भौतिक श्रोत साधन सीमित रहेको कारण कार्य संपादनमा असर पर्न गएको छ।
- (ज) राष्ट्रिय तथ्याङ्क विकास रणनीतिको अभावमा तथ्याङ्कीय व्यवस्थापनका कार्यहरूलाई राष्ट्रिय आवश्यकता, बदलिंदो परिवेश र अन्तर्राष्ट्रिय मूल्य मान्यता अनुरूप व्यवस्थित रूपमा अगाडि बढाउन सकिएको छैन।
- (झ) संघीय प्रणाली अनुसार केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागको संगठनात्मक पुनर्संरचना हुन बाँकी रहेको हुँदा राष्ट्रिय तथ्याङ्क प्रणालीको अपेक्षित रूपमा विकास हुन सकेको छैन।

## चुनौती

- (क) संघीय प्रणाली अनुसार राष्ट्रिय योजना आयोगको वर्तमान कार्यादेशानुसार तहगत योजना संगठनहरूका बीचमा समन्वय र सहजीकरण गर्ने, र तीनै तहका योजना तथा कार्यक्रमहरूका बीचमा सामञ्जस्यता कायम राख्दै बृहत्तर राष्ट्रिय हितमा एकीकृत गर्नु र विकासका प्रयासहरूलाई समन्वय गर्नु।
- (ख) कतिपय निकायहरूले राष्ट्रिय योजना आयोगबाट स्वीकृत गराएपछि मात्र आफ्नो वार्षिक कार्यक्रममा समावेश गर्नुपर्ने कानुनी प्रावधान हुँदाहुँदै नयाँ आयोजनाहरू कार्यक्रममा समाविष्ट गरेपश्चात मात्र स्वीकृति तथा समर्थनका लागि पठाउने गरेका छन्। जसबाट कार्यक्रम तथा आयोजनाको छनौटको पृष्ठभूमि, तिनको आवश्यकता, औचित्य र लेखाजोखा विना नै श्रोत सुनिश्चितता गर्नुपर्ने र अधिकांश आयोजनाको हकमा बहुवर्षीय दायित्व सृजना हुने हुँदा आवधिक योजनासँगको सामञ्जस्यता कायम राख्न र वितीय अनुशासन कायम राख्ने कार्य चुनौतीपूर्ण भएको छ।
- (ग) सन् २०३० सम्ममा मध्यम आय भएको मुलुकको स्तरमा पुग्न आवश्यक पर्ने दीर्घकालीन सोच, नीति, योजना र कार्यक्रमलाई वस्तुपरक बनाइ कार्यान्वयन गर्नु।
- (घ) सन् २०१६ देखि अंगीकार गरिएको दिगो विकासका लक्ष्यलाई राष्ट्रिय नीति, योजना तथा कार्यक्रमहरूमा समाहित गरी लक्ष्य प्राप्तिका लागि वस्तुनिष्ठ सूचकहरूको निर्माण गरी कार्यान्वयनमा लैजानु।
- (ङ) दिगो विकासको लक्ष्य (SDGs) का सूचकहरूलाई प्रदेश तथा स्थानीय तहसम्म स्थानीयकरण गरी ती लक्ष्यहरूलाई प्रदेश तथा स्थानीय तहका योजना र बजेट मार्फत स्थानीयकरण गर्नुका साथै तिनको प्रगति स्थितिको प्रतिवेदन तथा समीक्षा गर्नु। साथै, दिगो विकास लक्ष्यको पूर्ण कार्यान्वयनका लागि आवश्यक पर्ने लगानी जुटाउनु र परिचालन गर्नु।



- (च) देशको सामाजिक आर्थिक विकासमा योगदान पुऱ्याउन सक्ने आयोजना र परियोजनाहरू छनौट गरी लगानीको सुनिश्चितता प्रदान गर्नु ।
- (छ) सार्वजनिक निजी साभेदारी, प्रत्यक्ष बैदेशिक लगानी, विकास सहायता लगायतका आन्तरिक र बाह्य श्रोतहरूको समेत पहिचान गरी आर्थिक बृद्धि र रोजगारी सिर्जना गर्ने लगानीयोग्य परियोजना सहितको लगानी ढाँचा बनाउनु ।
- (ज) आयोजना बैंकको स्थापना गर्ने कार्य चुनौतीपूर्ण रहेको छ । आयोजना व्यवस्थापन, सञ्चालन र अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीको संस्थागत प्रणालीको विकास गर्नु र आयोजना र कार्यक्रमको वस्तुनिष्ठ सूचकहरूको आधारमा नियमित र समयसारिणी सहितको अनुगमन तथा निरीक्षण प्रणालीको विकास गरी हरेक निकायद्वारा गरिने अनुगमनबीच एकरूपता कायम गर्नु ।
- (झ) विपद् पछिको पुनर्निर्माण र आर्थिक बृद्धिदर बढाउन सहयोगी हुने कार्यक्रमहरूलाई विभिन्न निकायसँग नीतिगत समन्वय गरी प्राथमिकताको आधारमा अगाडि बढाउनु ।
- (ञ) संघ, प्रदेश र स्थानीय तहहरूलाई योजना तथा कार्यक्रम तर्जुमा कार्यान्वयन र अनुगमन, मूल्याङ्कन तथा अनुशिक्षणसम्बन्धी क्षमता विकासका कार्यक्रम सञ्चालन गरी क्षमता एवम् दक्षता अभिवृद्धि गर्नु ।

## ४.२ विकास व्यवस्थापनको विद्यमान अवस्था, समस्या तथा संभावना एवम् प्राथमिकता

विकास व्यवस्थापनका क्षेत्रमा आवधिक तथा वार्षिक योजना पद्धति संस्थागत भएको आधा शताब्दीभन्दा बढी अवधि व्यतित भैसकेको छ । यस सम्बन्धी विभिन्न कानून जारी भई कार्यान्वयनमा पनि रहेका छन् । बजेट तर्जुमा र अनुगमन तथा मूल्याङ्कन सम्बन्धी निर्देशिका जारी भई लागू भएका छन् । विकास व्यवस्थापनका लागि प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, राष्ट्रिय योजना आयोग, अर्थ मन्त्रालय, विषय क्षेत्रगत मन्त्रालय तथा मातहतका निकाय र तत् तत् निकायमा योजना, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन गर्नका लागि महाशाखा/शाखा रहेका छन् । हाल चौधौं योजना, त्रिवर्षीय मध्यमकालीन खर्च संरचना, वार्षिक कार्यक्रम तथा बजेट कार्यान्वयनमा रहेका छन् । संविधानको अनुसूचीमा निर्दिष्ट अधिकार बमोजिम विगतमा केन्द्रबाट सञ्चालन भइरहेका विकास योजना प्रदेश र स्थानीय तहमा सशर्त अनुदान अन्तर्गत हस्तान्तरण भएको छ, भने प्रदेश र स्थानीय तहलाई वित्तीय समानीकरण, समपूरक र विशेष अनुदान प्रदान गरिएको छ ।

### ४.२.१ विकास व्यवस्थापनसम्बन्धी समस्या

- (क) यथार्थपरक, अनुमानमा आधारित, कार्यान्वयनयोग्य र आवश्यकतामा आधारित योजना, कार्यक्रम तथा आयोजना तर्जुमामा कमी कमजोरी रहेका छन् ।

- (ख) आयोजना पहिचान, लागत-लाभ विश्लेषण तथा मूल्याङ्कन, वातावरणीय प्रभाव मूल्याङ्कन, विस्तृत आयोजना प्रतिवेदन तयारी लगायतका आयोजना तयारी सम्बन्धी कार्य सम्पन्न नभई कतिपय आयोजना बजेटमा समावेश गर्ने प्रवृत्ति विद्यमान छ ।
- (ग) अधुरा आयोजना सम्पन्न नभई नयाँ आयोजना थप गर्ने कारणबाट कार्यान्वयनमा रहेका आयोजनाका लागि पर्याप्त बजेट तथा स्रोत साधनको व्यवस्था नहुने, आयोजना संख्यामा निरन्तर बृद्धि, समयमै सम्पन्न नहुने जस्ता समस्या रहेका छन् ।
- (घ) आयोजना व्यवस्थापनमा आयोजना कार्यान्वयनको लागि विस्तृत कार्ययोजनाको तयारी र सो अनुसारका क्रियाकलाप समय तालिका अनुसार नहुनु, निर्णय प्रक्रियामा ढिलाई हुनु, वन क्षेत्र तथा जग्गा प्राप्तिमा कानुनी, प्रक्रियागत तथा व्यवहारिक जटिलता रहनु, समयमा निर्माण सामग्रीको अभाव जस्ता समस्या देखा परिरहेका छन् ।
- (ङ) विकास व्यवस्थापनको लागि आवश्यक पर्ने प्राविधिक तथा दक्ष जनशक्तिको अभाव, कार्यरत कर्मचारीहरूमा उत्प्रेरणाको कमी, कमजोर प्रोत्साहन व्यवस्था र दण्ड तथा पुरस्कार व्यवस्था प्रभावकारी नभएकाले कार्यसम्पादन स्तर कमजोर रहेको छ ।
- (च) विकास निर्माण तथा सेवा प्रवाह कार्यमा संलग्न निर्माण व्यवसायी, परामर्शदाता र सेवा प्रदायक संस्थाको क्षमता कमजोर तथा सम्झौताको शर्तहरूको परिपालनामा समस्या रहेको छ ।
- (छ) विकास निर्माणमा योजना तर्जुमा देखि कार्यान्वयन र लाभ वितरण सम्मका चरणमा निजी, सहकारी र सामुदायिक क्षेत्रको प्रभावकारी तथा सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित गर्न सकिएको छैन ।
- (ज) संघीय प्रणाली बमोजिम आयोजनाको प्रकृति र कार्यक्षेत्र अनुसार संविधानका निर्दिष्ट अधिकार क्षेत्र भित्रका आयोजनाहरू तत् तत् तहबाट सञ्चालनको क्रमशः व्यवस्था गर्नुपर्ने अवस्था रहेको छ ।

### ४.३ विद्यमान योजना तथा बजेट प्रणालीको अवस्था, कमजोरी तथा अपेक्षित लक्ष्य प्राप्तिमा आधारहरू

#### ४.३.१ योजना तथा बजेट प्रणालीको अवस्था

- (क) नेपालमा मिश्रित योजना प्रणाली विकास भई संस्थागत भएको छ । सहभागितामूलक पद्धति अवलम्बन गर्दै सार्वजनिक क्षेत्रका विभिन्न तहका निकाय, निजी क्षेत्र तथा सहकारी र सामुदायिक क्षेत्रको भूमिका र योगदानलाई समावेश गरिएको छ । चालु आर्थिक वर्ष तीन वर्षे अवधिको चौधौँ योजना कार्यान्वयनको अन्तिम वर्ष रहेको छ । यसको सम्पूर्णतामा कार्यान्वयन गरी अपेक्षित नतिजा प्राप्त गर्नुपर्ने छ । आवधिक योजना र वार्षिक योजना (बजेट तथा कार्यक्रम) बीचको अन्तरसम्बन्ध कायम गर्दै आवधिक योजनाको लक्ष्य र नतिजा हासिल गर्न तीन वर्षको मध्यमकालीन खर्च संरचना तर्जुमा गरी कार्यान्वयनमा ल्याइएको छ ।

- (ख) योजना तथा बजेटले राष्ट्रिय लक्ष्य र प्राथमिकता अनुरूप हुने गरी आयोजना प्राथमिकीकरण र विषय क्षेत्रगत तथा भौगोलिक सन्तुलनमा जोड दिइएको छ ।
- (ग) संघीय प्रणाली बमोजिम प्रदेश र स्थानीय तहले समेत बजेट तथा कार्यक्रम तर्जुमा गरी कार्यान्वयनमा ल्याएका छन् । यी तहहरूमा आवधिक योजना तथा मध्यमकालीन खर्च संरचनासम्बन्धी अभ्यासको सुरुवात भएको छ ।
- (घ) समयमै बजेट ल्याई सार्वजनिक खर्च प्रणालीलाई सुधार गरी योजनाको उपलब्धि हासिल गर्न नेपालको संविधानमा प्रत्येक वर्षको जेठ १५ गते वार्षिक कार्यक्रम तथा बजेट संघीय संसदमा प्रस्तुत गर्ने र आर्थिक वर्ष शुरु हुने दिन देखि नै बजेट खर्च गर्ने गरी आय व्यय प्रणालीमा सुधार गरिएको छ ।
- (ङ) नेपालको कर प्रणाली र करका दरहरू आर्थिक विस्तार, वृद्धि र रोजगारीमुखी रहेका छन् । नेपालको कर नीतिमा रहेका विद्यमान कानुनी व्यवस्था अर्थतन्त्रको सुदृढीकरण र गतिशीलताको लागि पर्याप्त भएतापनि निजीक्षेत्रबाट उपयोग हुन सकेको छैन । नेपालको कर प्रणालीको आधार अत्यन्त विस्तारित रहेको छ । राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय करका आधारको संरक्षणका लागि कानुनी प्रबन्ध पर्याप्त छन् । कर संकलनमा कर परिपालनाको अन्तरलाई कम गरी राजस्वको दायरा विस्तार गर्नुपर्ने छ ।
- (च) सार्वजनिक खर्च प्रणालीमा सुधारको लागि कार्यक्रम स्वीकृत गर्ने तथा कुनै स्वीकृत कार्यक्रमको संशोधन गर्नु परेमा लेखा उत्तरदायी अधिकारीले नै कार्यक्रम संशोधन गर्न सक्ने गरी निर्णय प्रक्रियालाई सरल र कार्यमूलक बनाइएको छ ।
- (छ) वित्तीय संघीयतामा अन्तरसरकारी वित्त व्यवस्थापनको कानुनी व्यवस्था बमोजिम संघबाट प्रदेश र स्थानीय तहमा राजस्व अधिकारको हस्तान्तरण भएको छ । त्यसैगरी चालू आर्थिक वर्षको लागि दुवै तहमा रु. ११४ अर्बको राजस्वको वाँडफाँट भएको छ । वित्तीय समानीकरण र सर्शत अनुदानबाट समेत रु. ३०७ अर्ब स्रोत र कार्यक्रमको हस्तान्तरण भएको छ । साथै समपूरक र विशेष अनुदान समेत करिब रु. २० अर्ब हस्तान्तरण हुँदैछ ।

### ४.३.२ योजना तथा बजेट प्रणालीको कमजोरी

- (क) राजनैतिक संक्रमणकालका कारण विगतका चारवटा योजना (एघारौँदेखि चौधौँ) त्रिवर्षीय अन्तरिम योजनाका रूपमा कार्यान्वयनमा आएता पनि योजनाका नतिजा सूचकमा अपेक्षा गरिए अनुसारको लक्ष्य हासिल भएको छैन ।
- (ख) विगतमा छिटोछिटो सरकारको परिवर्तनसँगै सरकारका प्राथमिकतामा आउने परिवर्तनका कारण आवधिक योजना र वार्षिक बजेट बीच सामञ्जस्यता कायम हुन सकेको थिएन । प्राथमिकता प्राप्त आयोजनाहरूको कार्यान्वयन पक्ष कमजोर रहेको, नयाँ आयोजना थप हुँदै जाने कारणबाट निर्धारित समयमा योजना सम्पन्न हुन नसकेको र लागत बढ्ने गरेको छ ।

- (ग) बजेटमा नपरेका आयोजनामा बजेटको न्यून स्रोत सुनिश्चतता र बहुवर्षीय ठेक्का प्रणालीले गर्दा क्रमागत आयोजनाको संख्यामा निरन्तर बृद्धि भएकोछ। यसका साथै नेपाल सरकारको गैर बजेटरी दायित्वमा समेत बृद्धि भएको छ। यस प्रकारका दायित्वहरूको एकीकृत विवरण तयार नहुँदा वित्तीय जवाफदेहिता र पारदर्शिता नहुँदा वित्तीय स्राव (Fiscal bleeding) मात्र भएको छ। यस्तो प्रवृत्तिले गर्दा कालान्तरमा सार्वजनिक खर्च प्रणालीबाट वित्तीय सबलीकरणमा नै समस्या देखिन सक्दछ।
- (घ) योजना (लक्ष्य) र कार्यान्वयन (उपलब्धि) बीच अनपेक्षित अन्तर देखिन्छ। योजना पद्धति अपेक्षित रूपमा सहभागितामूलक नरहेको, बढी महत्वाकांक्षी भएको र कार्यान्वयन पक्षमा पर्याप्त ध्यान नपुगेको, अन्तर क्षेत्रगत सामञ्जस्यता कायम नभएको जस्ता कमजोरी रहेका छन्।
- (ङ) स्पष्ट मापदण्ड र आधारमा योजना छनौट र प्राथमिकीकरण हुने गरेको छैन। आयोजना कार्यान्वयनका पूर्वतयारीको चरण सम्पन्न नगरी आयोजना र कार्यक्रममा बजेट विनियोजन हुँदा लगानीले उचित प्रतिफल दिन सकेको छैन।
- (च) अन्तरनिकाय समन्वय अपेक्षितरूपमा प्रभावकारी हुन नसक्दा आयोजना कार्यान्वयन र नतिजा प्राप्तिमा कठिनाइ भएको छ।
- (छ) प्रदेश र स्थानीय तहमा हस्तान्तरित भएका स्रोतगत कार्यक्रमको प्रगति प्रतिवेदन र अनुगमन गर्ने प्रणालीको विकास नहुँदा र निरन्तररूपमा आन्तरिक नियन्त्रण प्रभावकारी नहुँदा वित्तीय जोखिम बढ्न सक्ने देखिन्छ।
- (ज) योजना तथा कार्यक्रम तर्जुमा र कार्यान्वयनमा उच्च क्षमता भएका, उत्प्रेरित, प्राविधिक र दक्ष जनशक्तिको कमी रहेको छ।

### ४.३.३ योजना तथा बजेटबाट अपेक्षित लक्ष्य प्राप्तिका लागि तत्कालै गर्नु पर्ने सुधारहरू

- (क) आवधिक योजना, सरकारका नीति तथा कार्यक्रम, बजेट बीचमा बलियो अन्तरसम्बन्ध कायम गर्न नीति तथा कार्यक्रम र बजेट तर्जुमासम्बन्धी कार्यदलमा प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, राष्ट्रिय योजना आयोग र अर्थ मन्त्रालयको उच्चस्तरीय प्रतिनिधित्व र सहभागिताको व्यवस्था गर्ने।
- (ख) संघीय तथा प्रदेशका विकास योजना कार्यान्वयनको समस्याको समाधान गर्न हालको सम्माननीय प्रधानमन्त्रीको अध्यक्षता रहेको राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिमा प्रदेशका मुख्यमन्त्रीलाई आमन्त्रण गर्न व्यवस्था गर्ने।
- (ग) वास्तविक क्षेत्रको विकासका लागि लगानीको महत्वपूर्ण वातावरण कानूनी पूर्वाधारको रूपमा रहेका हुन्छ। अतः यसका लागि औद्योगिक नीति, ऐन र नियमावली, विदेशी लगानी तथा प्रविधि हस्तान्तरण ऐन, दामासाही सम्बन्धी कानून, कम्पनी कानून, उपभोक्ता हित संरक्षण कानून, विदेशी विनिमय नियमित गर्ने ऐन, वित्तीय तथा विमा सम्बन्धी कानून, सार्वजनिक निजी साभेदारी सम्बन्धी कानून, भन्सार ऐन, अन्तशुल्क ऐन, सालवसाली आर्थिक ऐन,

- आयकर ऐन र वन तथा वातावरण सम्बन्धी कानून लगायतका अन्य कानूनको पुनरावलोकन गरी बृहत आर्थिक सुधारको थालनी गर्ने ।
- (घ) आर्थिक-सामाजिक रुपान्तरण गर्ने प्रकृतिका बृहत आयोजनाको लागि पर्याप्त स्रोत साधनको व्यवस्थापन गर्ने ।
- (ङ) अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन कानून अनुसार अर्थ मन्त्रालयबाट प्रदेश र स्थानीय तहबाट सञ्चालित विकास कार्यक्रमको वित्तीय र भौतिक प्रगति लिने प्रणालीको विकास गर्ने ।
- (च) प्रदेश र स्थानीय तहको योजना तथा बजेट तर्जुमाका लागि बहुपक्षीय तथा द्विपक्षीय र अन्तर्राष्ट्रिय संस्थाको सहायता तथा सहयोग परिचालन गर्नु पर्ने भएमा राष्ट्रिय योजना आयोगको नेतृत्वमा मात्र सहायता परिचालन गर्ने गरी अन्तर्राष्ट्रिय सहयोग एवम् सहायता परिचालन गर्न गराउन सबै विकास साभेदारलाई अर्थ मन्त्रालयले निर्देशन पठाउने ।
- (छ) हालको सार्वजनिक खरिद ऐनलाई संघीय खरिद कानून बनाउने गरी विधेयक तयार गरी संघीय संसदमा आगामी विधेयक अधिवेशनमा पेश गर्न लगाउने । यो सबै तहका सरकारलाई लागु गर्ने गरी बनाउने । तर यस विधेयकमा संस्थाको खरिद ढाँचा बनाई वस्तु र सेवा खरिद गर्न सक्ने गरी मार्गनिर्देश गर्न सक्ने गरी कानूनी व्यवस्था गर्ने ।
- (ज) अर्थ मन्त्रालयबाट गठन भएको सार्वजनिक खर्च पुनरावलोकन समितिको कार्यक्षेत्रमा रहेका विषयको अध्ययन प्रतिवेदन लिई सोको आधारमा आयोजना र कार्यक्रमहरूको बाँडफाँट तीनै तहका सरकारमा गर्ने । यसै प्रतिवेदनका आधारमा सार्वजनिक संस्थाको पनि पुनर्संरचना गर्ने ।
- (झ) हाल गठन भएको नीति अनुसन्धान संस्थाबाट हालका राष्ट्रिय नीति तथा रणनीतिहरूको अध्ययन गराई संविधान अनुसार पुनरावलोकन गरी संघीयता र संविधान अनुकूलका नीति तथा रणनीति र राष्ट्रिय मापदण्ड बनाउने ।

## ४.४ भावी कार्यदिशा

संघीय व्यवस्थामा मुलुक प्रवेश गरेको विशिष्ट अवस्था र विगतका कार्यहरूको अनुभवलाई मध्यनजर गर्दै राष्ट्रिय योजना आयोग (गठन तथा कार्य सञ्चालन) आदेश, २०७४ ले निर्देशन गरेअनुसार आगामी वर्षहरूमा देहाय बमोजिमको कार्यदिशा अंगिकार गर्नु उपयुक्त देखिन्छ । कतिपय यी कार्यहरूको थालनीसमेत भइसकेको हुँदा समयमै सम्पन्न हुनेमा आशावादी हुने अवस्था रहेको छ ।

### ४.४.१ योजना तर्जुमा तथा व्यवस्थापन

आगामी दिनमा नेपालको संविधानको पूर्ण कार्यान्वयन गर्ने सन्दर्भमा राज्यका निर्देशक सिद्धान्त, नीति तथा दायित्व, संविधानप्रदत्त नागरिकका मौलिक हकसम्बन्धी कानूनहरूको कार्यान्वयनका लागि सोको आधारमा नीति, दीर्घकालीन सोच सहितको आवधिक एवम् वार्षिक योजना तथा विषय क्षेत्रगत कार्यक्रमको तर्जुमा, तिनको प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि स्रोत आँकलन,

जनशक्ति तथा अन्य साधन स्रोतको उचित व्यवस्थापन र कार्यान्वयनमा समन्वय, सहजीकरण र अनुगमन तथा मूल्याङ्कनको अत्यन्तै अहम् भूमिका रहने निश्चित छ । अतः यस महत्वलाई आत्मसाथ गर्दै योजना तर्जुमा तथा व्यवस्थापनका क्षेत्रमा आयोगले निम्न उल्लिखित कार्यदिशा लिने राणनीति राखेको छ ।

- (क) संविधानले निर्देश गरेका विकास, समृद्धि तथा आर्थिक सामाजिक रूपान्तरणसम्बन्धी अभिभाराको कार्यान्वयन गर्दै नेपाललाई वि.सं. २०७९ सम्ममा अल्प विकसित राष्ट्रहरूको समूहबाट स्तरोन्नति गराउँदै वि.सं. २०८७ सम्ममा दिगो विकासका लक्ष्यहरूको प्राप्तिसँगै मध्यम आय भएको मुलुकको स्तरमा पुऱ्याउने र वि.सं. २१०० सम्ममा विकसित राष्ट्रको रूपमा नेपाललाई उभ्याउने लक्ष्यका साथ नेपालको समग्र विकास प्रयासलाई समन्वयात्मक रूपमा अधि बढाउन 'नेपालको दीर्घकालीन सोच, २१००' तर्जुमा गर्ने । यसको आधारमा आवधिक योजना तथा वार्षिक कार्यक्रम एवम् आयोजनाहरू तयार गरी कार्यान्वयनमा लैजाने ।
- (ख) संघीयतामा सुशासन, विकास र आर्थिक समृद्धिको नतिजा हासिल गर्नको लागि दीर्घकालीन सोच सहितको राष्ट्रिय पञ्चवर्षीय पन्ध्रौं योजना तर्जुमा गरी कार्यान्वयनमा ल्याउने । आवधिक योजना तर्जुमा तथा कार्यान्वयनमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तह, निजी क्षेत्र र सहकारी तथा सामुदायिक क्षेत्रको सहभागिता सुनिश्चित गर्ने साथै विकास व्यवस्थापनलाई सुदृढ गराउने गरी यथार्थपरक उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति सहितको पन्ध्रौं योजनामा प्रदेश र स्थानीय तहका आवधिक योजनालाई समेत राष्ट्रिय योजनासँग सामञ्जस्य गराउने ।
- (ग) प्रदेश र स्थानीय तहले समेत संघको दीर्घकालीन सोच सहितको आवधिक योजनासँग सामाञ्जस्यता हुने गरी आवधिक योजना बनाउने । यसका लागि राष्ट्रिय योजना आयोगबाट प्रदेश र स्थानीय तहमा योजना तर्जुमासम्बन्धी दिग्दर्शन तर्जुमा गरी क्षमता विकासका कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने ।
- (घ) प्रदेश र स्थानीय तहको लागि दिगो विकास र राष्ट्रिय विकास लक्ष्य सूचकको आधारमा अनुगमन तथा मूल्याङ्कन दिग्दर्शन तयार गरी दुबै तहका पदाधिकारीलाई क्षमता विकासका कार्यक्रम सञ्चालन गराई अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीलाई तीनै तहमा संस्थागत गर्दै लैजाने ।
- (ङ) दिगो विकास लक्ष्यको कार्यान्वयनको सम्पर्क बिन्दु (Focal Point) को रूपमा काम गर्नुका साथै राष्ट्रिय सूचकहरूको आधारमा प्रदेश र स्थानीय तहको सूचकहरू तयार गरी दिगो विकास लक्ष्यलाई संघीय, प्रादेशिक र स्थानीय योजना र बजेटमा स्थानीयकरण गराउने ।
- (च) दिगो विकासको लक्ष्यलाई पूर्ण कार्यान्वयनमा ल्याउन राष्ट्रिय आधारभूत प्रतिवेदन, विश्वव्यापी एवम् राष्ट्रिय सूचकहरू सहितको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन खाका र सोको कार्यान्वयनका लागि लागत अनुमानसम्बन्धी दस्तावेजहरू तर्जुमा गरी कार्यान्वयनमा लैजाने । साथै, ती लक्ष्यका

- सूचकहरूलाई प्रदेश तथा स्थानीय तहका योजना तथा कार्यक्रमहरूमा आन्तरिकीकरण गर्ने ।
- (छ) संघीय व्यवस्थाअनुरूप मुलुकको योजना प्रणालीलाई संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका योजना प्रकृया, संगठन र तहगत योजनाहरू बीचको अन्तरसम्बन्धको स्वरूप निर्धारण तथा क्षमता विकास गर्ने ।
- (ज) राष्ट्रिय महत्वका समसामयिक विषयहरू रोजगारी सृजना, व्यापार घाटा, विप्रेषण आय, सामाजिक सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन लगायत विषयमा अध्ययन अनुसन्धान गरी आवश्यक नीति, योजना तथा कार्यक्रमहरू तर्जुमाका लागि सरकारलाई सल्लाह दिने ।
- (झ) आवधिक योजना र वार्षिक विकास कार्यक्रमबीच अन्तरसम्बन्ध स्थापित गर्नका निमित्त प्रभावकारी देखिएको मध्यमकालीन खर्च संरचनालाई कानूनका प्रावधानअनुरूप प्रदेश तथा स्थानीय तहमा समेत व्यवस्थित र सुदृढ गर्दै संस्थागत गर्ने ।
- (ञ) क्षेत्रगत नीति, आवधिक योजना, कार्यक्रम तथा आयोजना तर्जुमा र अनुगमन, मूल्याङ्कन तथा सर्वेक्षणको कार्यलाई तथ्यमा आधारित बनाउन आवश्यक पूर्वाधार विकास, क्षमता अभिवृद्धि तथा केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागलाई सुदृढीकरण गर्ने ।
- (ट) योजनाबद्ध विकास लाई नतिजामा आधारित तथा व्यवस्थित बनाउन योजना बैंकको स्थापना गर्ने र समग्र योजना तथा क्षेत्रगत नीति निर्माणको कार्यलाई अध्ययन अनुसन्धानसँग जोडी अनुगमन प्रणालीलाई बलियो बनाउने ।

#### ४.४.२ सहकार्यात्मक संघीयता, तहगत समन्वय एवम् वित्तीय संघीयता

- (क) सहकार्यात्मक संघीयता कार्यान्वयनका लागि केन्द्रीय सरकारका मन्त्रालयहरूका बीच, केन्द्र र प्रदेश सरकारका बीच, प्रदेश प्रदेशका बीच, प्रदेश र स्थानीय तहका बीच एवम् केन्द्र र स्थानीय तहबीच योजना, कार्यक्रम तथा आयोजनाका विषयमा नीतिगत समन्वयका लागि आवश्यक संस्थागत व्यवस्था गर्ने ।
- (ख) आगामी योजनामा वित्तीय संघीयताको अल्प, मध्य र दीर्घकालीन सोच र दृष्टिकोण सहितको कार्यक्रम ल्याउन प्राथमिकता दिइने ।
- (ग) वित्तीय संघीयताको आधार र अर्थतन्त्रको बलियो जग स्थानीय अर्थतन्त्र भएकोले आयात व्यवस्थापन र निर्यात प्रवर्द्धन हुने उच्च मूल्य अभिवृद्धि हुने कम तौल भएका साना तथा महत्वपूर्ण उत्पादनको लागि परम्परागत ज्ञान र सिप तथा स्थानीय कच्चा प्रदार्थमा आधारित लघु तथा घरेलु उद्योगको लागि वित्तीय उत्प्रेरणा सहितको उत्पादन बृद्धिमा जोड दिने ।
- (घ) अर्थ मन्त्रालयसँगको सहकार्यमा आर्थिक सुधारका क्षेत्रहरूमा आवश्यक क्षेत्रगत नीति तथा योजना तर्जुमा र कार्यान्वयन गर्ने ।
- (ङ) आयोजनाको छनौट, प्राथमिकीकरण र स्रोत विनियोजन प्रभावकारी बनाउन मध्यमकालीन खर्च संरचनालाई सबै सरकारमा संस्थागत गर्ने ।

### ४.४.३ आयोजना व्यवस्थापन

- (क) आयोजनाको पृष्ठभूमि, आवश्यकता, औचित्य र लेखाजोखा विना नै कार्यान्वयनमा लैजाने, श्रोत विनियोजन गर्नुपर्नाका कारण बहुवर्षीय दायित्व सृजना हुँदै जाँदा आवधिक योजनासँगको सामञ्जस्यता एवम् वित्तीय अनुशासन कायम राख्न कठिनाइ भैरहेको सन्दर्भमा राष्ट्रिय गौरव तथा प्राथमिकताका आयोजना छनौट तथा ती आयोजनाले प्राप्त गर्ने सेवा सुविधा सम्बन्धमा स्पष्ट मापदण्ड एवम् आधार तयार गरी लागू गर्ने ।
- (ख) संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका आयोजनाको अनुगमन तथा मूल्याङ्कनका लागि संघीय कानूनको रूपमा अनुगमन तथा मूल्याङ्कन सम्बन्धी विधेयक संघीय संसदमा प्रस्तुत गर्ने ।
- (ग) आवधिक योजनाको निर्दिष्ट लक्ष्य हासिल गर्ने गरी प्राथमिकता सहित आयोजना पहिचान र पूर्ण तयारीका साथ आयोजना कार्यान्वयनमा लैजान आयोजना बैंक स्थापना गरी संस्थागत गर्ने । साथै, हाल सञ्चालनमा रहेका पहिलो र दोस्रो प्राथमिकताका सबै आयोजनाको लेखाजोखा गर्न लगाउने ।
- (घ) विकास निर्माण कार्यमा संलग्न निजी, सहकारी तथा सामुदायिक क्षेत्रको साभेदारी तथा सहकार्यलाई प्रवर्द्धन गर्दै क्षमता विकास तथा विस्तार गर्ने र अनुगमन तथा नियमन व्यवस्थालाई प्रभावकारी बनाइने ।
- (ङ) आयोजना प्रमुखसँग कार्यसम्पादन संभौता गर्ने र आयोजना प्रमुखलाई सेवा अवधि रहेसम्म आयोजना पहिचान, पूर्वतयारी र कार्यान्वयनका सबै चरणमा एउटै नेतृत्व रहने गरी आयोजना अवधीभर काम गर्ने गरी जिम्मेवारी तोक्ने व्यवस्था गर्न लगाउने ।
- (च) आयोजनाको सार्वजनिक खरिद गुरुयोजना बनाई त्यसको आधारमा बजेट विनियोजन र आयोजना व्यवस्थापनको कार्य गर्ने गराउने । यसैको आधारमा परीक्षण गर्ने निकायले पनि अनुगमन तथा मूल्याङ्कन गर्ने । आयोजना बैंकबाट लेखाजोखा र खरिद गुरुयोजना तयार भएका आयोजनामा मात्र बहुवर्षीय ठेक्का गर्न आवश्यक व्यवस्था गरिने ।
- (छ) हालका आयोजना सञ्चालन गर्ने निकायले एउटै क्षेत्रमा बहु आयोजना कार्यान्वयन इकाई राख्ने गरेको पाइएकोले एउटै इकाइबाट काम गर्न सक्ने सक्षम संस्थाको रूपमा विकास गर्ने ।
- (ज) विकास आयोजना तथा कार्यक्रमको समन्वय, सहजीकरण र समस्याको सम्बोधन गर्न प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषदको कार्यालयमा तत्काल समस्या समाधान कक्षको स्थापना गर्ने । राष्ट्रिय गौरवका आयोजना तथा वार्षिक रु. ५० करोडभन्दा बढी बजेट विनियोजन भएका राष्ट्रिय प्राथमिकताप्राप्त आयोजना तथा कार्यक्रमको प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषदको कार्यालय, राष्ट्रिय योजना आयोग, अर्थ मन्त्रालय र सम्बन्धित मन्त्रालयका उच्च व्यवस्थापकको कार्यदल बनाई आयोजना तथा कार्यक्रमको निरन्तर कार्यसम्पादन परीक्षण गरी प्रतिवेदन लिने प्रणालीको विकास गर्ने ।
- (झ) सम्माननीय प्रधानमन्त्रीको उपस्थितिमा प्रत्येक चौमासिकमा हुने राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको बैठकमा विषयगत क्षेत्रका माननीय मन्त्री, सचिव तथा आयोजना प्रमुखले आयोजना तथा मन्त्रालयगत प्रगति विवरणको समीक्षा गर्ने प्रणालीको थालनी गर्ने ।



- (ज) संघीय शासन प्रणालीअनुसार विभिन्न तहगत सरकारहरूमा हुने योजनाहरूको छनौट र योजना अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रक्रियालाई क्रमशः प्रदेश तथा स्थानीय तहमा संस्थागत गर्ने कार्यमा समन्वय गर्ने ।
- (ट) एकीकृत रूपमा राष्ट्रिय गौरव, प्रादेशिक सन्तुलनका आयोजना र प्राथमिकता प्राप्त आयोजनाहरूको छनौट गर्न आयोजना बैंक स्थापना गर्ने ।

#### ४.४.४ सुशासन तथा संगठन व्यवस्थापन

- (क) सम्माननीय प्रधानमन्त्री समक्ष नेपाल सरकारका अर्थमन्त्री, राष्ट्रिय योजना आयोगका उपाध्यक्ष, अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगका प्रमुख आयुक्त, महालेखा परीक्षक र नेपाल राष्ट्र बैंकका गभर्नरसँग तत् तत् निकायबाट सम्पादित काम र सोको प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत गर्ने परम्पराको थालनी गर्ने ।
- (ख) आयोगको काम कारवाहीलाई थप प्रभावकारी बनाउन र आयोगका निर्णयहरूको कार्यान्वयन सुनिश्चित गर्न कानूनद्वारा व्यवस्थित गर्ने ।
- (ग) संघीय शासकीय प्रणालीअनुरूप आयोगलाई प्राप्त कार्यदेशको प्रभावकारी सम्पादन गर्न समयानुकूल सांगठनिक एवम् व्यवस्थापकीय पुनःसंरचना गर्ने । साथै, आयोगको कार्यक्षमता एवम् कार्यदक्षतामा अभिवृद्धि हुनेगरी क्षमता विकासका कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने तथा साधन श्रोत सम्पन्न बनाउने ।
- (घ) नीति, अनुसन्धान तथा विकासका क्षेत्रमा विज्ञ संस्थाको रूपमा अन्तरसम्बन्धित विषयहरू - गरिवी निवारण, सामाजिक विकास, पर्यावरणीय संरक्षण, दिगो विकासको क्षेत्रमा काम गर्ने संस्थाहरूको राष्ट्रिय समन्वयकर्ता संस्थाको रूपमा विकास गर्ने ।
- (ङ) गरिवी निवारण, सामाजिक विकास, पर्यावरण संरक्षण जस्ता राष्ट्रिय अभियानहरू एवम् राष्ट्रिय संरचनाहरू-लगानी बोर्ड, युवा स्वरोजगार कोष, गरिवी निवारण कोषका कार्यक्रमहरू राष्ट्रिय विकासको ढाँचाअनुरूप निर्देशित गर्ने ।
- (च) तथ्याङ्कीय व्यवस्थापनका कार्यहरूलाई राष्ट्रिय आवश्यकता, बदलिँदो परिवेश र अन्तर्राष्ट्रिय मूल्य मान्यता अनुरूप व्यवस्थित रूपमा अगाडि बढाउन राष्ट्रिय तथ्याङ्क विकास रणनीति तर्जुमा गरी लागू गर्ने ।
- (छ) संघीय शासकीय प्रणाली अनुरूप केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागको संगठनात्मक पुनर्संरचना गरी राष्ट्रिय तथ्याङ्क प्रणालीको व्यवस्थापन गर्ने ।

### ४.५ सुशासन, विकास र समृद्धिका सम्भावना एवम् प्राथमिकता र अपेक्षित लक्ष्य प्राप्तिका आधार

सुशासन, विकास र समृद्धिको लागि नेपाल सरकारको राष्ट्रिय विकास लक्ष्यको रूपमा 'समृद्ध नेपाल, सुखी नेपाली' रहेको छ । यस लक्ष्य हासिल गर्न देहायका सोच तत्व आधारस्तम्भको आधारमा मुलुकको विकास नीति योजना तथा कार्यक्रम बनाउनु पर्दछ ।

### समृद्धि (Prosperity)

- (क) उच्च समतामूलक राष्ट्रिय आय (High and equitable national income)
- (ख) मानव पूँजी निर्माण तथा सम्भावनाको पूर्ण उपयोग (Development and full utilization of human capital potential)
- (ग) सर्वसुलभ तथा आधुनिक पूर्वाधार एवम् आवद्धता (Accessible and modern infrastructure and connectivity)
- (घ) उत्पादन र उत्पादकत्व (Production and productivity)

### सुखीपन (Happiness)

- (क) परिस्कृत तथा मर्यादित जीवन (Well-being and decent standard of living)
- (ख) सभ्य र न्यायपूर्ण समाज (Civilized and just society)
- (ग) स्वस्थ र सन्तुलित पर्यावरण (Healthy and balanced ecology)
- (घ) सुशासन (Good governance)
- (ङ) पूर्ण लोकतन्त्र (Comprehensive democracy)
- (च) राष्ट्रिय एकता र सम्मान (National unity and dignity)

### ४.५.१ राष्ट्रिय लक्ष्यको मापनको लागि विकासका सूचकहरू

| क्र.सं | राष्ट्रिय लक्ष्य                              | सूचक  |
|--------|---|---|
| १.१    | उच्च र समतामूलक राष्ट्रिय आय                  | <ul style="list-style-type: none"> <li>• उच्च आय वा औद्योगिक राष्ट्रको स्तरको प्रतिव्यक्ति आय</li> <li>• शून्य निरपेक्ष गरिबी</li> <li>• राष्ट्रिय आमदानीमा तल्लो ४० प्रतिशत जनसंख्याको अनुपात</li> </ul>   |
| १.२    | मानव पूँजी निर्माण तथा सम्भावनाको पूर्ण उपयोग | <ul style="list-style-type: none"> <li>• गुणस्तरीय, रोजगारमूलक तथा जीवनपयोगी शिक्षा प्राप्त नागरिक</li> <li>• स्वस्थ र लामो आयु भएका नेपाली</li> <li>• उत्पादनशील र मर्यादित रोजगारीमा संलग्न जनसंख्या</li> </ul>   |
| १.३    | सर्वसुलभ र आधुनिक पूर्वाधार एवम् आवद्धता      | <ul style="list-style-type: none"> <li>• सर्वसुलभ, सुरक्षित र आधुनिक यातायात सेवा</li> <li>• सहरी पूर्वाधारमा आवद्ध जनसंख्या</li> <li>• स्वच्छ उर्जाको उत्पादन तथा उपभोगमा यसको अनुपात</li> <li>• सूचना प्रविधिमा आबद्ध जनसंख्या</li> </ul>   |
| १.४    | उत्पादन तथा उत्पादकत्व                        | <ul style="list-style-type: none"> <li>• कृषि, वनजन्य तथा औद्योगिक उत्पादन र अर्थतन्त्रमा सोको हिस्सा</li> <li>• आयात-निर्यात अनुपात</li> <li>• राष्ट्रिय, क्षेत्रगत तथा उत्पादनका साधनको उत्पादकत्व</li> <li>• उर्जा उपभोगमा स्वच्छ उर्जाको अनुपात</li> </ul>                        |
| २.१    | परिस्कृत तथा मर्यादित जीवन                    | <ul style="list-style-type: none"> <li>• नागरिक स्वस्थता (शारीरिक, मानसिक तथा मनोवैज्ञानिक)</li> <li>• सुविधासम्पन्न तथा सुरक्षित आवास</li> <li>• गतिशील सामाजिक जीवन</li> <li>• आधुनिक भौतिक सम्पत्ति माथिको समतामूलक पहुँच वा स्वामित्व</li> <li>• उच्च नागरिक सन्तुष्टि</li> </ul> |

| क्र.सं | राष्ट्रिय लक्ष्य                    | सूचक   |
|--------|-------------------------------------|--|
| २.२    | सभ्य र न्यायपूर्ण समाज              | <ul style="list-style-type: none"> <li>विभेद, हिंसा र अपराधमुक्त समाज</li> <li>सामाजिक सुरक्षा तथा संरक्षण</li> <li>सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता प्रवर्धन तथा संरक्षण</li> </ul>   |
| २.३    | स्वस्थ र सन्तुलित पर्यावरणीय पद्धति | <ul style="list-style-type: none"> <li>प्रदुषणमुक्त र स्वच्छ वातावरण</li> <li>जैविक विविधता संरक्षण र पर्यावरणीय सन्तुलन</li> <li>जलवायु परिवर्तन अनुकूलनशीलता</li> <li>प्राकृतिक विपद् उत्थानशील समाज र अर्थतन्त्र</li> </ul> |
| २.४    | सुशासन                              | <ul style="list-style-type: none"> <li>कानुनी शासन</li> <li>उच्च सदाचार (भ्रष्टाचार अनुभूति सूचकांक)</li> <li>विद्युतीय प्रणालीमा आधारित सबल, सक्षम, जवाफदेही सार्वजनिक सेवा</li> <li>सुदृढ संघीय शासन प्रणाली</li> </ul>      |
| २.५    | पूर्ण लोकतन्त्र                     | <ul style="list-style-type: none"> <li>शान्ति र स्थिरता</li> <li>स्वच्छ, स्वतन्त्र र कम खर्चिलो निर्वाचन</li> <li>मौलिक हकको प्रत्याभूति</li> <li>नागरिक सहभागिता</li> </ul>   |
| २.६    | राष्ट्रिय एकता र सम्मान             | <ul style="list-style-type: none"> <li>नेपालीत्वको उच्च भावना</li> <li>उच्च सामाजिक सद्भाव</li> <li>उच्च मानव तथा अन्य सुरक्षा</li> <li>अत्यावश्यक वस्तु र सेवामा आत्मनिर्भरता</li> </ul>                                      |

## अनुसूची - १

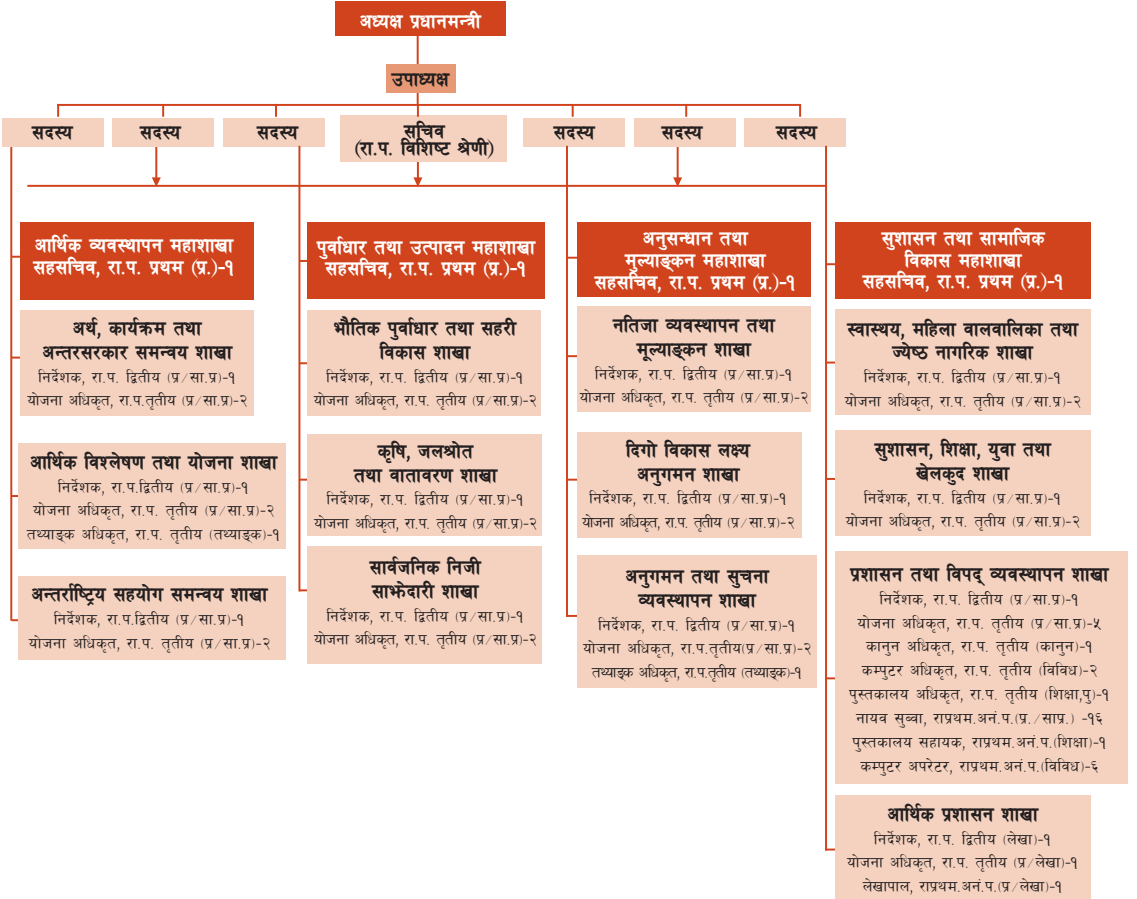
# राष्ट्रिय योजना आयोगको स्वरूप

राष्ट्रिय योजना आयोग (गठन तथा कार्य सञ्चालन) आदेश, २०७४ को दफा ३ बमोजिमको आयोगको स्वरूप

|  |            |
|--|------------|
| सम्माननीय प्रधानमन्त्री                                    | अध्यक्ष    |
| नेपाल सरकारबाट नियुक्त एक जना                              | उपाध्यक्ष  |
| नेपाल सरकारबाट नियुक्त कम्तीमा एकजना महिलासहित बढीमा छ जना | सदस्य      |
| मुख्य सचिव, नेपाल सरकार                                    | सदस्य      |
| सचिव, अर्थ मन्त्रालय                                       | सदस्य      |
| सचिव, राष्ट्रिय योजना आयोग                                 | सदस्य-सचिव |

## अनुसूची - २

# राष्ट्रिय योजना आयोगको संगठन स्वरूप



## राष्ट्रिय योजना आयोग दरवन्दी तालिका

| सि.नं.       | पद नाम             | श्रेणी          | सेवा         | समूह/उपसमूह       | मौजुदा दरवन्दी | पदपूर्तिको अवस्था |          |
|--------------|--------------------|-----------------|--------------|-------------------|----------------|-------------------|----------|
|              |                    |                 |              |                   |                | पूर्ति            | रिक्त    |
| १.           | सचिव               | रा.प. विशिष्ट   | प्रशासन      |                   | १              | १                 | ०        |
| २.           | सहसचिव             | रा.प. प्रथम     | प्रशासन      |                   | ४              | ४                 | ०        |
| ३.           | कार्यक्रम निर्देशक | रा.प. द्वितीय   | प्रशासन      | सा. प्रशासन       | १२             | १२                | ०        |
| ४.           | उप सचिव लेखा       | रा.प. द्वितीय   | प्रशासन      | लेखा              | १              | १                 | ०        |
| ५.           | योजना अधिकृत       | रा.प. तृतीय     | प्रशासन      | सा. प्रशासन       | २६             | २६                | ०        |
| ६.           | लेखा अधिकृत        | रा.प. तृतीय     | प्रशासन      | लेखा              | १              | १                 | ०        |
| ७.           | तथ्याङ्क अधिकृत    | रा.प. तृतीय     | ने.आ.यो.त.   | तथ्याङ्क          | २              | २                 | ०        |
| ८.           | कानून अधिकृत       | रा.प. तृतीय     | नेपाल न्याय  | कानून             | १              | ०                 | १        |
| ९.           | कम्प्युटर अधिकृत   | रा.प. तृतीय     | विविध        |                   | २              | २                 | ०        |
| १०.          | पुस्तकालय अधिकृत   | रा.प. तृतीय     | शिक्षा       | पुस्तकालय विज्ञान | १              | १                 | ०        |
| ११.          | नायब सुब्बा        | रा.प.अनं. प्रथम | प्रशासन      | सा. प्रशासन       | १६             | १०                | ६        |
| १२.          | पुस्तकालय सहायक    | रा.प.अनं. प्रथम | शिक्षा       | पुस्तकालय विज्ञान | १              | १                 | ०        |
| १३.          | लेखापाल            | रा.प.अनं. प्रथम | प्रशासन      | लेखा              | १              | ०                 | १        |
| १४.          | कम्प्युटर अपरेटर   | रा.प.अनं. प्रथम | विविध        |                   | ६              | ६                 | ०        |
| १४.          | ह.स.चा.            | श्रेणी विहीन    | इन्जिनियरिङ् | जनरल मेकानिक्स    | १४             | १४                | ०        |
| १५.          | कार्यलय सहयोगी     | श्रेणी विहीन    | प्रशासन      |                   | १६             | १६                |          |
| <b>जम्मा</b> |                    |                 |              |                   | <b>१०५</b>     | <b>९७</b>         | <b>८</b> |

## अनुसूची - ३

# राष्ट्रीय विकास समस्या समाधान समितिको स्वरूप

|                                 |                 |
|---------------------------------|-----------------|
| सम्माननीय प्रधानमन्त्री         | अध्यक्ष         |
| मन्त्री                         | सदस्य           |
| राज्यमन्त्री                    | सदस्य           |
| उपाध्यक्ष, राष्ट्रिय योजना आयोग | सदस्य           |
| सहायक मन्त्री                   | सदस्य           |
| मुख्य सचिव                      | सदस्य           |
| सदस्य, राष्ट्रिय योजना आयोग     | सदस्य           |
| अर्थ सचिव                       | सदस्य           |
| सचिव, राष्ट्रिय योजना आयोग      | सदस्य-सचिव      |
| विषयसँग सम्बन्धित पदाधिकारीहरू  | आमन्त्रित सदस्य |

## अनुसूची - ४

# नेपाल: दिगो विकास लक्ष्य वर्तमान अवस्था र भावी मार्गचित्र २०१६-२०३०

राष्ट्रिय योजना आयोग द्वारा विश्वव्यापी रूपमा सहमत सबै राष्ट्रहरूको संयुक्त विकासको मार्गदर्शनको रूपमा रहेको दिगो विकास लक्ष्यलाई कार्यान्वयनयोग्य बनाउन र यसका लक्ष्यहरू हासिल गर्न सो सँग सम्बन्धित परिमाणात्मक लक्ष्य तय गरि “दिगो विकास लक्ष्य वर्तमान अवस्था र भावी मार्गचित्र २०१६-२०३०” प्रकाशित गरेको छ।

यो प्रतिवेदनले नेपालको विकासका अवस्थाहरूको विस्तृत जानकारीहरू सङ्ग्रह गरेको छ साथै सन् २०१९ (चौधौँ योजनाको अन्तिम वर्ष), २०२२ (अति कम विकसित राष्ट्रबाट स्तरोन्नति हुने अपेक्षित वर्ष), र २०२५ (तीव्र गतिको विकास गर्नको निम्ति अनुकूल बिन्दु) जस्ता बीचका अवधिहरूका महत्वपूर्ण कोसेदुङ्गाहरू लगायत सन् २०३० सम्मका लागि एउटा स्पष्ट मार्गचित्र प्रस्तुत गरेको छ। यसले दिगो विकास लक्ष्यहरू प्राप्त गर्ने कार्यमा देशले राम्ररी विचार गर्नुपर्ने महत्त्वपूर्ण मुद्दाहरू र चुनौतीहरूमाथि प्रकाश पारेको छ। यो प्रतिवेदनको अनुगमन खाकाले दिगो विकास लक्ष्यहरूका राष्ट्रिय सूचकहरू अध्यावधिक गरेको छ र विश्वव्यापी दिगो विकास लक्ष्यहरूअनुरूप हुनेगरी तिनीहरूलाई समायोजन गरेको छ। यी लक्ष्यहरूले “कसैलाई पनि पछि पारिएको छैन” भन्ने मूल मन्त्रलाई आत्मसात् गरेका छन्।

## नेपालको विकासको पुनरावलोकन

यो दस्तावेजले सन् २०३० सम्ममा नेपाललाई न्यायपूर्ण तथा समृद्ध मुलुक बनाउने परिकल्पना (Envision) गरेको छ। सन् २०३० र दिगो विकास लक्ष्यहरू पूरा हुने अन्तिम मिति एकै समयमा परेको छ। यद्यपि, सबै १७ ओटा लक्ष्यहरू र १६९ परिमाणात्मक लक्ष्यहरू विश्वव्यापी चस्माबाट हेरिएका वैधानिक लक्ष्यहरू हुन्, तर पनि स्रोतसाधनहरूको अभाव भैलिरहेको नेपालजस्तो देशले यी लक्ष्यहरूलाई हासिल गर्न यिनीहरूलाई प्राथमिकीकरण एवम् स्थानीयकरण गर्दै बढी उपलब्धितर्फ उन्मुख हुने तलैबाट सुरु भएको (Bottom up) मार्गलाई प्रोत्साहन दिन आवश्यक छ। नेपालको लागि दिगो विकास लक्ष्यहरूअनुरूप नेपाली उत्कृष्ट घटनाक्रमहरू र कोसेदुङ्गाहरूको जगमा स्वदेशमै बनेको मार्गचित्र आवश्यक हुन्छ।



ऐतिहासिक रूपमै नेपालको आर्थिक परिवर्तनको गति सुप्त रहेको छ। बितेका ५० वर्षमा नेपालको विभिन्न दशकहरूको औषत बृद्धिदर २ देखि ५ प्रतिशतको बीचमा रहेको छ, भने आर्थिक परिवर्तन हासिल गर्न चाहिने कुल लगानीका दरहरू पनि पर्याप्त छैनन्। बितेको दशकमा स्वदेशमा राम्रो आमदानी हुने रोजगारीहरूको कमीको कारण ज्यादै ठूलो स्तरमा बसाइँसराइ भएको छ। फलस्वरूप, नेपालको अर्थतन्त्र विप्रेषण आयमा बढी मात्रामा निर्भर हुन पुगेको छ।

बितेका दुई दशकमा नेपालले निरपेक्ष गरिबीको रेखामुनि रहेका जनसंख्याको अनुपात आधाभन्दा बढीले घटाएको छ - सन् १९९२ को ४९ प्रतिशतबाट २०१५ मा २३ प्रतिशतमा झारेको छ। बाल र मातृ मृत्युदरहरू उल्लेख्य रूपमा घटाएको छ। प्राथमिक विद्यालयमा विद्यार्थी भर्ना ९६ प्रतिशतभन्दा बढी भएको छ भने लैङ्गिक समता (Parity) कायम भएको छ। अपेक्षित औषत आयु (जन्मेको समयमा) ७० वर्ष नाघेको छ। नेपालको यस क्षेत्रमा रहेको सुधारको गति विश्वमा नै भएका उच्चतम सुधारका गतिहरूमध्ये एक हो। यद्यपि, गुणस्तरमा धेरै अन्तर रहेको छ तापनि नेपालका उपलब्धिका धेरैजसो गैरआय सूचकहरू यस क्षेत्रका अन्य देशहरूसँग तुलनायोग्य रहेका छन्। मानव विकास सूचकाङ्कद्वारा मापन गरिएको महिलाहरू र पुरुषहरूको निम्ति उपलब्धिहरूको अनुपात, उदाहरणको निम्ति, भारत, बंगलादेश र पाकिस्तानभन्दा उच्च छन्। पछिल्लो बहुआयामिक गरिबी सूचकाङ्कले २८.६ प्रतिशत नेपालीहरू अबै पनि बहुआयामिक दृष्टिकोणले गरिब रहेको देखाएको छ। यसको अर्थ यिनीहरूको जीवन विभिन्न किसिमका अभावहरूबाट एकैसाथ ग्रसित भएको छ। तर यो अध्ययनले नेपालको बहुआयामिक गरिबी सूचकाङ्क सन् २००६ र २०१४ को बीचमा आधा घटेको तथ्य पनि उजागर गरेको छ।

संयुक्त राष्ट्र सङ्घले परिभाषित गरेको अति कम विकसित देशहरूको सूचीबाट विकासशील राष्ट्रहरूमा सन् २०३० अगावै नेपाल स्तरोन्नति भइसक्नेछ। नेपालले सन् २००० र २०१५ को बीचमा हासिल गर्ने भनी राखिएका सहश्राब्दी विकास लक्ष्यहरूमध्ये सबैजसो लक्ष्यहरू पूरा गरिसकेको छ। तथापि, यस्तो उपलब्धि सामाजिक समूहहरू, लैङ्गिक र भौगोलिक क्षेत्रहरूको दृष्टिकोणले समान रूपमा हासिल हुन सकेको छैन। यिनै उपलब्धिहरूको जगमा नेपालले सन् २०३० सम्ममा दिगो विकासका लक्ष्यहरू सबै नभए पनि अधिकांश हासिल गर्नेछ। क्षेत्रीय अर्थतन्त्रलाई वातावरण परिवर्तनविरुद्ध लड्दै ऊर्जाका स्वच्छ स्रोतहरूतर्फ लैजान नेपालले महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाउने कुरा मार्गदर्शनले समेटेको छ।

यसको लागि नेपालको सर्वसम्मत कार्यसूची हुनु आवश्यक छ, जसले आउँदो दुई दशकसम्म कम्तीमा ७ प्रतिशतको तीव्र आर्थिक बृद्धिदर हासिल गर्ने दिशातर्फ नेपाललाई अगाडि बढाउँनुपर्ने हुन्छ। यसको साथसाथै सुदृढ मानव क्षमताहरू विकास गर्ने प्रयत्नहरू र मुलुकको वातावरण र प्राकृतिक स्रोतहरूलाई संरक्षण गर्दै प्राकृतिक तथा आर्थिक भट्का सहन सक्ने बनाउन राष्ट्रिय

समानुकूलन (Resilience) लाई बढाउनु जरुरी छ । यसप्रकार विकासका साधनहरूको गतिलाई अगाडि बढाउने मात्र नभई विकासको साध्य (End) लाई उत्तिकै रूपमा भरथेग तथा पोषण गर्ने दूरदृष्टि पनि हुनुपर्छ ।

दिगो विकास लक्ष्य वर्तमान अवस्था र भावी मार्गचित्र २०१६-२०३० ले लिएको मुख्य साभा आकाङ्क्षाहरू (Shared Aspirations)

## १. समृद्धिको प्राप्ति (Generating prosperity)

नेपालका सबल र कमजोर पक्षहरू (Vulnerabilities) चीरपरिचित छन् । यसको विकट भूबनोटले विश्वबजारहरूमा वस्तुहरूको पहुँचका साथसाथै देशभित्रको यातायातलाई महँगो बनाउँछ । नेपाल भूकम्पीय दृष्टिकोणले सक्रिय टेक्टोनिक प्लेटको सीमानामाथि रहेको छ, बदलिएको मनसुन चक्र, पग्लदै गएका हिमालयका हिमनदीहरू र वातावरण परिवर्तनका अन्य असरहरूको जोखिममा रहेको छ भने यसको जैविकविविधता पनि कमजोर अवस्थामा रहेको छ । तथापि, यही भूगोलले पर्यटन उद्योग र भूदृष्य बजारलाई पनि सघाउ पुऱ्याउँछ, जुन हाम्रो समृद्धिको भरोसा बन्न सक्छ । तसर्थ, हामीले प्राकृतिक स्रोतहरूलाई वायु प्रदूषण, घट्दै गएको दृष्यमानता (Visibility) र क्षयीकरणका अन्य स्रोतहरूबाट बचाइरहन आवश्यक छ ।

विश्वकै अति सुन्दर देशहरूमध्येको एउटा देश नेपाल भए तापनि अर्थतन्त्रमा यसबाट प्राप्त आम्दानीको हिस्सा हैटीको भन्दा पनि कम छ भने कम्बोडिया भन्दा त छ गुणा कम छ । बढी उत्पादकत्व हुने तराईका मलिला भूमिहरू, कृषिको विविधीकरण गर्न सघाउ पुऱ्याउने पहाडी भूभाग र कृषिमैत्री हावापानिको उपयोग अत्यन्त कममात्रामा गरिएको छ । सिँचाइ आयोजनाहरू सम्पन्न भएसँगै वर्षेभरि सिँचाइ सुविधा उपलब्ध हुनाको साथै राम्रा सडक, प्रसार सेवा, वित्तीय पहुँच र आवश्यक बिउ तथा मलजस्ता कृषि सामग्रीहरूको व्यवस्थाले कृषि खाद्य सुरक्षाको व्यवस्थापन गर्दै नेपाल आधुनिक व्यावसायिकीकरणतर्फ अगाडि बढ्न सक्नेछ ।

नेपालसँग ऊर्जाका सबै आवश्यकताहरू वातावरणमैत्री जलविद्युत्बाट पूरा गर्ने क्षमता रहेको छ भने बचत भएको ऊर्जा निर्यात गर्न सक्छ । १००० मेगावाटभन्दा कम रहेको हालको विद्युतको जडित क्षमता आउँदो २ वर्षमा दोब्बरभन्दा बढीले बृद्धि हुनेछ भने निर्माणको क्रममा रहेका ठूला जलविद्युत आयोजनाहरू सम्पन्न भएसँगै आउँदो १० वर्षमा १० हजार मेगावाटभन्दा बढी विद्युत् उत्पादन हुने अवस्था रहेको छ । यसले विद्युत् कटौतीलाई पूर्ण रूपले हटाउनेछ । हाल भइरहेको विद्युत् कटौतीले उपभोक्तालाई पिरोलिरहेको छ, निजी क्षेत्रको प्रतिष्पर्धी क्षमतालाई पूर्ण विराम लगाएको छ, व्यापार घाटालाई उच्च रूपमा बढाएको छ साथै वायु प्रदूषण तीव्र रूपमा बढाउन योगदान गरिरहेको छ ।

सस्तो, भरपर्दो र वातावरणमैत्री ऊर्जाले उपभोग्य वस्तुहरू बेहोर्न सकिने मूल्यमा उपलब्ध गराउन सहयोग गर्ने, नेपाली उद्योगहरूको प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढाउने र धूवाँयुक्त भान्साकोठाहरू जसले वर्षेनी २३ हजारभन्दा बढी व्यक्तिहरूको ज्यान लिने गरेको छन् त्यसबाट मुक्ति दिलाउन सहयोग गर्नेछ ।

सस्तो, भरपर्दो र वातावरणमैत्री ऊर्जाले निजी लगानीलाई औद्योगिक विकासमा लगाउन पनि प्रोत्साहन गर्छ जसबाट रोजगारीमा समेत विस्तार हुन्छ । महत्वाकाङ्क्षीका तर यथार्थवादी नीतिहरूअन्तर्गत अगाडि बढाइने स्वच्छ ऊर्जा, कृषि पर्यटन क्षेत्रले नेपाललाई एउटा रोजगारी सिर्जना गर्न र न्यून कार्बन भएको अर्थतन्त्रतर्फ अगाडि बढ्न सहयोग गर्नेछन् । यसका अतिरिक्त, आर्थिक बृद्धिको लागि ठूलोस्तरमा परिवर्तन ल्याउन सक्ने अरू थप स्रोतहरू नेपालले सिर्जना गर्न पनि आवश्यक छ ।

विश्वका सबैभन्दा बढी जनसंख्या भएका चीन र भारतबीच रहेको हाम्रो भौगोलिक अवस्थिति ठूलोस्तरमा परिवर्तन ल्याउन सक्ने बाहकको रूपमा रहेको छ । इतिहासलाई हेर्दा औद्योगिक क्रान्तिको सुरुवातमा संयुक्त अधिराज्य (यू.के.) लाई आफ्नो प्रतिव्यक्ति आय दोब्बर पार्न १५० वर्ष लाग्यो भने संयुक्त राज्य अमेरिकालाई ५० वर्ष कुनूपर्यो, तर भारत र चीन दुवै देशहरूले प्रतिव्यक्ति उत्पादन करिब १५ वर्षमा नै दोब्बर पार्न सफल भए । म्याकिन्से एण्ड कम्पनी (McKinsey & Co.) ले जनाएअनुसार चीन र भारतको औद्योगिक विकासको सुरुको चरणमा प्रत्येक देशको जनसंख्या १ अर्ब थियो, जबकि संयुक्त अधिराज्य र संयुक्त राज्य अमेरिकाको जनसंख्या १ करोडभन्दा कम थियो । यसर्थ, हाम्रा यी दुवै छिमेकीहरूमा यसप्रकारको आर्थिक विकासको उच्च गति हुनुमा औद्योगिक क्रान्तिका सुरुका दिनहरूको भन्दा ज्यादै बढी बलशाली शक्तिले काम गरेको देखिन्छ । नेपालले रणनीतिक रूपमै Growth poles र Agglomerations एवम् मूल्य श्रृङ्खलाहरूलाई र अन्तर्राष्ट्रिय उत्पादन सञ्जालहरूलाई जोडेर लाभ लिन सक्छ । लगभग १ अर्ब उपभोक्ताहरू आज नेपालको ढोकाअगाडि नै छन् र सन् २०३० सम्ममा यो संख्या अझै बढ्नेछ । विश्वको आधा जनसंख्या ६ घण्टाभन्दा कमको हवाई उडानमा रहेको छ । आफ्नो ढोकामै रहेको यस्तो भाग्यलाई प्राप्त गर्न कदमहरू चाल्दै नेपालले पश्चिमको समृद्ध र पूर्ण रूपले विकसित बजारहरूबाट फाइदा लिन निरन्तर प्रयासरत रहनुपर्दछ ।

आर्थिक बृद्धिको लागि महत्त्वपूर्ण योगदान गर्ने दोस्रो स्रोत बढ्दै गएको दक्ष जनशक्ति प्रयोग गरी उत्पादन गरिने निर्यातयोग्य आधुनिक सेवाहरू हुन् जसले नेपालले लाभ लिन सक्ने उत्पादनहरूको विशिष्टीकृत बजार विस्तार गर्न सहयोग पुऱ्याउँछ । भूपरिवेष्टित देशको रूपमा नेपालले विश्व अर्थतन्त्रमा राम्रो सम्पर्क बढाउन सहयोग गर्ने क्षेत्रहरूमा सक्षम र प्रतिस्पर्धी हुन जरुरी छ, साथै सामुन्नीक मार्गमा आधारित व्यापारको बेफाइदाहरूलाई निष्प्रभावी गराउन पनि उत्तिकै आवश्यक

छ। नेपालको दीर्घकालीन उद्देश्य आधुनिक सेवाहरू सबैभन्दा कम प्रतिकाइ लागतमा उत्पादन गर्ने मात्र नभई तिनीहरूलाई भरपर्दासमेत बनाउने हुनुपर्दछ, जसले गर्दा ज्ञानमा आधारित नयाँ उद्योगहरूले जरा गाड्न सक्छन्। नेपालले टेलिकम र आथित्यसत्कारजस्ता क्षेत्रमा यस्तो परिणाम देखाइसकेको छ। बैङ्किङ क्षेत्रमा दक्ष जनशक्तिका साथै इन्जिनियरहरू र चिकित्सकहरूको संख्या विगत दुई दशकमा उच्च रूपमा बढेको छ। पछिल्ला वर्षहरूमा स्वच्छ ऊर्जा स्रोतहरूबाट उत्पादन गर्ने दिशामा पनि नेपालले महत्त्वपूर्ण फड्को मारेको छ। हवाई उड्डयन क्षेत्रमा मात्रै पनि वृद्धिको उच्च सम्भावना रहेको छ। नेपालले आफ्ना दुवै छिमेकी देशहरूको अर्थतन्त्रहरूलाई जोड्न हाल खेलेरहेको भूमिकाभन्दा अझै ठूलो भूमिका खेल्न सक्छ।

औद्योगिक क्षेत्रलाई पुनः जीवन्त तुल्याउनको लागि प्रतिस्पर्धी सेवाहरू हाम्रा सबैभन्दा उत्तम आशाहरू हुन्। सन् १९९६ मा कुल राष्ट्रिय उत्पादनको १० प्रतिशत हिस्सा ओगट्ने यो क्षेत्रको योगदान आज ६ प्रतिशतमा भरिएको छ। हालैका अन्तर्राष्ट्रिय अध्ययनहरूले देखाएअनुसार औद्योगिक क्षेत्र केही दृष्टिकोणले निकै विशेषसमेत हुन गएको छ। यसले श्रमिकको उत्पादकत्वमा सर्तहित समरूपता (Convergence) प्रदर्शित गर्दछ, श्रमशक्तिको ठूलो हिस्सालाई रोजगारी दिन्छ, र सानो आन्तरिक बजारद्वारा सीमित नभएका वस्तुहरूको माग पूरा गर्दछ। तथापि, हामीले २१ औं शताब्दीमा आफैँ विकास हुँदै गएका व्यापार र औद्योगीकरणका ढाँचाहरूलाई बुझ्न पनि जरुरी छ। नयाँ प्रविधिहरू देखापर्न थालेका छन्। उदाहरणका लागि, पूर्ण उद्योगहरूभन्दा अलगअलग रूपमा विभाजित कामहरूमा, देशहरूभित्र सञ्चालन हुने गैरनीतिगत अवरोधहरू (Behind-the-border non-policy barriers) लाई हटाउन र क्षेत्रीय रूपमा उत्कृष्ट बन्न सक्ने खास फर्महरूको प्रतिस्पर्धी क्षमता बढाउन नयाँ कुराहरूमा जोड दिन थालिएको छ। सेवाहरू प्रदान गर्ने क्षेत्रमा प्रतिस्पर्धी बन्नको लागि गुणस्तरीय स्वास्थ्य उपचार, शुद्ध पिउनेपानी, स्वच्छ वायु र निश्चय पनि उच्च गुणस्तरीय शिक्षामा पहुँच सुनिश्चित गर्न हामीले बढी लगानी गर्नु आवश्यक छ।

आज र निकट भविष्यसम्म पनि नेपालको धेरैजसो विकासको परिदृष्य विदेशबाट आउने विप्रेषणहरूद्वारा निर्धारण भइरहनेछ। विश्वका धेरै जनसङ्ख्या भएका ५० देशहरूमध्ये राष्ट्रिय आयमा विप्रेषणको सबैभन्दा बढी अनुपात भएको देश नेपाल हो, जसको हिस्सा करिब ३० प्रतिशत रहेको छ। काम गर्ने उमेरका लाखौँ युवाहरू यस्तो समयमा अरू देशहरूको निर्माणमा लागि रहेका छन् जतिखेर काम गर्ने उमेर समूहका मानिसहरू धेरै भएको नेपालको विशिष्ट जनसाङ्ख्यिक लाभलाई उच्च आर्थिक वृद्धिमा, उच्च रोजगारी सृजनामा र फराकिलो गरेको दायरा सृजनाको अवस्था मुलुकमा रहेको छ। तर नेपालमा रहेका विकर्षण (Push factors) र मुलुकबाहिरका आकर्षणका तत्त्वहरू (Pull factors) ले गर्दा विशेषगरी पारिवारिक अवस्था तथा गाउँघरबाट भइरहेको विस्थापनको सन्दर्भमा अस्थायी बसाइँसराइको सामाजिक लागतहरूलाई अवमूल्यन गरेको छ। यस्तो अवस्थाहरूलाई सुधार गर्न नीतिगत व्यवस्था आवश्यक हुन्छ। निजी विप्रेषणको

रूपमा प्राप्त हुने स-सानो रकमलाई औपचारिक माध्यमबाट भित्राउन र पुँजीकरण गर्न र वैदेशिक रोजगारीमा गएकाहरूलाई स्वदेश फर्काउने तथा उनीहरूले हासिल गरेका सीपको प्रयोगका लागि रणनीति बनाउने, र देशभित्र आकर्षक अवसरहरू सिर्जना गरी अरू युवाहरूलाई देशबाहिर जानको निमित्त प्रेरित नगर्ने अवस्था सिर्जना गर्न आवश्यक छ ।

## २. समृद्धिको हिस्सेदारी (Sharing Prosperity)

आज विश्वमा सबैभन्दा राम्रा बस्नयोग्य तथा प्रगतिशील देशहरूमा संयुक्त राष्ट्र सङ्घमा विशेषाधिकार भएका भू-राजनीतिक देशहरू पर्दैनन् । यस्ता बस्नयोग्य देशहरूमा साना नर्डिक मुलुकहरू पर्दछन् जसले अभूतपूर्व सम्पत्ति/समृद्धि आर्जन मात्र गरेनन् यस्तो सम्पत्ति/समृद्धिको न्यायिक वितरणको सुनिश्चितता पनि गरेका छन् । यी देशहरूले के राम्रा कुरा गरे त ? पहिलो, तिनीहरूले शिक्षा, विज्ञान र आधारभूत सार्वजनिक सेवाहरूमा जोड दिए । दोस्रो, समग्र राष्ट्रको समृद्धिमा जोड दिए- सबै नागरिकहरूको आधारभूत सामाजिक राजनीतिक अधिकार र सामाजिक संरक्षणको सुनिश्चितता गरे । तेस्रो, राज्यको प्रभावकारी नियमन भित्र निजी क्षेत्रको विस्तार मार्फत पूँजी निर्माणको कार्य गरे । यिनीहरूको अनुभवबाट नेपालले न्यायपूर्ण र दिगो समृद्धि हासिल गर्नको लागि धेरै कुराहरू सिक्न सक्छ ।

नेपालमा समृद्धिको सिर्जना, यसको न्यायिक वितरण र दिगोपनाको लागि राजनीतिक र प्रशासनिक संयन्त्रलाई अझ बढी प्रतिनिधिमूलक, उत्तरदायी र दक्ष बनाउनु आवश्यक छ । यस्तै, नेपालका आर्थिक क्षेत्रमा कार्यरत संघ-संस्थाहरूले पनि आफ्नो कामकारवाहीमा निष्पक्षता, समान व्यवहार, कानूनको पालनाको सुनिश्चितता गरी विचार, सिर्जनाशिलता र उत्साहको कदर गर्नु आवश्यक छ । सामाजिक दृष्टिकोणबाट वर्गको आधारमा मात्र नभई जात, जाति, आदिवासी, लिङ्ग, भूगोल र उमेरको आधारहरूमा हुने सबै स्वरूपका हिंसाहरू र विभेदहरूलाई नेपालबाट हटाउनु आवश्यक हुनेछ । यसका अतिरिक्त, नयाँ खडा भएका सङ्घीय राज्यहरू वितीय रूपमा सक्षम सम्भाव्य (Viable) हुन र सामाजिक दृष्टिकोणले एक ठिक्का बन्न पनि जरुरी छ ।

राज्यको स्रोत साधनको अत्याधिक दोहनमा केन्द्रित राजनीतिक र आर्थिक संस्थाहरूको भूमिकाले राज्य गरिव हुनुपुगेको तर्क समेत गरिन्छ । त्यस बखतको राज्यले गैरकुलीनहरूलाई शिक्षा प्राप्त गर्न र निजी उद्यमहरूमा संलग्न हुनबाट वञ्चित गर्थ्यो । नागरिकहरूले मतदान गर्न पाउँदैनथे । सम्पत्तिसम्बन्धी अधिकारहरू संरक्षण गरिएका थिएनन् । शासकहरूले थोरै कर लगाएका थिए, तर त्यसको बदलामा अपर्याप्त सार्वजनिक वस्तुहरू प्रदान गर्दथे ।

सन् १९५१ मा जब राणाशासन समाप्त भयो, त्यस बेला एक प्रतिशतभन्दा कम नेपालीहरूले मात्र केही औपचारिक शिक्षा हासिल गरेका थिए र देशको कुल खेतीयोग्य जमिनमध्ये एकतिहाई

जमिन बिर्तावालाहरूको हातमा रहेको थियो । यो विचारणीय छ कि सन् १७६९ देखि १९५० सम्म पनि औषत नेपाली परिवारहरूको जीवनस्तरमा खासै परिवर्तन भएको थिएन । नेपालको राष्ट्र निर्माणको वास्तविक मधुरो प्रभाव भने सन् १९६० मा प्रजातान्त्रिक तवरले निर्वाचित भएको पहिलो सरकार शक्तिमा आएसँगै देखिएको थियो । तर यस दिशातर्फको गतिलाई सत्ता परिवर्तनले रोकिदियो र अप्रजातान्त्रिक पञ्चायती व्यवस्था स्थापना गरियो । यो अवधिमा दुई उल्लेखनीय सुधारहरू भएका थिए । पहिलो मुलकभर विद्यालयहरू खोलिए जसले आम साक्षरता बढायो र दोस्रो जमिनमा रहेको सामन्ती शासनप्रथालाई हटाई जमिनको स्वामित्वको ढाँचालाई बढी समानतायुक्त बनाइयो ।

सन् १९९० मा नेपालको राजनीतिक दायरमा विस्तार भएसँगै नेपालको अर्थतन्त्र पनि खुला भयो र आर्थिक क्षेत्रमा सुरुमा गरिएका सुधारहरूको कारण ९० को दशकमा नेपालको इतिहासमा सबैभन्दा उच्च आर्थिक बृद्धि हासिल भयो । बहुदलीय प्रजातान्त्रिक व्यवस्थाको पुनर्स्थापनापश्चात् यसले विशेषगरेर सामाजिक र पूर्वाधार विकासमा गति प्रदान गर्‍यो । विद्यालय, स्वास्थ्य चौकीहरू र यातायात तथा सञ्चारजस्ता क्षेत्रहरूमा निरन्तर रूपमा गरिएको सार्वजनिक खर्चको कारण यी क्षेत्रहरूमा पहुँच विस्तार भयो । गरिबहरूलाई मानव अधिकारहरूका बारेमा चेतना जगाएर सशक्तीकरण गर्नमा र उन्नत जीवनयापनका लागि आफैँलाई सहयोग गर्ने सामुदायिक समूहहरू निर्माण गरी जनतालाई सहयोग गर्ने कार्यमा नागरिक समाजहरू सक्रिय भए । यसम थोरै पनि शङ्का छैन कि आधुनिक सुखसुविधाहरूमा पहुँच विस्तार गर्नमा जिल्लास्तर र गाउँस्तरहरूका निर्वाचन क्षेत्रहरूको मागहरूप्रति उत्तरदायी उच्चस्वरित (Vociferous) प्रतिनिधिमूलक प्रजातन्त्रले प्रत्यक्ष भूमिका खेलेको छ । सन् २००० सम्ममा निरपेक्ष गरिबी घटाउनका लागि गरिएका लक्षित नीति/कार्यक्रमहरूको माध्यमबाट साथै सामाजिक सुरक्षाका योजनाहरू सुरु गरेर नेपालले विकासको बढी समावेशी ढाँचातर्फ अर्थपूर्ण पाइला चालेको छ ।

तथापि, भ्रष्टाचार नियन्त्रणका लागि सुप्त प्रतिक्रियाहरू र बढ्दो राजनीतिक अस्थिरतालगायत अनुभवहीन प्रजातन्त्र (Fledgling) मा देखिएका सुरुकै दरारहरूको कारण जनमानसमा व्यवस्थाप्रति नै वितृष्णा सिर्जना भयो । नेपालले सन् १९९६ देखि २००६ को बीचमा सशस्त्र नागरिक द्वन्द्व अनुभव गर्‍यो जसको शान्तिपूर्ण रूपमा गरिएको समाधानले मुलुकलाई सन् २०१५ को नयाँ सङ्घीय गणतान्त्रिक संविधानतर्फ डोरायो । यो संविधानले सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्रमा मौलिक हकहरूको लामो सूची नै प्रदान गरेको छ । सकारात्मक विभेदका विस्तृत योजना र समानुपातिक निर्वाचन प्रणालीले महिलाका साथै ऐतिहासिक रूपमै प्रतिकूल परिस्थितिमा रहेका समुदायहरूलाई सङ्घीय तथा प्रादेशिक संसद्हरूमा, स्थानीय सरकारहरू र निजामती सेवामा प्रतिनिधित्व गर्न सक्षम तुल्यायो ।

स्वतन्त्र संवैधानिक आयोगहरू (महिला, दलित, मधेशी, थारु, र मुस्लिम आयोग) का साथै राष्ट्रिय समावेशी आयोग र राष्ट्रिय मानव अधिकार आयोगजस्ता संवैधानिक आयोगहरू समावेशीकरणलाई निरन्तर राष्ट्रिय खोजको रूपमा अभू विस्तार गर्दै लैजान कानूनहरू, नीतिहरू र व्यवहारहरूमा आवश्यक परिवर्तनका लागि सिफारिश गर्न सँगै अस्तित्वमा रहनेछन् ।

### ३. समृद्धिको दिगोपना (Sustaining Prosperity)

नेपाल कमजोर भूभाग हिउँ र चट्टानी धरातल, चरनक्षेत्रहरू, वनजङ्गल, ताल, पोखरी, सीमसार र ज्यादै कठिन रूपमा खेत गरिएको जमिनहरूले बनेको छ । भू-दृष्य/प्राकृतिक दृष्यको सुन्दरता आफैँ पनि पर्यटन र अरू प्रकारका प्राकृतिक दृष्यहरूको निम्ति आकर्षक बनेको त छुट्टै छ, जैविकविविधता र पारिस्थिकीय प्रणालीहरूको हिंसावमा पनि नेपाल समृद्ध रहेका छ । आउँदो पुस्ताका लागि समृद्धिको एउटा स्रोतको रूपमा भू-दृष्य (Landscape) रहरिहन्छ भन्ने कुरा सुनिश्चित गर्न कमजोर भूभागको संरक्षण र दिगो कृषि प्रणाली हुनु पनि आवश्यक छ । नेपालले सन् २०३० सम्ममा समृद्धि हासिल गर्न आवश्यक छ जुन जनतामाभू न्यायोचित रूपमा वितरण हुने किसिमको मात्र नभई चीरकालसम्म रहरिहने पनि हुनुपर्छ । यसको निम्ति आर्थिक बृद्धिको रूपरेखालाई प्राकृतिक स्रोतहरूको संरक्षण तथा उपयोग र मानिसहरूको स्वास्थ्यको संरक्षण गर्ने कार्य साथसाथै जाने गरी बनाइनुपर्छ । यसको साथै बाह्य र आन्तरिक चुनौतीहरूलाई सम्बोधन गर्न गरिनुपर्ने तयारीका लागि पर्याप्त स्रोतसाधनहरूको लगानी गर्न पनि जरुरी छ ।

हाल नेपालमा हिंसाबाट भन्दा पनि बाढी-पहिरोको कारण र यो भन्दा पनि बढि वायु प्रदूषणका कारण मृत्युवरण गरिरहेका छन् । नेपाल विश्वमा सबैभन्दा बढी भूकम्प जाने देशहरूमध्येको एक देश हो । भूकम्पीय दृष्टिकोणले सधैं जोखिममा रहेको नेपालले मानव विकासको समानुकूलित (Resilient) पद्धतिको माग गर्दछ । यसको साथै बलिया, योजनाबद्ध तथा सुरक्षित तवरले निर्माण गरिएका पूर्वाधारहरू, भवनहरू र बस्तीहरू हुन पनि त्यतिकै आवश्यक छ ।

विपद्को न्यूनीकरणका लागि गरिने तयारीहरूको निम्ति विपद्बाट उत्पन्न हुने खतराहरू र तिनीहरूलाई सामना गर्ने उपायहरूको बारेमा सचेतना, भूभागको जोखिम नक्साहरू (Riskmapping) को तयारी, व्यवस्थापन योजनाहरू र आपतकालीन अवस्थाहरूमा अपनाइनुपर्ने तौरतरिकाहरू, तत्काल उद्धारका लागि तयारी अवस्थामा रहेको उद्धार टोली, र विभिन्न स्थानहरूमा राखिएका राहत सामग्रीहरू हुनु आवश्यक छ । नेपालका सुरक्षा निकायहरूको भूमिकालाई पहिरो, बाढी र भूकम्पजस्ता विपद्सम्बन्धी तयारी र तत्काल उद्धार गर्ने कार्यतर्फ परिणत गर्नुपर्छ । मुलुकका यातायात, सञ्चार र ऊर्जासम्बन्धी पूर्वाधारहरू बलिया तथा समानुकूलित हुनु आवश्यक छ । यस्ता पूर्वाधारहरूको नेपालको भौगोलिक कमजोरीहरूबाट बच्ने खालले गरिनुपर्छ । साथै, स्थानहरूलाई आवश्यकता अनुसार अलग गर्ने, रोकावटका बिन्दुहरूलाई छल्ने र अर्को बाटो लिनसक्ने सञ्जालहरू पनि हुनुपर्छ ।

पृथ्वीमा रहेका विभिन्न स्थानहरूमध्ये उत्तरी र दक्षिणी ध्रुवहरूसहित उच्च हिमालयहरू जलवायु परिवर्तनबाट सबैभन्दा बढी नकारात्मक रूपमा प्रभावित भएका छन्। हिमधरातलहरू र हिमनदीहरू पग्लदै छन् र नासिदै पनि गइरहेका छन्। फलत, यस्ता गतिविधिहरूले सुख्खा याममा नदीहरूमा स्वच्छ पानीको उपलब्धतालाई चुनौती दिइरहेका छन्। यस्तो स्थितिले जलविद्युत, कृषि र उद्योग क्षेत्रहरूमा दक्षिण एसियाभर नै ठूलो नकारात्मक असर पार्नेछ।

नेपालमा देखिएको जलवायु परिवर्तनका दुईओटा कारण छन्। पहिलो, धेरै टाढाका औद्योगिक क्षेत्रहरूले ठूलो मात्रामा उत्सर्जन गरेका तथा विश्वव्यापी रूपमा राम्ररी घुलमिल भएर फैलिएका र लामो समयसम्म रहिरहने हरितगृह ग्याँसहरू हुन् भने दोस्रो कारण Black Carbon लगायत छोटो अवधिको लागि वायुमण्डलमा रहने प्रदूषकहरू (SLCP) हुन्। नेपालमा प्रदूषकका मुख्य स्रोतहरूको रूपमा खाना बनाउने परम्परागत चुलोहरू र डिजेल इन्जिनहरू रहेका छन्। स्वच्छ ऊर्जाको क्षेत्रमा विभिन्न सहूलियत तथा प्रोत्साहन प्रदान गरिएको न्यूनिकरण गर्न सकिन्छ। SLCPs को यस्तो व्यवस्थापनबाट प्राप्त हुने विभिन्न फाइदाहरू जस्तै वायुको गुणस्तर, मानव स्वास्थ्य, बालिको उत्पादकत्व र पर्यटनमा हुने सुधारलाई मध्यनजर गर्दा यस्तो व्यवस्थापन तुलनात्मक रूपमा लागत प्रभावी र वातावरणमैत्री हुन्छ।

स्वच्छ ऊर्जामा आधारित खाना पकाउने पद्धति, इँटा तथा विद्युत् उत्पादन गर्ने पद्धतिका साथै वातावरणमैत्री यातायात प्रणालीलाई सन् २०३० सम्ममा पूर्ण रूपमा अवलम्बन गर्नेपर्छ। तथापि, नेपाल (SLCP) बाट मात्र प्रभावित नभएर छिमेकी देशहरूबाट उत्सर्जन हुने यस्ता खालका प्रदूषकहरूबाट पनि प्रभावित भइरहेकाले यस्तो उत्सर्जनलाई कम गर्न क्षेत्रीयस्तरमा एकीकृत र वैज्ञानिक पहल हुनु जरुरी छ।

वायु प्रदूषण दक्षिण एसियामा मृत्युको सबैभन्दा ठूला कारणहरूमध्ये एक हो। फोक्सोसम्बन्धी रोगहरूका लागि मात्र नभई बढ्दै गएको हृदयघातका लागि पनि वायु प्रदूषण जिम्मेवार छ। यसले पर्यटकहरूको संख्या घटाउँछ, पर्यटकहरूलाई आकर्षित गर्ने पहाडपर्वतहरूको दृष्यलाई धुमिल बनाउँछ, र हवाई सुरक्षाका निमित्त चाहिने आवश्यक भिजिविलिटीलाई पनि घटाउँछ। आज नेपालका धेरैजसो भागहरूको हावा अस्वस्थकर छ। खाना पकाउन परम्परागत चुलोको प्रयोग गर्ने धेरैजसो व्यक्तिहरूको घरभित्रको वायु प्रदूषण खतराको स्तरमा पुग्ने गरेको छ। विशेषगरि तराइ क्षेत्रमा पराल, गुइँठा, दाउरा आदि वाल्नेहुँदा घरभित्रको वायु प्रदूषण उच्च हुनुका साथै जाडोयाममा लाग्ने बाक्लो कुहिरो/हुस्सुको कारणले घरबाहिरको प्रदूषण समेत उच्च रहेको छ।

सन् २०३० को नेपालको परिकल्पनाले सहरहरू र गाउँहरूलाई एकअर्कासँग राम्ररी जोड्ने एवम् आबद्ध गर्नेमात्र नभई स्वच्छ वायु, स्वच्छ पिउनेपानी, फोहोरमैला को उचित व्यवस्थापन, र



शारीरिक व्यायाम गर्न, खेलन, सामाजिकीकरण गर्न र स्वस्थ रहनको लागि आवश्यक स्थानहरूको व्यवस्था गरी यी स्थानहरूलाई बढी बस्नयोग्य बनाउने महत्त्वपूर्ण लक्ष्य लिएको छ । पर्यटन, कृषि र जलविद्युत्जस्ता नेपालका समृद्धिका प्रमुख स्रोतहरूलाई कुन हदसम्म उपयोग गर्न सकिन्छ भन्ने कुरा हामिले हाम्रा वातावरणीय स्रोतसाधनहरूको कति राम्रो व्यवस्थापन गर्न सक्छौं त्यसले निर्धारण गर्दछ ।

दिगो समृद्धि कायमै राख्न बाह्य आर्थिक भट्काहरूलाई सहन सक्ने संयन्त्रहरूको पनि विकास गर्नुपर्छ । नेपालको व्यापारिक सम्बन्धहरू र आपूर्ति शृङ्खलाहरू भारतसँग गाँसिएका छन्, साथै बाह्य कारणले मूल्यमा हुने उतारचढावहरूले मुलुकभित्र बारम्बार अस्थिरताहरू सिर्जना गर्ने गरेका छन् । एउटै देशसँग पारवहनका लागि धेरै नै भर पर्नुपर्ने अवस्थाले गर्दा पनि नेपाल नकाबन्दीको जोखिममा रहेको छ । समृद्धिलाई कायमै राखिरहन उच्च मात्राको ऊर्जा सुरक्षा हुनुपर्छ । यसको साथै पूर्वाधारहरूको पनि राम्रो व्यवस्था हुन आवश्यक छ जसले दुवै छिमेकी मुलुकहरूसमार्फत समुन्द्रसम्मको सहज पहुँच प्रदान गर्नुका साथै तेश्रो मुलुकसँग पनि हवाईसेवा मार्फत बस्तु निकासी पैठारीमा सहज सम्पर्क स्थापित गर्दछन् ।

दिगोपनाले वित्तीय उत्तरदायित्व पनि माग गर्दछ । नेपाल एउटा सङ्घीय राष्ट्रमा विकसित भइसकेको अवस्थामा थपिएका संबैधानिक भूमिकाहरू र आर्थिक चुनौतिले सम्पन्न गर्न उपलब्ध श्रोत साधनहरूको विवेकशिल विनियोजन आवश्यक छ । कानुनी विवादहरूलाई शान्तिपूर्ण ढङ्गले निरूपण गर्न सक्षम संस्थागत संयन्त्र निर्माण गर्नु जरूरी छ । स्थानीय सरकार अर्न्तगत सामाजिक एवम् पूर्वाधार आयोजनाहरूमा रहेको बढ्दो अपेक्षा र सीमित श्रोत साधनबीच तादम्यता मिलाउन विश्वसनीय स्थानीय कराधार कायम गर्नुपर्दछ । यस्तै उद्यमहरूलाई फस्टाउनका लागि एउटा व्यावसायिक वातावरण र युवा नेपालीहरूको निम्ति ठूलो संख्यामा रोजगारीहरू सिर्जना गर्न प्राथमिकता दिनु जरूरी छ ।

### दिगो विकास लक्ष्यहरूको तालिका

- लक्ष्य १** - हरेक क्षेत्रमा रहेको सबै स्वरूपहरूको गरिबीको अन्त्य गर्ने ।
- लक्ष्य २** - भोखमरी अन्त्य गर्ने, खाद्य सुरक्षा र उन्नत पोषण प्राप्त गर्ने र दिगो कृषिको प्रवर्द्धन गर्ने ।
- लक्ष्य ३** - सबै उमेर समूहका व्यक्तिका लागि स्वस्थ जीवनको सुनिश्चितता गर्दै समृद्ध जीवनस्तर प्रवर्द्धन गर्ने ।
- लक्ष्य ४** - समावेशी तथा गुणात्मक शिक्षा सुनिश्चित गर्दै सबैका लागि जीवनपर्यन्त सिकाइका अवसरहरू प्रवर्द्धन गर्ने ।
- लक्ष्य ५** - लैङ्गिक समानता हासिल गर्ने र सबै महिला तथा किशोरीहरूलाई सशक्त बनाउने ।
- लक्ष्य ६** - सबैको निम्ति खानेपानीको र सरसफाइको उपलब्धताका साथै यसको दिगो व्यवस्थापन सुनिश्चित गर्ने ।
- लक्ष्य ७** - धान्न/बेहोर्न सकिने, भरपर्दो, दिगो र आधुनिक ऊर्जामा सबैको पहुँच सुनिश्चित गर्ने ।

**लक्ष्य ८** - समावेशी र दिगो आर्थिक बृद्धि, पूर्ण तथा उत्पादनशील रोजगारी र मर्यादित कामलाई प्रवर्धन गर्ने ।

**लक्ष्य ९** - समानुकूलित पूर्वाधारहरू निर्माण गर्ने, समावेशी तथा दिगो औद्योगीकरणको प्रवर्धन गर्ने र नवप्रवर्तनलाई प्रेरित गर्ने ।

**लक्ष्य १०** - देशभित्र तथा देशहरूबीचको असमानता हटाउने ।

**लक्ष्य ११** - सहरहरू र मानव बस्तीहरूलाई समावेशी, सुरक्षित, समानुकूलित र दिगो बनाउने

**लक्ष्य १२** - दिगो उपभोग र उत्पादन ढाँचाहरू सुनिश्चित गर्ने ।

**लक्ष्य १३** - जलवायु परिवर्तन र यसको असरहरूसँग जुध्न तत्काल कार्य अघि बढाउने ।

**लक्ष्य १४** - दिगो विकासको निम्ति महासागरहरू, समुन्द्रहरू र सामुन्द्रिक स्रोतहरू संरक्षण गर्ने र दिगो रूपमा प्रयोग गर्ने ।

**लक्ष्य १५** - पृथ्वीको भूपरिधिस्तरीय पारिस्थितिकीय प्रणालीहरूको दिगो उपयोग, रक्षा र पुनरस्थापन गर्ने, वनजङ्गलको दिगो रूपमा व्यवस्थापन गर्ने, वनजङ्गलको बिनासलाई रोक्ने र जमिनको क्षयीकरण रोक्नुका साथै यस्लाई उल्ट्याउने साथै जैविक विविधताको ह्रासलाई रोक्ने ।

**लक्ष्य १६** - दिगो विकासको निम्ति शान्तिपूर्ण र समावेशी समाजहरूको प्रवर्धन गर्ने, न्यायमा सबैको पहुँच प्रदान गर्ने र सबै तहहरूमा प्रभावकारी, जवाफदेही र समावेशी संस्थाहरू निर्माण गर्ने ।

**लक्ष्य १७** - अन्तराष्ट्रिय सहकार्य ।

## अनुसूची - ५

## बहुआयामिक गरिबी सूचकांक (MPI)

नेपालको गरिबी मापनको परम्परागत विधिको रूपमा प्रयोग हुदै आएको मौद्रिक विधिले बृहत दायरामा गरिबीका सबै आयामहरूलाई नसमेट्ने भएकोले नेपाल सरकार, राष्ट्रिय योजना आयोग र Oxford University को बहुआयामिक गरिबीको क्षेत्रमा अनुसन्धान गरिरहेको OPHI -Oxford Poverty and Human Development Initiative) को सहकार्यमा यस बहुआयामिक गरिबी सूचकांक तयार पारिएको हो । यसैगरी नेपालले दिर्घकालिन लक्ष्यको रूपमा स्वीकार गरिएको सहश्रव्दी विकास लक्ष्यले समेत गरिबीका बहुआयामिक क्षेत्र समेटेको हुंदा गरिबी मापनको परम्परागत विधिमा परिमार्जनको आवश्यकता महशुस गरिएको हो ।

यस सूचकांकले २८.६ प्रतिशत नेपालीहरू अझै पनि बहुआयामिक रूपबाट गरिब रहेको देखाएको छ, जसको अर्थ हुन्छ - उनिहरूको जीवन धेरै प्रकारका बञ्चितकरणबाट एकैसाथ प्रभावित भइरहेको छ । साथै, यस सूचकांकले सन् २००६ देखि २०१४ को अवधिमा नेपालको गरिबी आधा घटेको (०.३१३ बाट ०.१२७ मा झरेको) कुरालाई स्पष्ट पार्दछ ।

नेपालमा मौद्रिक तथा गैर मौद्रिक दृष्टिबाट गरिबी घटाउने कार्यको गति प्रभावकारी भएको तर विशेष: गरी पोषण र शिक्षा क्षेत्रमा भएको मानवीय बञ्चितकरणको फैलावट अझैपनि एउटा कठिन नीतिगत चुनौतीका रूपमा रहेको तथ्य यस प्रतिबेलनले प्रस्तुत गरेको छ । प्रादेशिक रूपमा विभाजित यस बहुआयामिक गरिबी सूचकांकले मुलुकको नयाँ संघीय स्वरूपको लागि प्रभावकारी नीति अंगिकार गर्न सहयोग पुग्ने आशा व्यक्त गरिएको छ ।

नेपालको MPI ले विश्वमा प्रचलित बहुआयामिक गरिबीका सूचकहरू अवलम्बन गरेको छ । यसले तीनवटा आयामहरू तथा कुपोषण, न्यून शिक्षा, वा अपर्याप्त सरसफाई जस्ता दशवटा सूचकहरू भएको विश्वव्यापी MPI को सूचकहरू अनुसरण गर्दछन् । यसले बहुसूचक क्लस्टर सर्वेक्षण (Multi Indicators Cluster Survey MICS) २०१४ का नवीनतम तथ्याङ्क प्रयोग गरी राष्ट्रिय आवश्यकतानुसार विश्वव्यापी MPI का सूचकाङ्कहरू अनुसरण गरेको छ ।

बहुआयामिक गरिबी सूचकांकले नेपालमा भर्खरै स्थापना भएका सात प्रदेशहरूमा गरिबीको दरमा उल्लेखनीय भिन्नताहरू रहेको देखाउँछ । प्रदेश नं.६ र २ मा बहुआयामिक गरिबीको दर

उच्चतम छ - लगभग आधा मानिसहरू बहुआयामिक रूपले गरिव छन् । प्रदेश नं.५ र ७ मा यो दर ३० प्रतिशत रहेको छ भने प्रदेश नं.३ र ४ मा १५ प्रतिशत भन्दा कम रहेको छ । यस अध्ययनले प्रत्येक प्रदेशको बहुआयामिक गरिवीका बारेमा सारांश प्रस्तुत गर्दछ । अब गठन हुने प्रदेश सरकारले आफ्नो कार्य सुचारु गर्दा बजेट तथा बहुक्षेत्रीय नीतिहरूलाई अवलम्बन गर्न यस MPI को आधार लिन सक्छन् र आगामी दिनमा उपयुक्त नीति र कार्यक्रम मार्फत विकासलाई गति दिन सक्छन् ।

नेपाल बहुआयामिक गरिवी सूचकाङ्कले ०-९ वर्ष उमेर समूहका बालबालिका सबैभन्दा गरिव समूहमा परेको देखाएको छ, जसमध्ये ४९.६ प्रतिशत बालबालिका बहुआयामिक गरिवीमा रहेको कुरा प्रष्ट पार्दछ । अध्ययनको संरचना परिवर्तन गर्दा समेत नेपालका बालबालिकाहरू अरू धेरै देशहरूमा जस्तै बहुआयामिक गरिवीबाट विषम रूपमा प्रभावित रहेको स्पष्ट देखिन्छ ।

नेपालले सन् २००६ देखि २०१४ सम्ममा MPI को दश वटा सूचकमा उल्लेखनीय रूपले प्रगति गरेको छ । यसमध्ये कुपोषण र न्यून विद्यालय अवधि गरिवीमा सबैभन्दा बढी योगदान पुऱ्याउने सूचक हुन् ।

### बहुआयामिक गरिवी सूचकांक निकाल्न प्रयोग गरिएका सूचकहरू र तिनीहरूको भार

| गरिवीका आयामहरू         | परिमाणात्मक सूचकहरू             | भार |
|-------------------------|---------------------------------|-----|
| स्वास्थ्य               | पोषण                            | १/६ |
|                         | बाल मृत्युदर                    | १/६ |
| शिक्षा                  | विद्यालयमा विताएको वर्ष         | १/६ |
|                         | बिद्यालय हाजिर दिन              | १/६ |
| जीवनयापनको न्यूनतम स्तर | खाना पकाउने इन्धन               | १/८ |
|                         | सुधारिएको सरसफाई व्यवस्था       | १/८ |
|                         | सुधारिएको खानेपानी व्यवस्था     | १/८ |
|                         | बिद्युत                         | १/८ |
|                         | छाना तथा भुईको कार्पेटिङको स्तर | १/८ |
|                         | सम्पति माथिको स्वमित्व अवस्था   | १/८ |

## प्रदेशगत गरिबीको अवस्था (सन् २०१४ को तथ्याङ्क अनुसार)

| प्रदेश | जनसंख्या प्रतिशत<br>(कूल जनसंख्याको<br>आधारमा) | मौद्रिक गरिबी<br>(व्यक्ति गणना अनुसार) दर | बहुआयामिक गरिबी दर |
|--------|--|---|--------------------|
| १      | १७.६   | १६.७                                      | १९.७               |
| २      | १८.४   | २६.७                                      | ४७.९               |
| ३      | २२.०   | २०.६                                      | १२.२               |
| ४      | ११.६   | २१.०                                      | १४.२               |
| ५      | १६.५   | २५.३                                      | २९.९               |
| ६      | ५.४  | ३८.६                                      | ५१.२               |
| ७      | ८.५  | ४५.६                                      | ३३.६               |
| कूल    | १००.०  | २१.६                                      | २८.६               |

## प्रतिवेदन बाट प्राप्त सुझावहरू

बहुआयामिक गरिबी सूचकांकको माध्यमबाट वृहत आयामबाट गरिबी मापन गर्नुका साथै नेपालको नीति निर्माणमा समेत यसले महत्वपूर्ण सूचना उपलब्ध गराउने अपेक्षा गरिएको छ। विशेषतः राज्य पुर्नसंरचनाको अवस्थामा बहुआयामिक गरिबी सूचकांकबाट प्रदेशहरूले भावी कार्यदिशा तय गर्नुका साथै विकासका प्राथमिकता निर्धारण गर्न सहज हुनेछ।

हामिले हालसम्म प्रयोग गर्दै आएको २१.६ प्रतिशतको मौद्रिक गरिबी दर भन्दा २८.६ प्रतिशतको बहुआयामिक गरिबी दर निकै उच्च हुनुको पछाडि बहुआयामिक गरिबी सूचकांकले समेट्ने वृहत आयाम नै हो। गरिबी मापनको यो विधि साविकमा प्रयोग गर्दै आएको मौद्रिक विधिभन्दा बैज्ञानिक रहेको छ। यस प्रतिवेदनले मुख्यतया चारवटा सुझाव दिएको छ।

१. बहुआयामिक गरिबी सूचकांकको प्रयोग मार्फत वृहत आयामबाट गरिबी मापन र सोही वमोजिम श्रोत साधनको विनियोजन गर्नुपर्ने।
२. प्रदेशगत रूपमा मापन गरिएको बहुआयामिक गरिबीको स्तरबाट नवगठित प्रादेशिक संरचना अनुरूप सबै प्रदेशहरूले आगामी नीति तर्जुमा र विकासका प्राथमिकता निर्धारण गर्नुपर्ने।
३. आगामी दिनमा गरिने जनगणना, सर्वेक्षण लगायतका कार्यमा बहुआयामिक गरिबी सूचकांकले तय गरेका चरहरूलाई प्रयोगमा ल्याउने।
४. बहुआयामिक गरिबी सूचकांक सम्बन्धित तथ्याङ्क र विधिलाई आगामी दिनमा हुने उच्च स्तरको नीति अनुसन्धान कार्य लगायत अन्य अनुसन्धानमूलक कार्यको लागि सहज उपलब्ध गराउनुपर्ने।

## अनुसूची - ६

# बहुक्षेत्रीय पोषण योजना-दोस्रो (२०७५/७६-२०७८/८०) को सारांश

कुपोषणको समस्यालाई सम्बोधन गरी पोषणको अवस्थामा सुधार गर्न विभिन्न निकायहरूको संयुक्त प्रयासमा कार्यक्रमहरू संचालन गर्न राष्ट्रिय योजना आयोगको नेतृत्वमा वि.सं. २०६९ देखि बहुक्षेत्रीय पोषण योजना कार्यान्वयन हुँदै आएको छ। यसैको निरन्तरता स्वरूप बहुक्षेत्रीय पोषण योजना(दोस्रो (२०७५/७६-२०७९/८०) नेपाल सरकार, मन्त्रपरिषद्बाट मिति २०७४/०८/०३ मा स्वीकृत भई कार्यान्वयनमा आएको छ। यस योजनाले संघीय व्यवस्था अनुरूप कार्यान्वयन संयन्त्रको व्यवस्था गरेको छ। पोषणसम्बन्धी विश्वव्यापी प्रतिवेदन, २०१६ ले पोषणका क्रियाकलापहरूको विस्तार (Scaling Up Nutrition) मा गरिने लगानीले उच्च प्रतिफल दिने विषयलाई उजागर गरेको छ। यसमा लगानी र प्रतिफलको अनुपात १:१६ हुन्छ र समग्रमा १० प्रतिशत प्रतिफल प्राप्त हुन्छ भन्ने तथ्यलाई समेत उजागर गरेको छ। यसरी पोषणलाई प्राथमिकतामा नराख्दा विश्वका कतिपय देशहरूमा अहिलेपनि कूल ग्राहस्थ उत्पादनमा १० प्रतिशतले कमी आईरहेको देखिन्छ। विश्व स्वास्थ्य सभा २०१२ ले निर्धारण गरेका पोषणसम्बन्धी लक्ष्यहरू, दिगो विकासका लक्ष्यहरू र पोषणको सम्बन्धमा नेपालको वर्तमान अवस्था एवम् कुपोषणका कारक तत्वहरूको विश्लेषण गरेर बहुक्षेत्रीय पोषण योजना - दोस्रो तर्जुमा गरिएको छ।

नेपाल जनसांख्यिक तथा स्वास्थ्य सर्वेक्षण अनुसार सन् २००१ मा पाँच वर्षमुनिका बालबालिकामध्ये ५७ प्रतिशतमा पुङ्कोपन (दीर्घ कुपोषण) थियो भने यो अवस्था सन् २०१६ मा ३५.८ प्रतिशतमा भरेको छ। महिला तथा बालबालिकामा विभिन्न सूक्ष्म पोषकतत्वहरूको कमी पनि हुने देखिएको छ। निष्कृत्य जीवनशैली अपनाएका कारणले बढी तौल, मोटोपन, उच्च रक्तचाप तथा मधुमेहजस्ता समस्याहरू पनि देखापर्दै आएका छन्। पुङ्कोपन, ख्याउटेपन, उमेरअनुसार तौल कम हुनेजस्ता न्यून पोषणसम्बन्धी समस्याहरूले नेपालमा बाल मृत्युदरको ५२ प्रतिशत भाग ओगटेको छ। नेपाल जनसांख्यिक तथा स्वास्थ्य सर्वेक्षण, २०१६ अनुसार ५५ प्रतिशत बच्चाहरूलाई मात्र जन्मेको १ घण्टाभित्र स्तनपान गराएको पाइन्छ। करिब ६६ प्रतिशत बच्चाहरूले जन्मेको ६ महिनासम्म आमाको दूधमात्र खाने भएतापनि ६ महिनादेखि ८ महिनासम्मका बालबालिकामध्ये १७ प्रतिशतले मात्र सिफारिश गरिएअनुसारको न्यूनतम स्वीकार्य आहार खाएको देखिन्छ। त्यसैगरी ६ महिनादेखि २३ महिनासम्मका बालबालिकामध्ये ३५ प्रतिशतले मात्र न्यूनतम स्वीकार्य आहार

खाएको देखिन्छ। यसरी हेर्दा शिशु तथा बाल्यकालीन पोषण तथा स्याहारमा केही सुधार आएको देखिए तापनि यसमा परिवार र बाबुको भूमिका अत्यन्तै कम भएको देखिन्छ। नेपाल बहुसूचक सर्वेक्षण, २०१४ अनुसार पाँच वर्षमुनिका बालबालिका मध्ये २० प्रतिशतमा ज्वरो आउने समस्या र १२ प्रतिशतमा भाडापखाला हुने समस्या देखिएको छ। त्यस्तै ७ प्रतिशत बालबालिकामा श्वास-प्रश्वासको शीघ्र सङ्क्रमण भएको पाइएको छ। यस प्रकारका सङ्क्रमणहरूले बालबालिकामा कुपोषण गराउँछ र यसले मृत्युसमेत हुन सक्दछ। नेपाल जनसांख्यिक तथा स्वास्थ्य सर्वेक्षण, २०१६ अनुसार प्रजनन उमेरका महिलाहरूमध्ये १७ प्रतिशत महिलाहरूमा दीर्घशक्तिको कमी (BMI १८.५ केजी प्रतिवर्ग मिटरभन्दा कम) भएको देखिन्छ। त्यसैगरी करिब एकतिहाई (३० प्रतिशत) किशोरीहरूमा दीर्घशक्तिको कमी रहेको पाइन्छ र ४४ प्रतिशतमा रक्तअल्पता पनि भएको देखिन्छ। यस्तो अवस्थामा उनीहरू गर्भवती भएमा कम तौल भएको बच्चा जन्मिने र सो चक्र दोहोरिने देखिन्छ। मातृ तथा बाल्यकालीन अवस्थामा हुने सङ्क्रमणको समस्या आमरूपमा रहेको देखिन्छ। त्यसैगरी पेटमा जुका पर्ने समस्या जनस्वास्थ्यको एउटा मुख्य समस्याको रूपमा नै रहेको छ। प्रजनन उमेरका १३ प्रतिशत महिलाहरूले धुम्रपान गरेको पाइन्छ भने थप ४० प्रतिशत महिलाहरू अप्रत्यक्ष रूपमा धुम्रपानबाट प्रभावित भएका छन्। त्यसै गरी खाना पकाउँदा दाउराको प्रयोग गर्दा हुने वायु प्रदूषणले ७५ प्रतिशत महिलाहरूलाई असर गरेको देखिन्छ। नेपाल बहुसूचक सर्वेक्षण, २०१४ अनुसार २० देखि ४९ वर्षका महिलाहरूमध्ये ४८ प्रतिशतको २० वर्षको उमेरभन्दा अगाडि नै विवाह भई गर्भधारण गरेको देखिन्छ। त्यसैगरी १६ प्रतिशत महिलाहरूले १८ वर्षको उमेरभन्दा अघि नै पहिलो बच्चा जन्माइसकेका हुन्छन्। ती महिलाहरूले गर्भवती तथा सुत्केरी अवस्थामा पाउनुपर्ने स्याहार पाएका हुँदैनन्। सुत्केरी भएपछि पनि खेतीपातीमा कठिन शारीरिक परिश्रम गर्नुपर्ने काम गर्न बाध्य भएको अवस्था देखिन्छ। वास्तवमा स्वास्थ्य सेवाको पहुँच र उपभोगमा क्रमशः सुधार हुँदै आएको छ। नेपाल जनसांख्यिक तथा स्वास्थ्य सर्वेक्षण, २०१६ अनुसार परिवार नियोजनका साधन अपनाउने

१५-४९ वर्ष उमेर समूहका विवाहित महिलाहरूको दर ५३ प्रतिशत पुगेको देखिन्छ। मातृस्याहारमा पनि उल्लेखनीय रूपमा सुधार आएको पाइन्छ। त्यसैगरी गर्भवती महिलाहरूमध्ये ८४ प्रतिशतले कम्तीमा एकपटक जाँच गराएको देखिन्छ। दक्ष स्वास्थ्यकर्मीको सहयोगमा सुत्केरी गराउने गर्भवती महिलाहरूको दर ५८ प्रतिशत पुगेको छ। नेपाल बहुसूचक सर्वेक्षण, २०१४ अनुसार खानेपानी तथा सरसफाइको क्षेत्रमा हेर्दा सुरक्षित खानेपानीको प्रयोग दर ९३ प्रतिशत पुगेको देखिन्छ। तर अझै पनि आधा जनसंख्याले मात्र चर्पीको प्रयोग गर्ने गरेको देखिन्छ। गाईवस्तुको गोबर सुरक्षित तरिकाले व्यवस्थापन गर्नमा पनि पर्याप्त ध्यान दिइएको पाइँदैन। यसबाट वातावरण प्रदूषण भएर पेटमा पर्ने जुकाजस्ता परजिवीको सङ्क्रमण फैलिन्छ। यी तथ्यबाट व्यक्तिगत तथा समुदायस्तरको सरसफाइमा अझै पनि कमी भएको देखिएको छ।

न्यून पोषण भएका बालबालिकाको अपेक्षित रूपमा शारीरिक वृद्धि, बौद्धिक तथा संवेगात्मक विकास हुन सक्दैन। यसले गर्दा विद्यालय शिक्षा प्रभावकारी हुन सक्दैन र यसले देशको आर्थिक वृद्धिमा ३ प्रतिशतसम्मले ह्रास आउँछ भन्ने कुरा विश्व बैङ्कको अध्ययनले देखाएको छ। त्यसैले पोषणको अवस्थामा सुधार नगरी कुनैपनि देशले गरिबीको दुष्चक्र तोड्न र दिगो आर्थिक विकास गर्न सक्दैन। नेपालमा दीर्घ कुपोषण हुनुमा गर्भावस्था एवम् शिशु तथा बाल्यकालीन अवस्थामा पर्याप्त आहार नहुनु, हेरचाह राम्रोसँग नहुनु, सूक्ष्म पोषकतत्व कमी हुनु तथा बारम्बार सङ्क्रमण हुनु रहेका छन्। त्यस्तै शीघ्र कुपोषण हुँदा त्यसको तत्काल उपचार नगर्नु एवम् किशोरावस्थामा गर्भधारण हुनु यसका मुख्य कारणहरू रहेका छन्। चौधौँ योजना (२०७३/७४-२०७५/७६) अनुसार १५ देखि २४ वर्षका महिलाहरूको साक्षरता दर ८८.६ प्रतिशत रहेको छ। तर महिलाहरूको ज्ञान, अनुभव, विचारलाई घरायसी तथा समुदायस्तरमा हुने निर्णयमा पर्याप्त स्थान दिइएको छैन। यसबाट निर्णय गर्ने अवसरमा उनीहरूको सहभागिता न्यून छ। लिङ्ग, जातजाति, वर्ग, धर्म, क्षेत्रको आधारमा गरिने विभिन्न प्रकारका विभेदहरू अझैपनि कायम छन्। तर सरकारी प्रयास एवम् विकास साभेदारको पहलमा भएका कार्यक्रमहरूबाट हालका वर्षहरूमा लैङ्गिक र सामाजिक समावेशीकरणको क्षेत्रमा सुधार हुँदै आएको पाइन्छ। विगत दशकको तुलनामा कुपोषणका अन्तरनिहित कारणहरूमा पनि सुधार आएको देखिन्छ। गरिबी र भोकमरीलाई शून्य बनाउनेजस्ता दिगो विकास लक्ष्य हासिल गर्न खाद्यान्न कमी रहेका क्षेत्रहरूमा वर्षभरी नै खाद्य सुरक्षा प्रदान गर्ने काम चुनौतीपूर्ण देखिएको छ। तर सरकारी प्रयास एवम् विकास साभेदारको पहलमा भएका कार्यक्रमहरूबाट हालका वर्षहरूमा लैङ्गिक र सामाजिक समावेशीकरणको क्षेत्रमा सुधार हुँदै आएको पाइन्छ। हालका दिनमा नेपालले पोषणको क्षेत्रमा उल्लेखनीय प्रगति गरेको देखिन्छ। कुपोषणका आधारभूत कारणहरूमा बाटो, विद्यालय, स्वास्थ्य संस्थाहरूको निर्माणजस्ता पक्षहरूमा उल्लेखनीय रूपमा सुधार आएको देखिन्छ।

बहुक्षेत्रीय पोषण योजना - दोस्रोमा पोषणसँग सम्बन्धित सामाजिक प्रचलन, बानी-व्यवहार, पोषणको क्षेत्रमा देखिएका कमी-कमजोरी, न्यूनताजस्ता पक्षहरूलाई विश्लेषण गरिएको छ। भौगोलिक क्षेत्रअनुसार न्यून पोषण र अधिक तौल तथा मोटोपन हुनुका समस्याहरूलाई समेत विश्लेषण गरिएको छ। प्रस्तुत योजना तर्जुमा गर्दा परिवर्तनका सिद्धान्तले प्रतिपादन गरेको तार्किक ढाँचालाई अवलम्बन गरिएको छ। पोषण विशेष कार्यक्रमहरू मूलतः स्वास्थ्य क्षेत्रबाट कार्यान्वयन गरिनेछ भने पोषण संवेशनशील तथा समर्थ वातावरण बनाउने कार्यक्रमहरू कृषि विकास, पशुपन्छी विकास, खानेपानी, सरसफाइ तथा स्वच्छता, शिक्षा, महिला, बालबालिका तथा समाज कल्याणसम्बन्धी कार्यक्रमहरू स्थानीय तहसँगको सहकार्यमा सञ्चालन गरिनेछ। यी सबै कार्यक्रमहरूबाट पाँच वर्षमुनिका बालबालिकामा हुने पुङ्कोपन, ख्याउटेपन तथा जन्मिदा कम तौल हुने अवस्थामा सुधार आउने अपेक्षा गरिएको छ। त्यसै गरी प्रजनन उमेरका महिलाहरूमा दीर्घशक्तिको कमी हुने अवस्थामा



सुधार आउनेछ । साथै पाँच वर्षमुनिका बालबालिका तथा प्रजनन उमेरका महिलाहरूमा हुने अधिक तौल र मोटोपन हुने दरलाई कम गर्ने अपेक्षा लिएको छ ।

| क्र.सं. | सन् २०२५ र २०३० सम्म हासिल गर्नुपर्ने पोषणसम्बन्धी विश्वव्यापी लक्ष्यहरू                   | नेपालको अवस्था |          | नेपालको लागि सन् २०२५ को लक्ष्य | नेपालको लागि दिगो विकास लक्ष्य (२०३०) |
|---------|--|----------------|----------|---------------------------------|---------------------------------------|
|         |  | सन् २०१९       | सन् २०१६ |                                 |                                       |
| १.      | पाँच वर्ष मुनिका बालबालिकामा हुने पुङ्कोपनको दरलाई ४०% ले घटाउने                           | ४०.५           | ३५.८     | २४.३                            | १५                                    |
|         | प्रजनन उमेरका महिलाहरूमा हुने रक्तअल्पतालाई ५०% ले घटाउने                                  | ३५.०           | ४०.८     | १७.५                            | १०                                    |
| २ क.    | पाँच वर्ष मुनिका बालबालिकामा हुने रक्तअल्पतालाई ५०% ले घटाउने                              | ४६.२           | ५२.७     | २३.९                            | १०                                    |
| २ ख.    | कम तौलको बच्चा जन्मिने संख्यालाई ३०% ले घटाउने   | १२.९           | २४.२*    | ८.५                             | -                                     |
| ३.      | बाल्यावस्थामा मोटोपन हुनेहरूको संख्या बृद्धि नहुने अवस्थालाई सुनिश्चित गर्ने               | १.४            | १.२      | ≤१.४                            |                                       |
| ४.      | शिशु ६ महिनाको हुँदासम्म पूर्णरूपमा स्तनपान गराउने संख्यालाई कम्तीमा ५०% पुऱ्याउने         | ६९.६           | ६६.९     | >५०.०                           | -                                     |
|         | पाँच वर्ष मुनिका बालबालिकामा हुने ख्याउटेपनको संख्यालाई कम्तीमा ५% मा झार्ने र कायम राख्ने | १०.९           | ९.७      | <५.०                            | ४                                     |

स्रोत: नेपाल जनसांख्यिक तथा स्वास्थ्य सर्वेक्षण २०१९, २०१६ । \* नेपाल बहुसूचकाङ्क सर्वेक्षण २०१४

### Scaling up Nutrition Champion Award Program

संयुक्त राष्ट्र संघको Scaling Up Nutrition (SUN) Movement मा ६० राष्ट्रहरू आवद्ध रही आएका छन् । सन् २०१९ देखि नेपाल SUN Movement मा आवद्ध रहेको छ । नोभेम्बर ८, २०१५ मा आइभरी कोष्टमा आयोजना भएको SUN Global Gathering कार्यक्रममा नेपाललाई Scaling up Nutrition Champion Award 2017 प्रदान गरिएको छ । आठ राष्ट्रहरूलाई यो अवार्ड प्रदान गरिएको छ । पोषण अभियान कार्यक्रमलाई अभिवृद्धि गर्ने कार्यमा सक्रिय र महत्वपूर्ण योगदान पुऱ्याए वापत यो अवार्ड प्रदान गरिएको छ ।

नेपाल, पोषणलाई विश्वव्यापी रूपमा बढावा दिने संयुक्त राष्ट्र संघीय अभियानमा सन् २०१९ मा संलग्न भएको पाँचौँ सदस्य राष्ट्र हो । राष्ट्रिय योजना आयोगको नेतृत्वमा सन् २०१२ मा

बहुक्षेत्रीय पोषण योजना, २०६९-७३ (२०१३-२०१७) को तर्जुमा गरी सार्वजनिक गरिएको थियो । यो योजना कार्यान्वयनमा सातवटा विषयगत (स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि विकास, पशुपन्छी विकास, खानेपानी तथा सरसफाई, महिला तथा बालबालिका र संघीय मामिला तथा स्थानीय विकास) मन्त्रालयहरू संलग्न रहेका छन् ।

हाल बहुक्षेत्रीय पोषण योजना २८ जिल्लाहरूमा लागू भैरहेको छ । बहुक्षेत्रीय पोषण योजना (२०१३-२०१७) को सफल कार्यान्वयनमा राष्ट्रिय योजना आयोगले सातवटा मन्त्रालयहरू, बाह्य विकास साभेदार (यूनिसेफ, ईयु, विश्व बैंक, अमेरिकी अन्तर्राष्ट्रिय विकास नियोग, अन्य) दातृनिकाय, नागरिक समाज, प्राज्ञिक क्षेत्र तथा सञ्चारमाध्यमसँग समन्वय तथा सहजीकरण गरेको छ । पोषणका क्षेत्रमा वित्तीय स्रोत बृद्धि गर्न राष्ट्रिय योजना आयोगले महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह गरेको छ । गत आ.व. २०७३-७४ मा ११०.२६ मिलियन अमेरिकि डलर रहेको बजेट चालु आ.व. मा १३३.४६ मिलियन अमेरिकि डलर पुगेको छ ।

दोश्रो चरणको बहुक्षेत्रीय पोषण योजना (सन् २०१८-२०२२) ५०० मिलियन अमेरिकी डलर (आधा विलियन डलर) बराबरको न्यूनतम लागतको रहनेछ र यसलाई नेपालका सबै जिल्लाहरूमा विस्तार गर्ने योजना रहेको छ ।

## अनुसूची - ७

# बुढीगण्डकी जलविद्युत आयोजनाको लगानी खाका पेश गर्न गठित समितिको सिफारिस

नेपाल सरकार मन्त्रपरिषद्को मिति २०७४/८/८ को निर्णयबाट स्वदेशी लगानी तथा प्रविधि उपयोग गरी बुढीगण्डकी जलाशययुक्त जलविद्युत आयोजना निर्माण गराउने प्रयोजनका लागि स्वदेशी लगानीको खाका पेश गर्न राष्ट्रिय योजना आयोगका उपाध्यक्षको संयोजकत्वमा नेपाल राष्ट्र बैंकका गर्भनर, अर्थ सचिव, उर्जा सचिव, उर्जा सहसचिव र नेपाल विद्युत प्राधिकरणका कार्यकारी निर्देशक रहेको समितिले प्रतिवेदन दिएको छ । प्रतिवेदनमा जलविद्युत लगानीको वर्तमान अवस्था, आगामी १० वर्षभित्र विद्युत क्षेत्रमा आवश्यक लगानी, माग र आपूर्तिको अवस्था, जलाशययुक्त आयोजनाको आवश्यकता, बुढीगण्डकी जलाशययुक्त जलविद्युत आयोजनाको लागत, ठेक्काको मोडालिटी, आर्थिक सम्भाव्यता, लगानीका विकल्पहरू, आयोजनाबाट समष्टिगत आर्थिक स्थितिमा पर्ने प्रभाव लगायतका विषयहरू समावेश छन् ।

समितिले विभिन्न विकल्पहरूको अध्ययन तथा विश्लेषणका आधारमा राष्ट्रिय गौरव एवम् रणनीतिक महत्व बोकेको बुढीगण्डकी जलाशययुक्त जलविद्युत आयोजनाको विकास तथा निर्माणका सन्दर्भमा देहाय वमोजिमका निष्कर्ष सहित कार्यान्वयनका लागि सिफारिस गरेको छ ।

१. आयोजना कार्यान्वयन एवम् लगानीको प्रारूप सम्बन्धमा नेपाल विद्युत प्राधिकरणको सहायक कम्पनिका रूपमा विशिष्टीकृत आयोजना कार्यान्वयन इकाई स्थापना गरी नेपाल सरकार, नेपाल विद्युत प्राधिकरण, सम्झौता वचत गर्ने संस्थाहरू (कर्मचारी संचय कोष, नागरिक लगानी कोष, राष्ट्रिय वीमा संस्थान, वीमा कम्पनिहरू) लगायत जलविद्युत लगानी तथा विकास कम्पनि, नेपाल टेलिकम, अपर तामाकोशी जलविद्युत कम्पनि, चिलिमे जलविद्युत कम्पनि, नेपाली सेना, नेपाल प्रहरीमा रहेको कल्याणकारी कोष तथा सर्वसाधारण र गैर बैकिङ्ग वित्तीय संस्थाहरूको समेत लगानी हुने व्यवस्था गर्ने । आयोजनालाई वित्तीय रूपमा सम्भाव्य बनाउन नेपाल सरकारले पुनर्वास, जग्गा अधिग्रहण तथा अन्य भौतिक पूर्वाधार विकासका लागि आयोजनाको कुल लागत (रु.२७०अर्व) को करिब ३५ प्रतिशत रकम Viability

Gap Funding गर्ने । साथै नेपाल सरकारले आयोजनालाई नपुग ऋण Viability Gap Lending का रूपमा अति सहूलियतपूर्ण व्याजदरमा उपलब्ध गराउने । उक्त रकम नेपाल सरकारले पेट्रोलियम इन्धनमा लगाएको पूर्वाधार कार्वन करबाट पूर्ति गर्ने ।

२. आयोजना निर्माण भई संचालनमा आउंदा तल्लो तटीय फाइदाहरू (बाढी नियन्त्रण, सिचाई, खानेपानी आदि) वारे लाभ हानीको विश्लेषण गरी प्रचलित अन्तर्राष्ट्रिय अभ्यास समेतका आधारमा विज्ञहरूबाट त्यस्तो मूल्याङ्कन र लाभ लागत बाँडफाइको खाका तयार हुन एवम् तल्लो तटीय देशहरूसँग आवश्यक वार्ता, छलफल अघि बढाउन सरकारले पहल गर्ने ।
३. जलाशयसँग सम्बन्धित आर्थिक सामाजिक सकारात्मक प्रभावहरू - पर्यटन, कृषि, मत्स्यपालन, सहरीकरण, सिचाई, खानेपानी आदि क्षेत्रको प्रबर्द्धन गर्ने र पुनर्वास एवम् वातावरणसँग सम्बन्धित नकारात्मक प्रभावहरूको न्यूनीकरण गर्न संघ, प्रदेश र स्थानीय तह संलग्न एकीकृत विकास योजना र लगानीको रणनीति बनाउन प्रारम्भ गर्ने ।

## अनुसूची - ८

# राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ४०औं, ४१औं र ४२औं बैठकका निर्णयहरू एवम् कार्यान्वयन स्थिति

**१. राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ४०औं बैठक, मिति : २०७४ पौष २१ गते**  
सम्माननीय प्रधानमन्त्रीज्यूको अध्यक्षतामा बसेको राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ४०औं बैठकले गरेका महत्वपूर्ण निर्णयहरूमध्ये आयोगको जिम्मेवारीमा परेको देहायको निर्णयहरू कार्यान्वयन गरिएको छ ।

| निर्णय  | प्रगति  |
|---|---|
| (क) दीर्घकालीन सोच तयारीका निमित्त प्रारम्भिक अध्ययनकार्य भई खाका तयार गरेको तथा मस्यौदा तयारीको कार्य भइरहेको ।  | दीर्घकालीन सोच तयारीका निमित्त प्रारम्भिक अध्ययनकार्य भई खाका तयार गरेको तथा मस्यौदा तयारीको कार्य भइरहेको ।  |
| (ख) राष्ट्रिय योजना आयोगलाई समयसापेक्ष संघीय शासकीय स्वस्व अनुस्यू विज्ञ संस्थाका रूपमा पुनःसंरचनाका लागि रा.यो.आ. को गठन तथा कार्य सञ्चालन आदेश, २०७४ नेपाल सरकारबाट स्वीकृत भई कार्यान्वयनमा आएको छ । | राष्ट्रिय योजना आयोगलाई समयसापेक्ष संघीय शासकीय स्वस्व अनुस्यू विज्ञ संस्थाका रूपमा पुनःसंरचनाका लागि रा.यो.आ. को गठन तथा कार्य सञ्चालन आदेश, २०७४ नेपाल सरकारबाट स्वीकृत भई कार्यान्वयनमा आएको छ । |
| (ग) विज्ञहस्तात प्रदेश र स्थानीय तहका लागि योजना तर्जुमा र अनुगमन तथा मूल्याङ्कनसम्बन्धी दिग्दर्शनहरू तयार गरिएको, र चालु आ. व. मा प्रदेशस्तरमा अभिमुखीकरण गर्ने कार्यक्रम                              | विज्ञहस्तात प्रदेश र स्थानीय तहका लागि योजना तर्जुमा र अनुगमन तथा मूल्याङ्कनसम्बन्धी दिग्दर्शनहरू तयार गरिएको, र चालु आ. व. मा प्रदेशस्तरमा अभिमुखीकरण गर्ने कार्यक्रम                              |

**२. राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ४१औं बैठक, मिति : २०७४ पौष २१ गते**  
सम्माननीय प्रधानमन्त्रीज्यूको अध्यक्षतामा बसेको राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ४१औं बैठकले गरेका महत्वपूर्ण निर्णयहरूमध्ये आयोगको जिम्मेवारीमा परेको देहायको निर्णय कार्यान्वयन गरिएको छ ।

| निर्णय   | प्रगति   |
|--|--|
| स्थानीय तहले प्राप्त अनुदान रकमबाट विषयगत क्षेत्रका कार्यक्रम संचालनका लागि गरेको बाँडफाँट, कार्यान्वयनसम्बन्धी व्यवस्था, कार्यरत जनशक्ति तथा तिनीहरूको क्षमता, सेवा प्रवाहमा रहेका सवालहरू वा ल्याइएका सुधारहरू आदि विषयमा राष्ट्रिय योजना आयोगको संयोजकत्वमा केही स्थानीय तहको अध्ययन गराई आवश्यक नीतिगत व्यवस्थाका लागि सुभावा दिन लगाउने । | स्थानीय तहले प्राप्त अनुदान रकमबाट विषयगत क्षेत्रका कार्यक्रम संचालनका लागि गरेको बाँडफाँट, कार्यान्वयनसम्बन्धी व्यवस्था, कार्यरत जनशक्ति तथा तिनीहरूको क्षमता, सेवा प्रवाहमा रहेका सवालहरू वा ल्याइएका सुधारहरू आदि विषयमा राष्ट्रिय योजना आयोगको संयोजकत्व तथा अर्थ र संघीय मामिला तथा स्थानीय विकास मन्त्रालयको संलग्नतामा नीतिगत व्यवस्थाका लागि अध्ययन भई सोको आधारमा योजना तर्जुमा दिग्दर्शन तयार भएको । |

### ३. राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ४२औं बैठक, मिति: २०७४ जेष्ठ २१ गते

सम्माननीय प्रधानमन्त्रीज्यूको अध्यक्षतामा बसेको राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ४२औं बैठकले गरेका महत्वपूर्ण निर्णयहरूमध्ये आयोगबाट देहायका निर्णयहरू कार्यान्वयन भएको छ ।

| निर्णय  | प्रगति  |
|---|---|
| (क) मेलम्ची खानेपानी आयोजनाबाट प्रभावित क्षेत्रका बासिन्दालाई लाभको निश्चित अंश उपलब्ध गराउने र यसबाट अन्य क्षेत्रमा पर्ने प्रभावलाई समेत दृष्टिगत गरी उपयुक्त सुभावा पेश गर्ने ।   | माननीय सदस्य डा. दिलबहादुर गुरुङज्यूको संयोजकत्वको कार्यदलले विस्तृत आर्थिक तथा ईन्जिनियरिङ्गसम्बन्धी अध्ययन गरी मेलम्ची खानेपानी आयोजनाको "राजस्व विश्लेषण तथा लाभ वितरण अध्ययन" प्रतिवेदनको मस्यौदा तयार भएको ।   |
| (ख) लालपूर्जा नभएको जग्गामा बसिरहेका वा सडक क्षेत्रका घर टहराको क्षतिपूर्ति सम्बन्धमा अध्ययन गरी उपयुक्त सुभावा पेश गर्ने ।   | माननीय सदस्य डा. दिलबहादुर गुरुङज्यूको संयोजकत्वको कार्यदलले सुभावासहितको प्रतिवेदन आवश्यक कार्यवाहीका लागि सम्वद्ध मन्त्रालयहरूमा पठाइएको ।  |
| (ग) हालसम्म गरिवी निवारण कोषले सिर्जना गरेको सम्पत्तिको संरक्षण, सामुदायिक संस्था वा ब्यक्तिहरूसँग रहेको घुम्ती कोष रकमको सदुपयोग, सामुदायिक स्तरमा रहेका विभिन्न समूहहरूको एकिकरण गरी एउटै ब्यक्ति धेरै समूहमा रहने स्थितिको अन्त्य, स्थानीय तहहरूको यस्तो कार्यक्रम संचालनमा रहने भूमिका, सामुदायिक संस्थामा वचत रकमको परिचालनमार्फत सीप तथा उद्यमशीलताको विकास र आयआर्जन तथा रोजगारीका अवसर सिर्जना एवम् गरिवी निवारण कोषको पुनःसंरचना सम्वन्धमा तीन महिनाभित्र एकिकृत कार्यक्रम प्रस्ताव तयार गर्न लगाउने । | गरिवी निवारण कोषले सिर्जना गरेको सम्पत्तिको संरक्षण, सामुदायिक संस्था वा ब्यक्तिहरूसँग रहेको घुम्ती कोष रकमको सदुपयोग, सामुदायिकस्तरमा रहेका विभिन्न समूहहरूको एकिकरण गरी एउटै ब्यक्ति धेरै समूहमा रहने स्थितिको अन्त्य, स्थानीय तहहरूको यस्तो कार्यक्रम संचालनमा रहने भूमिका, सामुदायिक संस्थामा वचत रकमको परिचालनमार्फत सीप तथा उद्यमशीलताको विकास र आयआर्जन तथा रोजगारीका अवसर सिर्जना एवम् गरिवी निवारण कोषको पुनःसंरचना सम्वन्धमा प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयको संयोजनमा राष्ट्रिय योजना आयोग, अर्थ, संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन, महिला, बालबालिका तथा ज्येष्ठ नागरिक, उद्योग र कृषि, भूमि ब्यवस्था तथा सहकारी मन्त्रालयका सचिवहरू सम्मिलित कार्यदलमा रही आयोगले गराएको मूल्याङ्कन प्रतिवेदन समेतका आधारमा प्रतिवेदन पेश गरेको । |

## अनुसूची - ८

# आन्तरिक र तेश्रो पक्ष मूल्याङ्कन प्रतिवेदनहरूको सारांश

## क. तेश्रो पक्ष मूल्याङ्कनका प्रतिवेदनहरूको सारांश

### १. गरिबी निवारण कोष

#### १.१ पृष्ठभूमि

गरीब तथा पिछडिएको समूहहरूलाई विकास प्रयासहरूमा मूल वाहकको रूपमा संलग्न गराई बहिष्करणमा परेका समुदायहरूलाई विकासको मूलप्रवाहमा ल्याउन एक विशेष तथा लक्षित कार्यक्रमको रूपमा वि.स. २०६३ मा गरिबी निवारण कोषको स्थापना भएको हो। गरिबी निवारण कोष ऐन २०६३ अन्तर्गत यो कार्यक्रम सञ्चालित छ। यसले देशभरिका ६६ जिल्लामा कार्यक्रम विस्तार गरी हालसम्म ३२,००० सामुदायिक संस्थाहरूको गठन गर्नुका साथै विभिन्न आय आर्जन तथा साना पूर्वाधारका कार्यक्रम सञ्चालन गरिरहेको छ। यसले परम्परागत रूपमा लिङ्ग, जात, जातीयता तथा भौगोलिक अवस्थाका कारणले बहिष्करणमा परेका समूहहरूप्रति विशेष ध्यान दिँदै ग्रामीण गरीबहरूको बसोबासको अवस्था तथा जीवनस्तरमा सुधार गर्ने प्रयास गर्दछ।

#### १.२ कोषको परिचय

सम्माननीय प्रधानमन्त्रीज्यूको अध्यक्षतामा रहने १२ सदस्यीय सञ्चालक समिति कोषको नीतिगत मार्गदर्शन तथा कार्यक्रम स्वीकृतिका लागि जिम्मेवार रहन्छ। सरकारले विकास विषयका व्यावसायिक व्यक्तिहरूमध्येबाट कोषका उपाध्यक्ष र पाँच जना सदस्यहरूको नियुक्ति गर्दछ भने राष्ट्रिय योजना आयोगका सचिव, राष्ट्रिय महिला आयोगका अध्यक्ष, राष्ट्रिय दलित आयोगका अध्यक्ष र स्थानीय तह सम्बन्धी संजालका अध्यक्षहरू पदेन सदस्य रहने व्यवस्था छ।

यसको कार्यसम्पादन प्रभावकारी तथा लक्षितवर्गलाई पारेको प्रभाव उत्साहजनक छ। यसमार्फत मुख्यरूपमा रोजगारी सिर्जना, आय आर्जन, सामाजिक परिचालन, क्षमता विकास, ग्रामिण सामुदायिक पूर्वाधार निर्माण, सिर्जनशील तथा विशेष कार्यक्रम लगायतका गतिविधिहरू सञ्चालन भईरहेका छन्। यस कार्यक्रमबाट हालसम्म करिब ८ लाख घर परिवारहरू लाभान्वित भएका छन्। साथै ८०५ भन्दा बढी अति गरिब एवम् पिछडिएको वर्ग र ७२५ महिलाहरू लाभान्वित वर्गमध्ये पर्दछन्।

### १.३ कोषको प्रभाव मूल्याङ्कन

तीन चरणमा सञ्चालन भएका यस कोषका कार्यक्रमहरूको प्रभाव र कोषको संरचनात्मक व्यवस्था एवम् सञ्चालन प्रक्रिया सम्बन्धमा राष्ट्रिय योजना आयोगले मूल्याङ्कन कार्य भर्खरै सम्पन्न गरेको छ । आयोग, प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, अर्थ मन्त्रालय, विश्व बैंकका प्रतिनिधि र एक मूल्याङ्कन विज्ञसमेत रहेको निर्देशक समितिले सहजीकरण गरेको यस मूल्याङ्कनका प्रमुख नतिजा र सुझावहरू प्राप्त भएका छन् ।

### १.४ निष्कर्ष तथा सुझावहरू

#### क) घुम्ती कोषको प्रभाव

- विस्तृत प्रभाव मूल्याङ्कन टोलिले संलग्न सदस्यहरूको उच्च स्वामित्व, कोषले उपलब्ध गराएको घुम्ती कोष (Revolving Fund) को महत्वपूर्ण भूमिका आदिको कारणले यो कार्यक्रम प्रभावकारी रहेको देखाएको छ ।
- घुम्ती कोषको उपयोग आय आर्जनका गतिविधिहरूमा भइरहेको तथा केही सामाजिक परिचालकहरूको सहयोगमा पूर्ण रूपमा सामुदायिक संस्थाद्वारा सञ्चालित र नियन्त्रित देखिन्छ ।
- वितरणमा समूहद्वारा पूर्ण रूपमा नियन्त्रण रहेको यो कोषको कुल घुम्ती रकम १९ अर्ब रहेको छ, जसमध्ये १५ अर्ब कोषद्वारा प्रदान गरिएको र ४ अर्ब समुदाय संस्थाद्वारा सिर्जित देखिन्छ । यसले ग्रामिण तहमा हुने गरेको चक्रवृत्ति ब्याज बाट मुक्ति दिएको बुझाई सामुदायिक संस्थाको रहेको छ ।
- कोषले सानो स्तरका पूर्वाधार जस्तै सिंचाई, साना जलविद्युत् तथा ठुलो स्तरका ग्रामीण सडक, विद्यालय भवनहरूको बिकाशमा सहयोग पुऱ्याएको देखिन्छ र यसले सामाजिक तथा मानवीय आयामका बहुआयामिक गरिबी घटाउन मद्दत गरेको छ ।
- कोषको सामाजिक परिचालनको पक्ष परिमाणात्मक र गुणात्मक रूपमा उत्कृष्ट देखिदैन । यसले रूपान्तरणकारी भन्दा समूह निर्माण तथा परिचालनको ढाँचा अवलम्बन गरेको छ । त्यसकारण, समुदाय संस्थामा भएको कुनै महत्वपूर्ण सामाजिक सशक्तीकरण को असर र प्रभावले गरिबी निवारण कोषलाई प्रतिनिधित्व नगर्ने देखिन्छ ।

#### ख) गैह्रआय सम्बन्धी प्रभाव

- आय बृद्धि भएको तथा गुणस्तरीय जीवनप्रति सजगता अभिवृद्धि भएको,
- महिला तथा पिछडिएको समूहहरूमा जागरूकता अभिवृद्धि भएको,
- न्यून ब्याजदरमा रकम उपलब्ध भएको,
- समूह कार्यमा बृद्धि भएको,
- सामाजिक आत्मसम्मान, मर्यादा तथा आत्मविश्वासमा बृद्धि भएको,
- स्वास्थ्य, तथा शिक्षा सम्बन्धी सचेतना अभिवृद्धि भएको ।



विस्तृत प्रभाव मूल्याङ्कनको क्रममा अन्तर्वार्ता तथा सहायक श्रोतहरूको जानकारी अनुसार गरिबीलाई कोषको कार्यक्रमले मात्र नभई बहुपक्षको कार्यक्रमबाट असर परेको देखिन्छ।

### १.५ सबल तथा दुर्बल पक्षहरू

मूल्याङ्कनले औल्याएका केही सबल तथा दुर्बल पक्षहरू यसप्रकार छन्।

#### क) सबल पक्षहरू

- वास्तविक लाभग्राहीसम्म पहुँच र लक्षित वर्ग पहिचान प्रभावकारी भएको
- व्यापक समुदाय संस्थाको परिचालन गरिएको
- समुदायमा प्रत्यक्ष लगानी भएको
- मागमा आधारित तथा लाभग्राही नियन्त्रित प्रक्रिया अवलम्बन गरिएको
- पारदर्शिताको साथै उच्च जन-सहभागिता र अपनत्वता महशुस भएको।

#### ख) दुर्बल पक्षहरू

- सामाजिक परिचालन कमजोर रहेको,
- निकाश (Exit) रणनीति स्पष्ट नरहेको,
- समुह विकाशको प्रभावकारी अवधारणा नलिईएको,
- सामुदायिक संस्थाको गुणस्तरीय सेवा नभएको तथा कोषको अनुगमन तथा नियन्त्रण प्रभावकारी नदेखिएको।

### १.६ मूल्याङ्कनबाट देखिएका प्रमुख सवालहरू

- कर्मचारीको पेशागत दक्षता, अनुभवमा भिन्नता, संलग्न विभिन्न एकाईहरूमा पारस्परिक विश्वासको कमी र सचिवालयको दक्षता न्यून रहेको,
- भ्रष्टाचारको मुद्दाहरूमा बृद्धि भएको,
- बोर्डको संरचनामा हुने राजनीतिक चासोले सचिवालयको काममा प्रभाव परेको,
- छिटो छिटो हुने कर्मचारीको परिवर्तनले कार्यक्रमको निरन्तरतामा असर परेको,
- खर्चिलो मोडेल भएको भन्ने सरकारी तथा सरोकारवालाहरूको अनुभूति रहेको।

### १.७ सुझावहरू

विभिन्न खोजहरूले नेपालको गरिबी निवारणमा अग्रगामी तथा मुख्य पात्रको रूपमा गरिबी निवारण लाई पहिचान गरेको छ। यसले विशेषगरी आर्थिक रूपमा तथा रोजगारी सिर्जनाद्वारा बहु-आयामिक गरिबी सम्बोधन गर्नमा प्रभावकारी भूमिका खेलेको छ। साथै यो मूल्यांकनले महिला सशक्तीकरणमा सकारात्मक तथा प्रमुख भूमिका निर्वाह गरेको विभिन्न तथ्यहरूद्वारा पुष्टि हुन्छ। यो कार्यक्रमले धेरैलाई गरिबीको अवस्थाबाट माथि उठ्ने अवस्थामा पुऱ्याएको छ। यो कार्यक्रम बन्द हुने हो भने ती मध्ये केही पुनः गरिबीको कुचक्रमा फर्किने सम्भावना देखिन्छ।

यस कार्यक्रमको सन्दर्भमा आगामी दिनको लागि निम्न सुझावहरू प्राप्त भएको छ ।

- ठूलो कार्यबोझको रूपमा ३२,००० को संख्यामा रहेका सामुदायिक संस्थाहरू घटाउनु आवश्यक रहेको ।
- नेपालको गरिबीको गहनता र परिवेश अनुसार यस कोषलाई निरन्तरता दिन नपर्ने कुनै कारण नरहेको ।
- भविष्यमा स्वायत्तता तथा स्व-नियन्त्रणको ढाँचालाई आत्मसाथ गर्दै स्थानीय सरकारसँग नजीक रही काम गर्नुपर्ने गरी पुनर्संगठन गर्नुपर्ने ।
- अधिकांश लाभग्राहीहरू उपभोग स्तरबाट स्तरोन्नति नभएको हुँदा सो स्तर उकास्न आयमूलक गरिबीबाट माथि उठ्ने, आपसी सहमतिमा कार्य गर्ने, सामुदायिक संस्थासँग तालमेल गर्ने तथा कोषले कार्यपद्धती परिवर्तन गरी स्थानीय स्तरका व्यावसायिक तथा रोजगारीमूलक गतिविधिहरू सञ्चालन गर्नुपर्ने र बृहत्तर वित्तीय सेवाहरू प्रदान गर्नुपर्ने ।
- यस कोषले निर्माण गरेको भावी मार्ग-चित्रमा सामुदायिक संस्था, उत्पादन समूह, सामुदायिक संस्थामार्फत बिकाश भएका सहकारी आदिसँगको बृहत संजालद्वारा ग्रामिण उद्यम तथा उद्यमशीलता निर्माण गर्न विद्यमान संरचनामा फेरबदल आवश्यक देखिन्छ । साथै विद्यमान समस्या र वर्तमान परिवेशबमोजिम सञ्चालन गर्न गरिबी निवारण कोषको सचिवालयको सञ्चालन प्रक्रिया एवम् व्यवस्थापनमा समेत सुधार आवश्यक देखिन्छ ।

## २. प्रारम्भिक बाल विकास कार्यक्रम

### २.१ पृष्ठभूमि

प्रारम्भिक बाल विकास मानव जीवनको संवेदनशील अवस्था हो जसले भविष्यको संज्ञानात्मक, शारीरिक र मानसिक विकासको आधार तयार गर्दछ । विभिन्न अनुसन्धानले मानिसको बौद्धिक विकासको मुख्य आधार उसको चारवर्षको उमेरमा निर्माण हुने गर्दछ भन्ने तथ्य उजागर गरेको छ । यस विषयलाई महत्त्व दिई नेपालले पनि प्रारम्भिक बाल विकास रणनीति, सन् २००४-२०१५ लागु गरेर बालविकासका कार्यक्रमलाई कार्यान्वयनमा ल्याएको पाइन्छ ।

### २.२ कार्यक्रमको मूल्याङ्कनका उद्देश्यहरू

प्रारम्भिक बाल विकासका क्षेत्रमा हालसम्म भएका प्रयास र सोबाट प्राप्त नतिजाको अध्ययन गर्ने, प्रारम्भिक बाल विकास रणनीतिले प्रारम्भिक बाल विकासका अवधारणालाई राष्ट्रिय नीति, कार्यक्रम तथा सम्बन्धित निकायहरूसँग कसरी अन्तरसम्बन्धित गरेको छ, र सोको कार्यान्वयनको अवस्था कस्तो छ, विश्लेषण गर्ने तथा समग्र मूल्याङ्कनको आधारमा आगामी दिनमा नयाँ रणनीतिको लागि आधार तय गर्नु यस मूल्याङ्कनका उद्देश्यहरू हुन् ।

### २.३ कार्यक्रमको संक्षिप्त परिचय

प्रारम्भिक बाल विकास रणनीति (२००४-२०१५) ले पाँचवर्ष उमेरसम्मका बालबालिकालाई प्रारम्भिक बाल विकासको सेवा प्राप्त गर्ने समूहको रूपमा व्याख्या गरेको छ। हाल देशैभरी रहेको ३५,९९१ निजी तथा सरकारी बालविकास केन्द्रहरूमा ९,७७,३६५ बालबालिकाहरूले प्रारम्भिक बालविकासका सेवा उपभोग गरिरहेका छन्। प्रारम्भिक बाल विकासको अवधारणालाई सही रूपमा सम्बोधन गरेर सोसम्बन्धी रणनीति बनेको भएतापनि यसको कार्यान्वयन रणनीति अनुरूप हुन नसक्दा कार्यक्रम केही छायामा परेको, यस सम्बन्धमा अन्यौलको बातावरण सृजना भएको र प्रारम्भिक बाल विकासका कार्यक्रम एकिकृत रूपमा अगाडि बढ्न नसकेको अवस्था छ।

### २.४ मूल्याङ्कनको विधि

प्राथमिक गुणात्मक अनुसन्धान र सँगसँगै द्वितीयक स्रोत र दस्तावेजबाट उपलब्ध संख्यात्मक तथ्याङ्कको प्रयोग गरी मूल्याङ्कनका उद्देश्यहरूलाई सम्बोधन गरिएको छ। यो मूल्याङ्कनमा मिश्रित विधिको प्रयोग गरी विभिन्न स्रोतबाट प्राप्त गुणात्मक र संख्यात्मक प्रमाणहरूको लेखाजोखा गरी मूल्याङ्कनको सर्वाङ्गीण पक्षलाई विस्तृत र गहिरो ढङ्गले हेरिएको छ। शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, वास (पानी, सरसफाइ र आरोग्यता) र संरक्षणजस्ता प्रारम्भिक बाल विकासका क्षेत्रमा चुनिएका सूचकहरूको राष्ट्रिय सन्दर्भमा विवरणात्मक आँकडा दिन माध्यमिक स्रोतको उपयोग गरियो। यसबाट प्राथमिक तथ्याङ्क सङ्कलनको रूपरेखा तय गर्न र गुणात्मक अनुसन्धान विधिबाट प्राप्त सूचनालाई रूजु गर्न मद्दत पुग्यो। तथापि कतिपय क्षेत्रमा उमेरगत रूपले अलग-अलग सङ्कलन गरिएकाजस्ता महत्वपूर्ण तथ्याङ्क उपलब्ध नहुनाले माध्यमिक विश्लेषण केही सीमाबद्ध हुनपुगेको छ।

### २.५ निष्कर्ष

यो मूल्याङ्कनका प्राप्तहरूले के देखाउँछन् भने प्रारम्भिक बाल विकास रणनीति (२०६०-२०७२) को समयवधिमा प्रारम्भिक बाल विकास सेवाहरूमा सामान्यतया सुधार भएको छ। समग्रमा प्रारम्भिक बाल विकास कार्यक्रमले प्रभावकारी सन्देश दिनसकेको देखिन्छ। पछिल्लो एक दशकमा प्रारम्भिक बाल विकास कार्यक्रममा विनियोजन गरिने बजेटमा पाँचगुणा वृद्धि भएको देखिन्छ। यसबाट यो क्षेत्रले पाएको प्राथमिकता बुझ्न सकिन्छ। सबै बालबालिकाका लागि प्रारम्भिक बाल विकास सेवाहरू विस्तार र सुधार गर्ने विषयमा बलियो राजनीतिक इच्छाशक्ति र प्रतिबद्धता देखिएबाट यो क्षेत्रको दिगोपन सुरक्षित देखिन्छ।

ती सुधारहरूका बाबजुद, भौगोलिक वा सम्पन्नताका हिसाबले विभिन्न समूहमा पर्ने बालबालिकाको ती सेवासम्मको पहुँच र सेवाहरूको गुणस्तरमा ठूलो खाडल देखिएको छ। प्रारम्भिक बाल विकास सेवाहरू प्रदान गरिएको विषयका सन्दर्भमा सबै बालबालिकाले उनीहरूको सर्वाङ्गीण विकासका

लागि आवश्यक सबै प्रकारका सेवाहरू पाइरहेका छन् भन्ने ठोस आधारहरू देखिएनन् । नेपालको प्रारम्भिक बाल विकास रणनीतिले परिकल्पना गरेअनुरूप तत्सम्बन्धी सेवाहरूको एकीकृत रूपमा प्रवाह हुनसक्दा सो नीतिको प्रभावकारितामा सबैभन्दा धेरै बाधा पुगेको देखिन्छ ।

## २.६ सुभावहरू

१. प्रारम्भिक बाल विकास रणनीतिको अवधारणा विकास र परिकल्पनादेखि सबै चरणमा समग्र अपनत्व सबै क्षेत्रगत मन्त्रालयहरू र निकायहरूले पूर्वनिर्धारित ढाँचाअनुसार लिनुपर्दछ । सम्बन्धित सरकारी निकायबाट एकजना प्रतिनिधिलाई प्रारम्भिक बाल विकास रणनीतिको मस्यौदा तयार पार्ने र पाँच वर्षमुनिका बालबालिकाका लागि बनाइने आफ्नो विभागका सबै नीति तथा कार्यक्रमहरूमा रणनीतिको सामञ्जस्यता कायम गर्न लगाउनु उपयुक्त हुन्छ । एक विशिष्ट निकाय, जस्तै शिक्षा मन्त्रालयभन्दा राष्ट्रिय योजना आयोग जस्तो अन्तरक्षेत्रगत निकायले यसको समन्वय गर्नुपर्छ ।
२. नयाँ संघीय संरचनाअन्तर्गत नेपाल बृहद् विकेन्द्रीकरणमा गई राखेकोले प्रारम्भिक बाल विकासको समग्र पद्धति निर्माण गरी सेवा प्रवाह गर्नसकिने राम्रो अवसर जुरेको छ । अधिकांश स्थानीय सरकारहरूलाई प्रारम्भिक बाल विकासको पूर्वअनुभव नहुनसक्ने भएकाले स्थानीय सरकारहरूले आ-आफ्नो प्राथमिकताअनुसार प्रारम्भिक बाल विकास सेवा हरेक स्थानीय सरकारमा अत्यन्तै फरक फरक हुनसक्ने जोखिम देखिन्छ जसले गर्दा अहिले देखिएको भौगोलिक र सम्पन्नतामा आधारित असमानता सम्बोधन हुनुको साटो भन् बल्किने सम्भावना छ । त्यसैले स्थानीय सरकारहरूले प्रारम्भिक बाल विकास रणनीति बनाउन र सम्बद्ध सेवाहरू एकीकृत रूपमा र समतामूलक ढङ्गले प्रदान गर्न सहयोग पाउनु पर्दछ ।
३. प्रारम्भिक बाल विकास रणनीतिले गर्भवस्थादेखि शिशु पाँच वर्षको नभइन्जेल प्रारम्भिक बाल विकास अन्तर्गत केके न्यूनतम सेवाहरू पाउनुपर्ने हो स्पष्टरूपमा उल्लेख गर्नुपर्दछ । यस्तो खालको सेवाको नक्शाङ्कनमा समयगत (अर्थात् शिशुले उमेरअनुसार पाउनुपर्ने सेवाहरू) र विषयगत (अर्थात् पोषण, स्वास्थ्य, संरक्षण, वास र शिक्षालगायतका शिशु विकाससँग जोडिएका सेवाहरू) लाई समावेश गर्नुपर्दछ । त्यसैगरी कुन सेवा कुन निकाय वा अधिकारीले दिने हो सोको जिम्मेवारी पनि किटानसाथ तोकिनुपर्दछ ।
४. प्रारम्भिक बाल विकासका लागि मुख्य सेवाहरू पहिचान भएपछि, अनुगमन तथा मूल्याङ्कनको हिसाबले केही प्रमुख सूचकहरू तय गर्नुपर्छ जसले रणनीतिको शुरूदेखि सञ्चालन अवधिभित्र कार्यक्रमका सफलता (वा असफलता) मापन गर्न मद्दत गर्दछन् । त्यसपछि प्रत्येक मन्त्रालय र सम्बद्ध स्थानीय सरकारहरूले तय भएका सूचकअनुसार व्यवस्थापन सूचना प्रणालीमार्फत खण्डकृत तथ्याङ्क नियमित रूपमा सङ्कलन गर्नुपर्दछ । यसरी सङ्कलन गरिएको सूचनाले कार्यक्रमको कार्यसम्पादन लेखाजोखा गर्न र भावी कार्यक्रमको रूपरेखा र सेवाप्रवाहलाई दिशानिर्देश गर्न सक्छ ।

५. प्रारम्भिक बाल विकास रणनीतिमा उल्लेख गरिएका सेवालाई भरपर्दो स्रोत योजनाले पनि साथ दिएको हुनुपर्दछ । त्यसैगरी रणनीतिले लक्षित गरेका कार्यक्रममा आवश्यक स्रोत विनियोजन गर्न बलियो राजनीतिक बचनबद्धता पनि जरूरी हुन्छ ।
६. विपन्न बालबालिकाका लागि विशेष जोड दिनुपर्दछ र प्रारम्भिक बाल विकास रणनीतिले माग र आपूर्ति पक्षको पनि स्पष्ट रूपले खाका दिनुपर्दछ, जसले गर्दा ती बालबालिकाको ती सेवासम्मको पहुँचलाई सुदृढ बनाउन मद्दत पुग्छ ।
७. आगामी प्रारम्भिक बाल विकास रणनीतिले बालबालिकालाई दिइने प्रारम्भिक बाल विकास सेवाको गुणस्तरलाई स्पष्ट रूपमा तोकिदिनु पर्दछ ।

## स्र. आन्तरिक मूल्याङ्कन गरिएका आयोजनाहरूको मूल्याङ्कन प्रतिवेदनको सारांश

### १. राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्रबाट सञ्चालित तालिम कार्यक्रमको कार्यान्वयन प्रक्रिया तथा कार्यसम्पादन

#### १.१ पृष्ठमूमि

नेपाल सरकारले राष्ट्रिय स्वास्थ्य नीति २०४७ मार्फत स्वास्थ्य क्षेत्रमा कार्यरत कर्मचारीहरूको बृहत्तर विकास र समग्र स्वास्थ्य क्षेत्रकै विकास तथा व्यवस्थापन गर्ने लक्ष्य लिएको थियो र सोही राष्ट्रिय स्वास्थ्य नीतिकै आधारमा राष्ट्रिय स्वास्थ्य जनशक्ति गुरुयोजना तयार गरिएको हो । जिल्लागत तहमा प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा अन्तर्गत दक्ष जनशक्ति उत्पादनको लागि वि.सं. २०५३ मा लागि राष्ट्रिय तालिम रणनीतिको विकास गरिएको थियो । क्षेत्रीय स्तरमा तालिमको आवश्यकता पहिचान, जिल्ला तथा केन्द्र वीच समन्वयकारी भूमिका निर्वाह गर्ने र तालिम कार्यक्रमहरूको व्यवस्थापन तथा संचालन गर्ने गरी निकै महत्वपूर्ण दुरदृष्टिका साथ पाँचवटै विकास क्षेत्रमा क्षेत्रीय स्तरको तालिम केन्द्रहरूको स्थापना गर्ने नीतिगत व्यवस्था वमोजिम सबै विकास क्षेत्रमा तालिम केन्द्रहरूको स्थापना गरिएको हो ।

#### १.२ मूल्याङ्कनको उद्देश्य

यस मूल्याङ्कन अध्ययनको मुख्य उद्देश्य राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रमका कार्यसम्पादन, सान्दर्भिकता, प्रभावकारिता, कार्यदक्षता, प्रभाव र दीगोपनाको लेखाजोखा गर्नु रहेको छ । यस अध्ययनका निश्चित उद्देश्यहरू निम्नअनुसार रहेका छन्:

- क) राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रमको कार्यान्वयन संरचना, योजना तर्जुमा तथा कार्यान्वयन प्रक्रिया कार्यसम्पादनस्तरवारे मूल्याङ्कन गर्नु ।
- ख) यस कार्यक्रम अन्तर्गत तालिम केन्द्रहरूमा सञ्चालित तालिमहरूमा सहभागीहरूको आवश्यकता पहिचान, पाठ्यक्रम निर्धारण, तालिमका किसिम तथा सञ्चालन प्रक्रियासम्बन्धी स्थिति मूल्याङ्कन गर्नु ।

ग) यस कार्यक्रमवारे सम्बन्धित लाभग्राहीको धारणा, लाभग्राहीको सन्तुष्टि, लैङ्गिक समता, समावेसिता र पहुँचवारे अध्ययन गर्नु ।

### १.३ प्राप्त नतिजाको सारांश

वि.सं. २०५३ देखि सुरुवात भएको यस कार्यक्रमले प्रत्यक्ष रूपमै तत्कालिन सहश्रवादी विकास लक्ष्य र हालको दिगो विकास लक्ष्य हासिल गर्न सहयोग पुऱ्याउने देखिन्छ । यस राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्रबाट संचालित कार्यक्रमले दक्ष स्वास्थ्य जनशक्ति उत्पादनमा प्रत्यक्ष सहयोग गरी समग्र स्वास्थ्य क्षेत्रको गुणात्मक सुधार गर्नमा ठूलो योगदान गरेको छ । का बाट प्राप्त जानकारी अनुसार यस कार्यक्रमको लागि वार्षिक बजेट निकासको प्रक्रिया सरल रहेको पाइयो, अर्थात मन्त्रालयबाट राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्रमा समयमै बजेट निकास हुने गरेको र केन्द्रबाट पनि मातहतका निकायमा समयमै बजेट निकास गर्ने गरेको पाइयो ।

#### १.३.१ कार्यक्रमको भौतिक लक्ष्य

जनतालाई गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवा प्रदान गर्ने नेपाल सरकारको राष्ट्रिय लक्ष्यलाई हासिल स्वास्थ्य क्षेत्रमा कार्यरत केन्द्रदेखि स्थानीयस्तरसम्मका जनशक्तिको समसामयिक क्षमता विकास गर्ने उद्देश्यले स्वास्थ्य मन्त्रालयले आर्थिक वर्ष २०५०/५१ बाट राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रम कार्यान्वयनमा ल्याएको छ । स्वास्थ्य सेवा विभाग मातहत केन्द्रीस्तरमा एक राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र तथा सोअन्तर्गत पाँच क्षेत्रमा क्षेत्रीय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र, एक उपक्षेत्रीय र ३५ वटा तालिम स्थानबाट आ.व. २०७३/७४ मा जम्मा ४३ प्रकारका स्वास्थ्य सम्बन्धी तालिम प्रदान गरेको छ र यस आ.व.मा कूल ३४८३ जना स्वास्थ्यकर्मीलाई विभिन्न प्रकारका स्वास्थ्य तालिम प्रदान गर्ने लक्ष्य राखेकोमा सो अवधिभर कूल ३३४१ जनालाई तालिम प्रदान गरेको छ । यस आधारमा राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र तथा मातहतका स्वास्थ्य तालिम निकायको भौतिक प्रगति ९६ प्रतिशत रहेको पाईन्छ ।

#### १.३.२ कार्यक्रमको वित्तीय लक्ष्य

राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्रको आर्थिक वर्ष २०७३/७४ को कूल बजेट रु.अठार करोड चौरासी लाख रहेकोमा आर्थिक वर्षको अन्तसम्म उक्त बजेको करिब ७७ प्रतिशत खर्च भएको छ । यसैगरि आर्थिक वर्ष २०७२/७३ र २०७१/७२ मा तालिम केन्द्रद्वारा क्रमशः ७४ प्रतिशत र ७७ प्रतिशत खर्च भएको अवस्था छ । समग्रमा तीन आर्थिक वर्षको औषत खर्च ७७ प्रतिशत रहेको छ । जिल्लास्तरका कार्यालय अन्तरगतको बजेट खर्च केन्द्रस्तरको भन्दा राम्रो रहेको छ । आर्थिक वर्ष २०७३/७४ मा जिल्लास्तरका कार्यालय अन्तरगत रु दुई करोड चौध लाख बजेट विनियोजन भएकोमा सो को ९५ प्रतिशत खर्च भएको अवस्था छ । यसैगरि आर्थिक वर्ष २०७२/७३ र २०७१/७२ मा जिल्लास्तरका कार्यालयमा क्रमशः ६८ प्रतिशत र ९२ प्रतिशत बजेट खर्च भएको

छ। समग्रमा जिल्लास्तरका कार्यालय अन्तरगत तीन आर्थिक वर्षको औषत खर्च ८५ प्रतिशत रहेको छ। केन्द्र र जिल्लास्तरको औषत प्रगति ८१.१७ प्रतिशत रहेको छ।

हजारमा

| बजेट   | आ.व. ७१/७२     |          | आ.व. ७२/७३     |          | आ.व. ७३/७४     |          | समग्र खर्च (%) औसत |
|--|----------------|----------|----------------|----------|----------------|----------|--------------------|
|  | विनियोजित बजेट | खर्च (%) | विनियोजित बजेट | खर्च (%) | विनियोजित बजेट | खर्च (%) |                    |
| केन्द्रीय स्वास्थ्य ता.के. (क्षेत्रीय कार्यालय सहित) | २३०६६४         | ७७.३२    | १८०३७१         | ७३.६०    | १८८४५०         | ८०.६२    | ७७.२१              |
| जिल्लास्तर   | ५३३७०          | ९२       | २१४७५          | ६८.२५    | २१४००          | ९५.१८    | ८५.१४              |

यस कार्यक्रमको नतिजालाई देहायका ६ वटा आधारमा विश्लेषण गरिएको छ।

### १.३.३ कार्यसम्पादन

विशेषगरेर, स्वास्थ्य तालिम केन्द्र, क्षेत्रीय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र र सो अन्तरगतका स्वास्थ्य तालिम साइटहरूबाट प्राप्त वित्तीय, कार्यक्रमगत र प्रशासनिक तथ्य र सूचनाका आधारमा कार्यसम्पादनको मूल्याङ्कन गरिएको छ। KII बाट प्राप्त जानकारी अनुसार यस कार्यक्रमको लागि वार्षिक बजेट निकासाको प्रक्रिया सरल रहेको पाइयो, अर्थात् मन्त्रालयबाट राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्रमा समयमै बजेट निकासा हुने गरेको र केन्द्रबाट पनि मातहतका निकायमा समयमै बजेट निकासा गर्ने गरेको पाइयो।

विभिन्न जानिफकारहरूसँगको अन्तरवार्ताको क्रममा यस तालिम कार्यक्रमको लागि सम्बन्धित निकायबाट प्राप्त हुने बजेट धेरै जनाले पुग्दो रहेको बताएका छन् भने केहीले बजेट अपुग रहेको बताएका छन्। विशेषगरेर क्षेत्रीय कार्यालयहरूमा गरिएको जानिफकारहरूसँगको अन्तरवार्तामा केन्द्रबाट प्रदान गरिने बजेट केही अपुग भएको बताइएको छ, जसले गर्दा तालिम संचालनमा केहि कठिनाई निम्त्याएको पाइयो। बजेटको पर्याप्तता सम्बन्धमा स्थलगत अध्ययन गरिएको तालिम साइट तथा क्षेत्रीय तालिम केन्द्र अनुसार पति फरक धारणा रहेको पाइयो। केहि तालिम केन्द्रले विनियोजित बजेट यस तालिम संचालनको लागि पर्याप्त रहेको पनि बताएका छन्।

कार्यसम्पादनलाई प्रभाव पार्ने पक्षको रूपमा प्रशिक्षकहरूको कार्यवोभको अवस्था पनि रहेको हुन्छ। स्वास्थ्य तालिम संचालन गर्दा धेरैजसो प्रशिक्षकहरूले विरामी जाँचको नियमित कार्यको समय कटौती गर्नुपर्ने हुन्छ। अनुगमन गरिएका धेरै जसो स्वास्थ्य संस्था तथा तालिम केन्द्रमा कार्यरत प्रशिक्षकहरूले यस्तो प्रकारको तालिम संचालन मार्फत सरकारको स्वास्थ्य क्षेत्रमा

दक्ष जनशक्ति उत्पादन गर्ने लक्ष्यमा सहयोग गरेता पनि स्वास्थ्य संस्था तथा अस्पतालको दैनिक कार्यसंचालनमा केहि बाधा पुऱ्याएको धारणा व्यक्त गरेको पाइयो । यसले प्रशिक्षकहरूको कार्यबोझ अत्यन्त बढाएको भन्ने कुरा धेरै चिकित्सक/प्रशिक्षकहरूबाट आएको पाइयो । सम्भवत यस्ता प्रकृतिका तालिमहरूको लागि अस्पताल तथा स्वास्थ्य संस्थाबाट तालिम प्रदान गर्नकै लागि भनी तालिम केन्द्र पुगनुपर्ने वाध्यताले पनि यस्तो कार्यबोझ बढाउन मद्दत गरेको पाइयो ।

यस स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रममा हाल दोहोरोपना नरहेको पाइयो । कम्प्यूटराइज्ड प्रणालीबाट प्रमाणपत्र प्रदान गरिने हुँदा दोरोरोपनालाई हटाउन सकिएको छ । यसैगरी तालिमको लागि आवश्यक पर्ने भौतिक संरचनाको तथा अन्य logistic स्रोतहरूको अवस्था सन्तोषजनक रहेको पाइयो । स्वास्थ्य तालिम प्रदान गर्ने सिलसिलामा केन्द्र, क्षेत्र तथा तालिम साइटहरूवीचको समन्वयको अवस्था भने कमजोर रहेको पाइयो ।

कार्यक्रमको कार्यसम्पादनको विश्लेषणको लागि गरिएको समूहकेन्द्रित छलफलमा तालिमको लागि आवश्यक संरचना तथा उपकरणहरूको उपलब्धता सन्तोषजनक रहेको पाइयो भने छलफलमा उपस्थित प्रशिक्षार्थीहरूलाई यस्ता तालिमबारे पूर्व जानकारी नभएको बताएका थिए । तालिमको लागि कुनै प्रकारको शुल्क तिर्न नपर्ने एवम् प्रशिक्षकहरूको विषयवस्तु प्रतिको बुझाई राम्रो रहेको धारणा व्यक्त गरेका थिए ।

### कार्यसम्पादन मूल्याङ्कन नतिजा

यस राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्रबाट भएका विगत पाँच वर्ष देखिका भौतिक तथा वित्तीय कार्यक्रम को कार्यप्रगति सन्तोषजनक रहेको पाइयो । आ.व. २०७३/७४ मा जम्मा ३३४९ स्वास्थ्यकर्मीहरूलाई विभिन्न ४३ प्रकारका स्वास्थ्य सम्बन्धी तालिम प्रदान गरिएको छ । यस अनुसार कार्यक्रमको भौतिक प्रगति ९६ प्रतिशत रहेको छ, भने विगत तीन वर्षको समग्र वित्तीय प्रगति केन्द्रको ७७ प्रतिशत र जिल्लातहको ८५ प्रतिशत रहेको पाइयो । समग्रमा बजेट माग तथा हस्तान्तरणको प्रक्रियागत सरलता, बजेटको पर्याप्तता, प्रशिक्षकको दक्षता भौतिक संरचना र उपकरणको उपलब्धता सन्तोषजनक रहेको छ, भने निकायगत समन्वयता, आन्तरिक संचारको अवस्था कमजोर रहेका छन् । राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र, क्षेत्रीय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र तथा जिल्लास्थित स्वास्थ्य तालिम साइटबाट प्रदान गरिने तालिममा कुनै प्रकारको दोहोरोपना नरहेको पाइयो । यसर्थ कार्यसम्पादनको सन्दर्भमा यस राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रमलाई सन्तोषजनक स्तर प्रदान गरिएको छ ।

### १.३.४ सान्दर्भिकता

नेपाल सरकारको नीति, योजना, प्राथमिकता, जनताको मागसँगको तादम्यता र यस्तो तालिम प्राप्त जनशक्तिको सान्दर्भिकता रहे नरहेको आधारमा यस राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्रबाट



उत्पादित जनशक्तिको सान्दर्भिकता रहे नरहेको आधारमा कार्यक्रमको सान्दर्भिकता मूल्याङ्कन गरिएको छ ।

### नीतिगत (संविधानसँगको) सान्दर्भिकता

नेपालको संविधान २०७२ को धारा ३५ ले स्वास्थ्य सेवालाई जनताको मौलिक हकको रूपमा सुनिश्चित गरेको छ । प्रत्येक नागरिकलाई राज्यबाट निःशुल्क आधारभूत स्वास्थ्य सेवा र स्वास्थ्य सेवामा समान पहुँच सम्बन्धी हकको व्यवस्था संविधानले गरेको छ । राज्यले लिएको यस महत्वपूर्ण उद्देश्य प्रत्यक्ष रूपमानै राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रमसँग जोडिएको छ । स्वास्थ्य क्षेत्रमा दक्ष जनशक्तिको उत्पादन मार्फत नै आम नागरिकहरूको स्वास्थ्य सेवामा पहुँच बढाउन सकिन्छ । यस हिसाबले यस राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रम नीतिगत रूपमा अतिनै सान्दर्भिक रहेको देखिन्छ ।

### आवधिक योजनासँगको सान्दर्भिकता

गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवामा सबै जनताको पहुँचमार्फत स्वास्थ्य र सवल नागरिक विकास गर्ने सोच तथा गुणस्तरीय आधारभूत स्वास्थ्य सेवाहरू निःशुल्क रूपमा उपलब्ध गराउने लक्ष्य चौधौँ योजनाले लिएको छ । यहि सोच, लक्ष्य तथा उद्देश्यको आधारमा स्वास्थ्य सेवाको पहुँच बढाउने, गुणस्तर सुधार, शिशु बाल तथा मातृ मृत्युदर घटाउने लगायत दक्ष जनशक्ति उत्पादन गर्नेगरी रणनीति र कार्यनीतिहरू तय गरिएका छन् । यसैगरी चौधौँ योजनामा स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रमहरूमा सेवा प्रवाहमा सुधार, जनशक्ति विकास तथा गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवा, भौतिक पूर्वाधार विकास, पोषण सम्बन्धी कार्यक्रम आदि रहेका छन् । चौधौँ योजनाले उल्लेख गरेका सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति तथा कार्यनीतिहरूको सफलता प्रत्यक्ष रूपमा राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्रको भूमिकासँग जोडिएको पाइयो । यस आधारमा राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रम अतिनै सान्दर्भिक रहेको देखिन्छ ।

### दिगो विकास लक्ष्यसँगको सान्दर्भिकता

विश्वव्यापी रूपमा सहमत भई सबै देशहरूले लागु गरिसकेको दिगो विकासको लक्ष्यहरू नेपालको लागि पनि मुख्य दिर्घकालिन लक्ष्य रहेको छ । सरकारको नीति कार्यक्रम, वार्षिक तथा आवधिक योजना र बजेट लगायतमा दिगो विकासको लक्ष्य समाहित गरिएको छ । दिगो विकास लक्ष्य ३ प्रत्यक्ष रूपमानै मानव स्वास्थ्यसँग जोडिएको छ । जस अन्तरगत सबै उमेर समूहका व्यक्तिका लागि स्वास्थ्य जीवनको सुनिश्चितता गर्दै समृद्ध जीवनस्तर प्रवर्धन गर्ने रहेको छ । उक्त लक्ष्य प्राप्तीको लागि राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र तथा क्षेत्रीयस्तरका अन्य स्वास्थ्य तालिम केन्द्रद्वारा प्रदान गरिने तालिम मार्फत दक्ष जनशक्ति उत्पादन हुने र दिर्घकालमा नागरिक स्वास्थ्यमा सकारात्मक प्रभाव पर्ने आकलन गर्न सकिन्छ । यस अर्थमा राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रम सान्दर्भिक रहेको देखिन्छ ।

## सान्दर्भिकताको मूल्याङ्कन नतिजा

राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र र यसबाट संचालन हुंदै आइरहेको विभिन्न स्वास्थ्य सेवा सम्बन्धी तालिम कार्यक्रमहरू प्रत्यक्ष रूपमा राष्ट्रिय लक्ष्य उद्देश्य, संविधानको परिकल्पना, आवधिक योजनाको लक्ष्य उद्देश्य र दिगो विकास लक्ष्यसँग सम्बन्धित रहेको पाइएको र यसका अलावा तालिमको आवश्यकता पहिचान गर्ने गरिएको, कक्षा कोठा सुहाउँदो प्रशिक्षार्थी संख्या, भौगोलिक क्षेत्र अनुकूल हुनेगरी प्रशिक्षार्थी छनौट, पाठ्यक्रमको उपयुक्तता र तालिमबाट लक्षित वर्गको आवश्यकता सम्बोधन गर्न सकेको परिप्रेक्षमा यस कार्यक्रमलाई समग्रमा निकै सान्दर्भिक स्तरीकरण गरिएको छ ।

### १.३.५ प्रभावकारिता

मुख्यरूपमा, राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रमले लिएका लक्ष्य उद्देश्यहरू हासिल भए भएनन् वा भएको भए प्रभावकारि तवरबाट भए भएनन् भन्ने कुराको विश्लेषणबाट नै यस कार्यक्रमको प्रभावकारिता मूल्याङ्कन गरिएको छ । यसैगरी तालिम कार्यक्रममा लैंगिक समता, पहुँच, समावेशिता लगायत तालिमबाट प्रशिक्षार्थीको कार्यसम्पादनमा आएको परिवर्तनलाई पनि प्रभावकारीता मूल्याङ्कनको आधार मानिएको छ ।

मुख्य सुचनादातासँगको अर्न्तवार्तामा अधिकांशले यस तालिम कार्यक्रमले लिएको उद्देश्य हासिल गरेको बताएका थिए । पाठ्यक्रममा समयानुकूल परिमार्जन आवश्यक रहेको र यस तालिम लिए पश्चात् स्वास्थ्यकर्मीको कार्यशैली/कार्यसम्पादनमा समेत परिवर्तन आएको बुझिएको छ । कार्यक्रमले समग्रतामा लैंगिक समता एवम् समावेशिता कायम गर्न सफल रहेको कुरा अन्तरवार्ताको क्रममा आएका थिए । समुह केन्द्रित छलफलमा सहभागी प्रशिक्षार्थीहरू एवम् तालिम लिई आ-आफ्नो कार्यस्थलमा कार्यरत स्वास्थ्यकर्मीहरूसँगको टेलिफोन वार्ताबाट तालिमले उनिहरूमा समारात्मक परिवर्तन ल्याएको, आत्मविश्वास बढाएको र केहि हदसम्म क्षमता बृद्धि पनि गराएको बताएका थिए । यद्यपी कार्यक्रमका सम्बन्धमा प्रशिक्षार्थीलाई ढिला सूचना प्राप्त हुने, तालिम लिए पश्चात् स्वास्थ्य चौकीमा गई सिकेको ज्ञान सीप अनुसारको सेवा प्रदान गर्न आवश्यक उपकरणहरूको अभाव रहेको जस्ता समस्याले यस कार्यक्रमको प्रभावकारितालाई केहि कमजोर बनाएको छ ।

### प्रभावकारिताको मूल्याङ्कन नतिजा

यस कार्यक्रमले केहि कमजोरीहरूका बावजुद समग्रतामा आफ्ना उद्देश्य केहि हदसम्म हासिल गर्न सफल भएको, महिला सहभागिता अत्याधिक रहेको, प्रशिक्षार्थीहरूको सन्तुष्टिको मात्रा उच्च रहेको, स्वास्थ्यकर्मीको क्षमता बृद्धिमा सघाएको हुँदा यस कार्यक्रमलाई समग्रमा प्रभावकारी स्तरीकरण गरिएको छ ।

### १.३.६ कार्यदक्षता

यस कार्यक्रमको कार्यदक्षता सम्बन्धमा कार्यक्रमको लगानी तथा प्रतिफल प्राप्तमा लागेको समय र लागत विश्लेषण गरी कार्यदक्षता मूल्याङ्कन गरिएको छ। यो मूल्याङ्कन विशेषतः लागत प्रभावकारीताको विश्लेषणका आधारमा गरिएको छ। यो मूल्याङ्कनका लागि कार्यक्रममा स्रोत साधनको विनियोजन र उपयोगको अवस्था, कार्यक्रमको दोहोरोपना, कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा बजेटको माग, निकासा र खर्च गर्ने प्रक्रिया कतिको प्रभावकारी र पारदर्शी थिए जस्ता सूचकहरूको आधार लिइएको छ।

कार्यक्रमको बजेट माग, बजेट प्राप्ति, निकासाको प्रक्रिया र खर्च प्रक्रिया सरल रहेको छ। कार्यक्रमको माग अनुसार बजेट पूर्णरूपमा पुग्दो नभए पनि सामान्य रूपमा पुग्दो रहेको पाइयो। बजेट खर्चको स्थिति पनि सन्तोषजनक रहेको छ। आ.व. २०७३/७४ मा राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र र क्षेत्रीय स्वास्थ्य तालिम केन्द्रले समस्तिगतमा करिब ८० प्रतिशत बजेट खर्च गरेको छ भने जिल्लास्थित तालिम केन्द्रले ९५ प्रतिशत बजेट खर्च गरेको पाइयो। उक्त आ.व.मा ३३४९ स्वास्थ्यकर्मीहरूलाई तालिम प्रदान गरिएको छ जसअनुसार यस कार्यक्रमको प्रति इकाई लागत (सम्पूर्ण खर्च भएको रकमको अनुपातमा) रु.५९५७० हुन आउँछ, जुन रकम केहि बढि हो। यद्यपी स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रमको लाभ लागत निकाल्न कठिन हुने र यसरी एकमुष्ट रूपमा प्रति इकाई निकाल्दा सम्पूर्ण कार्यक्रमको कार्यदक्षता मापन कार्य बस्तुनिष्ठ नहुन सक्छ।

### कार्यदक्षताको मूल्याङ्कन नतिजा

प्रशिक्षार्थीको छनौटमा आवश्यकताको पहिचान हुने, कार्यक्रममा कुनै प्रकारको दोहोरोपना नदेखिएको, कार्यक्रमको बजेट खर्च प्रतिशत सन्तोषजनक रहेको, भौतिक प्रगति प्रतिशत उच्च रहेको र इकाईगत लागत केहि उच्च देखिएको सन्दर्भमा समग्र कार्यक्रमको कार्यदक्षताको स्तर कार्यदक्षता भएकोमा वर्गिकरण गरिएको छ।

### १.३.७ प्रभाव

यस कार्यक्रमका आशातित परिणाम हासिल भए वा नभएको तथा ती परिणाम हासिल गर्नमा कार्यक्रमले कार्यान्वयन गरेका कार्यक्रमहरूलाई कति श्रेय दिन सकिन्छ, भन्ने विश्लेषण गरेर प्रभाव मूल्याङ्कन गरिएको छ। यस कार्यक्रम कार्यान्वयबाट कार्यक्रम क्षेत्रका स्वास्थ्यकर्मीका सेवा प्रवाहसम्बन्धी धारणा र अभ्यासमा आएका परिवर्तनको मापन गरी कार्यक्रमको प्रभाव मूल्याङ्कन गरिएको छ। स्वास्थ्यकर्मीहरूको ज्ञान, सीप विकासमा के कस्तो योगदान पुऱ्याएको छ, कार्यक्रम क्षेत्रका जिल्ला स्वास्थ्य, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा स्वास्थ्य चौकीमा कार्यरत कर्मचारीहरूको तालिम लिएपश्चातको धारणा, ज्ञान सेवा प्रवाह र साधन प्रयोगमा आएको परिवर्तन जस्ता सूचकहरूको आधारमा कार्यक्रमको प्रभाव मूल्याङ्कन गरिएको छ। यस तालिम कार्यक्रममा

प्रशिक्षार्थी छनौट गर्दा Training Need Assessment गरिने गरेको पाइयो । तालिम कार्यक्रमको लागि केन्द्रबाट स्रोत विनियोजन हुने र उक्त बजेटको खर्च प्रतिशत समेत उच्च रहेको पाइयो । राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्रबाट संचालित स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रममा कुनै प्रकारको दोहोरोपना नरहेको पाइयो । तालिम पश्चात् प्रदान गरिने प्रमाणपत्र लगायत प्रशिक्षार्थीको लगत कम्प्यूटराइज्ड गरी दोहोरोपना हटाइएको छ ।

नेपालको स्वास्थ्य क्षेत्रमा गुणात्मक सुधार ल्याउनमा वि.सं. २०५३ सालबाट सुरु भएको यस राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रमको महत्वपूर्ण योगदान रहेको छ । सहश्राव्दी विकास लक्ष्यले तय गरेका विभिन्न लक्ष्यहरू हासिल गर्ने सिलसिलामा विशेषगरी नेपालले स्वास्थ्य क्षेत्रमा उल्लेख्य उपलब्धि हासिल गरेको छ, र नेपालले हासिल गरेको यस उपलब्धिमा राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र र यस अर्न्तगतको स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रमको उल्लेख्य प्रभाव रहेको पाइन्छ ।

तालिम लिए पश्चात् जिल्ला स्वास्थ्य, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा स्वास्थ्य चौकीमा कार्यरत स्वास्थ्यकर्मीहरूको धारणा, ज्ञान, सीप, आत्मविश्वास, सेवा प्रवाह गुणस्तर र स्वास्थ्य सम्बन्धी साधन प्रयोगमा सकारात्मक परिवर्तन आएको पाइयो । तालिम पछि स्वास्थ्यकर्मीको काम गराईमा आएको सकारात्मक परिवर्तनलाई तालिम केन्द्रका प्रशिक्षक र सेवाग्राहीबाट पुष्टि गरिएको छ ।

### **प्रभावको मूल्याङ्कन नतिजा**

सहश्राव्दी विकास लक्ष्य अर्न्तर्गत नेपालले सामाजिक क्षेत्रमा अझ विशेषत स्वास्थ्य क्षेत्रमा उल्लेख्य उपलब्धि हासिल गरेको थियो । यस उपलब्धिलाई हाम्रो समस्तीगत स्वास्थ्य क्षेत्रको व्यवस्थापन तथा स्वास्थ्यकर्मीको भूमिकासँग जोड्न सकिन्छ । यस कार्यक्रम मार्फत स्वास्थ्यकर्मीको ज्ञान, सीप र दक्षतामा बृद्धि भएको तथा उनिहरूको आत्मविश्वास समेत बढेको तथ्य उनिहरूसँगको प्रत्यक्ष कुराकानीका आधारमा बुझिएको छ । तालिमकै कारण उनिहरूको सेवा प्रवाहमा सुधार आएको, तालिम प्रति उनिहरूको सन्तुष्टि उच्च रहेको र समस्त स्वास्थ्य क्षेत्रमा दिर्घकालिन सुधार देखा परेको आधारमा समग्र कार्यक्रमको प्रभावकारिताको स्तर धेरै प्रभाव पार्न सफलमा वर्गिकरण गरिएको छ ।

### **१.३.८ दिगोपना**

तालिम संचालनका लागि नीतिगत व्यवस्था, तालिमको निरन्तरता, दक्ष प्रशिक्षको अवस्था, रिफ्रसर तालिमको व्यवस्था, तालिम पछिको मूल्यांकन, नतिजाको दिगोपना, निरन्तर बजेट विनियोजनको अवस्था जस्ता विषयमा केन्द्रित भएर यस कार्यक्रमको दिगोपनाको मूल्याङ्कन गरिएको छ ।

यस स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रम राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम रणनीति, २०६१ तथा राष्ट्रिय स्वास्थ्य नीति, २०७४ अनुरूप सञ्चालन हुने गरेको छ । यसका अलावा स्वास्थ्य क्षेत्र दिगो विकास रणनीतिको

एक महत्वपूर्ण लक्ष्यको रूपमा रहेको छ । हरेका आर्थिक वर्षमा यस तालिम कार्यक्रम निरन्तर रूपमा सञ्चालन हुँदै आइरहेको छ । आर्थिक वर्ष २०७३/७४ मा जम्मा ३३१४ जनालाई तालिम प्रदान गरिएको थियो । तालिम संचालनको लागि दक्ष प्रशिक्षकहरूको उपलब्धतामा कुनै समस्या नरहेता पनि प्रशिक्षकहरूको लागि पूर्णताजगी तालिमको व्यवस्था भने कमजोर देखियो । यस तालिम कार्यक्रमको प्रभाव तथा सान्दर्भिकता अत्यन्त राम्रो रहेको हुँदा यसको निरन्तरताको आवश्यकता देखिन्छ । यस आधारमा राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र र यस द्वारा संचालन गरेको राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रमको दिगोपना उच्च रहेको पाईछ । यद्यपी राज्य पूर्णसंरचानको सन्दर्भमा केन्द्रिय, क्षेत्रीय र स्थानीय तहका संगठनहरूको पूर्णसंरचना गर्दा क्षेत्रीय कार्यालयका स्तरमा रहेका तालिम केन्द्रहरूलाई स्थीय तहमा मिलान गर्ने प्रस्ताव गरिएको छ । यसैले भविष्यमा यस्ता तालिम केन्द्र र तालिम कार्यक्रमको दिगोपना केहि खस्कन सक्ने देखिन्छ । यसर्थ समग्रमा कार्यक्रमको दिगोपनाको स्तर ठिकै दिगोपनामा वर्गीकरण गरिएको छ ।

#### १.४ समग्र मूल्याङ्कन

मूल्याङ्कनलाई (क) देखि (ङ) सम्म ५ वटा तहमा स्तरीकरण गरिएको छ । मूल्याङ्कनका आधारहरूलाई स्तरीकरण गर्दा कार्यसम्पादन स्तर (ख), सान्दर्भिकता स्तर (क), प्रभावकारिता स्तर (ख), कार्यदक्षता स्तर (ख), प्रभाव स्तर (क) र दिगोपना स्तर (ख) रहेको छ । मूल्याङ्कनका ५ वटा आधारहरू मध्ये दुईवटाले क स्तर र तीनवटाले ख स्तर प्राप्त गरेकाले समग्र मूल्याङ्कन स्तर (ख) सन्तोषजनकमा वर्गीकरण गरिएको छ ।

#### १.५ देखिएका समस्या तथा सवालहरू

१. स्वास्थ्य तालिम प्रदान गर्ने सम्बन्धमा सम्बन्धित निकायहरूबीच समन्वयको कमि देखियो ।
२. तालिम लिए पश्चात् स्वास्थ्य सेवा प्रदान गर्ने स्वास्थ्य चौकीहरूमा साधन स्रोतको कमि देखिएको छ । जसले गर्दा सिकेको सीप दक्षताको प्रयोग न्यून हुनपुगेको छ ।
३. मेडिकल अफिसर्स र मे.सु. हरूलाई कार्यबोझ बढी रहेको । प्रशिक्षण एवम् दैनिक कार्य दुवैमा एकै पटक संलग्न हुनुपर्ने । अस्पतालमा काम गर्ने स्वास्थ्यकर्मीहरूले अस्पतालमा काम गर्दा गर्दैको अवस्थामा तालिममा जानुपर्ने बाध्यता रहेको ।
४. तालिम कार्यक्रमको पाठ्यक्रम अध्यावधिक नभएको । तालिम कार्यक्रमको पाठ्यक्रम तयार गर्ने सन्दर्भमा राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्रले जिल्लागत सुभाब लिनै नगरेको ।
५. तालिम संचालनको लागि बजेटको केहि अभाव देखिएको ।
६. Refresher तालिम एवम् TOI अपर्याप्त रहेको ।
७. तालिमको लागि आवश्यक TNA लाई व्यवस्थित र प्रभावकारी बनाउन नसकिएको । सेवा अवधि सकिन १-२ वर्ष बाँकी भएका कर्मचारीहरूलाई पनि तालिममा समावेश गरिएको ।
८. तालिम बढि सैदान्तिक पक्षमा केन्द्रित । प्रयोगात्मक बनाउन नसकिएको ।

९. तालिमलाई एकद्वार नीति मार्फत एकिकृत गर्न नसकिएको । अन्य संस्थाले पनि स्वास्थ्य तालिम केन्द्र मार्फत तालिम कार्यक्रम संचालन गर्ने गरेको ।
१०. तालिमको सम्बन्धमा केन्द्र तथा सम्बन्धित निकायबाट हुने अनुगमन तथा तालिम पश्चातको Follow up कमजोर रहेको ।
११. प्रशिक्षकहरूको Roster तयार गर्न नसकिएको ।
१२. अस्थायि तथा करारका स्वास्थ्यकर्मी तालिम पश्चात् अन्यत्र जाने प्रवृत्ति ।

### १.६ सुभावहरू

यस तालिम कार्यक्रम समग्रमा सन्तोषजनक रहेको छ । यद्यपी आगामी दिनमा यसमा केहि सुधार गरेर अगाडि बढ्नुपर्ने देखिन्छ । राज्य पूर्णसंरचनाको सन्दर्भमा केन्द्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र अन्तर्गत रहेका क्षेत्रीय स्वास्थ्य तालिम केन्द्रलाई स्थानीय तहमा लैजादां यस्ता प्रकृतिका तालिम केन्द्रको प्रभावकारिता खस्कने र स्थानीय तहमा सबै प्रकृतिका तालिम संचालनको क्षमता पनि नहुन सक्ने अवस्थालाई समेत मध्यनजर गर्नुपर्ने देखिन्छ । यसैगरी स्वास्थ्यकर्मीहरूको तालिम सँगसँगै प्रशिक्षकहरूको लागि पनि पूर्णताजगी तालिमलाई पनि घनिभूत बनाउनुपर्ने देखिन्छ । राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र, क्षेत्रीय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र र जिल्ला अस्पतालस्थित तालिम साईटबीच समन्वय कमजोर देखिएको हुंदा आगामी दिनमा यी तीन निकायबीच प्रभावकारी समन्वय स्थापना गर्नुपर्ने देखिन्छ । यसका अलावा देहायका सुभावहरू सान्दर्भिक हुने देखिन्छ ।

१. सबै प्रकारका तालिमलाई राष्ट्रिय तालिम केन्द्र मार्फत एकिकृत रुपमा अगाडि बढाउनुपर्ने ।
२. संघीय संरचनामा स्थानीय तथा प्रदेशगत तहबाट पनि स्वास्थ्य सम्बन्धी तालिम प्रदान गरिनेहुंदा स्वास्थ्य सम्बन्धी तालिम प्रदान गर्ने त्यस्ता निकायको संस्थागत क्षमता बृद्धि गर्ने तथा दोहोरोपना हटाउने सम्बन्धमा स्पष्ट नीति बनाई अगाडि बढ्नु पर्ने ।
३. तालिमको पाठ्यक्रमलाई निरन्तर परिमार्जन गर्ने व्यवस्था मिलाउने, प्रशिक्षकहरूको च्यकतभच तयार गर्ने, प्रशिक्षकहरूलाई समेत तालिम प्रदानको लागि प्रमाणपत्रको व्यवस्था गर्ने र प्रशिक्षकहरूको प्रशिक्षण कार्यक्रमलाई बढाउनुपर्ने । तालिम लिका स्वास्थ्यकर्मीको पनि एकिकृत सूची तयार गराई सरुवा पदस्थापनसँग Link गराउने ।
४. क्षेत्रीय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र तथा अन्य तालिम साईटहरूबाट संचालित तालिमको राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्रबाट नियमित अनुगमन गरी प्रतिवेदन गर्ने विषयलाई कडाईकासाथ लागु गर्ने ।
५. तालिम लिएर अन्यत्र जाने प्रवृत्तिलाई निरुत्साहित गर्न तालिमको आवश्यकता विश्लेषणलाई परिमार्जन गर्ने ।

## १.७ निष्कर्ष

नेपालको संविधानले आम नेपाली जनताको मौलिक हकको रूपमा स्थापित गरेको आधारभूत स्वास्थ्य सेवा जनताले प्रत्यक्ष अनुभूति गर्ने गरी स्वास्थ्य मन्त्रालयले जनताको घरदैलोसम्म गुणस्तरी रूपमा सबैको पहुँच हुनेगरी पुऱ्याउनु राज्यको महत्वपूर्ण जिम्मेवारी रहन्छ। विभिन्न चुनौतीहरू जस्तै साधन श्रोत, जनशक्ति व्यवस्थापन, सामाजिक राजनैतिक अवस्था जस्ता जटिल प्रतिकूल परिस्थितिका बावजूद पनि राज्यले जनतालाई उपलब्ध गराउने सेवा सुविधाहरू र साधनहरूको अधिकतम प्रयोग गरी स्वास्थ्य सेवाहरू केन्द्र देखि समुदायसम्म प्रभावकारी रूपमा प्रवाह गर्नमा यस राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रमले महत्वपूर्ण भूमिका खेलेको छ।

राज्यको दिर्घकालिन लक्ष्यको रूपमा रहेको दिगो विकास लक्ष्य र दिगो विकास लक्ष्यमा समेत स्पष्ट रूपमा स्वास्थ्य सम्बन्धि लक्ष्य उल्लेख गरिएको छ। विगतमा समेत नेपालले अन्य आर्थिक परिसूचकका तुलनामा सामाजिक परिसूचक अन्तर्गत स्वास्थ्य क्षेत्रमा तुलनात्मक रूपमा उल्लेख्य सुधार गरेको थियो। विगतमा राज्यले लिएको स्वास्थ्य सम्बन्धी रणनीतिलाई सफलभूत गराउन राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम केन्द्र र यस अन्तर्गतको स्वास्थ्य तालिम केन्द्रको भूमिकालाई अत्यन्तै महत्वपूर्ण मानिन्छ। यसर्थ राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रम अत्यन्त सान्दर्भिक एवम् नेपालको स्वास्थ्य क्षेत्रमा निकै प्रभाव पार्न सफल कार्यक्रमको रूपमा रहेको पाईयो। यसैगरी कार्यसम्पादन, कार्यदक्षता, प्रभावकारिता र दिगोपनाको सन्दर्भमा राष्ट्रिय स्वास्थ्य तालिम कार्यक्रमको सन्तोषजक स्तरमा रहेको सफल कार्यक्रम हो। आगामी दिनमा उपलब्ध सुभाव अनुसारका परिमार्जन गरेर यस कार्यक्रमलाई निरन्तरता दिनु बान्छनीय हुन्छ।

## २. पर्यटन पूर्वाधार विकास आयोजना

### २.१ पृष्ठभूमि

पर्यटन पूर्वाधार विकास कार्यक्रम आ.व. २०६५/६६ देखि जनतालाई प्रत्यक्ष अनुभूत हुने गरी विकासका कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्ने उद्देश्यले सुरुवात भएको। यस आयोजना अन्तर्गत महत्वपूर्ण पर्यटकीय क्षेत्रहरूको पहिचान, गुरुयोजना तथा प्रोफाइल तयारी, विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन तर्जुमा लगायतका कार्यहरू सञ्चालन हुँदै आइरहेको भएपनि हालसम्म के कस्ता पर्यटन पूर्वाधारहरू कति संख्यामा कहाँ कहाँ निर्माण भए भन्ने स्पष्ट र एकिकृत अभिलेख उपलब्ध नरहेको। यस आयोजनाको लागि विगत छ आ.व.को विनियोजित बजेटको ८३.८ प्रतिशत खर्च भएको छ भने आयोजनाको कार्यसम्पादन प्रगति ८३.६ प्रतिशत रहेको छ। मुलुक संघीय संरचनामा प्रवेश गरेसँगै नीतिगत र राष्ट्रिय प्राथमिकताका कार्यहरू संघीय मन्त्रालय र विभागले गर्ने गरी क्षेत्रीयस्तरका सातवटा पर्यटन कार्यालयहरू प्रदेश तहमा समायोजन हुने प्रक्रियामा रहेको छ।

## २.२ मूल्याङ्कनको उद्देश्य, विधि तथा प्रक्रियाहरू

यस आन्तरिक मूल्याङ्कनको समग्र उद्देश्य पर्यटन पूर्वाधार विकास आयोजनाको कार्य सम्पादनस्तरको अध्ययन गर्नु, सान्दर्भिकता, प्रभावकारिता, कार्यदक्षता, प्रभाव र दिगोपनाको लेखाजोखा गर्नु नै यस मूल्याङ्कनको उद्देश्य रहेको छ । मूल्याङ्कनका लागि आवश्यक सूचना तथा जानकारीहरू संकलन गर्दा गुणत्मक विधिको प्रयोग गरिएको जस अन्तरगत लक्षित समुहसँगको छलफल, मुख्य जानिफकारसँगको अन्तर्वाता तथा स्थलगत अवलोकन प्रयोग गरिएको । यसको अलवा नेपाल सरकारका नीतिहरू, आधिक योजना, वार्षिक विकास कार्यक्रम, वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, चौमासिक विभाजन, अन्य सान्दर्भिक विवरणहरू तथा दिगो विकास लक्ष्यसम्बन्धी दस्तावेजहरूको अध्ययन गरी मूल्याङ्कन पूरा गरिएको ।

## २.३ मूल्याङ्कनका नतिजाहरू

### कार्य सम्पादन

सन्तोषजनक रहेको । विगत पाँचवर्षको कार्यप्रगति समग्रमा ८३.६६ प्रतिशत रहेको, विनियोजित बजेटको ८४ प्रतिशत खर्च भएको, करिब ९० प्रतिशत योजनाहरू तोकिएको समयमा नै सम्पन्न भएको, तोकिएको कार्यनीति अनुरूप उपभोक्ता समितिहरू मार्फत नै पूर्वाधार निर्माण भएको ।

### सान्दर्भिकता

अति सान्दर्भिक रहेको । राष्ट्रिय नीति, आवधिक योजना, दिगो विकास लक्ष्यसँग प्रत्यक्ष अन्तर सम्बन्धित रहेको, स्थानीय सरोकारवाला तथा लाभग्राहीबाट समेत कार्यक्रम अति सान्दर्भिक रहेको प्रतिक्रिया प्राप्त भएको, योजना निर्माण र उपभोगका जिम्मेवार उपभोक्ता समितिहरू समावेशी रहेको ।

### प्रभावकारिता

प्रभावकारी रहेको । कार्यक्रमको लक्ष्य र उद्देश्य अनुरूप पर्यटकीय क्षेत्रको पहिचान, गुरुयोजना निर्माण र विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन (डिपिआर) तयार भएको । पूर्वाधार निर्माण कार्यले स्थानीयस्तरमा प्रत्यक्ष रोजगारी प्राप्त भएको, कार्यक्रम प्रति सरोकारवालहरू पनि सन्तुष्ट नै रहेको ।

### कार्यदक्षता

कार्यदक्षतापूर्ण रहेको । विगत छ आ.व.मा विनियोजित बजेटको करिब ८४ प्रतिशत खर्च भएको, पुँजीगत तर्फ ७०.४२ र चालु तर्फ २९.५७ प्रतिशत विनियोजन भएको तथा सोको तुलनामा पुँजीगत तर्फ ८० र चालुतर्फ ९२.३ प्रतिशत उपयोग भएकोले श्रोत विनियोजन र उपयोग सक्षमतापूर्ण रहेको LMBIs लागु भएपछि बजेट निकासा समेत सहजरूपमा भएको ।



**प्रभाव**

सकारात्मक प्रभाव परेको । कुल रु २० लाखको आयोजना कार्यान्वयन गर्दा ७५० जनाले एकदिनको रोजगारी प्राप्त गरेको, पर्यटन पूर्वाधार विकासका कारण एकै गाउँमा ४२ वटासम्म होमस्टे सञ्चालन भएको, दैनिक एक हजार पर्यटन भित्रने स्थानमा ६/७ हजारसम्म पर्यटनको आगमन भएको । कुल ३० लाख लागतमा निर्मित संरचनाले वार्षिक ३ लाख राजश्व सङ्कलन गरेको र दैनिक २०० पर्यटकले भ्रमण गर्ने गरेको ।

**दिगोपना**

दिगोपना भएको । यस कार्यक्रमको लागि आवश्यक श्रोत नेपाल सरकारबाटै विनियोजन भएको र आगामी आ.व.बाट स्थानीय तहमा ससर्त अनुदान जाने तयारी भएको छ । स्थानीय तहले आफ्नो आवश्यकता अनुसारका आयोजनालाई थप प्राथमिकतामा राखेर सञ्चालन गर्न सक्ने संभावना पनि उत्तिकै रहेको छ । यसरी स्पष्ट योजना, मापदण्ड र प्राथमिकताका साथ आयोजना कार्यान्वयन गर्न सक् निजी क्षेत्रसमेत आकर्षित भई लगानी जुट्ने सम्भावना भएको । आगामी दिनमा स्थानीय निकायको निरन्तर अनुगमन र सहयोगमा पूर्वाधारको गुणस्तरसमेत उकास्नसक्ने सम्भावना भएको ।

**समग्र मूल्याङ्कन**

सन्तोषजनक रहेको । मूल्याङ्कनलाई (क) देखि (ङ) सम्म पाँचवटा तहमा स्तरीकरण गरिएको गर्दा कार्यसम्पादन (ख) स्तर, सान्दर्भिकता (क) स्तर, प्रभावकारिता (ग) स्तर, कार्यदक्षता (ख) स्तर, प्रभाव (ग) स्तर तथा दिगोपना (ख) स्तरको रहेको छ । मूल्याङ्कनका ६ वटा आधारहरू मध्ये तीनवटाले (ख) स्तर, एउटाले (क) स्तर तथा दुईवटाले (ग) स्तर प्राप्त गरेकोले समग्र मूल्याङ्कन (ख) स्तरको अर्थात् सन्तोषजनाक रहेको ।

**२.४ मूल्याङ्कनका क्रममा प्राप्त सवालहरू****योजना तर्जुमासम्बन्धी सवाल**

- (क) पर्यटकीय क्षेत्रको विकासका लागि सम्भाव्यता अध्ययन, गुरुयोजना र विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन (डिपिआर) बनाएर कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्ने नगरिएकोले कार्यक्रमको अपेक्षित परिणाम प्राप्त हुन र सो परिणामको मापन गर्न कठिन भएको ।
- (ख) कतिपय कार्यक्रमहरू पहुँचका आधारमा छनौट भएकोले उपभोक्ता समितिहरू नै उपस्थित नहुने, सोको निर्माणमा स्थानीयले तदारुकता नदेखाउने, अपनत्व नलिने तथा कतिपय कार्यक्रमको निर्माण स्थल नै नभेटिने जस्ता समस्या रहको ।
- (ग) पर्यटन पूर्वाधारका अधिकांश कार्यक्रमहरू छरिएर रहेका ।

### कार्यान्वयनसम्बन्धी सवाल

- (क) मुलुक तीन तहको संरचनामा परिवर्तन भएसँगै यस आयोजना सोही बमोजिम कार्यान्वयन हुने प्रक्रियामा रहेपनि थप तयारीको आवश्यकता रहेको ।
- (ख) सालबसाली कार्यक्रम भएको हुनाले एक पटक मात्र विनियोजन भएको बजेट अपुग हुने तथा दोहोरिएर बजेट विनियोजन नहुँदा कतिपय कार्यक्रमहरू सम्पन्न हुन नसकी अधुरो रही श्रोत दुरुपयोग भएको ।
- (ग) पर्यटन कार्यालय एवम् विकास समितिमा पर्याप्त प्राविधिक जनशक्तिको कमीले योजना सञ्चालन गर्न कठिन हुने गरेको ।
- (घ) कतिपय पर्यटन प्रवर्द्धन विकास समितिहरूको प्रभावकारीतामा प्रश्न उठेको ।
- (ङ) वन तथा निकुञ्जका क्षेत्रमा पूर्वाधार विकासका लागि स्वीकृति लिन समस्या भएको ।
- (च) पर्यटकीय क्षेत्रको संरक्षण, प्रवर्द्धन र पूर्वाधार विकासका लागि स्थापित विभिन्न निकायहरू बीच समन्वयको कमी भएको ।
- (छ) निर्माण व्यवसायीले तोकिएको समयमा निर्माण कार्य नसक्ने ।
- (ज) उपभोक्ता समितिहरू बीच पनि बिवाद हुने तथा समयमा सम्झौता हुन नसक्ने ।

### अनुगमन र उपयोगसम्बन्धी सवाल

- (क) नियमित अनुगमनको व्यवस्था कमजोर रहेको ।
- (ख) गुरुयोजना तयार भएर सो अनुरूप कार्यान्वयन भएका योजनाहरू प्रभावकारी देखिएको ।
- (ग) विगतदेखि नै स्थानीय तहमा कार्यान्वयनका लागि पठाइएका कार्यक्रमहरू स्थानीय तहको कार्यव्यस्तता र अन्य प्राथमिकताले गर्दा प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन हुन नसकेको र नियमित रूपमा प्रगतिसमेत प्राप्त हुने नगरेको ।
- (घ) सरोकारवालामा बजेट र खर्च प्रणालीको बारेमा चेतनाको कमी हुँदा लक्ष्य अनुसारको प्रगति गर्न कठिन भएको, छरिएर रहेका योजनाहरूको अनुगमनमा कठिनाई भएको ।
- (ङ) पर्यकीय क्षेत्रमा छनौट नभएका योजना र पर्यटकीय क्षेत्रका अन्य पूर्वाधारहरू नबनेका क्षेत्रका योजनाले तत्काल लाभ दिन नसकेको तथा मर्मत संभारको लागि श्रोत अभाव रहेको ।
- (च) आयोजनाको प्रभावकारिता र कार्यान्वयन सक्षमतालाई सम्बन्धित क्षेत्र, सामाजिक, आर्थिक र राजनीति अवस्थाले समेत असर गरेको ।

## २.५ सुझावहरू

### २.५.१ नीतिगत सुधारका लागि सुझाव

#### संघीय तहबाट कार्यान्वयन गर्नुपर्ने

- (क) पर्यटन पूर्वाधार अन्तरगत कस्ता कस्ता आयोजना/क्रियाकलापहरू सञ्चालन गर्ने भनी एकिन गर्न मापदण्ड तयार गरी कार्यान्वयन गर्नु पर्ने ।

- (ख) पर्यटकिय गन्तव्यहरूको एकीकृत रूपमा पूर्वाधार विकास गर्ने मोडल (Integrated Tourism Development Model) को नीति लिने ।
- (ग) उपभोक्ता समितिबाट पर्यटन पूर्वाधार विकास निर्माणसम्बन्धी कार्य गराउने कार्यविधि, २०७१ संघीयता अनुरूप परिमार्जन गर्ने ।
- (घ) पर्यटन पूर्वाधार विकास मार्फत पर्यटकीय उपजहरूको विविधकरण गर्न पाँच वर्षीय मध्यकालीन कार्यनीति बनाउने ।
- (ङ) आयोजनाहरू कार्यान्वयन गर्दा प्रदेश तथा स्थानीयसँगको सहकार्यमा सञ्चालन गर्ने नीति अवलम्बन गर्ने ।

### प्रदेश तहबाट कार्यान्वयन गर्नुपर्ने

- (क) प्रदेश अन्तरगतका स्थानीय तहबाट सञ्चालित क्रियाकलापमा एकरूपता ल्याउन आवश्यक समन्वय, अभिलेख व्यवस्थापन र अनुगमन तथा मूल्याङ्कन गर्ने ।
- (ख) प्रदेशको कार्यक्षेत्र भित्र रहेको दुई वा दुईभन्दा बढी स्थानीय तहमा पर्ने पर्यटन पूर्वाधार विकास कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने ।

### स्थानीय तहबाट कार्यान्वयन गर्नुपर्ने

- (क) आयोजनाको पहिचान, कार्यान्वयन, सञ्चालन, र मर्मत सम्भारका लागि स्थानीय समुदाय र उपभोक्तालाई जिम्मेवार बनाउने ।
- (ख) तीनै तहबाट कार्यान्वयन हुनुपर्ने
- (ग) आयोजनाहरूको पहिचान, सम्भाव्यता अध्ययन, गुरुयोजना तयारी र कार्यान्वयनमा तीनै तहको सहकार्य र समन्वय हुने गरी सञ्चालन गर्न कार्य नीति तयार गर्ने ।
- (घ) तत्काल लाभ प्राप्त गर्न सकिने पूर्वाधारमा सार्वजनिक निजी साझेदारीको नीति अवलम्बन गर्ने ।

## २.५.२ व्यवस्थापकीय सुधारका लागि सुझावहरू

### संघीय तहबाट कार्यान्वयन गर्नुपर्ने

- (क) सम्बन्धित निकायहरूबाट प्रस्तावित योजनाहरूको छनौट गर्दा सम्भाव्यता अध्ययन, विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन (डिपिआर) र गुरुयोजना भएकालाई मात्र बजेट विनियोजन गर्न मागनिर्देश गर्ने ।
- (ख) सञ्चालनमा रहेका-संघ, प्रदेश र स्थानीयतहहरूको कार्यक्षेत्रमा पर्ने पूर्वाधार विकास कार्यक्रमहरूको जानकारी सहितको विवरण र आयोजनाहरूको सूचना सहितको प्रतिवेदन तयार गरी प्रदेश तथा स्थानीय तहलाई हस्तान्तरण गर्नुपर्ने ।
- (ग) आयोजनासम्बन्धी एकीकृत तथ्याङ्क र अभिलेख व्यवस्थापन तथा प्रतिवेदन प्रणालीको स्थापना गर्ने ।

(घ) यस आयोजना अन्तर्गत बन्ने विभिन्न संरचनाहरूको प्रतिइकाई लागतको खाका तयार गर्नु पर्ने ।

### प्रदेश र स्थानीय तहले कार्यान्वयन गर्नुपर्ने

- (क) आफ्नो अधिकार क्षेत्रभित्रका आयोजनाहरूको छनौट, कार्यान्वयन, अभिलेख व्यवस्थापन र नियमित अनुगमन गर्ने ।
- (ख) तीनै तहहरूबाट कार्यान्वयन गर्नुपर्ने ।
- (ग) पर्यटन पूर्वाधार विकास आयोजनाहरूको छनौट गर्दा पर्यटकीय क्षेत्रमा रहेका आयोजनाहरू, मागमा आधारित भएर छनौट गर्ने । पहिचान भएका क्षेत्रको गुरुयोजना तर्जुमा गरेर मात्र कार्यान्वयन गर्ने ।
- (घ) आयोजनाको सोच तालिका तयार गरी स्पष्ट नतिजा खाका अनुसार लक्ष्य तोकेर कार्यान्वयन गर्ने ।
- (ङ) आयोजनाको एकीकृत अनुगमन योजना निर्माण गरी सो अनुरूप अनुगमनमा बजेटको व्यवस्था र कार्यान्वयन गर्ने ।

## ३. सहलगानी खानेपानी तथा सरसफाई आयोजना

### ३.१ प्राप्त नतिजा को सारांश

#### क) कार्यसम्पादन

उपभोक्ताहरूको माग र सम्भाव्यताको आधारमा आयोजना छनौट हुने गरेको र आयोजनाको विस्तृत आयोजना प्रतिवेदन (Detailed Project Report- DPR) र कार्ययोजना तयार गरी आयोजना सञ्चालन हुने गरेको छ । आयोजनाको समग्र लक्ष्य र प्रगतिलाई विश्लेषण गर्दा कार्यान्वयनको प्रथम चरणको प्रगति १०० प्रतिशत रहेको देखिएको छ भने दोस्रो चरण-१ को प्रगति ८५ प्रतिशत र चरण-२ को ५० प्रतिशत रहेको देखिएको छ । समग्रमा आयोजनाको कार्यसम्पादन स्तर उत्तममा वर्गीकरण गरिएको छ ।

#### ख) सान्दर्भिकता

खानेपानीसँग सम्बन्धित राष्ट्रिय नीतिहरू दिगो विकास लक्ष्य-६ सँग प्रत्यक्ष सम्बन्धित रहेको छ । उपभोक्ताको माग र आवश्यकताको आधारमा आयोजना छनौट हुने गरेको देखिएको र आयोजना भौगोलिक र जनसांख्यिक दृष्टिबाट उपयुक्त देखिएको छ । साथै आयोजना निर्माण र संचालनको लागि संस्थागत व्यवस्था भएको र उपभोक्ता समितिको गठन लैंगिक समानता तथा सामाजिक समावेशीकरण मार्गदर्शन-२०७० को प्रावधान अनुरूप हुने गरेको छ । समग्रमा आयोजनाको सान्दर्भिकताको स्तर अति सान्दर्भिकमा वर्गीकरण गरिएको छ ।

**ग) प्रभावकारिता**

सम्पूर्ण आयोजनाहरू सम्भाव्यता अध्ययन पश्चात DPR तर्जुमा गरी सञ्चालन गरिने गरेको तर DPR मा वातावरणीय पक्षलाई त्यती ध्यान नदिइएको पाईएको छ । साथै आयोजना कार्यान्वयनमा उपभोक्ताहरू सन्तुष्टीको बारेमा जिज्ञासा राख्दा ४२ प्रतिशत अत्यन्त सन्तुष्ट र ३३ प्रतिशत सन्तुष्ट देखिएका छन् । आयोजनालाई अझ प्रभावकारी रूपमा सञ्चालन गर्न उपभोक्ताहरूलाई प्राविधिक र व्यवस्थापकीय तालिमको आवश्यकता रहेको देखिएको छ । समग्रमा आयोजनाको प्रभावकारिता स्तर प्रभावकारीमा वर्गीकरण गरिएको छ ।

**घ) कार्यदक्षता**

सहलगानी खानेपानी तथा सरसफाइ आयोजना, आयोजना कार्यान्वयन निर्देशिका, २०७२ (दोस्रो संशोधन (२०७४) का विधि तथा प्रावधान अनुरूप सञ्चालन हुने गरेको छ । आयोजनाको स्रोत विनियोजन र उपभोगको अवस्था अत्यन्त उत्तम रहेको र स्रोत विनियोजन सक्षमता अति कार्यदक्षतापूर्ण रहेको छ । समग्रमा आयोजनाको कार्यदक्षता स्तर कार्यदक्षतापूर्णमा वर्गीकरण गरिएको छ ।

**ङ) तत्कालिन प्रभाव**

निर्माण सम्पन्न आयोजनाले आंशिक रूपमा मात्र खानेपानी वितरण गर्ने गरेको देखिएको छ । वितरित खानेपानीको गुणस्तर, मात्रा र समयप्रति उपभोक्ताहरू अत्यन्त सन्तुष्ट रहेको पाईएको छ । साथै खानेपानीको उपलब्धताबाट समय र इन्धनको बचत तथा आर्सेनिक लगायतका अन्य रासायनिक तत्वहरूको कारणबाट स्वास्थ्यमा पर्ने जोखिम हटेर गएको जस्ता तत्कालिन सकारात्मक प्रभावहरू देखिएको छ । त्यसैगरी समग्र आयोजनाप्रति उपभोक्ताहरूको धारणा सकारात्मक रहेको पाइएको छ । समग्रमा आयोजनाको तत्कालिन प्रभाव स्तर प्रभावपूर्णमा वर्गीकरण गरिएको छ ।

**च) दिगोपना**

उपभोक्ता समितिको संस्थागत दिगोपनाको विश्लेषण गर्दा अत्यन्त उत्तम पाइएको छ । ६ मध्ये ५ आयोजनामा प्राविधिक र दक्ष कर्मचारीको व्यवस्था रहेको र ६ मध्ये ५ आयोजनाका उपभोक्ता समितिले आयोजना कार्यान्वयन कार्ययोजना तर्जुमा गरेको पाइयो । सो मध्ये १ आयोजनाको उ.स.ले खानेपानीको चक्रीय गुरुयोजना समेत तर्जुमा गरेको पाइयो । त्यसै गरी १ आयोजनाको आयोजना कार्यान्वयन कार्ययोजना तर्जुमाको क्रममा रहेको पाईयो । साथै, आयोजनालाई थप प्रभावकारी र दिगो बनाउन आयोजना व्यवस्थापन कार्यालयको आगामी आ.व. २०७५/७६ देखी SCADA प्रविधि प्रयोगमा ल्याउन लागेको, उपभोक्ताहरूलाई ऋण व्यवस्थाको लागि नगर विकास कोषसँग समझदारी पत्रमा हस्तान्तरण भई सकेको छ । त्यसै गरी आयोजना कार्यान्वयनमा स्थानीय तहको सहभागिता र सहमतिको प्रावधान, आयोजना अनुगमन परामर्शदाता एकाइ (Project Monitoring Consultant Unit) को स्थापना लगायतका व्यवस्थाहरू भएको जानकारी प्राप्त भएको छ । समग्रमा आयोजनाको दिगोपना स्तर अत्यन्त दिगोपनामा वर्गीकरण गरिएको छ ।

### ३.२ समग्र मूल्याङ्कन

मूल्याङ्कनलाई (क) देखि (च) सम्म छवटा तहमा स्तरीकरण गरिएको छ। मूल्याङ्कनका आधारहरूलाई स्तरीकरण गर्दा कार्यसम्पादन स्तर ख), सान्दर्भिकता स्तर क), प्रभावकारिता स्तर ख), कार्यदक्षता स्तर क), प्रभाव स्तर ख) र दिगोपना स्तर क) रहेको छ। मूल्याङ्कनका ६ वटा आधारहरू मध्ये दुईवटाले क स्तर र चारवटाले ख स्तर प्राप्त गरेकाले समग्र मूल्याङ्कन स्तर ख) सन्तोषजनकमा वर्गीकरण गरिएको छ।

### ३.३ आयोजनासँग सम्बन्धित सवालहरू

विस्तृत आयोजना प्रतिवेदन (DPR) मा भएभन्दा फरक डिजाइन तथा लागत भेरिएसन् हुने गरेको, वातावरणीय पक्षलाई ख्याल नगरिएको, तोकिएको समयमा आयोजना सम्पन्न नहुनु, अन्य सरोकारवाला पक्षसँगको कमजोर समन्वयात्मक अवस्था, केन्द्रीय स्तरबाट नियमित अनुगमन नहुनु यस आयोजनाका समस्या र चुनौतिहरू रहेको पाईयो।

### ३.४ सुझावहरू

आयोजनाको आगामी कार्यान्वयन तथा व्यवस्थापनका अन्य आयामहरू प्रदेश तथा स्थानीय तहबाट हुने हुँदा यस आयोजनाको कार्यान्वयन निर्देशिका सोहि अनुसार परिमार्जन गरी तिनै तहका सरकारबीचको नीतिगत तथा संस्थागत समन्वय तथा सहकार्यको व्यवस्था हुनुपर्ने। सहलगानी अनुपातका विभिन्न विकल्पहरूको व्यवस्था गर्ने, वातावरणीय पक्षलाई अनिवार्य सम्बोधन गर्ने व्यवस्था, पानीको गुणस्तर मापनका लागि भौतिक प्रणालीको विकास गर्नुपर्ने। आयोजना अवधिभर कार्यान्वयन एकाइका कर्मचारीहरूको फेरबदल नहुने व्यवस्था, अनुगमन मूल्याङ्कनलाई थप प्रभावकारी बनाउने व्यवस्थाका साथै आयोजनाका प्राविधिक कर्मचारीहरूलाई तालिमको व्यवस्था मिलाउनुपर्ने।

### निष्कर्ष

सहलगानी खानेपानी आयोजना अत्यन्त सान्दर्भिक, उच्च दिगोपना भएको, कार्यसम्पादनस्तर, कार्यदक्षताको स्तर, प्रभावकारिताको स्तरमा अब्बल ठहरिएको सफल आयोजना हो। उपभोक्ताको मागको आधारमा संचालन हुने प्रकृतिको यस आयोजना गुणस्तरीय खानेपानी प्रभावको क्षेत्रमा ज्यादै महत्वपूर्ण र सान्दर्भिक आयोजना हो। यस मुल्यांकनबाट निश्चुत भएका राय सुझाव समाहित भई आगामी कार्ययोजनामा परावर्तन हुनका लागि संस्थागत तथा नीतिगत व्यवस्था हुने गरी अगाडी बढ्नु बान्छनीय हुन्छ।

## अनुसूची - १०

# छानिएका आयोजनाहरूको स्थलगत अनुगमन प्रतिवेदनको सारांश

आ.व. वर्ष २०७४र७५ मा आयोगका पदाधिकारी तथा कर्मचारीहरूको नेतृत्वमा गरिएको स्थलगत अनुगमनबाट आयोजनाहरूमा देखिएका समस्या तथा समाधानका सुझावहरू

## १. प्रधानमन्त्री कृषि आधुनिकीकरण आयोजनामा बाढीवाट पुगेका क्षतिको अनुगमन

### समस्याहरू:

- (१) बाढीवाट वारा जिल्लाको ११,१६० हेक्टर धानखेतीयोग्य जग्गामा क्षति पुगेको ।
- (२) माछापालन गरिएको ३०० हेक्टर क्षेत्रमा बाढीवाट क्षति पुगेको ।
- (३) बाढीवाट तरकारी खेती गरिएको ७,४४० हेक्टर जग्गामा क्षति पुगेको ।

### सुझावहरू:

- (१) भविष्यमा विपद् पूर्वतयारी तथा प्रतिकार्य योजना तयार गर्नुपर्ने ।
- (२) तराईमा विपद् पूर्व सचेतना प्रणाली निर्माण गरी कार्यान्वयनमा ल्याउनुपर्ने ।
- (३) अनुदान सहितको गहुँको विउ र तरकारीको विउ राहतको रूपमा तत्काल उपलब्ध गराउने ।
- (४) बाढीलाई प्रतिरोध गर्न सक्ने जातको धानखेतीलाई प्रवर्द्धन गर्नुपर्ने ।
- (५) कृषि विमालाई कृषि व्यववायको अभिन्न अंगको रूपमा कृषकले अंगीकार गर्नुपर्ने वातावरण निर्माण गर्नुपर्ने ।

## २. सुपरजोन कार्यान्वयन इकाई (धान) बनियानी भूपा

### समस्याहरू:

- (१) साना तथा अधिया कृषकहरूको वढी संलग्नता रहेको तर कृषि पेशामा जग्गाधनीको संलग्नता कम रहेको,
- (२) केवल निर्वाहमुखी कृषि प्रणाली हुनाका साथै कृषिमा व्यावसायीकरण यथेष्ट रूपमा हुन नसक्नाले कृषि उत्पादन र उत्पादकत्वमा निकै कमी देखिएको,

- (३) उत्पादित कृषि उपजको उचित बजार व्यवस्था नहुनु, सक्रिय जनशक्ति विदेश पलायन हुनाले पनि कृषि उत्पादनमा बढ्दो उत्पादन लागत देखिएको, जलवायु परिवर्तनको केही नकारात्मक प्रभाव महशुस भएको ।
- (४) जग्गाको बढ्दो खण्डीकरण र घडेरीकरणले गर्दा उर्वर कृषि भूमिमा ह्रास आउनुका साथै उत्पादकत्वमा कमी आएको,
- (५) ग्रामीण तथा पूर्वाधारहरूको अभावले गर्दा उत्पादनका सामग्रीहरूको पर्याप्त आपूर्ति तथा विक्री वितरणमा समस्या हुने गरेको ।
- (६) अनुसन्धान, शिक्षा र प्रसारको कमीले गर्दा पनि विषादीको सुरक्षित प्रयोगवारे जानकारीको अभाव देखिएको

#### **सुभावहरू:**

- (१) परियोजनाका तर्फबाट समाधान हुन नसक्ने समस्या र सोको समाधानका लागि आवश्यक हुने श्रोत, साधन र समन्वयमा जोड दिनुपर्ने ।

### **३. भ्रूपास्थित Custom Hiring Center**

#### **समस्याहरू:**

- (१) महिलामैत्री यन्त्रहरूको आवश्यक व्यवस्था नभएको र कृषि उत्पादन र उत्पादकत्वमा महिलाको सहभागिता न्यून रहेको ।

#### **सुभावहरू:**

- (१) कृषिको व्यवसायी र औद्योगीकरणका लागि यस्ता सेन्टरहरू र पोष्ट हार्भेष्ट सेन्टरको स्थापना गरी कृषि क्षेत्रमा बढ्दो लागत र आयातमा न्यूनीकरण गर्नुपर्ने ।

### **४. गोरखा टी र इलामेली चिया उत्पादक संस्था, फिक्कल इलाम**

#### **समस्याहरू:**

- (१) नेपालको अर्ग्यानिक चियाको विश्व बजार राम्रो भएको सन्दर्भमा सरकारले निजी चिया उत्पादनहरूलाई विशेष सहयोग गर्नु आवश्यक भए तापनि सहयोग प्राप्त हुन नसकेको ।
- (२) निजी चिया उत्पादकहरूलाई पनि सरकारले विशेष सहयोग गर्नुपर्ने ।
- (३) चिया उद्योगमा कार्यरत कामदारहरूलाई उचित मूल्य नदिएको ।
- (४) चिया विस्तार आयोजनाबाट किसानहरूलाई राम्रो सेवा उपलब्ध नभएको ।



**सुभावहरू:**

- (१) कफि चिया उद्योगलाई अर्ग्यानिक बनाउनुपर्ने ।
- (२) किसानले उत्पादन गरेको हरियो पत्तिको उचित मूल्य निर्धारण गर्नुपर्ने ।

**५. पूर्वाद्ध डेरी उद्योग**

**समस्या:**

- (१) भापाको अर्जुनधारा नगरपालिकामा संचालनको रहेको डेरी उद्योग क्षेत्रमा पनि सुपारी जोन स्थापना गर्न आवश्यक भए सुपारी जोन स्थापना हुन नसकेको ।

**सुभाव:**

- (१) डेरी उद्योग क्षेत्रमा सुपारी जोन स्थापना गर्न छिट्टै कार्यान्वयन लैजान आवश्यक रहेको ।
६. व्यावसायिक कृषि तथा व्यापार आयोजना

**समस्याहरू:**

- (१) डायमण्ड एग्रिकल्चर एण्ड रिसर्च सेन्टर प्रा.लि. भापामा वजारको माग अनुसार सुँगुरको मासु उत्पादन गर्न नसकेको ।
- (२) वधशालाको लागि मेशिन जडान कार्य शुरू गर्न नसकिएको ।
- (३) पूर्वाद्ध कृषि सहकारी संस्था लि.ले दुग्धजन्य पदार्थको उत्पादन तथा विक्री वितरण समेत गर्नुपर्ने भनिएकोले तत् सम्बन्धमा अनुभव र ज्ञान नभएका मानिसहरू संलग्न भएमा जोखिम हुने संभावना रहेको ।

**सुभावहरू:**

- (१) उप-आयोजनाहरू संचालन गर्नुपर्ने उद्यमीहरूको प्राविधिक ज्ञान र दक्षता अभिवृद्धि तथा परामर्श सेवा उपलब्ध गराउनु आवश्यक देखिएको ।
- (२) कृषि उद्यमीहरूलाई अनुदान भन्दा सहूलियतपूर्ण ऋण उपलब्ध गराउनमा जोड दिनुपर्ने ।

**७. नारायणघाट - मुग्लिन सडक आयोजना**

**समस्याहरू:**

- (१) आयोजना कार्यान्वयनमा सामान्य प्रशासन समूहको नायव सुब्बा दरवन्दी लामो समयदेखि रिक्त भएको हुँदा दोश्रो चरणको मुआब्जा वितरण लगायत अन्य प्रशासनिक कार्यमा अवरोध उत्पन्न भएको ।
- (२) आयोजना कार्यान्वयनको समयसीमाको म्याद थप गरिएको भएतापनि थपिएको म्याद अनुरूप पनि लक्ष्य अनुसारको प्रगति नभएको ।

- (३) तीनवटै प्याकेजका ठेकेदार कम्पनीका प्रतिनिधिरूसँग भएको छलफलमा आयोजनाको काम विविध कारणले अझै पनि समयमा सक्न कठिनाई भएको जानकारी अनुगमन टोलीसमक्ष गराइएको भएतापनि विद्यमान बाधा अड्चन हटाई समयमै काम सम्पन्न गर्न निर्देशन भएको ।
- (४) साँघूरा घुम्तीहरूमा लामा र अधिक भार बोक्ने सवारी साधन गुडनु, लेन अनुशासनको उल्लंघन, साँघूरो पूल तथा सडक अनि ठूला सवारी साधनले गर्दा आयोजनाको कार्यमा बाधा उत्पन्न भएको ।
- (५) जलविरेदेखि कालीखोला पहिरोको बढी संभाव्य जोखिम सम्भावित क्षेत्र रहेको । साथै टोपे खोलाको पहिरो र कालीखोलाको पहिरो पनि प्रमुख बाधकका रूपमा रहेको ।
- (६) स्थानीय रोजगार सृजनामा मद्दत नै पुऱ्याएको पाइयो तर सीप नचाहिने कार्यमा मात्र उपयोग भएको र आधुनिक मेशिनरी, औजार र प्रविधिको ज्ञान हस्तान्तरण गर्नुपर्ने गरी तालीम प्रदान नभएको ।

### सुभावहरू:

- (१) राजधानीलाई अन्य भूभागसँग जोड्ने एक प्रमुख मार्ग भएको र राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय व्यापारको निम्ति समेत एक महत्वपूर्ण आयोजना भएकोले सडक स्तरोन्नतिका कार्य हुँदा आवागमनको विकल्प पहिचान गरेर कार्य अघि बढाइन उपयुक्त हुने ।
- (२) सवारी चापलाई व्यवस्थापन गर्न भौतिक पूर्वाधार तथा यातायात मन्त्रालय, ट्राफिक प्रहरी र सम्बन्धित जिल्ला प्रशासन कार्यालयहरूले सवारी आवागमन निषेधको उपयुक्त समय निर्धारण गरी सडक विस्तारको कार्यलाई सहजीकरण गर्नुपर्ने ।
- (३) भीर कटान कार्यमा स्लोप निर्धारण गर्दा भविष्यमा कुनै पनि दुर्घटना र अप्ठ्यारो परिस्थिति उत्पन्न नहुने गरी गर्नुपर्नेमा सो गरेको नपाइएकोले यस विषयमा सडक विभागले समेत कडाइकासाथ निर्देशन हुन आवश्यक देखिन्छ ।
- (४) स्थलगत अनुगमन तथा निरीक्षणबाट आवश्यक निर्देशन भए तापनि काममा ढिलासुस्ती गरेको पाइएको सरोकारवाला निकायले यस विषयमा सावधानी अपनाउनु आवश्यक देखिन्छ ।
- (५) आयोजना सम्पन्न भइसकेपछि पनि यस सडक खण्डमा रहेका १८ वटा पूलहरू विस्तारित सडकका तुलनामा अत्यन्त साँघूरा हुने भएकाले आवागमनमा कठिनाई सृजना भई ट्राफिक व्यवस्थापनमा असहजता हुने भएकाले यथाशीघ्र विस्तार वा निर्माणको कार्यमा सडक विभागले अग्रसरता देखाउन आवश्यक रहेको ।
- (६) भविष्यमा पहिरोजन्य प्रकोप नियन्त्रणका लागि भएको वायो इन्जीनियरिङसम्बन्धी कार्यमा सरोकारवालाहरूको ध्यान पुगनुपर्ने ।

## ८. मेलम्ची खानेपानी आयोजना

### समस्याहरू:

- (१) राजनीतिक संक्रमणकाल लगायतका कारण जग्गा प्राप्त र सहायक पूर्वाधार निर्माणमा लामो समय (२००१ देखि २००९) लागेको ।
- (२) समय समयमा हुने स्थानीय अवरोध एवम् स्थानीय वासिन्दाका मागहरू बढेको ।
- (३) पुरानो ठेक्का तोडी नयाँसँग ठेक्का सम्झौता गर्न थप समय लागेको ।
- (४) ठेक्का सम्झौताकर्ताको कमजोर नगद प्रवाह (NC\ EURO Ratio 28:72) रहेको ।
- (५) आयोजना प्रमुखहरूको छिटो छिटो सुरूवा भैरहनु (२०५६ साल देखि हालसम्म १० पटक) ।

### सुभावहरू:

- (१) आयोजनालाई छिटो सम्पन्न गर्न ग्याल्युम सिन्धु खण्डको सुरू भेन्टिलेसन् साफ्टस्को निर्माण कार्य यथाशक्य चाँडो सम्पन्न गर्नुपर्ने ।
- (२) हाललाई मुहानबाट डि.आइ. पाइपमार्फत सुरूडमा खानेपानी पठाउने अस्थायी व्यवस्थाको लागि हेडवर्क्सको निर्माण कार्य यथाशिघ्र छिटो सम्पन्न गर्नुपर्ने ।
- (३) आयोजना संचालनका समयमा टनेल सभेलियन्स सिस्टममा आउन सक्ने जटिलताहरूलाई न्यूनीकरण गर्न उचित प्रविधि एवम् दक्ष प्राविधिक जनशक्ति परिचालन गर्नुपर्ने ।
- (४) वैदेशिक ऋणमा निर्माण गरिएको आयाजना हुनाले ऋण तिर्ने प्रयोजनको लागि समेत खानेपानीको उचित शुल्क निर्धारण हुनुपर्ने ।
- (५) आयोजना दोश्रो चरण अन्तर्गत याङ्ग्री र लार्के खोलाबाट १७/१७ करोड लिटर प्रतिदिन प्राप्त हुनसक्ने संभाव्यता भएकोले सो आयोजना यथाशीघ्र अगाडि बढाउनुपर्ने ।

## ९. घरेलु तथा साना उद्योग विकास समिति, स्याङ्जा

### समस्याहरू

- (१) दोस्रो चौमासिकको अन्त्य भई सक्दा समेत विकास कार्यक्रम शुरू नभएका एवम् थोरै कार्यक्रम पनि सम्पन्न नभएको देखिदा कार्यक्रमको प्रभावकारिता नदेखिएको ।
- (२) कार्यक्रमको अवधि धेरै छोटो हुँदा उद्यमीहरूलाई नियमित परामर्श र सहयोग गर्न सहज नभएको ।
- (३) गाई पालनमा संलग्न उद्यमीहरूले १८% व्याज तिर्नु पर्ने, दाना तथा औषधि समेत सहकारी संस्थाबाट नै खरिद गर्नुपर्ने साथै दुध पनि बजार मूल्यभन्दा धेरै कम प्रति लिटर रू. ४७- मा सहकारी संस्थामा नै विक्री गर्नुपर्ने बाध्यता भएको ।

### सुभावहरू:

- (१) नयाँ उद्यमी सृजना गर्दा स्थानीय कच्चा पदार्थ, बजार र प्रविधिलाई ध्यान दिएर उद्यमी सृजना गर्ने एवम् उद्यममा संलग्नलाई स्तरोन्नतीमा ध्यान दिनुपर्ने ।

- (२) उद्यमीहरूलाई आफ्नो व्यवसाय स्वतन्त्र रूपमा गर्न सक्ने गरी प्राथमिक क्षेत्र कर्जाको सुविधाका लागि सहजीकरण गर्नुपर्ने ।
- (३) उद्यमीहरूको मागबमोजिम पशुपालनसम्बन्धी एडभान्स तालिम, बजारीकरण र लेखा व्यवस्थापनसम्बन्धी तालिम दिन जरूरी रहेको ।
- (४) गरीबी निवारणका लागि लघु उद्यम विकास कार्यक्रम (MEDPA) लाई अभि प्रभावकारी बनाउन एवम् उद्यमीहरूलाई परामर्श तथा सहयोगका निमित्त बहुवर्षे कार्यक्रमका रूपमा सञ्चालन गर्नुपर्ने ।
- (५) स्थानीय तहमा लघु उद्यम सहजकर्ताहरू समेत रहेको उद्यम विकास एकाई राख्नुका साथै गरिबी निवारणका लागि लघु उद्यम कार्यक्रम रणनीतिक योजना तर्जुमा र कार्यान्वयन गर्नुपर्ने ।

## १०. प्रधानमन्त्री कृषि आधुनिकीकरण परियोजना, तरकारी जोन, चितवन

### समस्याहरू:

- (१) तरकारी जोनको रूपमा तोकिएको क्षेत्रमा जमीनको खण्डीकरण भईरहेको र तीव्र रूपमा शहरीकरण बढी रहेको सन्दर्भमा कृषिका क्रियाकलाप संचालन हुन कठिन भएको ।
- (२) प्राविधिक हिसाबले कृषिमा यान्त्रिकीकरण सम्भावना बढ्दै गए पनि चक्लावन्दीका लागि जग्गा प्राप्त गर्न कठिन रहेको ।
- (३) आयोजनाले उत्पादनमा नै जोड दिएको तर मूल्य अभिवृद्धि गरेर बजारमा पुऱ्याउने क्रियाकलाप संचालन नगरेको ।
- (४) बीमाको भुक्तानी पाउन व्यहोर्नु पर्ने भ्रमेला गर्दा तरकारी उत्पादकहरू बीमामा आकर्षित हुन नसकेको ।
- (५) अनुसन्धान कार्यमा संलग्न रहने नेपाल कृषि अनुसन्धान परिषद्बाट जोनको लागि कर्मचारीको व्यवस्थापन हुन नसकेको ।
- (६) आ.व. २०७४/०७५ मा भकारो सुधार जस्ता क्रियाकलाप राखेर आयोजनाले स-साना क्रियाकलापमा ध्यान केन्द्रित हुने सम्भावना एकातर्फ देखिन्छ भने चितवनमा कृषकहरूलाई एउटा गोठलाई रू ५२०००- उपलब्ध गराएर के सहयोग गर्न खोजिएको हो भन्ने विषयमा आयोजनामा प्रष्टता नदेखिएको ।

### सुभावहरू:

- (१) कृषि भूमिको वर्गीकरण गरेर कृषि भूमिलाई आवासीय रूपमा प्रयोग गर्न नपाउने व्यवस्था तुरुन्त लागू गरिनुपर्छ ।
- (२) तरकारी जोनको आधार रेखा तथ्यांक तयार गर्नुपर्ने र यसका आधारमा कृषकहरूलाई अनुदान र कर्मचारीहरूलाई प्रोत्साहन भत्ता उपलब्ध गराउने कार्य गरिनुपर्ने ।

- (३) प्रोसेसिङ र प्याकेजिङ जस्ता कार्य गरेर मूल्य अभिवृद्धि गर्दै बजारमा कृषकहरूले राम्रो मूल्य प्राप्त गर्ने वातावरण तयार गर्नुपर्ने ।
- (४) केराको बोटमा क्षति भएमा प्रति बोट रू २०० बीमा वापतको रकम उपलब्ध गराए भै तरकारीको क्षति उपलब्ध गराउने सरल प्रणालीको विकास गर्दै किसानहरूलाई जोखिम न्यून गर्नका लागि बीमा गराउने वातावरण तयार गर्नुपर्ने ।
- (५) चितवनमा कृषकहरूलाई एउटा गोठ सुधार गर्न रू. ५२०० उपलब्ध गराउने क्रियाकलाप तुरुन्त बन्द गरिनुपर्ने ।
- (६) नेपाल कृषि अनुसन्धान परिषद्को भूमिका प्रष्ट पार्दै जोन कार्यालय, चितवनसँग सहकार्य गर्ने व्यवस्था गर्ने ।
- (७) बहदो यान्त्रिकरणले गर्दा ठूलो कित्तामा खेती गर्न सम्भव हुने समय रहेकोले चक्लावन्दीमा खेती गर्नका लागि वातावरण तयार गर्न कृषि विकास मन्त्रालयले प्रभावकारी भूमिका निर्वाह गर्नुपर्ने ।
- (८) परियोजना कार्यान्वयन ईकाई, चितवनले तरकारी उत्पादकहरूलाई विक्रेताको तर्फबाट खरिद गर्ने सुनिश्चितता गराउने वातावरण तयार गर्नुपर्ने ।

## ११. मोहना पुल डोकेबजार बेलौरी बेलडांगी दैजी सडक (शुक्लाफाँट वन्यजन्तु आरक्षणमा पर्ने हुलाकी राजमार्गको खण्ड)

### समस्याहरू

१. शुक्लाफाँट वन्यजन्तु आरक्षण भित्र पर्ने १४ कोलोमिटर सडक निर्माणको कार्यमा ४/५ मिटर चौडाईलाई नै पिच गर्ने भनि स्वीकृती आएको तर आयोजनाको डिजाइन अनुसार १२ मिटर चौडाई गर्नुपर्ने भएकोले सो क्षेत्र भित्रको सडक निर्माणको कार्यमा कठिनाई भएको,
२. पूरै ६२ कोलोमिटर भित्र विजुलीका पोलहरू पर्ने तर सो पोलहरू व्यवस्थापनको लागि छुट्टै बजेट र कार्यक्रम नभएको हुँदा पोलहरू स्थानान्तरण नगरिएको र विच सडकमै रहेको छ,
३. बेलौरी बेलडाँडी बजारमा रोडको छेउवाट र विचवाट पानीको लाईन पर्ने भएकोले सडक हिलाम्य भएको,
४. बाबा हंस सिद्धिशाही जे.भी ले ४५% भौतिक कार्यप्रगति गरेको तर सम्पर्क विहिन भएकोले ७ दिन भित्र स्पष्टिकरण सहित सम्पर्कमा आउन सूचना प्रकाशन गरिएको र कार्यसम्पादनमा ढिलाई हुने देखिन्छ,
५. नाली निर्माणमा प्रयोग गरिएको रडहरू एकदम मसिनो र अहिले रड बाँध्दा खेरिनै भाचिने जस्ता छन् जसले कमसल सामग्री प्रयोग भएको देखिन्छ,

### समाधानको उपायहरू र सुझावहरू

१. शुक्लाफाट वन्यजन्तु आरक्षण भित्र पर्ने १४ कोलोमिटर सडक निर्माणको कार्यमा आयोजनाको डिजाइन अनुसार १२ मिटर चौडाई गर्नुपर्ने देखिएकोले सो सम्बन्धीत निकायहरूबीच समन्वय गरी आवश्यक पहल गर्नुपर्ने,
२. पूरै ६२ कोलोमिटर भित्र विजुलीका पोलहरू पर्ने भएकोले सो पोलहरू व्यवस्थापनको लागि छुट्टै बजेट र कार्यक्रममा समावेश गर्ने,
३. वेलौरी बेलडाँडी बजारमा रोडको छेउवाट र विचवाट पानीको लाईन पर्ने भएकोले सोको व्यवस्थापन समयमै गर्नुपर्ने,
४. मजबुद र टिकाउ हुने निर्माण सामग्रीहरूको प्रयोग गर्नुपर्ने,
५. ठेक्का कम्पनीहरूले गरेको कार्यउपर आयोजना प्रमुख स्वयंमले समय समयमा अनुगमन निरिक्षण गरिरहनुपर्ने देखिन्छ ।

## अनुसूची - ११

## एकीकृत सहरी विकास मापदण्डको कार्यकारी सारांश

नेपालमा विगत केही दशकदेखि अनियन्त्रित शहरी विकास भइरहेको देखिएको छ । तर पूर्वाधार विकासको एकीकृत मापदण्ड बन्न सकेको छैन । भवन निर्माणसम्बन्धी नगरपालिकाहरूको आ-आफ्नै मापदण्ड भएपनि योजनाबद्ध रूपमा शहरी विकास गर्न एकीकृत योजनाबद्ध शहरी विकासको मापदण्डको आवश्यकता महसुस गरी नेपालको संविधान तथा स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ अन्तर्गत सञ्चालन हुने स्थानीय तहका सरकारले आ-आफ्नो क्षेत्राधिकारभित्र शहरी विकासका कार्य गर्दा पालना गर्नुपर्ने न्यूनतम शर्तहरू सहितको यो मापदण्ड प्रस्ताव गरिएको हो । राज्यको पुर्नसंरचना गर्ने क्रममा देशभर २९३ वटा नगरपालिका (६ वटा महानगरपालिका र ११ वटा उपमहानगरपालिका सहित) र ४६० वटा गाउँपालिका समेत गरी कूल ७५३ वटा स्थानीय तह कायम भई स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ बमोजिम स्थानीय तहको कार्य सुरु भइसकेको साथै, वि.सं. २०७२ वैशाखको भूकम्पका कारण भएको भौतिक, सामाजिक तथा आर्थिक पूर्वाधारको पुनर्निर्माण गरी सुरक्षित एवम् भूकम्प प्रतिरोधात्मक बसोवास, भौतिक योजनाको तर्जुमा तथा कार्यान्वयन गराई भूकम्पपछि शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रमा पुनर्निर्माण तथा व्यवस्थित बस्तीविकास कार्यक्रम लागु गर्नका लागि समेत एकीकृत योजनाबद्ध शहरी विकासको मापदण्ड सन्दर्भ सामाग्रीको रूपमा प्रस्ताव गरिएको हो । महानगरपालिका, उपमहानगरपालिकाका साथै नगरपालिका तथा नगरोन्मुख गाउँपालिकाहरूमा भइरहेको शहरीकरण, भू-उपयोग परिवर्तन र भवन निर्माण कार्यलाई योजनाबद्ध तुल्याउँदै सुरक्षित, स्वस्थ नगर तथा गाउँको विकास गर्न र भूकम्पपछिको पुनर्निर्माणलाई व्यवस्थित गरी जोखिम उत्थानशील सघन बस्तीहरूको विकास गर्ने लक्ष्यको साथ यस एकीकृत योजनाबद्ध शहरी विकासको मापदण्ड तयार भएको हो । यस मापदण्डमा महानगरपालिका, उपमहानगरपालिकाका, नगरपालिका तथा नगरोन्मुख गाउँपालिकाहरूमा गरिने विकास निर्माण र भूकम्प पछिको पुनर्निर्माणका लागि छुट्टाछुट्टै मापदण्डको तर्जुमा गरिएको छ । यस मापदण्डलाई सहजताका लागि भूउपयोग, भवन निर्माण, प्राचीन स्मारक तथा ऐतिहासिक क्षेत्र, पूर्वाधार विकास सडक, ढल तथा फोहरमैला व्यवस्थापन, खानेपानी, बिद्युत्का साथै शहरी वातावरण र जोखिम व्यवस्थापन गरी छुट्टाछुट्टै खण्डहरूमा विभाजन गरिएको छ । साथै, पूर्वाधार, जग्गाको क्षेत्रफल, खुला जग्गाको प्रावधान आदिको न्यूनतम मापदण्ड अनुसूचीमा दिई शहरी विकासका नमस् तथा स्ट्यान्डर्डहरू शहरी तह अनुसार छुट्ट्याएर अनुसूचीमा राखिएको छ ।

## भौतिक पूर्वाधारको नर्म्स तथा स्टान्डर्स

| क्र.सं.  | गतिविधि                    | क्षेत्रफल  | कैफियत  |
|--|----------------------------|--|---|
| १.   | आर्थिक पूर्वाधार           |  |   |
|  | मल्टिपर्पोज हल             | ०.२ हेक्टर/संरचना  | १ प्रति उपशहर   |
|  | तरकारी बजार                | ०.५ हेक्टर/संरचना  | १ तरकारी बजार तथा १ मासु बजार (कोल्ड स्टोरेजको सुविधासमेत भएको)   |
|  | सार्वजनिक पार्किङ स्थल     | ०.८ हेक्टर/संरचना (२/३/४ पाङ्ग्रे सवारी साधन)  | १ पार्किङ स्थल प्रति उपशहर (बस तथा ट्रक पार्क)  |
| २.   | सामाजिक पूर्वाधार          |  |   |
|  | विद्यालय                   | प्राथमिक विद्यालय: ०.२ हेक्टर/संरचना<br>उच्च माध्यमिक विद्यालय: ०.६५ हेक्टर /संरचना                                  | ०.४ किमि देखि ०.८ किमिको दुरिमा १ प्रति ३,००० जनसंख्या<br>सार्वजनिक यातायातबाट ३० मिनेटको दुरिमा १ प्रति ७,५०० जनसंख्या                                 |
|  | कलेज                       | स्नातक/स्नातकोत्तरसम्म: ०.६५ हेक्टर/संरचना   | सार्वजनिक यातायातबाट ४५ मिनेटको दुरिमा १ प्रति २५,००० जनसंख्या  |
|  | स्वास्थ्य संस्था           | सबहेल्थ पोष्ट: ०.०४ हेक्टर/संरचना<br>हेल्थ पोष्ट: ०.१५ हेक्टर/ संरचना  | १ प्रति १,००० जनसंख्या<br>१ प्रति ५,००० जनसंख्या  |
|  | पार्क र खुला ठाउँ          |  | शहरको कूल क्षेत्रफलको ५ प्रतिशत   |
|  |                            | टोल स्तरको: ०.४ हेक्टर/संरचना (उपसहरको ५५)<br>स्थानीय पार्क: १ हेक्टर/संरचना   | १ प्रति ८०० जनसंख्या (खेल सामग्रीसमेत)<br>१ प्रति १००० जनसंख्या   |
|  | पुस्तकालय                  | उपशहरी स्तरको: ०.५ हेक्टर/संरचना   | १ प्रति ७५,०० जनसंख्या  |
|  | सुरक्षा वा प्रहरी कार्यालय | प्रहरी पोष्ट: ०.१ हेक्टर/संरचना  | १०,००० जनसंख्यालाई एउटा   |
|  | वारुण नियन्त्रण केन्द्र    | ०.५ हेक्टर/उप शहर  | ३ देखि ४ किमि अर्धव्यासको क्षेत्रफल (उपशहरी स्तरको)को लागि १ वारुण नियन्त्रण केन्द्र अथवा २५,००० देखि ७५,००० जनसंख्याको लागि एउटा वारुण नियन्त्रण उपकरण |
|  | ३.                         | भौतिक पूर्वाधार  |   |
| जल आपूर्ति प्रणाली (भण्डारण र प्रशोधन केन्द्र) |                            | १ हेक्टर/संरचना  | ६० देखि ८० Lpcd दैनिक आपूर्ति, प्रशोधन केन्द्रको २५ प्रतिशत भण्डारण क्षमता  |
| ढलको प्रणाली (प्रशोधन केन्द्र)                 |                            | प्रशोधन केन्द्र: २.५ देखि ३.५ हेक्टर/संरचना<br>पम्पिङ स्टेशन: ०.०१ देखि ०.०२ हेक्टर प्रति संरचना                     | ट्रंक लाइनको न्यूनतम व्यास: २०० मी.मी.  |
|  |                            | सार्वजनिक शौचालय   | १ प्रति ३००० यात्रु ५०० मी. को दूरीमा   |
| एकीकृत फोहरमैला व्यवस्थापन प्रणाली             |                            | सामुदायिक सङ्कलन (सङ्कलन विन्दुरकन्टेनर) : १/२०० मी. अर्धव्यास दूरीको लागि<br>स्यानेटरी ल्यान्डफिल क्षेत्र: सानो     | २५ प्रतिशत फोहरको सङ्कलन तथा उचित व्यवस्थापन हुने<br>१ देखि २५ टन फोहर उत्पादन प्रति दिन  |
| बिद्युत् आपूर्ति प्रणाली                       |                            | सबस्टेशन: ०.०७ हेक्टर र संरचना<br>ट्रान्समिशन टावर: ८० देखि १०० वर्ग मी.<br>डिस्ट्रिब्युशन टावर: २० देखि २५ वर्ग मी. | ३३२११ केभि  |
| टेलिफोन  |                            | टेलिफोन बुथ: १ बुथ प्रति २ टोल   |   |



## शहर, ४०,००० देखि १००,००० जनसंख्या

| क्र.सं  | गतिविधि                     | क्षेत्रफल   | कैफियत   |   |
|---|-----------------------------|---|--|---|
| १.  | आर्थिक पूर्वाधार            |   |  |   |
|   | सभा गृह (मल्टिपर्पोज)       | ०.२ हेक्टर/संरचना   | १०,००० जनसंख्यालाई एउटा  |   |
|   | खेलकूद संरचना               | १ देखि ३ हेक्टर/संरचना<br>१३ देखि १९ हेक्टर/संरचना  | ५०,००० जनसंख्यालाई एउटा (शहर स्तरीय)<br>१,००,००० जनसंख्यालाई एउटा (जिल्ला स्तरीय)  |   |
|   | सिनेमा हल                   |   | ५ सिट प्रति १००० जनसंख्या  |   |
|   | खाद्य र तरकारीको होलसेल पसल | ०.५ हेक्टर/संरचना (१ थोक, १ खुद्रा तथा १ पशु बधशाला)  | २ टोलका लागि एउटा (१ टोल : ३००० जनसंख्या)  |   |
|   | पार्किङ स्थल                | सार्वजनिक पार्किङ स्थल (२/३/४ पाङ्ग्रे सवारी साधन),<br>ट्याक्सी पार्क : ०.०४ हेक्टर /संरचना   | १ पार्किङ लट प्रति टोल (१ टोल : ३००० जनसंख्या)   |   |
|   | यातायात प्रणाली             | अन्तर शहर बस टर्मिनल : ४ हेक्टर/संरचना<br>शहरी बस टर्मिनल: २ हेक्टर /संरचना   | १०० बस र १०० ट्रकलाई पार्किङ क्षेत्र<br>१०० बसलाई पार्किङ क्षेत्र  |   |
|   | एयरपोर्ट                    | १३४-२२७ हेक्टर  | राष्ट्रिय एयरपोर्ट   |   |
|   | औद्योगिक क्षेत्र            | १३ हेक्टर   | हालका ७ औद्योगिक क्षेत्रहरूको क्षेत्रफलको औसत क्षेत्रफल  |   |
|   | २.                          | सामाजिक पूर्वाधार   |  |   |
|   |                             | विद्यालय  | प्राथमिक विद्यालय : ०.२ हेक्टर/ संरचना<br>उच्च माध्यमिक विद्यालय : ०.६५ हेक्टर / संरचना  | १ प्रति ३,००० जनसंख्या<br>१ प्रति ७५०० जनसंख्या |
| कलेज  |                             | स्नातकसम्म : ०.६५ हेक्टर/ संरचना<br>विश्वविद्यालय : १ हेक्टर  | १ प्रति २५,००० जनसंख्या<br>१ प्रति ४०,००० जनसंख्या   |   |
| अस्पताल   |                             | प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (५ देखि १५ बेड क्षमता) : ०.२५ हेक्टर / संरचना<br>जिल्ला अस्पताल (२५ देखि ५० बेड क्षमता): १.३ हेक्टर/संरचना | १ प्रति २०,००० जनसंख्या<br>१ प्रति ५०,००० जनसंख्या   |   |
| पार्क र खुला ठाउँ   |                             |   | शहरको कूल क्षेत्रफलको ५ प्रतिशत<br>टोल स्तरको पार्क : ०.४ हेक्टर/ संरचना<br>स्थानीय पार्क : १ हेक्टर/ संरचना<br>सामुदायिक स्तरको पार्क : २ हेक्टर / संरचना<br>परेड ग्राउण्ड : ४ हेक्टर |   |
| वारुण नियन्त्रण केन्द्र   |                             | १ हेक्टर/संरचना   | ५ देखि ७ किमि अर्धव्यासको लागि एउटा वारुण नियन्त्रण केन्द्र  |   |
| धार्मिक स्थल (घाट/शव दाह गृह)   |                             | ०.५ हेक्टर/संरचना   | १ प्रति शहर  |   |
| संग्रहालय (क्षेत्रीय स्तरको)  |                             | ०.५ हेक्टर/संरचना   | १ प्रति शहर  |   |
| कला केन्द्र (क्षेत्रीय स्तरको)  |                             | ०.५ हेक्टर/ संरचना  | १ प्रति शहर  |   |
| बुद्धाश्रम, अनाथालय, अपाङ्गता पुनःस्थापन केन्द्र (शहरी स्तरको/सामुदायिक स्तरको) |                             | ०.३ हेक्टर/संरचना   | १ प्रति २०,००० जनसंख्या  |   |
| सुरक्षा वा प्रहरी कार्यालय  |                             | पोष्ट : ०.५ हेक्टर/संरचना<br>स्टेशन : १ हेक्टर/संरचना   | १ प्रति १०,००० जनसंख्या<br>१ प्रति ४०,००० जनसंख्या   |   |
| प्रदर्शनी केन्द्र   |                             | ४ हेक्टर/संरचना   | १ प्रति ५०,००० जनसंख्या  |   |

| क्र.सं.                      | गतिविधि  | क्षेत्रफल   | कैफियत   |   |
|------------------------------|--|---|--|---|
| ३.                           | भौतिक पूर्वाधार<br>नगरपालिका कार्यालय भवन<br>एकीकृत शहरी सेवा केन्द्र  | ०.४ हेक्टर  |  |   |
|                              |  | १ हेक्टर  | १ शहरी सेवा केन्द्र प्रति २.५ कि.मी. को दूरीमा मुख्य सडक वा बस /ट्रक पार्क नजिकै   |   |
|                              | जल आपूर्ति प्रणाली (भण्डारण र प्रशोधन योजना)                           | २ हेक्टर/संरचना   |  | ८० देखि १०० Lpcd दैनिक आपूर्ति, प्रशोधन केन्द्रको २५ प्रतिशत भण्डारण क्षमता   |
|                              |  |   |  | १० MLD क्षमता, डिस्ट्रिब्युशन पाइपको न्यूनतम व्यास : ८० मी.मी.  |
|                              | ढलको प्रणाली (प्रशोधन केन्द्र)   | प्रशोधन केन्द्र : ५ देखि ७ हेक्टर/संरचना  |  | ०.२ देखि ०.७५ हेक्टर / एम एल डि, ट्रक लाइनको न्यूनतम व्यास : २०० मी.मी.   |
|                              |  |   |  | पम्पिंग स्टेशन : ०.०१ देखि ०.०२ हेक्टर प्रति संरचना<br>सार्वजनिक शौचालय   |
|                              | टोस फोहर व्यवस्थापन (ट्रान्सफर क्षेत्र र स्यानिटरी ल्याण्डफिल क्षेत्र) | सामुदायिक सडकलन (सडकलन विन्दु/कन्टेनर): ०.३ केजी/व्यक्ति/दिन फोहर उत्पादनका लागि १ सडकलन विन्दु/कन्टेनर |  | १ सडकलन विन्दु/कन्टेनर प्रति २०० मी. अर्धव्यास दूरीको लागि  |
|                              |  |   | ट्रान्सफर : ०.१५ देखि ०.२ हेक्टर/संरचना  | १ ट्रान्सफर स्टेशन प्रति शहर स्यानिटरी ल्याण्डफिल १० कि.मी. भन्दा बढी दूरीमा भएमा लगभग ३३ टन फोहर उत्पादन प्रति दिन |
|                              |  |   | स्यानेटरी ल्याण्डफिल क्षेत्र : १ हेक्टर / संरचना (पुनः प्रयोग तथा कम्पोस्टिंग प्लेटफर्म भएमा), ३ देखि ५ हेक्टर (बफर क्षेत्र बाहेक) र वरिपरि १०० मी. खुला बफर क्षेत्र | कुल फोहर उत्पादनको ३० प्रतिशत मात्र ल्याण्डफिल क्षेत्रमा जाने, बाँकी ७० प्रतिशत पुनः प्रयोगमा ल्याइने               |
|                              | बिद्युत् आपूर्ति प्रणाली (सब स्टेसन)                                   | ०.५५ हेक्टर/संरचना  |  | ६६/३३ केभि  |
|                              |  | ट्रान्समिसन टावर : ८० देखि १०० वर्ग मी.   |  |   |
|                              |  | डिस्ट्रिब्युशन टावर : २० देखि २५ वर्ग मी.   |  |   |
| टेलिफोन (एक्सचेन्ज कार्यालय) |  | एक्सचेन्ज कार्यालय: ०.०२ हेक्टर /संरचना   | ६५०० लाईनका लागि १ एक्सचेन्ज कार्यालय  |   |
|                              | ट्रान्समिशन टावर : राइट अफ वे ५ मी.                                    |   |  |   |
|                              | टेलिफोन बुथ :  |   | १ बुथ प्रति ५००० जनसंख्या  |   |

## शहर, ४०,००० देखि १००,००० जनसंख्या

| क्र.सं.                     | गतिविधि  | क्षेत्रफल  | कैफियत  |
|-----------------------------|--|--|---|
| १.                          | आर्थिक पूर्वाधार                                       |  |   |
|                             | सभा गृह  | २ हेक्टर / संरचना  | १ प्रति १००,००० जनसंख्या                        |
|                             | खेलकूद संरचना  | ३ हेक्टर / संरचना  | १ क्षेत्रीयस्तरको संरचना प्रति १००,००० जनसंख्या |
|                             | सिनेमा हल  |  | ५ सिट प्रति १००० जनसंख्या                       |
|                             | पार्किङ स्थल   | सार्वजनिक पार्किङ स्थल (२/३ पाङ्ग्रे सवारी साधन)                               | प्रत्येक टोलको लागि १                           |
|                             |  | सार्वजनिक पार्किङ स्थल (४ पाङ्ग्रे सवारी साधन)                                 | भर्टिकल पार्किङको समेत सुविधा भएको              |
|                             | यातायात प्रणाली  | अन्तरशहर बस टर्मिनल (शहरी सुविधा केन्द्र, मोटेल, ग्यास स्टेशनको सुविधा भएको) : | २०० बस र २०० ट्रकलाई पार्किङ क्षेत्र            |
|                             |  | शहरी बस टर्मिनल  | २०० बसलाई पार्किङ क्षेत्र                       |
| खाद्य र तरकारीको होलसेल पसल | ०.५ हेक्टर / संरचना (१ थोक, १ खुद्रा तथा १ पशु बधशाला) | २ टोलका लागि एउटा  |   |
| एयरपोर्ट                    | ३४६ हेक्टर   | अन्तर्राष्ट्रिय एयरपोर्ट   |   |
|                             | १३४-२२७ हेक्टर   | राष्ट्रिय एयरपोर्ट   |   |
| औद्योगिक क्षेत्र            | १३ हेक्टर  | हालका ७ औद्योगिक क्षेत्रहरूको क्षेत्रफलको औसत क्षेत्रफल                        |   |

| क्र.सं.   | गतिविधि   | क्षेत्रफल                                     | कैफियत   |
|---|---|---|--|
| २.  | सामाजिक पूर्वाधार   |   |  |
|   | विद्यालय  | प्राथमिक विद्यालय : ०.२ हेक्टर / संरचना       | १ प्रति ३,००० जनसंख्या   |
|   |   | उच्च माध्यमिक विद्यालय : ०.६५ हेक्टर / संरचना | १ प्रति ७,५०० जनसंख्या   |
|   | कलेज  | स्नातकसम्म : ०.६५ हेक्टर / संरचना             | १ प्रति २५,००० जनसंख्या  |
|   |   | विश्वविद्यालय : १ हेक्टर                      | १ प्रति ४०,००० जनसंख्या  |
|   | अस्पताल   | जिल्ला अस्पताल : २५ देखि ५० शैय्याको          | १ प्रति ५०,००० जनसंख्या  |
|   |   | अञ्चल अस्पताल : ५० देखि १०० शैय्याको          | १ प्रति १००,००० जनसंख्या   |
|   | पार्क र खुला ठाउँ   |   | शहरको कूल क्षेत्रफलको ५ प्रतिशत  |
|   |   | टोल स्तरको पार्क : ०.४ हेक्टर/ संरचना         | १ प्रति ८०० जनसंख्या (खेल सामग्री समेत)  |
|   |   | स्थानीय पार्क : १ हेक्टर/ संरचना              | १ प्रति १०००० जनसंख्या   |
|   |   | सामुदायिक स्तरको पार्क : २ हेक्टर / संरचना    | १ प्रति २०,००० जनसंख्या  |
|   |   | चिडियाखाना / विशेष पार्क : १                  |  |
|   | पुस्तकालय   | सामुदायिक स्तरको : ०.५ हेक्टर / संरचना        | १ प्रति १०,००० जनसंख्या  |
|   |   | केन्द्रिय/राष्ट्रिय स्तरको : १                |  |
|   | वारुण नियन्त्रण केन्द्र   | १०,००० वर्ग मिटर / संरचना                     | ५ देखि ७ कि.मी. अर्धव्यासको क्षेत्रफल (शहरी स्तरको) तथा १००,००० जनसंख्याको लागि एउटा वारुण नियन्त्रण केन्द्र |
|   | धार्मिक स्थल (घाट /शव दाह गृह)  | ०.४ हेक्टर/ संरचना                            |  |
|   | संग्रहालय (क्षेत्रीयस्तरको)   | ०.५ हेक्टर/ संरचना                            |  |
|   | कला केन्द्र (क्षेत्रीयस्तरको)   | ०.५ हेक्टर/ संरचना                            |  |
|   | बुद्धाश्रम, अनाथालय, अपाङ्गता पुनःस्थापन केन्द्र, सेनिटोरियम (क्षेत्रीयस्तरको / स्थानीय स्तरको) | ०.३ हेक्टर/ संरचना                            | १ प्रति २०,००० जनसंख्या  |
|   | सुरक्षा वा प्रहरी कार्यालय  | पोष्ट : ०.१ हेक्टर / संरचना                   | १ प्रति १०,००० जनसंख्या  |
|   | स्टेशन : ०.५ हेक्टर / संरचना  | १ प्रति ४०,००० जनसंख्या                       |  |
|   | हेडक्वार्टर्स : १ हेक्टर/ संरचना  | १ प्रति १००,००० जनसंख्या                      |  |
| विज्ञान तथा प्रविधि केन्द्र / प्रदर्शनी कक्ष (क्षेत्रीय स्तरको) | ४ हेक्टर / संरचना   | १ प्रति ५०,००० जनसंख्या                       |  |

| क्र.सं.   | गतिविधि  | क्षेत्रफल  | कैफियत  |
|---|--|--|---|
| ३.  | भौतिक पूर्वाधार  |  |   |
|   | उपमहानगरपालिका कार्यालय भवन  | १ हेक्टर   |   |
|   | एकीकृत शहरी सेवा केन्द्र   | १ हेक्टर   | १ शहरी सेवा केन्द्र प्रति २.५ कि.मी. को दूरीमा मुख्य सडक वा बस / ट्रक पार्क नजिकै |
|   | जल आपूर्ति प्रणाली (भण्डारण र प्रशोधन केन्द्रसमेत)                                   | २ हेक्टर / संरचना (२ वटा)                                      | १२० ीउअम दैनिक आपूर्ति, प्रशोधन केन्द्रको २५ प्रतिशत भण्डारण क्षमता               |
|   | ढलको प्रणाली (प्रशोधन केन्द्र)   | प्रशोधन केन्द्र : ५ देखि ७ हेक्टर / संरचना (२ वटा)             | ट्रक लाइनको न्यूनतम व्यास : २०० मी.मी.  |
|   |  | पम्पिङ स्टेशन : ०.०१ देखि ०.०२ हेक्टर प्रति संरचना             |   |
|   |  | सार्वजनिक शौचालय   | १ प्रति ५ कि.मी. को दूरीमा मुख्य सडकमा  |
|   | एकीकृत फोहरमैला व्यवस्थापन प्रणाली ट्रान्सफर क्षेत्र र स्यानिटरी ल्याण्डफिल क्षेत्र) | संकलन बिन्दु/कन्टेनर: ०.४ केजी/व्यक्ति/दिन फोहर उत्पादनका लागि | १ सङ्कलन बिन्दु/कन्टेनर प्रति २०० मी. अर्धव्यास दूरीको लागि                       |
|   |  | १ सङ्कलन बिन्दु/कन्टेनर  |   |
|   |  | ट्रान्सफर स्टेशन : १   | १ ट्रान्सफर स्टेशन प्रति शहर स्यानेटरी ल्याण्डफिल १० कि.मी. को दूरीभित्र भएमा     |
|   |  | स्यानेटरी ल्याण्डफिल क्षेत्र : १ (ठूलो)                        | ५०० टनभन्दा बढी फोहर उत्पादन प्रति दिन भएमा                                       |
|   | बिद्युत् आपूर्ति प्रणाली   | सबस्टेशन : ३ हेक्टर / संरचना                                   |   |
|   |  | ट्रान्समिशन टावर : ८० देखि १०० वर्ग मी.                        |   |
| डिस्ट्रिब्युशन टावर : २० देखि २५ वर्ग मी.                       |  |  |   |
| टेलिफोन   | एक्सचेन्ज कार्यालय: ०.०२ हेक्टर / संरचना   | ६५०० लाईनका लागि १ एक्सचेन्ज कार्यालय                          |   |
|   | ट्रान्समिशन टावर : राइट अफ वे ५ मी.  |  |   |
|   | टेलिफोन बुथ : १ बुथ प्रति २.५ कि.मी. को दूरीमा                                       | मुख्य सडकमा  |   |
| जलवायु परिवर्तन केन्द्र / विपद् व्यपस्थापन केन्द्र (शहर स्तरीय) | १ हेक्टर / प्रति संरचना, २ हेक्टर खुला स्थल, पार्किङ तथा अस्थायी संरचनाका लागि       |  |   |

## १. आर्थिक क्षेत्र

| सि.नं. | नतिजा सूचकहरू  | इकाई       | चौधौ योजनाको लक्ष्य | आ. व. २०७४/७५ को लक्ष्य | २०७४/७५ सम्मको प्रगति |
|--------|--|------------|---------------------|-------------------------|-----------------------|
| १.     | कुल गृहस्थ उत्पादन (चालु मूल्यमा)                      | रु. अर्बमा | ३४०३.६              | २९४२.४                  | ३००७.२                |
| २.     | वार्षिक औसत आर्थिक बृद्धिदर                            | प्रतिशत    | ७.२                 | ७.२                     | ६.९                   |
| ३.     | मद्रास्फीति  | प्रतिशत    | ७.५                 | ७.५                     | ४.२                   |
| ४.     | राजस्व परिचालन   | रु. अर्ब   | ८१५                 | ६६८.७                   | ७३२                   |
| ५.     | निर्यात  | रु. अर्ब   | १००                 | १००                     | ८१.१                  |
| ६.     | आयात   | रु. अर्ब   | १०१२                | १०१२.१                  | १२४२.८                |
| ७.     | विप्रेषण   | रु. अर्ब   | १२३३                | १०११                    | ७५५                   |
| ८.     | कुल गार्हस्थ्य बचत (कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा) | प्रतिशत    | १०%                 | ८%                      | १५                    |
| ९.     | राष्ट्रिय बचत (कुल गार्हस्थ्य)                         |            | ४%                  | ४४.३                    | ४३.९                  |
| १०.    | उत्पादनको अनुपातमा)                                    | प्रतिशत    | २                   | २.२                     | २                     |
| ११.    | बेरोजगारी दर   | प्रतिशत    | ५.४                 | ५.५                     | ५.३९                  |

## २. सामाजिक तथा मानव विकास

| नतिजा सूचकहरू                                      | इकाई              | चौधौ योजनाको लक्ष्य | आ. व. २०७४/७५ को लक्ष्य                                     | २०७४/७५ सम्मको प्रगति |      |
|--|-------------------|---------------------|---|-----------------------|------|
| <b>(क) शिक्षा</b>                                  |                   |                     |   |                       |      |
| प्रौढ साक्षरता दर (१५ वर्षभन्दामाथि)               | प्रतिशत           | ८३                  | ८१  | ८२                    |      |
| १५ देखि २४ वर्ष उमेरसम्मको साक्षरता दर             | प्रतिशत           | ९२                  | ९२  | ९०                    |      |
| बालविकासको अनुभवसहित भर्ना हुन आउने बालबालिकाको दर | प्रतिशत           | ७८                  | ६८.५  | ६६.३                  |      |
| खुद भर्ना दर                                       | प्राथमिक तह (१-५) | प्रतिशत             | ९८.५  | ९७.५                  | ९७.२ |
|  | प्राथमिक तह (१-५) |                     | ९४  | ९२.५                  |      |
|  | प्राथमिक तह (१-५) |                     | ४५  | ४५                    | ४३.९ |
| टिकाउ दर: कक्षा ८ सम्म                             | प्रतिशत           | ८०                  | ८०  | ७७                    |      |
| कक्षा १० सम्म                                      | प्रतिशत           | ५०                  | ५०  | ४८                    |      |
| विद्यालय छाड्ने दर: कक्षा १-५                      | प्रतिशत           | २.५                 | २.५   | ३.०                   |      |
| कक्षा ६-८  |                   | ३.५                 | ३.५   | ३.८                   |      |
| कक्षा ९-१०   |                   | ३.६                 | ३.६   | ४.२                   |      |
| लैङ्गिक समता दर: विद्यालय शिक्षा                   | प्रतिशत           | १                   | १   | १                     |      |
| उच्च शिक्षा  |                   | १                   | १   | १                     |      |
| <b>(ख) युवा तथा खेलकुद</b>                         |                   |                     |   |                       |      |
| युवा अनुभव आदानप्रदान कार्यक्रम (बाह्य)            | जना               | ४१०                 | १३०   | ३८                    |      |
| ग्रामीण युवा उद्यम कार्यक्रम                       | संख्या            | ७२०                 | १६५ निर्वाचन क्षेत्र परिवर्तन गरिएकोले लक्ष्य परिवर्तन भएको | १६१                   |      |

| नतिजा सूचकहरू                                      | इकाई   | चौधौ योजनाको लक्ष्य | आ. व. २०७४/७५ को लक्ष्य                                     | २०७४/७५ सम्मको प्रगति |
|--|--------|---------------------|---|-----------------------|
| युवा सीप तथा उद्यमशीलता विकास कार्यक्रम            | हजारमा | २५                  | १   | ०.९५                  |
| स्काउट तालिम                                       | हजारमा | ३०                  | १०  | १०.०२                 |
| स्काउट स्वयंसेवक परिचालन                           | हजारमा | ६०                  | २०  | २०                    |
| युवा स्वयंसेवक परिचालन                             | हजारमा | ९९०                 | ३५०   | ०                     |
| खेलाडी प्रशिक्षण कार्यक्रम                         | हजारमा | १५                  | १५  | १५                    |
| क्रिकेट मैदान निर्माण                              | वटा    | ११                  | ११  | ११                    |
| जिल्लास्तरीय कभर्डहल निर्माण                       | वटा    | ३८                  | १४  | १४                    |
| स्थानीयस्तरमा खुल्ला स्थान सहितको खेलमैदान निर्माण | वटा    | ६०५                 | १००   | ८५                    |
| निर्वाचन क्षेत्रस्तरीय खेलमैदान निर्माण            | वटा    | १६५                 | १६५ निर्वाचन क्षेत्र परिवर्तन गरिएकोले लक्ष्य परिवर्तन भएको | ०                     |

### ३. स्थानीय पूर्वाधारक्षेत्र

| नतिजा सूचकहरू                              | इकाई   | चौधौ योजनाको लक्ष्य | आ. व. २०७४/७५ को लक्ष्य | २०७४/७५ सम्मको प्रगति |
|--|--------|---------------------|-------------------------|-----------------------|
| ग्रामीण सडक स्तरोन्नति/पुनःस्थापना ग्राभेल | कि.मी. | ५७३५                | १६२०                    | १०४९.६                |
| ग्रामीण सडक कालोपत्रे                      | कि.मी. | ५४५                 | २००                     | ५८.४६                 |
| स्थानीय सडक पुल निर्माणको संख्या           | वटा    | ३७४                 | १४५                     | २३४                   |
| भोलुङ्गे पुल निर्माण संख्या                | वटा    | १५२२                | ५००                     | १०१०                  |
| स्यानिटरी ल्यान्डफिल साइटको विकास          | संख्या | २४                  | १४                      | १०                    |

## ४. कृषि, वन र सिंचाइ

| सूचकहरू   | इकाई        | चौधौ योजनाको लक्ष्य | ०७४।७५ को लक्ष्य | ०७४।७५ सम्मको प्रगति |
|---|-------------|---------------------|------------------|----------------------|
| <b>(क) कृषि</b>   |             |                     |                  |                      |
| कृषि क्षेत्रको बृद्धि दर  | प्रतिशत     | ४.९                 | ४.७              | ५२५                  |
| गार्हस्थ्य उत्पादनमा योगदान                                     | प्रतिशत     | २९.५                | ३०.४             | २७.६                 |
| धान उत्पादन   | हजार मे.टन  | ५५६१                | ५१९८             | ५१५१                 |
| गहुँ उत्पादन  | हजार मे.टन  | २२१९                | २०७४             | १९४९                 |
| मकै उत्पादन   | हजार मे.टन  | २६९६                | २५२०             | २५५५                 |
| आलु उत्पादन   | हजार मे.टन  | ३२५०                | ३१००             | २८९०                 |
| तेलहन उत्पादन   | हजार मे.टन  | २३६                 | २२१              | २५०                  |
| दलहन उत्पादन  | हजार मे.टन  | ४३८                 | ४१०              | ३७८                  |
| उखु उत्पादन   | हजार मे.टन  | ३४००                | ३५००             | २९०४                 |
| फलफूल उत्पादन   | हजार मे.टन  | १८४०                | १३३९             | १०१०                 |
| तरकारी उत्पादन  | हजार मे.टन  | ४०००                | ३८००             | ४०९९                 |
| चिया उत्पादन  | हजार मे.टन  | ३०                  | २७               | २५                   |
| माछा उत्पादन  | हजार मे.टन  | १०३                 | ९५               | ६९.१२                |
| <b>(ख) वन तथा भूसंरक्षण</b>                                     |             |                     |                  |                      |
| वन क्षेत्रले ओगटेको क्षेत्र                                     | प्रतिशत     | ४४.७                | ४४.७             | ४४.७                 |
| सघन वनले ओगटेको क्षेत्र   | प्रतिशत     | ४०.३६               | ४०.३६            | ४०.३६                |
| संरक्षित क्षेत्रले ओगटेको क्षेत्र                               | प्रतिशत     | २३.३२               | २३.३२            | २३.३९                |
| वन क्षेत्रबाट अनुमानित राजश्व रकम                               | अरब         | २.५                 | २                | २.१६                 |
| संरक्षणको योजनामा रहेका जीवका प्रजातिको संख्या                  | संख्या      | ९                   | ५                | ३                    |
| समुदायमा आधारित वन व्यवस्थापनका लागि समूह गठन तथा वन हस्तान्तरण | गोटा        | ५००                 | ५००              | ४६६                  |
| विरुवा उत्पादन  | गोटा हजारमा | १५०००               | १५०००            | १२७६३                |
| वन क्षेत्रको अतिक्रमण हटाइएको क्षेत्रफल                         | हेक्टर      | २०००                | ५९२              | २९७३                 |
| रोजगारी सृजना   | श्रमदिन     |                     | ४००००            | ३,८१,४५,८०३          |
| <b>(ग) सिंचाइ</b>   |             |                     |                  |                      |
| सतह सिंचाइ  | हेक्टर      | १०९८०               | ८६१              | ६६८०                 |
| भूमिगत सिंचाइ   | हेक्टर      | ४१७००               | ४२६७०            | ३४७३९                |
| नया प्रविधिमा आधारित सिंचाइ                                     | हेक्टर      | ४२००                | ४,२५०            | १२९८                 |



## ५. भौतिक पूर्वाधार

| नतिजा सूचकहरू   | इकाई            | चौधौ योजनाको लक्ष्य | आ. व. २०७४/७५ को लक्ष्य | २०७४/७५ सम्मको प्रगति |
|---|-----------------|---------------------|-------------------------|-----------------------|
| <b>(क) सडक</b>  |                 |                     |                         |                       |
| रणनीतिक तथा क्षेत्रीय महत्वका सडक निर्माण               | कि.मी.          | ७००                 | ७००                     | ६००                   |
| सडक स्तरान्नी, पुनः निर्माण र सुदृढीकरण                 | कि.मी.          | ११००                | १०००                    | ९७५                   |
| आवधिक मर्मत सम्भार                                      | कि.मी.          | ६००                 | ६००                     | ३३२                   |
| नियमित मर्मत सम्भार                                     | कि.मी.          | १०५००               | ९५००                    | ९५००                  |
| पूल निर्माण   | संख्या          | १००                 | १००                     | ८२                    |
| <b>(ख) सूचना तथा सञ्चार</b>                             |                 |                     |                         |                       |
| आधारभूत टेलिफोन (PSTN) ग्राहक                           | संख्या लाखमा    | १०                  | ९५                      | ८६१                   |
| मोबाइल टेलिफोन ग्राहक                                   | संख्या लाखमा    | ३१०                 | ३००                     | ३८३                   |
| जम्मा टेलिफोन   | संख्या लाखमा    | ३२१                 | ३१०                     | ३९२                   |
| इन्टरनेट ग्राहक   | संख्या लाखमा    | १५५                 | १४५                     | १४९.८१                |
| <b>(ग) उर्जा</b>  |                 |                     |                         |                       |
| विद्युत चुहावट  | प्रतिशत         | २४                  | २४.५                    | २०.४५                 |
| विद्युतमा पहुँच प्राप्त घरधुरी                          | संख्या (हजारमा) | १५०                 | १५०                     | २९४                   |
| विद्युतमा पहुँच प्राप्त जनसंख्या                        | प्रतिशत         | ७०                  | ६६                      | ८७                    |
| प्रति व्यक्ति विद्युत खपत                               | किलोवाट घण्टा   | १६०                 | १५०                     | १६४                   |
| <b>(घ) खानेपानी</b>                                     |                 |                     |                         |                       |
| आधारभूत खानेपानी सेवामा पहुँच पुगेको जनसंख्या           | प्रतिशत         | ९०                  | ८८                      | ८८                    |
| आधारभूत सरसफाइ पुगेको जनसंख्या                          | प्रतिशत         | ८९                  | ८७                      | ९८.५६                 |
| उच्च मध्यम स्तरको खानेपानी सेवामा पहुँच पुगेको जनसंख्या | प्रतिशत         | ३०                  | २५                      | २०                    |

## ६. पर्यटन

| नतिजा सूचकहरू              | इकाई             | चौधौ योजनाको लक्ष्य | आ. व. २०७४/७५ को लक्ष्य | २०७४/७५ सम्मको प्रगति |
|----------------------------|------------------|---------------------|-------------------------|-----------------------|
| <b>पर्यटन</b>              |                  |                     |                         |                       |
| पर्यटन आगमन                | जना लाखमा        | ३६                  | १०                      | ९.४                   |
| प्रति पर्यटक बसाई अवधि     | दिनमा            | १५                  | १४                      | १३                    |
| विदेशी मद्रा आर्जन         | अमरिकी डलर लाखमा |                     | ८००४                    | ६२००                  |
| प्रति पर्यटक प्रतिदिन खर्च | अमरिकी डलरमा     | ६०                  | ५८                      | ५४                    |
| रोजगारी सर्जना             | जना हजारमा       | ११०                 | ४०                      | ३१                    |

## ७. भूमि व्यवस्था

| नतिजा सूचकहरू  | इकाई                | चौधौ योजनाको लक्ष्य | आ. व. २०७४/७५ को लक्ष्य | २०७४/७५ सम्मको प्रगति |
|--|---------------------|---------------------|-------------------------|-----------------------|
| मुक्त कर्मैया परिवारको पुनर्स्थापना (सट्टाभर्नासमेत) | संख्या              |                     |                         |                       |
| तालिम प्राप्त गर्ने मुक्त कर्मैया                    | जना                 |                     | ४००                     | ४००                   |
| मुक्त हलियाका लागि जग्गा खरिद अनुदान                 | परिवार संख्या       |                     | १००८                    |                       |
| मुक्त हलियाका लागि घर निर्माण अनुदान                 | परिवार संख्या       | २०००                | ७४३                     | ८०६                   |
| मुक्त हलियाका लागि घर मर्मत अनुदान                   | परिवार संख्या       | ४९००                | २५७९                    | ५१२०                  |
| मालपोत कार्यालयमा कम्प्युटर प्रविष्ट डाटाको परीक्षण  | क्षेत्र एवम् जिल्ला |                     | ६४                      | ८८                    |
| भवन निर्माण (मालपोत कार्यालयहरू)                     | संख्या              |                     | २४                      | १५                    |
| अनलाइन सेवा विस्तार                                  | संख्या              | ७५                  | ४०                      | २८                    |
| भवन निर्माण (नापी विभाग)                             | संख्या              |                     | ३०                      | १५                    |
| नाप नक्सा तयार (गाउँ ब्लक)                           | हेक्टर              |                     | २८६३                    | २१९६                  |

## अनुसूची - १२

# काठमाडौं उपत्यका कृषक बजार, कृषि सहकारी बजार सम्भाव्यस्थल छनौट अध्ययन प्रतिवेदनको सारांश

चालु चौधौं योजनामा खाद्य सुरक्षा तथा पोषणको सम्बन्धमा सधैं र पर्याप्त, सुरक्षित तथा पोषणयुक्त खाद्य उपलब्धताको अवस्था सिर्जना गर्ने सोच तथा गुणस्तरयुक्त खाद्य वस्तुमा पहुँच बढाउँदै खाद्य सुरक्षाको सुनिश्चितता प्रदान गर्ने उद्देश्य राखेको छ। उक्त उद्देश्यतर्फ मुखरित हुँदै अघि बढ्न दैनिक उपभोग्य खाद्य वस्तुहरूको स्वच्छ, शुद्ध र सुलभ प्राप्ती तथा उपभोगको लागि उपयुक्त, किसानमैत्री तथा उपभोक्तामैत्री बजारको आवश्यकता देखिन्छ। जसबाट उत्पादक कृषक र उपभोक्ता को प्रत्यक्ष क्रय विक्रय प्रक्रियामा वृद्धि हुन सक्दछ।

यस अध्ययनको प्रमुख उद्देश्य काठमाडौं उपत्यका भित्र कृषक बजारको हालको अवस्थाको पहिचान गरी काठमाडौंको चक्रपथको वरीपरी किसान राख्न उपयुक्त स्थानको पहिचान एब दीर्घकालिन रूपमा मोडालिटीको पहिचान गरी सिफारिस र बजारलाई प्रभावकारी र दिगो रूपमा सञ्चालन गर्न आवश्यक नीति/नियम तथा सहूलियत (Incentive Packages) वारे सुझाव प्रदान गर्नु रहेको छ।

यस अध्ययनको उद्देश्य हासिल गर्नको लागि द्रुत बजारस्थल लेखाजोखा (Rapid Market Place Appraisal) विधिका साथै आफ्नो लामो अनुभवलाई समेत समेटी आवश्यक सूचनाहरूको संकलन र विश्लेषण निम्नानुसार गरिएको छ

अध्ययनको सिलसिलामा प्राप्त प्रकाशित प्रतिवेदन र अन्य उपलब्ध सामाग्रीको अध्ययन, कार्य सुभारम्भ प्रतिवेदनमा व्यापक अन्तरक्रिया, जानिफकारहरूसँग जानकारी हासिल र स्थलगत भ्रमण गरि प्राथमिक जानकारी संकलन गरि विश्लेषण गरिएको छ।

समस्तगत औजार विश्लेषणबाट प्राप्त सूचनाको विश्लेषणबाट हेर्दा विभिन्न तरकारी उपभोक्ता र विक्रेताबीच वेच विखन भइरहेको स्थलहरू, होटलहरूमा संचालित कृषक बजारका सहभागीहरू, जानिफकारहरूसँगको सम्वाद, अवलोकन, कृषक बजारको वारेमा विभिन्न पक्षहरूबाट भएको

अभिव्यक्ति र सर्कलित सूचनालाई विश्लेषण गर्दा मुख्य मुख्य बुँदाहरू कृषक बजार स्थलको आवश्यकता र स्थलबारेमा निम्नानुसार पाईएको छ ।

कृषकहरूको स्तरबाट घरघरमा ढुलाएर बेच्दा बढि समय लाग्ने गरेका, आफ्नो उत्पादन केही ठाउँ ओगटी बसेकाहरूलाई उनिहरूको मुल्यमा बेच्नु परेको, खरिदकर्ताहरू निश्चित हुँदाहुँदै मुल्यमा सम्झौता गर्नु परेको, कृषक र उपभोक्ता बिच सिधा सम्पर्क, कृषकले आफ्नो उत्पादनको गुणस्तरको सुनिश्चितता राख्दै उपभोक्तालाई आकर्षित गर्न सक्ने, कृषकहरूले आफ्नो उत्पादन बेचबिखन गर्न निश्चित योजना बनाउन सक्ने, उपभोक्ताको माग अनुसार आफ्नो सानो सानो उत्पादनलाई विविधिकरण गर्न सक्ने र माग अनुसार ग्रेडिग प्याकेजिग गर्न सकिने ।

उपभोक्ताहरूको तर्फबाट एउटा निश्चित स्थलमा कृषकहरूबाट सोभै खरिद गर्नको लागि बजारस्थल नभएको, भएका स्थलहरू जस्तै केलटोल, पुलचोक, गुयश्वरी, बानेश्वर, अनामनगर आदिका विक्रेताहरूमा कृषक नभई अन्य विक्रेताबाट बढी हुने गरेको जसले गर्दा कृषकको गुणस्तरमा यकिनता लिन नसकिएको आदि । तसर्थ प्रस्तावित बजारस्थल भएमा गुणस्तरमा ढुक्क र मुल्यमा पनि केही कमि आउने देखिन्छ । आफुलाई चाहियको ताजा वस्तु खरिद गर्न सक्ने र प्राप्त नभएमा अर्को पटकको लागि अर्डर गर्न सक्ने । व्यवस्थापन तर्फ हाल देखिएका फुटपात आदिमा कृषकहरू विक्रेताहरूबाट भइरहेको अतिक्रमण आदि व्यवस्था गरेमा निश्चिस्थल र समयमा बाध्न सकिने जसले गर्दा ट्राफिक व्यवस्थापन गर्न सजिलो हुने ।

व्यवस्थापन तर्फ बाट नगरपालिकाहरूबाट सहकार्यमा कृषक बजारको आवश्यकता महसुस र सहजकर्ताको भुमिका निर्वाह हुन सक्ने भएको, फोहोर अदिलाई स्थानिय निकायमार्फत स सुल्क परिचालन गर्न सकिने, कृषकहरूलाई गुणस्तर उत्पादन गर्न अभिप्रेतरित गर्न सकिने, सहकारिहरूबाट आफ्नो सञ्जाललाई परिचालित गर्ने प्रतिबद्धता हुनु, विशेषतह ट्राफिक व्यवस्थापनमा गाह्रो हुने भएको र सडक दुर्घटना आदि कम हुने ।

साथै, हाल काठमाडौं उपत्यका भित्र रहेका बजारहरूको प्रकृति अध्ययनको उद्देश्यअनुरूप नरहेको देखिएको छ । स्थायी कृषकबजार स्थलको लागि स्थायी प्रकृतिको जग्गाको उपलब्धता नरहेको र प्रकाशित प्रतिवेदन र वेवसाइटको अध्ययन (अनुसूची ५) लाई समेत मध्यनजर राखि यस प्रकारको बजार निश्चित दिन र समयमा सार्वजनिक स्थल वा चौडा सडकको एक तर्फ सञ्चालन गर्न सकिने हुँदा अधिकांश जानिफकारहरूको जानकारी र अन्तर्राष्ट्रिय र हाम्रो गाउँघरमा सञ्चालित हाट बजारको आधारमा निम्न स्थललाई पहिचान गरिएको छ ।

| क्र.सं. | प्रस्तावित कृषक बजार स्थल                 | बस्तुहरु           | समय   | दिन                                    |
|---------|---|--------------------|-------|--|
| १       | रातोपुल देखि गौशाला चोक                   | ताजा तरकारी, फलफुल | ०३-०८ | साप्ताहिक सार्वजनिक विदाको दिन, शनिवार |
| २       | महाराजगंज भाटभटेनि अगाडिको सर्विस ट्याक   | ताजा तरकारी        | ०३-०८ | शनिवार                                 |
| ३       | कुलेश्वर गणेशस्थान परिसर                  | ताजा तरकारी        | ०३-०७ | शनिवार                                 |
| ४       | बानेश्वर नापी विभाग अगाडिको सडक           | ताजा तरकारी        | ०३-०७ | शनिवार                                 |
| ५       | बानेश्वर बागमति नदि किनारमा               | ताजा तरकारी        | ०३-०८ | शनिवार                                 |
| ६       | त्रिभुवन विश्वविद्यालयको गेट अगाडिको बाटो | ताजा तरकारी        | ०३-०८ | शनिवार                                 |

यसरी प्रस्ताव गरिएको बजार सञ्चालनका लागि केहि आधारभूत आवश्यकताहरू पहिचान गरिएको छ । नियम, विधि, अभिलेखिकरण आदि प्रस्ताव गरिएको छ ।

यसप्रकारका बजारहरूको सञ्चालन कार्यविधि राष्ट्रिय योजना आयोगले प्रस्ताव गरेका साथै कृषकबजार उपनियम प्रस्ताव गरिएको छ । नाम, स्थान, उद्देश्य, सदस्यता, बैठक, निर्देशक समिति, निर्देशक समिति (बोर्ड अफ डाइरेक्टर)को कर्तव्य, अधिकृतहरू र प्रबन्धकको कर्तव्य र बजारका नियमहरू तथा सञ्चालनका दिशानिर्देशहरू बुँदा दफामा प्रस्तावित गरिएको छ । यसको सफल कार्यान्वयन समन्वयात्मक तवरबाट मात्रै संभव रहेको छ जुन यस प्रकृतिको छ ।

समन्वय गरिनुपर्ने निकायहरू कार्य विभाजन सहित

| क्र.सं. | निकाय                           | कार्य   |
|---------|---------------------------------|---|
| १.      | जिल्ला कृषि सहकारी संघ          | - बजारहरूको सञ्चालनमा अग्रसरता समन्वय<br>- कृषक पहिचान एवम् सहभागिताको लागि सहजीकरण<br>- कृषक बजार स्थलको प्रचार प्रसार<br>- विक्रेता कृषकको अभिलेखिकरण |
| २.      | ट्राफिक प्रहरी                  | - निश्चित दिन र समयमा ट्राफिक आवत जावतमा सहजीकरण गर्ने<br>- वैकल्पिक मार्गको सूचना प्रवाह समेत सहभागी हस्ताई प्रेरित गर्ने<br>- पार्किङको सुविधा बढाउने |
| ३.      | स्थानिय निकाय मनपा वडा कार्यालय | - सर सफाइको लागि सो क्षेत्रका सफाइ निकायलाई थप कार्य जिम्मेवारि दिन (प्रोत्साहन सहित)   |
| ४.      | कृषि कार्यालय                   | - कृषक पहिचान, कृषकको उत्पादन, गुणस्तरमा अनुगमन एवम् सहजीकरण (आई.पी. समुहको उत्पादित कृषि एवम् अन्य उत्पादन)  |
| ५.      | संचार माध्यम                    | - सूचना प्रवाह नियम सहित  |

- (क) प्रस्तावित कृषक बजार सञ्चालनमा सम्बन्धित जिल्लाका सहकारी संस्थाले कृषक समूह हुँदै सहकारी मार्फत सक्रिय भूमिका निर्वाह गर्नु पर्नेछ ।
- (ख) हाल सहकारी एवम् कृषि कार्याहरूलाई प्रचार-प्रसार गर्न सहयोग, सफाइ कर्मचारीहरूलाई थप प्रोत्साहन दिइनुपर्नेछ ।
- (ग) यसरी आधारहरूको विश्लेषणका आधारमा आगामी आ.व. देखि नै यो बजारलाई परिक्षणको रूपमा सञ्चालन गरि आवश्यक प्रस्ताव परिमार्जनका साथै राज्यका अन्य शहरहरूमा पनि सञ्चालन गर्न सकिने छ ।

## अनुसूची - १३

## राष्ट्रिय सहकारी आवास नीति

देशमा निम्न मध्यम-आय वर्गको संख्या अत्यधिक छ। आफ्नो नियमित आयबाट जग्गा र निर्माण सामग्रीको निरन्तर बढ्दो मूल्यको कारण आवासको व्यवस्था गर्न कठिन हुँदै गएको छ। नेपालमा हाल आवासको आवश्यकता (क) व्यक्तिगत स्वामित्वको आवास (ख) सरकारी पहलमा निर्मित आवास (ग) सङ्गठित निजी क्षेत्र र (घ) घरबहालको माध्यमबाट मात्र पूरा हुने गरेको छ। राष्ट्रिय आवास नीति, २०६८ ले बढ्दो आवासको मागलाई परिपूर्ति गर्ने विभिन्न उपायमध्ये सहकारी आवास प्रणालीको अवधारणालाई पनि विकल्पको रूपमा आत्मसात् गरेको भए पनि आवास विकास गर्ने यस प्रणालीको अद्यापि कुनै प्रचलन आरम्भ भएको छैन। यसर्थ देशको आर्थिक तथा सामाजिक विकासमा सहकारी पद्धतिमा आधारित उद्योग व्यवसायको स्थापना गरी योगदान पुऱ्याउने सहकारीको मुख्य उद्देश्य अनुरूप नै सहकारी सिद्धान्तको माध्यमबाट पनि मध्यम तथा न्यून आयवर्गको आवासको आवश्यकता परिपूर्ति गर्न राष्ट्रिय स्तरमा निर्देशक नीतिको आवश्यकता महसूस गरी राष्ट्रिय सहकारी आवास नीति एवम् सोको आधारमा आवश्यक कार्यक्रम तर्जुमा गर्नेसम्बन्धी अध्ययन गराईएको हो।

अध्ययन प्रतिवेदनको आधारमा यस नीतिले सहकारीको सिद्धान्त अनुरूप मध्यम तथा न्यून आय वर्गको लागि आवास सुविधा उपलब्ध गराउने दूरदृष्टि राखेको छ। स्थानीय श्रम, सीप र पूँजीको अधिकतम परिचालन गरेर आवास उत्पादनको एक सवल उपायको रूपमा सहकारी आवासलाई स्थापित गरी आवास विकासको राष्ट्रिय लक्ष्यमा योगदान पुऱ्याउनु दीर्घकालीन लक्ष्यको रूपमा रहेको छ। सहकारीको माध्यमबाट स्थानीय श्रम, सीप र पूँजीको अधिकतम परिचालन गरेर मध्यम तथा न्यून आयस्रोत परिवारहरूको लागि आवास सुविधा उपलब्ध गराउने, प्रभावकारी व्यवस्थापन विधिको अवलम्बन गरी सहकारी आवासको क्षेत्रमा वित्तीय तथा संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गर्ने, सहकारी आवास प्रणालीको प्रभावकारिताबारे जनचेतना अभिवृद्धि गरी ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रमा सहकारी आवासको क्रमिक रूपमा विस्तार गर्ने जस्ता उद्देश्यहरू राखिएका छन्।

## अनुसूची - १४

# दिगो शहरी विकास सूचकांक (SUDI: Sustainable Urban Development Index)

संसारका आधाभन्दा बढी मानिसहरू शहरमा बसोबास गर्दछन्। विकासोन्मुख देशहरूमा शहरीकरण तीव्र गतिमा बढिरहेको छ। यसै सन्दर्भमा, नेपालमा पनि दुई सय त्रियानव्वे नगरपालिकामा करिब बैसठ्ठी प्रतिशत जनसंख्या बसोबास गर्दछन्। शहरीकरणले सामाजिक परिवर्तनका साथै आर्थिक, सामाजिक, वातावरणीय तथा अन्य क्षेत्रमा प्रभाव पारिरहेको पाइन्छ। अतः शहरीकरणलाई दिगो विकासको पक्षबाट पनि हेर्न जरुरी छ।

दिगो शहरीकरणको आवश्यकतालाई महसुस गर्दै संयुक्त राष्ट्र संघबाट पारित दिगो विकास एजेण्डा २०३० अन्तर्गत दीगो विकास लक्ष्य ११ ले “शहर एवम् मानव बस्तीहरूलाई समावेसी, सुरक्षित, समानुक्तित एवम् दिगो बनाउने” ध्येय राखेको छ। यस अन्तर्गत समावेसी एवम् दिगो शहरीकरणको प्रवर्द्धन गर्ने, शहरजनित नकारात्मक वातावरणीय असरहरूको प्रति व्यक्ति योगदान घटाउने र सुरक्षित, समावेसी, सुगम एवम् हरित सार्वजनिक स्थलहरूमा सबैको पहुँच पुऱ्याउने जस्ता लक्ष्यहरू राखिएका छन्।

शहरहरूको विकासक्रम तथा दिगो विकास मापन आधार बैज्ञानिक, योजनाकार र प्राविधिज्ञ समुदायका लागि जरुरी हुन्छ। साथै हालको अवस्थामा विश्वव्यापी रूपमा दिगो विकासको लागि भइरहेका प्रयासहरूका सन्दर्भमा दिगो विकासको पुनःपरिभाषित गर्न र दिगो शहरी विकासका सूचकाङ्कहरूको सटीक मानक तय गर्न तथा समयानुकूल परिमार्जन गर्न जरुरी देखिन्छ।

यसै सन्दर्भमा, नेपाल सान्दर्भिक दिगो विकासका सूचकाङ्क सम्बन्धी औपचारिक सामग्री नरहेकोले राष्ट्रिय योजना आयोगले नेपाल सान्दर्भिक दिगो शहरी विकास सूचकाङ्क (SUDI: Sustainable Urban Development Index) सम्बन्धी निर्देशिका एवम् कार्यविधि तर्जुमा गरी कुनै एक स्थानीय तहको विकास सूचकाङ्क मापन गर्ने कार्यका लागि शहरी योजना अध्ययन केन्द्र (CUPS: Center for Urban Planning Studies), ईन्जिनियरिङ्ग अध्ययन संस्थानबाट परामर्श सेवा लिई उक्त कार्य गराईएको



छ। जस अनुसार उत्पादकत्व सूचकांकमा चार, पूर्वाधार सूचकांकमा सात, वित्तीय तथा आर्थिक सूचकांकमा छ, सामाजिक तथा न्यायसंगतता सूचकांकमा आठ, सुशासन सूचकांकमा नौ र पर्यावरणमा छ गरी छ क्षेत्रमा चालीस सूचकांक तय गरिएका छन्। यसको आधारमा देशका सम्पूर्ण नगरपालिकाहरूको सूचकाङ्क मापन गरी कुन नगरपालिका कुन सूचकाङ्कमा अघि वा पछि छ, पत्ता लगाएर त्यही अनुसार विकासमा गर्नुपर्ने लगानी निक्यैल गर्न सहज हुने विश्वास लिईएको छ।

## अनुसूची - १५

# २०७४ श्रावण महिनामा आएको बाढी पश्चातको पुनःउत्थान सम्बन्धी आवश्यकता आँकलन प्रतिवेदनको सारांश

### १. पृष्ठभूमि:

यहि २०७४ साउन २७ देखि ३० (तदनुसार सन् २०१७ अगस्ट ११देखि १४) सम्म नेपालमा भएको भिषण वर्षा त्यसपछिको बाढीका कारण देशभरका ३५ जिल्ला प्रभावित भए भने १८ जिल्लामा अत्यधिक प्रभाव पर्यो । अति प्रभाव मुलतः तराइ-मधेशका जिल्लामा पर्न गयो । त्यसैले तराई क्षेत्रमा आएको बाढी, यसको प्रभाव पुनःस्थापनाका आवश्यकता पहिचान गर्ने तथा नेपाल सरकार तथा अन्य सरोकारवालाहरूलाई बाढी पिडित तथा विस्थापितलाई पुनःस्थापनाका कार्यक्रम बनाउन सहयोग गर्ने उद्देश्यका साथ विपद्प्रभाव तथा पुनःस्थापना आवश्यकता मूल्याङ्कन सम्बन्धी अध्ययन राष्ट्रिय योजना आयोगको नेतृत्वमा सम्पन्न भएको छ । राष्ट्रिय योजना आयोगले विभिन्न मन्त्रालय तथा अन्य सरोकारवाला निकायहरूसँगको सम्वयमा प्रतिवेदन तयार गरेको छ । यो प्रतिवेदन राष्ट्रिय योजना आयोगका उपाध्यक्षको नेतृत्वमा आयोगकै जनशक्ति तथा सरोकारवाला मन्त्रालयका प्रतिनिधिको सहभागिता र योगदानबाट तयार गरिएको हो । यसका लागि विश्ववैक तथा यूएनडिपिले महत्वपूर्ण प्राविधिक सहायता उपलब्ध गराएका थिए । गृह मन्त्रालयले विपत्ति प्रभावित भनेर तोकेको १८ वटा बाढी प्रभावित जिल्ला तथा ९ क्षेत्रहरूमा फिल्ड अफिसले संकलन गरेको तथ्याङ्कमा आधारित रहेर प्रभावित क्षेत्रको अवस्था समग्र पुनःस्थापनाका आवश्यकताको मूल्याङ्कन गरिएको थियो ।

यो वर्ष बाढीका कारण घाईते हुनेको संख्या २२ रह्यो । अति प्रभावित १८ जिल्लामा ८ लाख ६६ हजार ९९३ पुरुष र ८ लाख २१ हजार ४८० महिला गरी जम्मा १७ लाख जनसंख्या प्रताडित हुन पुगे । विभिन्न ९ क्षेत्रको मूल्याङ्कनका आधामा बाढीले पुर्‍याएको क्षति रु. ६० अर्ब ७१ करोड ६६ लाख रुपैया (५८४.७ मिलियन अमेरिकी डलर) आँकलन गरिएको छ । यो क्षति नेपालको कूल गार्हस्थ उत्पादनको करिब ३ प्रतिशत हो । सबैभन्दा बढि क्षति आवास, सिंचाइ, पशुपंक्षी तथा अन्नबालीमा भएको छ । क्षतिको मूल्य विचार गर्दा यो क्षतिले राष्ट्रिय अर्थतन्त्रमा सामान्य प्रभाव पार्ने भएतापनि स्थानीय अर्थतन्त्रमा भने ठुलो प्रभाव पारेको छ । तराइ-मधेस क्षेत्रका संरचनामा

यस बाढी र डुवानले नराम्रोसँग क्षति पुऱ्याएको छ । सहायता कार्यक्रम प्रभावकारी नहुने हो भने तराइ क्षेत्रमा वर्षेनी आउने यस्ता बाढी र डुवानका कारण नेपालमा आम्दानी, क्षमता लगायतका कुरामा क्षेत्रीय विभेद बढ्दै जाने देखिन्छ । जोखिममा परिरहने भएका कारण स्थानीय अर्थतन्मा नकरात्मक प्रभाव अवश्यम्भावी छ ।

### विपत्ले पारेको प्रभावको सारांश

| क्षेत्रहरू             | कुल क्षति नेपाली रुपैया (दशलाखमा) | कुल क्षति अमेरिकी डलर (मिलियनमा) |
|------------------------|-----------------------------------|----------------------------------|
| सामाजिक क्षेत्रहरू     |                                   |                                  |
| आवास                   | १९५१२.७                           | १८७.९                            |
| स्वास्थ्य              | ६२०.०                             | ६.०                              |
| शिक्षा                 | ११९३.८                            | ११.५                             |
| उत्पादनमूलक क्षेत्रहरू |                                   |                                  |
| कृषि                   | ७२१३.८                            | ६९.५                             |
| पशुपालन (चौपाया)       | १०६७०.४                           | १०२.७                            |
| सिंचाइ                 | १७४६०.१                           | १६८.१                            |
| पूर्वाधारका क्षेत्रहरू |                                   |                                  |
| यातायात                | २९३७.८                            | २८.३                             |
| खानेपानी र सरसफाइ      | ८८७.७                             | ८.५                              |
| उर्जा                  | २२०.३                             | २.१२                             |
| कूल                    | ६०७१६.६                           | ५८४.७                            |

### २. पुनःस्थापनाको आवश्यकता

पुनःस्थापना आवश्यकताको कुल रकम रु. ७३ अर्ब २२ करोड ४८ लाख (७०५.१ मिलियन अमेरिकी डलर) हुने अनुमान गरिएको छ । पुनःस्थापनाको रकम उच्च देखिए तापनि पुनःस्थापना कार्यक्रमको व्यवस्थित योजनाले त्यस्ता कार्यक्रम वित्तिय रुपमा पनि व्यवहारिक र खर्च धान्न सकिने हुन्छन् । विश्वव्यापीरुपमा पुनःस्थापना कार्यक्रमको महत्वपूर्ण पक्ष के हो भने पुनःस्थापना कार्यक्रम केवल सरकारी कार्यक्रम मात्र हुनु हुँदैन । यस्तो कार्यक्रममा सबै सरोकारवालाको साभ्ना प्रयास हुनु पर्दछ, किनकी यसको सबैभन्दा महत्वपूर्ण विषय आवास हुन्छ । पुनःस्थापना कार्यक्रममा परिवारका सदस्यले सधै आफ्नो स्रोत प्रयोग गर्छन्, विकास साभ्नेदार, गैर सरकारी संस्थाहरू र निजी क्षेत्रले पनि यो अभियानमा आफ्नो स्रोत ल्याउछन् । आगामी दुइ देखि तिन वर्षको अवधिमा पुनःस्थापना कार्यक्रमका लागि छुट्याइएको सम्पूर्ण बजेट खर्च हुन्छ जसले सरकारलाई पनि स्रोतहरू जम्मा गर्न थप सहज बनाउछ ।

### कूल पुनःस्थापना आवश्यकताको सारांश

| क्षेत्रहरू             | कुल क्षति नेपाली रुपैया (दशलाखमा) | कुल क्षति अमेरिकी डलर (मिलियनमा) | क्षेत्रगत आधारमा पुनःस्थापना आवश्यकताको अंश |
|------------------------|-----------------------------------|----------------------------------|---|
| सामाजिक क्षेत्रहरू     |                                   |                                  |   |
| आवास                   | ३९०२५.५                           | ३७५.८                            | ५३.३  |
| स्वास्थ्य              | ६८०.०                             | ६.५                              | ०.९   |
| शिक्षा                 | ११९३.८                            | ११.५                             | १.६   |
| उत्पादनमूलक क्षेत्रहरू |                                   |                                  |   |
| कृषि                   | ६३९४.८                            | ६१.६                             | ८.७   |
| पशुपालन (चौपाया)       | २७९२.४                            | २६.९                             | ३.८   |
| सिंचाइ                 | १७७८९.२                           | १७४.३                            | २४.३  |
| पूर्वाधारका क्षेत्रहरू |                                   |                                  |   |
| यातायात                | २९३७.८                            | २८.३                             | ४.०   |
| खानेपानी र सरसफाइ      | २१६९.०                            | २०.९                             | ३.०   |
| उर्जा                  | २४२.३                             | २.३३                             | ०.३   |
| कूल                    | ७३२२४.८                           | ७०५.१                            | १००.०                                       |

उपरोक्त मूल्याङ्कनलाई आधारमानी विपद्को प्रभाव र पुनःस्थापना आवश्यकताको विस्तृत विश्लेषण गरिएको छ। आगामी तीन वर्षको अवधिमा तत्काल, मध्यमकाल र दीर्घकालका लागि पुनःस्थापना रणनीति अवलम्बन गरिनेछ। साथै, अन्तरनिहित जोखिमलाई सम्बोधन गर्नका लागि र तराई क्षेत्रमा रहेको जोखिम न्यूनीकरणका लागि अनुकूलन रूपरेखा प्रस्ताव गरिएको छ। हालैको बाढीबाट सबैभन्दा बढि प्रभावित र जोखिम परेकाका लागि दिगो विकास लक्ष्यका सूचकांकको प्रगति सुनिश्चित गर्न विस्तृत पुनःस्थापना अवधारणा महत्वपूर्ण हुन्छ।

यस आँकलन प्रतिवेदनको सुझावहरू प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयमार्फत राष्ट्रिय पुनर्निर्माण प्राधिकरणबाट कार्यान्वयनमा लैजाने गरी नेपाल सरकार मन्त्रिपरिषद्को निर्णयानुसार राष्ट्रिय पुनर्निर्माण प्राधिकरणमा बाढी पिडितहरूको पुनःस्थापनार्थ विशेष इकाइ समेत गठन भएको छ।

## अनुसूची - १६

## मध्यमकालीन खर्च संरचना

## प्रमुख नतिजा सूचक तथा लक्ष्य

नेपाल सरकारले लिएको “समृद्ध नेपाल सुखी नेपाली” को लक्ष्य हासिल गर्नमा केन्द्रित रहँदै आगामी तीन वर्षको मध्यमकालीन खर्च संरचनाको प्रमुख लक्ष्य तथा नतिजा सूचक निर्धारण गरिएको छ। सो अनुसार समष्टिगत लक्ष्यहरूको विद्यमान स्थिति तथा आगामी ३ वर्षको अपेक्षित उपलब्धि देहाय बमोजिमको तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ।

## प्रमुख समष्टिगत सूचक तथा लक्ष्य

| क्र.सं. | सूचक/लक्ष्य                             | एकाई      | २०७३/७४ को उपलब्धि | २०७४/७५ को अनुमानित उपलब्धि | मध्यमकालीन लक्ष्य |         |         |
|---------|---|-----------|--------------------|-----------------------------|-------------------|---------|---------|
|         |   |           |                    |                             | २०७५/७६           | २०७६/७७ | २०७७/७८ |
| १       | वार्षिक आर्थिक बृद्धिदर                 | प्रतिशत   | ७.४                | ५.९                         | ७.९               | ९.९     | ९.५     |
|         | कृषि                                    |           | ५.२                | २.८                         | ४.८               | ५.९     | ५.६     |
|         | गैरकृषि                                 |           | ८.५                | ७.९                         | ८.९               | ९.०.४   | ९.०.७   |
|         | उद्योग                                  |           | ९.२.९              | ९.३                         | ९.२.२             | ९.६.९   | ९.४.९   |
|         | सेवा                                    |           | ७.५                | ६.७                         | ७.९               | ८.८     | ९.४     |
| २       | मुद्रास्फिति दर                         | प्रतिशत   | ४.५                | ६.०                         | ६.५               | ६.५     | ६.५     |
| ३       | गरिबीको रेखामुनि रहेका जनसंख्या         | प्रतिशत   | -                  | -                           | ९.७               | ९.५.५   | ९.४     |
| ४       | बहुआयामिक गरिबीको सूचकांक               | सूचकांक   | -                  | २८.६                        | २३                | २२.७    | २०.५    |
| ५       | १५ देखि २४ वर्ष उमेर समूहको साक्षरता दर | प्रतिशत   | ८८.६               | ९०                          | ९२                | ९४      | ९५      |
| ६       | मानव विकास सूचकांक                      | सूचकांक   | ०.५५८              | -                           | ०.५७              | ०.५९    | ०.६९    |
| ७       | लैङ्गिक सशक्तीकरण सूचकांक               | सूचकांक   | -                  | -                           | ०.५८              | ०.६९    | ०.६३    |
| ८       | आर्थिक जोखिम सूचकांक (EVI)              | सूचकांक   | -                  | २८.४                        | -                 | -       | २५      |
| ९       | मानव सम्पत्ति सूचकांक (HAI)             | सूचकांक   | -                  | ७९.२                        | -                 | -       | ७५      |
| १०      | गार्हस्थ्य प्रतिव्यक्ति आम्दानी         | रु हजारमा | ९२०                | ९०३३                        | ९९७               | ९३४     | ९५४     |

स्रोत: मध्यमकालीन खर्च संरचना (आ.व. २०७५/७६ - २०७७/७८)

वर्तमान सरकारले सिर्जना गरिरहेको उच्च आर्थिक वृद्धिको आधारशीलालाई मध्यनजर राख्दै आगामी तीन वर्षमा औसत आर्थिक वृद्धिदर आधारभूत मूल्यमा औसत ८.९ प्रतिशत हुने लक्ष्य राखिएको छ। यस अनुसार कृषि क्षेत्रको औसत वृद्धिदर ५.२ र गैर कृषि क्षेत्रको औसत वृद्धिदर १०.१ प्रतिशत हुने अनुमान गरिएको छ। यस अवधिमा मुद्रास्फिति दर ६.५ प्रतिशतभित्र रहने अनुमान छ। आगामी तीन वर्षको अवधिमा गरिवीको रेखामुनि रहेका जनसंख्या करीब १४ प्रतिशतमा झर्ने र मानव विकास सूचकांक करिब ०.६१ पुग्ने अनुमान गरिएको छ।

आर्थिक वृद्धिदर आँकलन गर्दा स्थिर सरकार, संघीय संरचना अनुसार तीन तहका सरकारबाट प्रभावकारी रूपमा हुने कार्यक्रम तथा बजेटको कार्यान्वयन, उर्जा उपलब्धतामा हुने उल्लेख्य वृद्धि, केही बृहत आयोजना सम्पन्न हुने अवस्था, पुनर्निर्माण, निर्माण कार्यमा तीव्रता, पर्यटक आगमनमा उल्लेख्य वृद्धि जस्ता सकारात्मक परिवर्तन हुने अनुमान गरिएको छ। यसबाट नेपाल सरकारको नीति कार्यक्रमले राखेको आगामी ५ वर्ष भित्र दोहोरो अंकको आर्थिक वृद्धि गर्ने लक्ष्य प्राप्त हुनेछ। साथै आगामी ५ वर्षमा हालको प्रति व्यक्ति आय दोब्बर भई मुलुकलाई दश वर्षभित्र मध्यम आयस्तर भएको मुलुकमा स्तरोन्नति हुन समेत सहयोग पुग्नेछ।

### प्रमुख विषय क्षेत्रगत सूचक तथा लक्ष्य

| क्र.सं. | सूचकरलक्ष्य  | एकाई            | २०७३/७४ को उपलब्धि | २०७४/७५ को अनुमानित उपलब्धि | मध्यमकालीन लक्ष्य |         |         |
|---------|--|-----------------|--------------------|-----------------------------|-------------------|---------|---------|
|         |  |                 |                    |                             | २०७५/७६           | २०७६/७७ | २०७७/७८ |
| १       | खाद्यान्न बाली उत्पादन   | मे. टन (हजार)   | ९,७७१              | १०,००९                      | १०,३१२            | १०,७५०  | ११,०००  |
| २       | काठको उत्पादन  | घन फिट (लाखमा)  | ५०                 | ३०                          | ४०                | ६०      | ६०      |
| ३       | उद्योगहरूबाट रोजगारीको सिर्जना                                       | संख्या (हजारमा) | ३३०९               | १७४                         | १८१               | १८२     | १८३     |
| ४       | निर्यात आयात अनुपात  | अनुपात          | १:१०               | १:९.३                       | १:८.६             | १:८     | १:७.५   |
| ५       | पर्यटक आगमन  | जना (हजारमा)    | ७५३                | १०००                        | १२००              | १६००    | २०००    |
| ६       | पर्यटन क्षेत्रमा रोजगारी   | जना (हजारमा)    | ९५                 | ११६                         | १३३.४             | १५०     | १६०     |
| ७       | राष्ट्रिय विद्युत् प्रणालीबाट विद्युतमा पहुँच प्राप्त गर्ने जनसंख्या | प्रतिशत         | ६४                 | ६९                          | ७५                | ८०      | ८५      |
| ८       | जलविद्युत् उत्पादन क्षमता  | मे.वा.          | ९६८                | १०४५                        | १८०५              | २११४    | २४४६    |
| ९       | प्रसारण लाइन निर्माण   | कि.मि. (हजारमा) | ३८.२               | ३९.५                        | ४१.६              | ४८.२    | ५३.६    |

| क्र.सं. | सूचकरलक्ष्य                                  | एकाई            | २०७३/७४ को उपलब्धि | २०७४/७५ को अनुमानित उपलब्धि | मध्यमकालीन लक्ष्य |         |         |
|---------|--|-----------------|--------------------|-----------------------------|-------------------|---------|---------|
|         |  |                 |                    |                             | २०७५/७६           | २०७६/७७ | २०७७/७८ |
| १०      | सिंचित क्षेत्रफल                             | हेक्टर (हजारमा) | १,२५६.४            | ५६.५                        | २०.३              | ३४.१    | ४४.५    |
| ११      | जम्मा सडक निर्माण                            | कि.मि.          | २९,७३१             | ७००                         | ७००               | ५००     | ५००     |
| १२      | सडक सञ्जालले जोडिएका स्थानीय तह              | संख्या          |                    |                             |                   |         |         |
| १३      | जनता आवास                                    | संख्या (हजारमा) | १०२                | २६.४                        | ३७                | ३५      | ४५      |
| १४      | इन्टरनेट ग्राहकको घनत्व                      | प्रतिशत         | ५२.७               | ५५                          | ६०                | ६५      | ७०      |
| १५      | खुद भर्ना दर                                 |                 |                    |                             |                   |         |         |
|         | क) आधारभूत तह (कक्षा १-५)                    | प्रतिशत         | ९७                 | ९७.२                        | ९७.५              | ९९      | ९९.५    |
|         | ख) आधारभूत तह (कक्षा १-८)                    | प्रतिशत         | ९१                 | ९२.३                        | ९४                | ९६      | ९७      |
|         | ग) माध्यमिक तह कक्षा (९-१२)                  | प्रतिशत         | ४२                 | ४३.९                        | ४५                | ५०      | ५३      |
| १६      | मातृ मृत्युदर (प्रति लाख जीवित जन्म)         | जना             | २३९                | २३५                         | १४५               | १२५     | १२५     |
| १७      | बाल मृत्युदर (प्रति हजार जीवित जन्म)         | जना             | ३९                 | ३९                          | ३०                | २८      | २६      |
| १८      | आधारभूतस्तरका खानेपानीबाट लाभान्वित जनसंख्या | प्रतिशत         | ८७०                | ९०.०                        | ९२.०              | ९३.०    | ९४.०    |

### मध्यमकालीन खर्च संरचनाको बजेट विनियोजन र प्रक्षेपण

संघीयता पूर्ण कार्यान्वयनको वर्ष भएकाले विगतमा केन्द्रीय सरकारले परिचालन गरेका कतिपय राजस्वका स्रोतहरूको परिचालन गर्ने अधिकार प्रदेश र स्थानीय तहमा हस्तान्तरण भइसकेको अवस्था छ। साथै केही राजस्व संघले संकलन गरेतापनि प्रदेश र स्थानीय तहमा बाँडफाँट गर्नुपर्ने व्यवस्था छ। संघीय सरकारको स्रोत आँकलन तथा बजेट अनुमान एवम् प्रक्षेपण गर्दा देहायका आधारहरू अबलम्बन गरिएको छ।

- राजस्वका शीर्षकहरूमध्ये घर जग्गा रजिष्ट्रेशन, सवारी साधन दस्तुर तथा घर बहाल कर प्रदेश र स्थानीय तहको अधिकार क्षेत्रमा गएकाले आगामी आर्थिक वर्षदेखि प्रदेश र स्थानीय तहमा परिचालन हुने उल्लेखित कर राजस्व घटाई विगतमा परिचालन हुँदै आएको मध्ये बाँकी राजस्व रकमलाई आधार मानी संघबाट संकलन हुने राजस्वका रूपमा प्रक्षेपण गरिएको।

२. अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ अनुसार संघीय सरकारले संकलन गर्ने अधिकार क्षेत्रमा रहेको मूल्य अभिवृद्धि कर र आन्तरिक अन्तःशुल्क रकम संघीय विभाज्य कोषमा रहने र यस्तो रकमको १५ प्रतिशत प्रदेश तहमा र १५ प्रतिशत स्थानीय तहमा बाँडफाँट भई बाँकी ७० प्रतिशत रकम मात्र संघमा रहने । यसैगरी रोयल्टी (पर्वतारोहण, विद्युत, वन, खानी तथा खनिज, पानी तथा अन्य प्राकृतिक स्रोत) बाट संकलन भएको राजस्व समेत सो कोषमा जम्मा हुने, सो रकमको ५० प्रतिशत मात्र संघले प्राप्त गर्ने तथा २५ प्रतिशत सम्बन्धित प्रदेशमा तथा २५ प्रतिशत सम्बन्धित स्थानीय तहमा बाँडफाँट हुने भएकाले माथि १ मा उल्लेखित कुल प्रक्षेपित राजस्वबाट प्रदेश र स्थानीय तहलाई बाँडफाँट हुने रकम घटाएर मात्र संघको राजस्व अनुमान एकिकन गरिएको छ ।
३. वैदेशिक सहायता अनुमान गर्दा दातृ राष्ट्र वा संस्थासँग भएको सम्झौता वा प्रतिबद्धतालाई मात्र समावेश गरिएको ।
४. संघीय सरकारले लिनसक्ने आन्तरिक ऋण कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको ५ प्रतिशतको सीमामा राखिएको ।

चालु आर्थिक वर्षको बजेटमा स्रोत यकीन नभएका थुप्रै कार्यक्रमहरूका लागि दिइएको स्रोतको सुनिश्चितता तथा अघिल्लो वर्षको मौज्जातबाट व्यहोरिने भनी चालु आर्थिक वर्षको बजेटमा अनुमान गरिएको रू. १०२ अर्ब उपलब्ध नहुने भएकाले चालु आर्थिक वर्षकै बजेट तथा सोबाट आगामी आर्थिक वर्षमा पर्ने प्रभाव र नयाँ सिर्जित दायित्वहरूका कारण चालु खर्चमा पर्ने चाप जस्ता प्रमुख चुनौती रहेका छन् । साथै, संघीयता कार्यान्वयनले गति लिइसकेको भएता पनि प्रशासनिक पुनर्संरचना सम्बन्धी काम बाँकी नै रहेकाले वित्तीय जोखिम बढ्न सक्ने अवस्था रहेको छ ।



## अनुसूची - १७

# व्यावसायिक चिया खेती सर्वेक्षणको नतिजा

जिल्ला अनुसार चिया बगान, खेती गरिएको क्षेत्रफल र उत्पादन

| जिल्ला        | संख्या                       |                            | जम्मा | क्षेत्रफल<br>(हे.) | हरियो पत्ति<br>उत्पादन<br>(मे.टन) | बोट संख्या                  |                              |
|---------------|------------------------------|----------------------------|-------|--------------------|-----------------------------------|-----------------------------|------------------------------|
|               | व्यक्तिगत<br>(साना<br>किसान) | संस्थागत<br>(ठूला<br>बगान) |       |                    |                                   | हरियो पत्ति<br>उत्पादन हुने | हरियो पत्ति<br>उत्पादन नहुने |
| ताप्लेजुङ्ग   | १७                           | १                          | १८    | २८.३१              | १६                                | ६९२५०                       | १४३५००                       |
| संखुवासभा     | ११२                          | २                          | ११४   | ८०.६१              | ५८                                | ३१३५५०                      | ५५८१८०                       |
| भोजपुर        | २२                           | १                          | २३    | ९६.६६              | २                                 | १९९००                       | १२१९३००                      |
| धनकुटा        | ३१२                          | ६                          | ३१८   | १५९.६९             | ३०९                               | २६६७४८४                     | १४००                         |
| तेह्रथुम      | ३१६                          | १                          | ३१७   | ११६.७४             | १५१                               | १२३९७८२                     | ३८६५८                        |
| पाँचथर        | ७६७                          | ४                          | ७७२   | ६७४.५०             | ७६५                               | ६६८२०५३                     | ५५६०००                       |
| ईलाम          | ५५८२                         | १६                         | ५५९८  | ३३९.३१७            | १५९७१                             | ४०५८१३१८                    | १२९३१५३                      |
| भ्र्पा        | १५३२                         | ६९                         | १६०१  | ७१९.१५             | ८२५१७                             | ६३५४८५७४                    | ७२००००                       |
| मोरङ्ग        | ३५                           | ०                          | ३५    | २५.००              | १५                                | १२६१५०                      | १८५३००                       |
| दोलखा         | ३०                           | २                          | ३१    | ४२.५१              | ६                                 | ३२१३२०                      | ११३१७०                       |
| सिन्धुपाल्चोक | ०                            | १                          | १     | ७६.४६              | ०                                 | ०                           | १०८५१६०                      |
| नुवाकोट       | २२६                          | २                          | २२८   | ८१.५५              | २२०                               | ६९०८५१                      | ३१४८८५                       |
| ललितपुर       | ११६                          | ०                          | ११६   | ३८.९७              | ४४                                | ३६१६५६                      | १६३१९०                       |
| रामेछाप       | ६०                           | ३                          | ६३    | ५७.२०              | ७                                 | १२९२४०                      | ३३१७००                       |
| जम्मा         | ९१२७                         | १०८                        | ९२३६  | १२०६७              | १०००८०                            | ११६७५११२८                   | ६७२३५९६                      |

# आ.व. २०७४/७५ को राष्ट्रिय लेखा

Table 1: Gross Value Added by Industrial Division (at current prices)

| Industrial Classification                                     | 2057/58<br>2000/01 | 2067/68<br>2010/11 | 2068/69<br>2011/12 | 2069/70<br>2012/13 | 2070/71<br>2013/14 | 2071/72<br>2014/15 | 2072/73<br>2015/16 | 2073/74R<br>2016/17 | 2074/75P<br>2017/18 |
|---|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|---------------------|---------------------|
| A Agriculture and forestry                                    | 153781             | 473270             | 500465             | 527869             | 585951             | 616572             | 645697             | 681062              | 737322              |
| B Fishing   | 1844               | 4879               | 5819               | 6646               | 8659               | 9328               | 11082              | 12377               | 13438               |
| C Mining and Quarrying  | 1817               | 6956               | 8166               | 9569               | 11003              | 11875              | 11630              | 14233               | 16872               |
| D Manufacturing   | 38409              | 80531              | 91164              | 100312             | 112995             | 118980             | 120967             | 133862              | 146589              |
| E Electricity gas and water                                   | 7750               | 16002              | 17518              | 20553              | 21362              | 22051              | 21180              | 30623               | 32407               |
| F Construction  | 25585              | 89356              | 98539              | 109488             | 126364             | 139289             | 141318             | 175300              | 206737              |
| G Wholesale and retail trade                                  | 69928              | 179306             | 198164             | 229872             | 271573             | 289566             | 293248             | 323827              | 360769              |
| H Hotels and restaurants                                      | 8459               | 21057              | 25307              | 29886              | 35309              | 40479              | 41459              | 47728               | 55679               |
| I Transport, storage and communications                       | 31425              | 105834             | 122354             | 140735             | 155765             | 164976             | 167405             | 178296              | 216891              |
| J Financial intermediation                                    | 11455              | 50111              | 58529              | 62183              | 79363              | 91406              | 107758             | 135375              | 172294              |
| K Real estate, renting and business activities                | 35267              | 106236             | 123213             | 139157             | 152984             | 166947             | 191325             | 267392              | 309360              |
| L Public Administration and defence                           | 5288               | 24830              | 30547              | 32236              | 44324              | 51422              | 52720              | 71421               | 78252               |
| M Education   | 17372              | 67739              | 81797              | 91566              | 115254             | 129363             | 141613             | 173589              | 195090              |
| N Health and social work                                      | 4178               | 17087              | 20431              | 22327              | 27725              | 32929              | 33708              | 42174               | 45724               |
| O Other community, social and personal service activities     | 12896              | 46947              | 55461              | 58026              | 73541              | 86521              | 96545              | 123773              | 133296              |
| <b>Total GVA including FISIM</b>                              | <b>425,454</b>     | <b>1,290,142</b>   | <b>1,437,474</b>   | <b>1,580,426</b>   | <b>1,822,173</b>   | <b>1,971,706</b>   | <b>2,077,653</b>   | <b>2,411,031</b>    | <b>2,720,722</b>    |
| Financial Intermediation Services Indirectly Measured (FISIM) | 12026              | 41660              | 49992              | 55205              | 63435              | 72616              | 84093              | 103445              | 119783              |
| <b>Gross Domestic Product (GDP) at basic prices</b>           | <b>413,428</b>     | <b>1,248,482</b>   | <b>1,387,482</b>   | <b>1,525,221</b>   | <b>1,758,738</b>   | <b>1,899,089</b>   | <b>1,993,560</b>   | <b>2,307,586</b>    | <b>2,600,939</b>    |
| Taxes less subsidies on products                              | 28090              | 118472             | 139862             | 169790             | 205802             | 231060             | 259603             | 335010              | 406307              |
| Taxes on Products   |                    | 119482             | 141011             | 171004             | 207111             | 232602             | 260956             | 336607              | 408538              |
| Subsidies on Products   |                    | 1010               | 1149               | 1215               | 1309               | 1541               | 1353               | 1597                | 2231                |
| <b>Gross Domestic Product (GDP)</b>                           | <b>441,519</b>     | <b>1,366,954</b>   | <b>1,527,344</b>   | <b>1,695,011</b>   | <b>1,964,540</b>   | <b>2,130,150</b>   | <b>2,253,163</b>   | <b>2,642,595</b>    | <b>3,007,246</b>    |

R = Revised/P = Preliminary

April 25, 2018

**Table 2: Annual Growth Rate of GDP by Economic Activities (at constant prices)**

| Industrial Classification                                     | 2057/58 | 2067/68 | 2068/69 | 2069/70 | 2070/71 | 2071/72 | 2072/73 | 2073/74R | 2074/75P       |
|---|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|----------|----------------|
|   | 2000/01 | 2010/11 | 2011/12 | 2012/13 | 2013/14 | 2014/15 | 2015/16 | 2016/17  | 2017/18        |
| A Agriculture and forestry                                    | 4.49    | 4.58    | 1.07    | 4.54    | 1.00    | 0.01    | 5.14    | 2.72     | 7.42           |
| B Fishing   | 5.88    | 7.53    | 2.71    | 4.90    | 7.09    | 11.76   | 8.02    | 13.74    | 10.46          |
| C Mining and quarrying  | 2.01    | 5.03    | 1.98    | 11.85   | 2.34    | -2.79   | -8.00   | 9.70     | 8.04           |
| D Manufacturing   | 4.05    | 3.63    | 3.72    | 6.28    | 0.37    | -8.00   | 9.70    | 20.52    | 5.82           |
| E Electricity gas and water                                   | 4.43    | 8.30    | 0.28    | 3.27    | 0.78    | -7.59   | 12.43   | 9.61     | 10.64          |
| F Construction  | 4.79    | 0.22    | 2.45    | 9.08    | 2.85    | -4.36   | -2.16   | 9.61     | 9.06           |
| G Wholesale and retail trade                                  | 1.41    | 3.50    | 7.25    | 10.89   | 2.42    | -2.16   | 9.61    | 7.33     | 9.77           |
| H Hotels and restaurants                                      | 6.20    | 7.38    | 5.50    | 6.77    | 3.33    | 2.02    | 6.64    | 9.09     | 6.38           |
| I Transport, storage and communications                       | 5.21    | 8.10    | 7.65    | 5.24    | 6.23    | 2.91    | 8.55    | 3.72     | 5.24           |
| J Financial intermediation                                    | 3.30    | 3.47    | -0.91   | 3.70    | 2.91    | 0.77    | 3.72    | 9.06     | 9.57           |
| K Real estate, renting and business activities                | 2.25    | 2.97    | 5.19    | 3.64    | 0.77    | 8.84    | 2.52    | 6.55     | 4.83           |
| L Public administration and defence                           | 3.85    | 3.67    | 5.53    | 5.04    | 8.84    | 5.09    | 7.33    | 7.34     | 6.32           |
| M Education   | 3.01    | 5.58    | 5.92    | 4.81    | 5.09    | 11.37   | 3.25    | 5.55     | 5.54           |
| N Health and social work                                      | 5.02    | 6.43    | 4.48    | 4.50    | 4.77    | 12.52   | 5.55    | 5.20     | 2.82           |
| O Other community, social and personal service activities     | 7.11    | 6.36    | 4.79    | 4.77    | 4.77    | 1.10    | 0.23    | 8.50     | 7.10           |
| Agriculture, Forestry and Fishing                             | 4.51    | 4.63    | 1.10    | 4.55    | 6.41    | 3.89    | 0.38    | 7.40     | 5.71           |
| Non-Agriculture   | 3.64    | 4.53    | 5.01    | 6.41    | 5.77    | 2.95    | 0.33    | 7.67     | 1.57           |
| Total GVA including FISIM                                     | 3.94    | 4.57    | 3.64    | 5.77    | 7.10    | 2.41    | 3.27    | 7.39     | 5.89           |
| Financial Intermediation Services Indirectly Measured (FISIM) | 6.14    | 3.50    | 0.72    | 7.10    | 5.72    | 2.97    | 0.20    | 12.80    | 9.87           |
| Gross Domestic Product (GDP) at basic prices                  | 3.85    | 4.61    | 3.76    | 5.72    | 8.88    | 6.93    | 4.40    | 7.91     | 6.29           |
| Taxes less subsidies on products                              | -1.16   | 6.68    | 8.16    | 8.88    | 5.99    | 3.32    | 0.59    | 7.91     | 6.29           |
| Gross Domestic Product (GDP)                                  | 3.42    | 4.78    | 4.13    | 5.99    | 3.32    | 0.59    | 7.91    | 7.91     | 6.29           |
| R = Revised/P = Preliminary                                   |         |         |         |         |         |         |         |          | April 25, 2018 |

NSIC categories P and Q are included in category O.

## अनुसूची - १८

# नेपाल प्रामाणिक भू-संकेत (Nepal Standard Geo-Codes)

### 1. Code for states

| State   | प्रदेश   | Code |
|---------|----------|------|
| State 1 | प्रदेश १ | 1    |
| State 2 | प्रदेश २ | 2    |
| State 3 | प्रदेश ३ | 3    |
| State 4 | प्रदेश ४ | 4    |
| State 5 | प्रदेश ५ | 5    |
| State 6 | प्रदेश ६ | 6    |
| State 7 | प्रदेश ७ | 7    |

### 2. Code for districts

| S.N. | District      | जिल्ला     | Code |
|------|---------------|------------|------|
| 1    | TAPLEJUNG     | ताप्लेजुङ  | 101  |
| 2    | SANKHUWASABHA | संखुवासभा  | 102  |
| 3    | SOLUKHumbu    | सोलुखुम्बु | 103  |
| 4    | OKHALDHUNGA   | ओखलढुङ्गा  | 104  |
| 5    | KHOTANG       | खोटाङ      | 105  |
| 6    | BHOJPUR       | भोजपुर     | 106  |
| 7    | DHANKUTA      | धनकुटा     | 107  |
| 8    | TERHATHUM     | तेह्रथुम   | 108  |
| 9    | PANCHTHAR     | पाँचथर     | 109  |
| 10   | ILAM          | इलाम       | 110  |
| 11   | JHAPA         | झापा       | 111  |
| 12   | MORANG        | मोरङ       | 112  |
| 13   | SUNSARI       | सुनसरी     | 113  |
| 14   | UDAYAPUR      | उदयपुर     | 114  |

| S.N. | District         | जिल्ला                          | Code |
|------|------------------|---------------------------------|------|
| 15   | SAPTARI          | सप्तरी                          | 201  |
| 16   | SIRAHA           | सिरहा                           | 202  |
| 17   | DHANUSA          | धनुषा                           | 203  |
| 18   | MAHOTTARI        | महोत्तरी                        | 204  |
| 19   | SARLAHI          | सर्लाही                         | 205  |
| 20   | RAUTAHAHAT       | रौतहट                           | 206  |
| 21   | BARA             | बारा                            | 207  |
| 22   | PARSA            | पर्सा                           | 208  |
| 23   | DOLAKHA          | दोलखा                           | 301  |
| 24   | SINDHUPALCHOK    | सिन्धुपाल्चोक                   | 302  |
| 25   | RASUWA           | रसुवा                           | 303  |
| 26   | DHADING          | धादिङ                           | 304  |
| 27   | NUWAKOT          | नुवाकोट                         | 305  |
| 28   | KATHMANDU        | काठमाडौं                        | 306  |
| 29   | BHAKTAPUR        | भक्तपुर                         | 307  |
| 30   | LALITPUR         | ललितपुर                         | 308  |
| 31   | KAVREPALANCHOK   | काभ्रेपलाञ्चोक                  | 309  |
| 32   | RAMECHHAP        | रामेछाप                         | 310  |
| 33   | SINDHULI         | सिन्धुली                        | 311  |
| 34   | MAKWANPUR        | मकवानपुर                        | 312  |
| 35   | CHITAWAN         | चितवन                           | 313  |
| 36   | GORKHA           | गोरखा                           | 401  |
| 37   | MANANG           | मनाङ                            | 402  |
| 38   | MUSTANG          | मुस्ताङ                         | 403  |
| 39   | MYAGDI           | म्याग्दी                        | 404  |
| 40   | KASKI            | कास्की                          | 405  |
| 41   | LAMJUNG          | लमजुङ                           | 406  |
| 42   | TANAHU           | तनहुँ                           | 407  |
| 43   | NAWALPARASI EAST | नवलपरासी (बर्दघाट सुस्ता पूर्व) | 408  |
| 44   | SYANGJA          | स्याङजा                         | 409  |
| 45   | PARBAT           | पर्वत                           | 410  |
| 46   | BAGLUNG          | बागलुङ                          | 411  |

| S.N. | District         | जिल्ला                           | Code |
|------|------------------|----------------------------------|------|
| 47   | RUKUM EAST       | रुकुम (पूर्वी भाग)               | 501  |
| 48   | ROLPA            | रोल्पा                           | 502  |
| 49   | PYUTHAN          | प्यूठान                          | 503  |
| 50   | GULMI            | गुल्मी                           | 504  |
| 51   | ARGHAKHANCHI     | अर्घाखाँची                       | 505  |
| 52   | PALPA            | पाल्पा                           | 506  |
| 53   | NAWALPARASI WEST | नवलपरासी (बर्दघाट सुस्ता पश्चिम) | 507  |
| 54   | RUPANDEHI        | रुपन्देही                        | 508  |
| 55   | KAPILBASTU       | कपिलवस्तु                        | 509  |
| 56   | DANG             | दाङ                              | 510  |
| 57   | BANKE            | बाँके                            | 511  |
| 58   | BARDIYA          | बर्दिया                          | 512  |
| 59   | DOLPA            | डोल्पा                           | 601  |
| 60   | MUGU             | मुगु                             | 602  |
| 61   | HUMLA            | हुम्ला                           | 603  |
| 62   | JUMLA            | जुम्ला                           | 604  |
| 63   | KALIKOT          | कालिकोट                          | 605  |
| 64   | DAILEKH          | दैलेख                            | 606  |
| 65   | JAJARKOT         | जाजरकोट                          | 607  |
| 66   | RUKUM WEST       | रुकुम (पश्चिम भाग)               | 608  |
| 67   | SALYAN           | सल्यान                           | 609  |
| 68   | SURKHET          | सुर्खेत                          | 610  |
| 69   | BAJURA           | बाजुरा                           | 701  |
| 70   | BAJHANG          | बझाङ                             | 702  |
| 71   | DARCHULA         | दार्चुला                         | 703  |
| 72   | BAITADI          | बाँतेडी                          | 704  |
| 73   | DADEL DHURA      | डडेल्धुरा                        | 705  |
| 74   | DOTI             | डोटी                             | 706  |
| 75   | ACHHAM           | अछाम                             | 707  |
| 76   | KAILALI          | कैलाली                           | 708  |
| 77   | KANCHANPUR       | कञ्चनपुर                         | 709  |

पुनश्च : गाउँपालिका/नगरपालिकाको संकेत केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागको वेबसाईटमा राखिएको छ । <http://cbs=gov=np/GCSDLB2074>

## अनुसूची - २०

## बिनियोजित बजेट तथा खर्चको अवस्था

## १. बजेट तथा खर्च

आर्थिक वर्ष २०७४।७५ मा यस राष्ट्रिय योजना आयोगको सचिवालय र अन्तरगतका लागी कुल बिनियोजित बजेट रु.५७,०९,७८,०००।- मध्ये चालु तर्फ रु.५१,४९,०१,०००।- र पुँजिगत तर्फ रु.५,६०,७७,०००।- रहेको थियो । उक्त बजेटमा यस सचिवालय तथा अन्तरगतमा भएको कार्यालयगत बिनियोजन तथा खर्चको विवरण तलको तालिकामा प्रस्तुत गरीएको छ ।

## राष्ट्रिय योजना आयोग तथा अन्तर्गतका कार्यालयहरूको बजेट तथा खर्चको अवस्था (रकम रु.हजारमा)

| खर्चको प्रकार | कार्यक्रमको नाम   | बिनियोजित बजेट | खर्च     | खर्च प्रतिशत | बजेट बाँकी |
|---------------|---|----------------|----------|--------------|------------|
| चालु          | रा.यो.आ. सचिवालय  | २,२३,१९४       | १,५५,१४४ | ७०           | ६८,०५०     |
| पुँजिगत       | रा.यो.आ. सचिवालय  | ३६,०२१         | १२,४०३   | ३४           | २३,६१८     |
| अर्थ बजेट     | रा.यो.आ. सचिवालय  | ६,१०७          | ६,१०७    | १००          | ०          |
| चालु          | राष्ट्रिय विकास स्वयंसेवक सेवा  | ७१,५७४         | ५७,१८७   | ८०           | १४,३८७     |
| पुँजिगत       | राष्ट्रिय विकास स्वयंसेवक सेवा  | १,४२५          | ४९५      | ३५           | ९३०        |
| चालु          | केन्द्रिय तथ्यांक विभाग तथा अन्तरगतका जिल्ला तथ्यांक कार्यालयहरू समेत | २,२०,१३३       | १,५४,७०७ | ७०           | ६५,४२६     |
| पुँजिगत       | केन्द्रिय तथ्यांक विभाग तथा अन्तरगतका जिल्ला तथ्यांक कार्यालयहरू समेत | १८,६३१         | १६,२६३   | ८७           | २,३६८      |

## २. राजश्व तथा धरौटी

आर्थिक वर्ष २०७४।७५ मा यस राष्ट्रिय योजना आयोगको सचिवालयको कुल राजश्व आम्दानी रु.२,२२,५४८।- भएको छ । उक्त राजश्व यस आयोगबाट प्रकाशित विभिन्न पुस्तक विक्रीबाट प्राप्त आम्दानी, प्रशासनिक सेवा शुल्क, दण्ड जरीवाना तथा विगतको वेरुजु असुली बाट प्राप्त भएको हो । आर्थिक वर्ष २०७५ असार मसान्तमा यस आयोगको कुल धरौटी मौज्जात रु.२४,७५,५७६।-रहेको छ ।

### ३. बेरुजु

यस आयोग र अन्तरगत कार्यालयहरूको २०७४ असार मसान्त सम्म बाँकी बेरुजु अंक रु १,८०,९२,०००।- रहेकोमा आ.व. २०७४।०७५ मा जम्मा रु १,०९,७५,०००।- करीव ६१ प्रतिशत बेरुजु फछ्यौट गरी बाकी ७१,१७,०००।- रहेकोमा आ.व. २०७३।०७४ को लेखापरिक्षण हुँदा रु. ४९,२७,०००।- थप भई यस चालु आव २०७५/०७६ मा फछ्यौट गर्न बाँकी बेरुजु अंक रु १,२०,४४,०००।- रहेको छ ।



## अनुसूची - २१

## आयोगबाट भएका निर्णयहरू

## मिति २०७४/०४/१५

१. स्थानीय तहका नवनिर्वाचित प्रतिनिधिहरूलाई आवधिक तथा वार्षिक योजना तर्जुमा एवम् व्यवस्थापन सम्बन्धी प्रशिक्षण कार्यक्रमको संयोजन तथा तालिमका विषयवस्तुलगायतका पूर्वतयारीका लागि गठित कार्यदलले तयार गरेको अवधारणापत्र प्रस्तुति तथा छलफल गरियो ।
२. स्थानीय तहका नवनिर्वाचित प्रतिनिधिहरूका लागि संचालन गरिने तालिम कार्यक्रमलाई बढी भन्दा बढी उपयोगी एवम् फलदायी बनाउन बैठकमा प्राप्त सुझाव तथा विषयवस्तुहरूलाई समेटि अवधारणा पत्रमा प्रस्तुत गरिएभन्ने विशेषज्ञ समेतको सेवा लिई स्पष्ट कार्ययोजनासहित संचालन गर्ने । तालिम कार्यक्रमको संयोजन यसै कार्यदलबाट गरी सोको प्रगति नियमितरूपमा आयोगलाई उपलब्ध गराउने ।
३. स्थानीय तहका नवनिर्वाचित पदाधिकारी तथा त्यहाँ खटिएका कर्मचारीहरूको तालिम सम्बन्धी आवश्यकताको पहिचान र तालिममा समावेश गर्नुपर्ने विषयवस्तुका सम्बन्धमा सचिवालयका कर्मचारीहरूलाई केही जिल्लामा खटाई सुझाव संकलन गर्ने ।
४. स्थानीय तहमा सञ्चालन हुने कार्यक्रम तथा आयोजनाहरूको सार्वजनिक अन्तरक्रिया कार्यक्रमका लागि आयोगबाटै एकीकृत निर्देशिका तयार गर्ने । यस्तो निर्देशिकाको मस्यौदा कृषि, वन तथा स्थानीय विकास महाशाखाले दुई महिनाभित्र तयार गर्ने ।
५. नेपाल सरकारका मुख्य सचिव तथा राष्ट्रिय योजना आयोगका पदेन सदस्य श्री राजेन्द्रकिशोर क्षेत्रीलाई वधाई ज्ञापन गर्दै आयोगमा स्वागत गरियो साथै उहाँको सफल कार्यकालका लागि शुभकामना प्रदान गरियो ।

## मिति २०७४/०४/२२

१. आयोगका नवनियुक्त माननीय उपाध्यक्ष डा. स्वर्णिम बाग्लेलाई आयोगका सदस्यहरू तथा सदस्य सचिवबाट हार्दिक बधाइ ज्ञापन गर्दै सफल कार्यकालको शुभकामना दिइयो । साथै, आयोगका निवर्तमान उपाध्यक्ष डा.मीनबहादुर श्रेष्ठलाई उहाँले गर्नुभएको सेवा तथा पुऱ्याउनु भएको योगदानका लागि धन्यवाद ज्ञापन गरियो ।
२. संघीय संरचना अनुकूल हुनेगरी तीनै तहका सरकारका योजना प्रक्रिया र तहगत योजनाहरूबीचको अन्तरसम्बन्धको स्वरूप निर्धारण गर्ने । साथै, विगतमा भएका कार्यहरूलाई

संश्लेषण गर्दै योजना आयोग तथा आयोगको सचिवालयको पुनःसंरचना तीन महिनाभित्र टुंग्याउने ।

३. नेपाललाई अल्पविकसित राष्ट्रहरूको समूहबाट स्तरोन्नति र सन् २०३० सम्म मध्यम आय भएको राष्ट्रको स्तरमा पुऱ्याउने गरी सहभागितामूलक हिसाबले दीर्घकालीन विकासको सोच तथा योजना २०७४ मार्ग मसान्तभित्र मस्यौदा गर्ने ।
४. मुलुकको आर्थिक सम्बृद्धिका निमित्त आवश्यक पर्ने रणनीतिक पूर्वाधार र उत्पादनमूलक क्षेत्रमा स्वदेशी तथा विदेशी लगानीका लागि अनुकूल वातावरण सिर्जनाका लागि नीतिगत, कानुनी तथा अन्य आर्थिक सुधारका कार्यक्रमहरू शीघ्र अगाडि बढाउने ।

### मिति २०७४/०४/२३

१. मिति २०७४ श्रावण २८ गतेदेखि देशको विभिन्न भागमा परेको अविरल वर्षाको कारण पुगेको क्षतिको सूचना विभिन्न मन्त्रालय तथा निकायहरूबाट संकलन गरी तयार गरेको विवरण बैठकमा जानकारी गराइयो ।
२. आयोगका माननीय उपाध्यक्षज्यूबाट राष्ट्रिय योजना आयोगका कृयाकलापहरूलाई प्रभावकारी बनाउन सम्माननीय प्रधानमन्त्रीज्यूसमक्ष प्रस्तुत गर्नुभएको सुधारका क्षेत्रहरू, सम्माननीय प्रधानमन्त्रीज्यूबाट माननीय उपाध्यक्षलाई प्राप्त प्रत्यायोजित अधिकार एवम् निर्देशन र सम्माननीय प्रधानमन्त्रीज्यूको आसन्न भारत भ्रमणका बारेमा माननीय उपाध्यक्षज्यूले आयोगलाई जानकारी गराउनु भयो ।
३. केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग र राष्ट्रिय विकास स्वयंसेवक सेवाको तत्काल सुधार कार्ययोजनाको मस्यौदा आयोगको आगामी बैठकमा पेश गर्न लगाउने ।
४. २०७४ भाद्र महिनामा हुने मन्त्रालयस्तरीय विकास समस्या समाधान समिति र राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान उपसमिति तथा समितिका बैठकहरूको तयारीका सम्बन्धमा अनुगमन तथा मूल्याङ्कन महाशाखा प्रमुखबाट आयोगलाई जानकारी गराइयो । मन्त्रालयस्तरका विकास समस्या समाधान समितिका बैठकहरूमा आवश्यक गृहकार्य सहित सहभागी हुन र राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान उपसमिति तथा समितिका बैठकहरूमा सबै माननीय सदस्यहरू अनिवार्यरूपमा सहभागी हुने ।
५. कृषि, वन तथा स्थानीय महाशाखाबाट पेश हुन आएको खाद्य हरियाली शहरसम्बन्धी निर्देशिका/कार्यविधिहरूलाई नेपाल सरकार (मन्त्रिपरिषद्) को स्वीकृतिका लागि प्रस्तुत गर्न सहरी विकास मन्त्रालयमा पठाउने । उक्त निर्देशिका/कार्यविधि मन्त्रिपरिषद्बाट पारित भएपछि स्थानीय तहसँग आवश्यक समन्वय गरी सहरी विकास मन्त्रालयमार्फत कार्यान्वयनमा लैजाने ।
६. भौतिक पूर्वाधार तथा निजीक्षेत्र महाशाखाबाट प्राप्त हुन आएको जलविद्युत विकाससँग सम्बन्धित उत्पादन, प्रसारण तथा वितरण आयोजनाहरूलाई राष्ट्रिय प्राथमिकता प्राप्त आयोजनाको रूपमा लिने । साथै, राष्ट्रिय प्राथमिकता प्राप्त आयोजनाको लागि राष्ट्रिय

वन क्षेत्र प्रयोग गर्नेसम्बन्धी कार्यविधिको प्रयोजनका निमित्त आयोजनागत रूपमा राष्ट्रिय प्राथमिकता प्राप्त आयोजना हो भनी सिफारिस गर्नुको सट्टा निजी प्रवर्द्धकका साथै नेपाल सरकारबाट भएका जलविद्युत विकाससँग सम्बन्धित सबै उत्पादन, प्रसारण तथा वितरण आयोजनाहरूलाई एकमुष्ट रूपमा राष्ट्रिय प्राथमिकता प्राप्त आयोजना भित्र पर्ने भनी उर्जा एवम् वन तथा भूसंरक्षण मन्त्रालयलाई लेखी पठाउने ।

७. लगानी बोर्डको कार्यालयबाट प्राप्त आयोजना बैंक तथा प्रोजेक्ट आइडिया नोटमा भएका आयोजनाहरूको सम्भाव्यता अध्ययनका लागि आयोगको धारणा माग भएको सम्बन्धमा भौतिक पूर्वाधार तथा निजी क्षेत्र महाशाखाले आयोगका सबै माननीय सदस्यहरू तथा विषयगत महाशाखाहरूबाट जानकारी लिई उक्त बोर्डमा तीन दिनभित्र एकीकृत राय पठाउने । प्रस्तावित आयोजनाहरूका बारेमा आयोगको राय पठाउँदा चौधौं योजना, सम्बन्धित विषय क्षेत्रगत नीति तथा कार्यक्रम र राष्ट्रिय आवश्यकता एवम् प्राथमिकतालाई आधार लिने ।

### मिति २०७४/०५/०५

१. भौतिक पूर्वाधार तथा निजी क्षेत्र महाशाखाबाट प्राप्त हुन आएको "Optimal Distributed Generation resource placement planning with Grid interconnection considering energy access to all with participation of Local Level Governments" विषयक अध्ययन गराउने सम्बन्धमा सम्बन्धित महाशाखाले विस्तृत कार्यशर्त तयार गरी उद्योग, वातावरण तथा प्रशासन महाशाखासँगको समन्वयमा कार्य अधि बढाउने,
२. उद्योग, वातावरण तथा प्रशासन महाशाखाबाट प्राप्त हुन आएको "आयोजनाको राष्ट्रिय प्राथमिकता निर्धारणसम्बन्धी मापदण्ड, २०७४" का सम्बन्धमा बैठकमा प्राप्त हुन आएका सुझावहरूलाई समेटी आवश्यक परिमार्जनसहित आगामी बैठकमा पेश गर्ने,
३. नेपाल सरकारको राष्ट्रिय विकासका नीति तथा कार्यक्रमका साथै अन्तर्राष्ट्रियस्तरका विकाससँग सम्बन्धित संलग्नता तथा प्रतिवद्धतासम्बन्धी सूचना तथा तथ्याङ्कहरू नवीनतम सूचना प्रविधिको प्रयोग गरी केन्द्रीय भण्डार (Repository) त्यसलाई प्रयोगकर्तामैत्री बनाउन नवीनतम सोच, सृजनात्मक अवधारणा र सुधारात्मक कार्यसम्बन्धी विज्ञता भएका विभिन्न संघ संस्था वा व्यक्तिहरूबाट प्राप्त हुने प्रस्तावका लागि आयोगले प्रोत्साहन र विकास गर्न लगाउने,
४. चौधौं योजनाको अंग्रेजी भाषा अनुवाद, दिगो विकास लक्ष्यसम्बन्धी वेसलाईन प्रतिवेदन र दिगो विकास लक्ष्यकै आवश्यकता पहिचान तथा लागतसम्बन्धी प्रतिवेदनका मस्यौदाहरूमा आ-आफ्नो विषय क्षेत्रगत अंशहरूलाई सम्बन्धित माननीय सदस्यहरूले गम्भिरतापूर्वक हेरी रूप दिने ।

### मिति २०७४/०५/१५

१. नेपालमा आगामी पाँच वर्षका लागि संयुक्त राष्ट्रसंघमार्फत हुने विकास सहायता सम्बन्धमा विकास रणनीतिलाई निर्देशित गर्ने संरचनासम्बन्धी नेपाल सरकार र संयुक्त राष्ट्र संघबीच

गरिने संयुक्त राष्ट्र संघीय विकास सहयोग रूपरेखा २०१८-२०२२ का विषयवस्तुहरूउपर विस्तृत छलफल गरियो । उक्त दस्तावेजमा राष्ट्रिय योजना आयोगको तर्फबाट आयोगका माननीय उपाध्यक्ष डा. स्वर्णिम वाग्लेले हस्ताक्षर गर्नेगरी स्वीकृति प्रदान गरियो ।

२. राष्ट्रिय योजना आयोगको सुधारसम्बन्धी विषयहरू तथा दीर्घकालीन सोच एवम् दिगो विकासको लक्ष्यसम्बन्धी आधारभूत प्रतिवेदन मस्यौदालगायतका विषयहरूमा अन्तक्रियात्मक छलफल गर्न आयोगका पदाधिकारीहरू, सचिवालयका महाशाखा प्रमुख, शाखा प्रमुखहरू एवम् विज्ञहरूसहितको मिति २०७४/०५/१९ र २० गते दुईदिने आवासीय कार्याशाला आयोजना गर्ने ।

### मिति २०७४/०५/१९

१. राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ४०औं बैठकमा छलफल तथा निर्णयका लागि प्रस्तुत गरिने विषयवस्तुहरूउपर विस्तृत छलफल गरी स्वीकृति प्रदान गरियो ।

### मिति २०७४/०५/२६

१. राष्ट्रिय योजना आयोगको पुनर्गठन सम्बन्धमा तयार भएको “राष्ट्रिय नीति तथा योजना आयोगको गठन तथा कार्य सञ्चालन आदेश, २०७४” बारे विस्तृत छलफल गरियो । उक्त गठन तथा कार्य सञ्चालन आदेश स्वीकृतिको प्रकृया अधि बढाउने ।
२. राष्ट्रिय स्वयंसेवक सेवालार्ई व्यवस्थितरूपमा सञ्चालन गर्नका लागि तयार गरिएको “स्वयंसेवक परिचालन कार्यविधि, २०७४” स्वीकृत गर्ने ।
३. आयोगका माननीय सदस्य डा. कृपासिन्धु प्रसादलाई मातृशोक परेको हुँदा समवेदना प्रकट गरियो ।
४. हालैको बाढीपिडित व्यक्तिहरूको सहयोगार्थ आयोगका पदाधिकारीहरूले आफ्नो तलबबाट देहायअनुसार हुने रकम सहयोग गर्ने ।
  - क. माननीय उपाध्यक्ष - ३० दिन बराबरको रकम ।
  - ख. माननीय सदस्यहरू - १५ दिन बराबरको रकम ।

### मिति २०७४/०५/२७

१. भौतिक पूर्वाधार महाशाखाबाट पेश हुन आएको 'Optimal Distributed Generation resource placement planning with Grid interconnection considering energy access to all with participation of Local Level Governments' विषयक अध्ययन कार्यका लागि तयार गरिएको कार्य क्षेत्रगत शर्त (Terms of Reference) स्वीकृत गर्ने । स्वीकृत कार्य क्षेत्रगत शर्तका आधारमा अध्ययन कार्य अधि बढाउने ।

२. उद्योग, पर्यटन तथा प्रशासन महाशाखाबाट पेश हुन आएको परिमार्जनसहितको “आयोजनाको राष्ट्रिय प्राथमिकता निर्धारणसम्बन्धी आधार, २०७४” स्वीकृत गर्ने ।
३. आगामी सन् २०३० सम्मको दीर्घकालीन सोच (Vision) तर्जुमाका सम्बन्धमा तयार भएको “Nepal 2030: Organizing Framework” का आधारमा माननीय उपाध्यक्षज्यूको नेतृत्वमा प्रारम्भिक लेखनको कार्य अघि बढाउने ।

### मिति २०७४/०६/०२

१. भौतिक पूर्वाधार महाशाखाबाट पेश हुन आएको “GIS for Decentralized Planning and Decision Support in Nepal” विषयक कार्यका लागि भौतिक पूर्वाधार हेर्नुहुने माननीय सदस्यको संयोजकत्वमा केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग, नापी विभाग, भूमिसुधार तथा व्यवस्थापन विभागका महानिर्देशकहरू, अन्य सरोकारवाला मन्त्रालयबाट सहसचिवस्तरको प्रतिनिधि, ICIMOD का प्रतिनिधि सदस्य र भौतिक पूर्वाधार महाशाखाका सहसचिव सदस्यसचिव रहने गरी एक निर्देशक समिति गठन गर्ने । प्रस्तुत कार्यका लागि आवश्यक पर्ने कार्य शर्त (Terms of Reference) तयार गर्ने लगायतका अन्य व्यवस्थापकीय कार्य सोही समितिले गर्ने ।
२. सन् २००८ देखि सार्क सदस्य राष्ट्रहरूको सहभागितामा प्रत्येक वर्ष आयोजना हुँदै आएको क्षेत्रीय विकास, आर्थिक एकीकरण तथा सहयोगका सम्भावनाहरूलाई अभिवृद्धि गर्ने साभा मञ्चका रूपमा रहेको दक्षिण एसिया आर्थिक सम्मेलन (South Asia Economic Summit – SAES) को दशौं संस्करण काठमाडौंमा १४-१६ नभेम्बर, २०१७ मा राष्ट्रिय योजना आयोगले आयोजना गर्ने । हाल निर्वाचन आचार संहिता लागू भएको सन्दर्भमा प्रस्तुत सम्मेलन आयोजनार्थ निर्वाचन आयोगको सहमति लिई आवश्यक तयारी अघि बढाउने ।
३. संघीय मामिला तथा स्थानीय विकास मन्त्रालयको सहकार्यमा केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागले तयार गरेको नेपाल स्ट्याण्डर्डस् जियो कोडिंग (Nepal Standards Geo-Coding) स्वीकृत गर्ने ।

### मिति २०७४/०६/०९

१. आयोगको मिति २०७४/०४/२२ को निर्णयानुसार आयोगबाट निर्धारित तत्काल सुधारसम्बन्धी कार्यहरूका सम्बन्धमा हालसम्म भएको प्रगतिको समीक्षा गरियो । उक्त कार्यहरू निर्दिष्ट समयभित्र सम्पन्न गर्न सम्बन्धित पदाधिकारी तथा सचिवालयलाई निर्देशन दिने ।
२. आसन्न विजया दशमी, दिपावली, नेपाल संवत् १९३८ तथा छठ पर्वको उपलक्ष्यमा नेपाल र नेपालीको सुख, शान्ति एवम् समृद्धिका लागि सम्पूर्ण पदाधिकारी, कर्मचारीहरू तथा शुभेच्छुकहरूमा हार्दिक मंगलमय शुभकामना प्रदान गरियो ।

### मिति २०७४/०६/२३

१. आयोगको मिति २०७४/०४/२२ को निर्णयानुसार आयोगबाट निर्धारित तत्काल सुधारसम्बन्धी कार्यहरूको हालसम्म भएको प्रगतिको समीक्षा गरियो । उक्त कार्यहरू निर्दिष्ट समयभित्र सम्पन्न गर्न सम्बन्धित पदाधिकारी तथा सचिवालयलाई निर्देशन दिने ।
२. कृषि, वन तथा स्थानीय विकास महाशाखाबाट पेश हुनआएको 'दीगो सहरी विकास सूचकाङ्क मापन सम्बन्धी निर्देशिका र कार्यविधि तर्जुमा तथा कुनै एक स्थानीय तहको दिगो विकास सूचकाङ्क मापन' विषयक परामर्श कार्यका लागि तयार गरिएको कार्य क्षेत्रगत शर्त (Terms of Reference) बमोजिम अध्ययन कार्य अधि बढाउने ।
३. सन् २००८ देखि सार्क सदस्य राष्ट्रहरूको सहभागितामा प्रत्येक वर्ष आयोजना हुँदै आएको क्षेत्रीय विकास, आर्थिक एकीकरण तथा सहयोगका सम्भावनाहरूलाई अभिवृद्धि गर्ने साभा मञ्चका रूपमा रहेको दक्षिण एसिया आर्थिक सम्मेलन (South Asia Economic Summit – SAES) को दशौं संस्करण काठमाडौंमा १४-१६ नोभेम्बर, २०१७ मा राष्ट्रिय योजना आयोगले आयोजना गर्ने सन्दर्भमा नेपाललगायत अन्य सदस्य राष्ट्रहरूबाट मन्त्रीस्तरका, उच्चपदस्थ सरकारी कर्मचारीहरू र गैरसरकारी तथा निजीक्षेत्रका विशिष्ट एवम् विज्ञसहित करिब १५०-२०० जना सहभागी हुने सार्क क्षेत्रीयस्तरको कार्यक्रम भएको हुँदा कार्यक्रम आयोजनास्थलको उपलब्धता, आवास एवम् खानपानलगायत व्यवस्थापकीय दृष्टिले हायात् रिजेन्सी काठमाडौं उपयुक्त हुनेहुँदा सो स्थानमा गर्ने ।
४. सो सम्मेलनका सहभागीहरूमध्ये मन्त्रीस्तरका प्रतिनिधिहरूलाई वाणिज्य मन्त्रालयबाट, सरकारी प्रतिनिधिहरूलाई राष्ट्रिय योजना आयोगको सचिवालयबाट र गैरसरकारी, नागरिक समाज तथा निजीक्षेत्रका प्रतिनिधिहरूलाई South Asia Watch on Trade, Economic and Environment (SAWTEE) बाट निमन्त्रणापत्र पठाउने । साथै, सम्मेलनमा सहभागीहुने विदेशी प्रतिनिधिहरूको भ्रमण खर्चका सम्बन्धमा भ्रमण खर्च (चौथो संशोधन) नियमावली, २०७२ बमोजिम मन्त्रीस्तरका प्रतिनिधिहरूलाई विजिनेसक्लास र अन्यका हकमा इकोनोमी क्लासको हवाईटिकट वा सोवापत लागेको खर्च सोधभर्ना दिनेमध्ये जुन प्रकृया उपयुक्त हुन्छ सोअनुसार खर्च व्यवस्थापन गर्ने ।

### मिति २०७४/०६/३०

१. श्रम तथा रोजगार मन्त्रालयबाट पेश हुनआएको राष्ट्रिय व्यवसायजन्य सुरक्षा र स्वास्थ्य नीति, २०७३ मा देहायबमोजिम परिमार्जन गरी स्वीकृति प्रक्रिया अधि बढाउन उक्त मन्त्रालयमा पठाउने ।
- (क) नीतिको लेखनको ढाँचालाई परिमार्जन गरी निरीक्षण, कानूनी सुधार, क्षमता अभिवृद्धि र सहकार्य तथा समन्वय गरी चार वटा रणनीतिहरूअन्तर्गत कार्यनीतिहरूलाई समायोजन गर्ने ।

- (ख) नीतिमा विभिन्न संगठनात्मक संरचनाहरूको प्रस्ताव गरिएको सन्दर्भमा यसलाई संस्थागत व्यवस्थासम्बन्धी छुट्टै शीर्षकभित्र राख्ने ।
- (ग) नीति कार्यान्वयन गर्दा लाग्ने खर्चको अनुमान गरी कार्यान्वयनयोग्य बनाउने ।
- (घ) नीतिको भाषा तथा प्रस्तुतीको सम्पादन तथा सुधार गर्ने ।
२. श्रम तथा रोजगार मन्त्रालयबाट पेश हुन आएको बालश्रम निवारणसम्बन्धी राष्ट्रिय गुरुयोजना, २०७४(८४) मा देहायवमोजिम परिमार्जन गरी स्वीकृति प्रक्रिया अघि बढाउन उक्त मन्त्रालयमा लेखी पठाउने ।
- (क) प्रस्तावित दस्तावेजलाई “गुरुयोजना” को सट्टा “रणनीतिक योजना” को रूपमा तर्जुमा गर्ने ।
- (ख) उद्देश्य र रणनीतिका बीचमा अन्तरसम्बन्ध स्थापित गर्न तिनको पुनरावलोकन गर्ने ।
- (ग) लक्षित समूहअन्तर्गत “बालसैनिक वा प्रहरी” समावेश भएको देखिएकाले सोलाई हटाउने ।
- (घ) आवश्यक पर्ने बजेटको प्रक्षेपण गर्दा वार्षिक अनुमानका साथै मुद्रास्फितिलाई समेत आधार मान्ने ।
- (ङ) सूचकहरूको पुनरावलोकन सहित नतिजा खाकालाई परिमार्जन गर्ने ।
- (च) भाषा तथा प्रस्तुतीको सम्पादन एवम् सुधार गर्ने ।
३. नेपाल सरकार, मन्त्रिपरिषद्को मिति २०७४।०६।२ को निर्णयानुसार राष्ट्रिय योजना आयोगको सदस्य पदमा नियुक्त भई आउनुभएका डा. गोविन्दराज भट्टलाई स्वागत गरी आयोगबाट भैरहेका कार्यहरूको बारेमा जानकारी गराइयो ।
४. राष्ट्रिय योजना आयोगको सदस्यको पदबाट राजिनामा दिनुभएका माननीय सदस्य प्रा.ई. हिरेन्द्रमान प्रधानलाई उहाँले आयोगमा रहँदा पुऱ्याउनुभएको योगदानका लागि धन्यवाद दिँदै आगामी दिनको सफलताको कामनासहित विदाई व्यक्त गरियो ।

### मिति २०७४/०७/०७

१. कृषि, वन तथा स्थानीय विकास महाशाखाबाट पेश हुन आएको सार्वजनिक निजी साभेदारी केन्द्र स्थापनासम्बन्धी अवधारणापत्र (Concept Note) सम्बन्धमा उक्त केन्द्र स्थापनाका लागि संगठन तथा व्यवस्थापन सर्वेक्षणका लागि सोही महाशाखाका सहसचिवको संयोजकत्वमा अर्थ मन्त्रालय, सामान्य प्रशासन मन्त्रालय तथा सम्बन्धित सरोकारवाला निकायहरूको प्रतिनिधित्व रहनेगरी एक कार्यदल गठन गर्ने । उक्त कार्यदलले सो प्रतिवेदन कार्तिक महिना भित्रमा तयार गरी आयोगसमक्ष पेश गर्ने ।
२. उच्चस्तरीय पोषण तथा खाद्य सुरक्षा निर्देशक समितिका सदस्य तथा राष्ट्रिय पोषण तथा खाद्य सुरक्षा समन्वय समितिका संयोजक एवम् राष्ट्रिय योजना आयोगका सदस्य प्रा.डा. गीताभक्त जोशीले प्रस्तुत गर्नुभएको बहुक्षेत्रीय पोषण योजना ॥ (२०७५/७६ - २०७९/८०) सम्बन्धमा बैठकमा प्राप्त उपयुक्त सुझावहरूलाई समावेश गर्ने गरी अनुमोदन गर्ने । साथै,

वहृक्षेत्रीय पोषण योजना ॥ (२०७५/७६ - २०७९/८०) को परिमार्जित दस्तावेजलाई नेपाल सरकार, मन्त्रपरिषद्मा स्वीकृतिका लागि पेश गर्ने ।

- घ. राष्ट्रिय योजना आयोगबाट तयार गरिएको 'एकीकृत सहरी विकास मापदण्ड' लाई एकीकृत सहरी विकास कार्यान्वयनको सन्दर्भ सामग्रीको रूपमा प्रयोग गर्न छुपाई गरी स्थानीय तहलगायत सबै सरोकारवाला निकायमा पठाउने ।

### मिति २०७४/०७/०७

१. आर्थिक व्यवस्थापन महाशाखाबाट प्रस्तुत भएको मध्यमकालीन खर्च संरचना (Medium Term Expenditure Framework) तर्जुमाका लागि तयार गरिएको ढाँचा, आयोजना प्राथमिकताका आधारहरू तथा आयोजना प्राथमिकीकरणसम्बन्धी मूल्याङ्कन फारामका सम्बन्धमा बैठकमा प्राप्त सुझावहरूलाई समेत समावेश गरी परिमार्जनसहितको ढाँचामा मध्यमकालीन खर्च संरचना तर्जुमासम्बन्धी कार्य अधि बढाउने ।
२. नवनियुक्त अर्थ सचिव तथा राष्ट्रिय योजना आयोगका पदेन सदस्य श्री शंकरप्रसाद अधिकारीलाई आयोगमा स्वागत तथा उहाँको सफल कार्यकालका लागि शुभकामना प्रदान गरियो ।

### मिति २०७४/०८/०६

१. आ.व. २०७५/७६ को संघीय वार्षिक कार्यक्रमको मध्यमकालीन खर्च संरचना (Medium Term Expenditure Framework) को निर्देशक समितिको निर्णय तथा सोको तयारी सम्बन्धमा आर्थिक व्यवस्थापन महाशाखाबाट तयार गरिएको कार्ययोजना बैठकमा जानकारी गराइयो । साथै, आगामी आ.व. को संघीय वार्षिक कार्यक्रम तथा बजेट तर्जुमासम्बन्धी कार्य प्रभावकारीरूपमा अगाडी बढाउने ।
२. मध्यमकालीन खर्च संरचना (Medium Term Expenditure Framework) तयार गर्ने सन्दर्भमा लक्ष्यहरू निर्धारण गर्दा चालु योजनाको नतिजा खाका आ.व. २०७५/७६ सम्मको लागि मात्र भएको हुँदा बाँकी दुई वर्षको अवधिका लागि आवश्यक नतिजा सूचकको सम्बन्धमा हाल तयार भैरहेको दिगो विकास लक्ष्यको मध्यमकालीन लक्ष्यहरूलाई आधार मानी निर्धारण गर्ने ।
३. प्रदेश, जिल्ला तथा स्थानीय तह समेटिनेगरी केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागबाट तयार गरिएको जियो कोडिङ (Geo Coding) अनुमोदन गर्ने । यस जियो कोडिङलाई सबै तहमा कार्यान्वयनमा लैजाने व्यवस्थाका लागि केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागलाई निर्देशन दिने ।

### मिति २०७४/०९/०३

१. नेपालमा पहिलोपटक गर्न लागिएको राष्ट्रिय आर्थिक गणनाको लागि तथ्याङ्क ऐन, २०१५ को दफा ४ बमोजिम नेपाल राजपत्रमा सूचित आदेश जारी गर्न केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागबाट



- पेश हुनआएको “राष्ट्रिय आर्थिक गणना, २०७५ को आदेश” को मस्यौदालाई नेपाल सरकार, मन्त्रपरिषद्को स्वीकृतिका लागि अघि बढाउन स्वीकृति प्रदान गर्ने ।
२. नेपाललाई सन् २०२२ सम्ममा अतिकम विकसित राष्ट्रहरूको दर्जाबाट स्तरोन्नति गर्ने लक्ष्यमा हालसम्म भएका प्रगति एवम् अध्ययन प्रतिवेदनहरूका बारेमा आर्थिक व्यवस्थापन महाशाखाबाट आयोगलाई जानकारी गराइयो । साथै, परराष्ट्र मन्त्रालयसँगको सहकार्यमा स्तरोन्नतिसम्बन्धी नेपालको औपचारिक निर्णयबारे यसै साता टुंगो लगाउने ।
  ३. राष्ट्रिय योजना आयोगले अक्सफोर्ड यूनिभर्सिटीसँगको सहकार्यमा प्रदेशहरू समेतको बहुआयामिक गरिबी सूचक (Multidimensional Poverty Index) पहिचान हुनेगरी तयार गरेको “नेपाल बहुआयामिक गरिबी प्रतिवेदन, २०१८” (Nepal Multidimensional Poverty Report, 2018) का बारेमा आयोगलाई जानकारी गराइयो र उक्त प्रतिवेदनको सार्वजनिकीकरण यही पौष ५ मा गर्ने ।
  ४. आगामी राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ४१औं बैठक तयारीका सम्बन्धमा उक्त बैठक बस्नुअघिका उपसमितिहरूको बैठक अनुगमन तथा मूल्याङ्कन महाशाखाबाट तयार गरिएको कार्ययोजनाअनुसार अघि बढाउने ।
  ५. नेपाल सरकार, मन्त्रपरिषद् बाट मिति २०७४।०८।१ मा स्वीकृत “बहुक्षेत्रीय पोषण योजना दोश्रो (२०१८-२०२२)” सम्बन्धमा सम्बन्धित माननीय सदस्य प्रा.डा.गीताभक्त जोशीबाट आयोगलाई जानकारी गराइयो ।
  ६. राष्ट्रिय योजना आयोगको सचिवालयमा कार्यरत सबै कर्मचारीहरूलाई चालु आ.व. २०७४।७५ मा कार्यालय समयअघि पछि र सार्वजनिक विदाका दिनसमेत काममा खटाउनुपरेको कारण मिति २०७४।०४।१ देखि लागू हुने गरी हाजिरी रेकर्डका आधारमा कार्यालयमा उपस्थित भएको दिनका लागि अर्थ मन्त्रालयबाट निधप्रति दरमा खाजारखाना भत्ता उपलब्ध गराउने प्रस्तावलाई स्वीकृति प्रदान गर्ने ।

### मिति २०७४/०९/१८

१. राष्ट्रिय विकास स्वयंसेवक परिचालन कार्यविधि, २०७४ को दफा १५ (१) को (क) र (ख) लाई देहाय बमोजिम संशोधन गर्ने:
  - (क) राष्ट्रिय विकास स्वयंसेवक सेवामा प्राप्त आवेदनहरूलाई सम्बन्धित विषयक्षेत्रको सम्बन्धित पदका उम्मेदवारहरूले प्राप्त गरेको शैक्षिक योग्यताको प्रमाणपत्रमा उल्लेख भएको प्राप्ताङ्क प्रतिशतको योग्यताक्रमका आधारमा गरिनेछ । कुनै विशेष विषयक्षेत्र र विज्ञता भएको जनशक्ति छनौट गर्न अन्तरवार्तालागायतका अन्य विधि अवलम्बन गर्न उपयुक्त देखिएमा कार्यकारी समितिको निर्णयबाट गर्न सकिनेछ ।

२. राष्ट्रिय विकास स्वयंसेवक परिचालन कार्यविधि, २०७४ को दफा १५ (१) को (ग) लाई देहायबमोजिम संशोधन गर्ने:
  - (क) स्वयंसेवक छनौटमा समावेशी प्रावधानको अवलम्बन सामाजिक समूह, भौगोलिक क्षेत्र र अपाङ्गताका आधारमा गरिने छ। समावेशिताको भारको गणना निजामति सेवा ऐन, २०४९ को दोस्रो संशोधन २०६४ को दफा (७) को उपदफा (७) मा भएको व्यवस्थाबमोजिम गरिनेछ।
३. संघीयताको कार्यान्वयनसँगै केन्द्रीय सरकारले गरिरहेका कामहरू प्रादेशिक सरकार र स्थानीय सरकारमा स्थानान्तरण हुँदैजाने क्रममा राष्ट्रिय योजना आयोगद्वारा संचालित राष्ट्रिय स्वयंसेवक सेवा कार्यक्रमलाई कसरी संचालन गर्न आवश्यक छ भन्ने सम्बन्धमा देहायको कार्यशर्तसहित २१ दिनभित्र प्रतिवेदन पेश गर्नेगरी देहायबमोजिम कार्यदल गणन गर्ने।  
समिति

१. माननीय सदस्य डा. अरविन्दकुमार मिश्र - संयोजक
२. डा. तीर्थराज ढकाल, सहसचिव - सदस्य
३. श्री विजुकुमार श्रेष्ठ, सहसचिव - सदस्य
४. श्री शिवराज चौलागाई, निर्देशक -सदस्य सचिव

### समितिको कार्यशर्त

- क) विद्यमान राष्ट्रिय स्वयंसेवक सेवा कार्यक्रमलाई संघीय शासकीय व्यवस्थाअनुरूप प्रभावकारी रूपमा संचालन गर्न आवश्यक पर्ने सांगठनिक स्वरूप, सञ्चालन विधि र काम, कर्तव्य तथा जिम्मेवारीहरू,
- ख) राष्ट्रिय स्वयंसेवक सेवा कार्यक्रमका सम्बन्धमा केन्द्र, प्रदेश तथा स्थानीय तहबाट गर्नुपर्ने कार्य, विषयक्षेत्र र ढाँचा,
- ग) विभिन्न भौगोलिक तथा विषयक्षेत्रमा आवश्यक जनशक्ति र विज्ञताको खाँचो पूरा गर्नसक्ने नयाँ किसिमका स्वयंसेवक सेवा कार्यक्रमहरू (New Volunteer Schemes) तथा तिनको परिचालन विधि एवम् स्वरूप,
- घ) राष्ट्रिय विकास स्वयंसेवा कार्यक्रमलाई सरकारका अन्य तहमा स्थानान्तरण गर्न आवश्यक देखिएका विषयक्षेत्र, विशेषज्ञता एवम् जनशक्ति परिचालन विधि।
- ङ) राष्ट्रिय विकास स्वयंसेवा कार्यक्रमलाई अभि प्रभावकारी ढंगमा सञ्चालन गर्न कार्यदलले आवश्यक ठानेका अन्य विषयहरू।

### मिति २०७४/०९/३०

१. संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मन्त्रालयको तर्फबाट दोश्रो अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल (SIA) सम्बन्धी प्रस्तुतीकरण र छलफल भयो। आयोगसमक्ष एक हप्तापछि निर्माण ढाँचासम्बन्धी

- प्राविधिक प्रस्तुतीकरण (Technical Presentation on Modality) गर्ने तथा उक्त प्रस्तुतीकरणमा विषयक्षेत्रका विज्ञहरूलाई समेत आमन्त्रण गर्ने ।
२. राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ४१औं बैठकको निर्णय कार्यान्वयनका लागि अनुगमन तथा मूल्याङ्कन महाशाखाबाट तयार गरिएको सम्बन्धित क्षेत्र हेर्नुहुने माननीय सदस्यज्यूको नेतृत्वमा जिम्मेवार महाशाखासमेत उल्लेख भएको कार्ययोजना कार्यान्वयनमा लैजाने ।
  ३. स्थानीय तहमा सेवा प्रवाहसम्बन्धी व्यवस्था, २०७४ को बुँदा नं. १७ को तथ्याङ्क कार्यालयसम्बन्धी व्यवस्थाका सम्बन्धमा राष्ट्रिय तथ्याङ्कीय कार्यप्रणालीका लागि हाल जिल्लास्तरमा रहेका तथ्याङ्क कार्यालयहरू केन्द्रीय तहकै अङ्कका रूपमा रहनुपर्ने भएको हुँदा सोहीअनुसार व्यवस्था गर्न केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागले कार्य प्रकृया अघि बढाउने ।
  ४. नेपाल भौगर्भिक समाज (Nepal Geological Society) ले आयोजना गरेको ११औं एशिया क्षेत्रीय सम्मेलन (11th Asian Regional Conference) मा राष्ट्रिय योजना आयोगले सहआयोजकको रूपमा सहभागिता जनाउने र उक्त सम्मेलन आयोजनाको क्रममा हुने खर्च मध्ये Abstract Volume तथा Conference Proceeding प्रकाशन र एक दिनको सम्मेलन हलको भाडा गरी जम्मा रु. ९,८१,७२४/- सचिवालयको विविध कार्यक्रम खर्च शिर्षकबाट व्यहोर्ने ।
  ५. मध्यमकालीन खर्च संरचना तयारी तथा आ.व. २०७५/०७६ को वार्षिक बजेट तयारीका सिलसिलामा यस पूर्व स्वीकृत कार्यतालिका अनुसार कार्यप्रकृया यथाशीघ्र अघि बढाउन महाशाखाहरूलाई निर्देशन दिने ।

### मिति २०७४/१०/०७

१. संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्ययन मन्त्रालयबाट दोस्रो अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल (Second International Airport-SIA) को निर्माण कार्य अगाडी बढाउने सम्बन्धमा माननीय मन्त्रीज्यूको निर्णयानुसार गठित SIA Modality सिफारिस समितिले तयार गरेको प्रतिवेदनका आधारमा Engineering Procurement, Construction and Financing -with or without GoN Financing) अन्तर्गत निर्माण तथा सञ्चालनका लागि सार्वजनिक निजी साभेदारीको Operation-PPP मोडालिटी चयन गर्न नेपाल सरकारलाई सुझाव दिएको सन्दर्भमा मन्त्रालयबाट आयोगको रायरसुझाव उपलब्ध गराइदिन अनुरोध भई आएको विषयमा देहायअनुसारको सुझाव पठाउने ।
- (क) राष्ट्रिय गौरवका आयोजनाहरू समयमै शुरु गरी तोकिएको लागत र समयमा नै सम्पन्न गराउने सम्बन्धमा यस आयोगको सदैव ध्यानाकृष्ट भइरहेको छ । प्रस्तुत आयोजनाको सम्बन्धमा समेत विस्तृत सम्भाव्यता अध्ययन गर्ने कोरियाली कम्पनीसँग भएको सम्झौताअनुरूप नेपाल सरकारले बेहोर्नुपर्ने दायित्व बढ्दै जाने भएकोले राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ३९ औं र ४०औं बैठकको निर्णयअनुसार संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्ययन मन्त्रालयले यस विषयलाई यथाशीघ्र टुङ्ग्याउनु पर्ने ।

- (ख) यस आयोगले मिति २०६४।०९।८ मा नै आयोजना अघि बढाउन निर्णय गरी पठाइसकेको व्यहोरा अवगत नै छ। यस आयोगले सुभाबसम्म दिने प्रयोजनका लागि ताहाँबाट विमानस्थलको निर्माणका लागि प्रस्तावित विकल्पमध्ये नेपाल सरकारको समेत लगानी हुनेगरी प्रतिस्पर्धात्मक विधि अपनाई Engineering Procurement and Construction (EPC) मोडलमा अघि बढाउन उपयुक्त हुने ।
- (ग) विमानस्थल निर्माण भएपछि संचालनका लागि प्रतिस्पर्धात्मक आधारमा विश्वसनीय अन्तर्राष्ट्रिय तथा स्वदेशी निजी लगानीसहितको सार्वजनिक निजी साभेदारी (PPP) मोडल अपनाउन उपयुक्त हुने ।

### मिति २०७४/११/०६

१. माननीय उपाध्यक्ष डा स्वर्णिम वाग्लेले आयोगबाट विगत ६ महिनामा भए गरेका कार्यहरूको बारेमा संक्षिप्त प्रगति प्रस्तुत गर्नुभयो ।
२. राष्ट्रिय योजना आयोगको मिति २०७५/०५/२७को निर्णयबमोजिम माननीय उपाध्यक्ष डा स्वर्णिम वाग्लेको नेतृत्वमा मस्यौदा भएको Envisioning Nepal, 2030: Contributions to a Policy Framework आयोगमा प्रस्तुत गरियो ।
३. संघीय संरचनामा राष्ट्रिय विकास स्वयमसेवक सेवासम्बन्धी प्रतिवेदन आयोगमा प्रस्तुत गरियो ।
४. Universilizing Clean Energy in Nepal: A Plan for Sustainable Distributed Generation and Grid Access for All (SUDIGGAA) by 2022 को मस्यौदा आयोगमा पेश गरियो । थप राय सुभाब समेटी प्रकाशनको प्रक्रियामा लैजाने निर्णय गरियो ।
५. Nepal's Sustainable Development Goals: Status and Roadmap, 2016-2030 लाई सार्वजनिक गर्ने निर्णय गरियो ।

### २०७५/०१/२० को निर्णय

१. राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ४२ औं बैठकमा छलफल तथा निर्णयका लागि प्रस्तुत गरिने विषयबस्तुलाई अन्तिम रूप दिने ।

### २०७५/०१/२१ को निर्णय

१. राष्ट्रिय योजना आयोग (गठन तथा कार्य सञ्चालन) आदेश, २०७४ बमोजिमको कार्य सम्पादन गर्नकालागि आयोगको भावी कार्यदिशा र संगठन तथा दरवन्दीको पुनःसंरचनाका सम्बन्धमा प्रस्तुत राष्ट्रिय योजना आयोगको संगठन तथा व्यवस्थापन सर्वेक्षण प्रतिवेदन, २०७५ लाई बैठकमा प्राप्त सुभाबहरूसहित अनुमोदन गर्ने ।

### २०७५/०१/२५ को निर्णय

१. राष्ट्रिय योजना आयोग (गठन तथा कार्य सञ्चालन) आदेश, २०७४ बमोजिमको कार्य सम्पादन गर्नकालागि आयोगको भावी कार्यदिशा र संगठन तथा दरवन्दीको पुनःसंरचनाका सम्बन्धमा प्रस्तुत राष्ट्रिय योजना आयोगको संगठन तथा व्यवस्थापन सर्वेक्षण प्रतिवेदन, २०७५ लाई बैठकमा प्राप्त सुभावहरूसहित अनुमोदन गर्ने । साथै, उक्त प्रतिवेदन स्वीकृतिकालागि प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय र संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयमा पठाउने ।

### २०७५/०२/०७ को निर्णय

१. अन्तरसरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ को दफा २२ को उपदफा (१) अनुसार नेपाल सरकारले राजस्व र व्ययको अनुमानसाथ सोही ऐनको दफा १७ बमोजिमको मध्यमकालीन खर्च संरचना पनि संसदमा प्रस्तुत गर्नुपर्ने व्यवस्था रहेकोले संलग्न ढाँचाबमोजिम मध्यमकालीन खर्च संरचना तयार गर्ने ।
२. आयोगको तर्फबाट सालबसाली रूपमा तयार गरी संसदमा प्रस्तुत हुँदैआएको वार्षिक विकास कार्यक्रम आर्थिक वर्ष २०७५/७६ को लागि पनि तयार गरी प्रस्तुत गर्ने ।
३. आयोगले वार्षिक कार्यक्रम/आयोजनालाई P1, P2 र P3 गरी तीन किसिमबाट प्राथमिकीकरण गर्दै आएकोमा आगामी आर्थिक वर्षको लागि P1 र P2 गरी दुई किसिमबाट मात्र वर्गीकरण गर्ने । यसको लागि पछि आयोगले निर्धारण गरेको योग्यतानुसार कार्यक्रमरआयोजनाको वर्गीकरण हुनेगरी हाललाई सबै P3 का कार्यक्रम/आयोजनालाई P2 मा समावेश गर्ने ।
४. आर्थिक वर्ष २०७६/७७ र २०७७/७८ कोलागि नतिजा सूचक र लक्ष्य निर्धारण गर्दा चौधौँ योजना, दिगो विकास लक्ष्यहरूको मार्गचित्र (२०१६-२०३०) र विषय क्षेत्रगत गरुयोजना, रणनीतिक योजना वा कार्यक्रमहरूमा पहिले नै निर्दिष्ट गरिएका लक्ष्यहरूलाई आधार मानेर मध्यमकालीन खर्च संरचना र वार्षिक विकास कार्यक्रम तयार गर्ने ।
५. आगामी आर्थिक वर्षको बजेट बक्तव्यमा समावेश गर्नुपर्ने आर्थिक, सामाजिक, पूर्वाधार विकास एवम् समसामयिक विषयबस्तुका बारेमा छलफल गरियो ।

### २०७५/०२/२० को निर्णय

१. आयोगको नियमित बैठक प्रत्येक सोमबार विहान ११:०० बजे बस्ने ।
२. माननीय उपाध्यक्ष तथा सदस्यहरूबाट आ-आफ्नो जिम्मेवारी तोकिएको विषयक्षेत्रसँग सम्बन्धित निकायहरूबाट त्रिफिड लिइरहनुभएको विषय बैठकमा जानकारी प्राप्त भयो । यस कार्यलाई सम्बद्ध निकायहरूबाट लिनेगरी निरन्तरता दिने ।
३. राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ४२ औँ बैठकमा छलफल तथा निर्णयका लागि प्रस्तुत गरिने विषयबस्तुलाई अन्तिम रूप दिइयो ।

## २०७५/०३/०४ को निर्णय

१. राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिका अध्यक्ष सम्माननीय प्रधानमन्त्रीज्यूबाट समितिको मिति २०७५ जेठ २१ गते बसेको ४२औं बैठकलाई निर्देशन दिने क्रममा विषयगत मन्त्रालयको आफ्नो कार्यक्षेत्रसम्बन्धी विषयहरूमा प्रोफाइल गर्ने र मन्त्रालयसँग सम्बन्धित क्षेत्रहरूमा नीतिगत, प्रक्रियागत एवम् विहंगम प्रकृतिका समस्या तथा सवालहरू भए सो पहिचान गरी समितिमा पेश गर्न निर्देशन दिनुभएको र केही माननीय मन्त्रीज्यूहरूले समेत त्यस्तो आशय प्रकट गर्नुभएको हुँदा तदनुरूप प्रोफाइल तयार गर्न र त्यस्ता समस्याहरूको सुची तयार गर्न लगाई २०७५ श्रावण समान्तभित्र आयोगलाई उपलब्ध गराउन सम्बद्ध सबै मन्त्रालयका सचिवहरूलाई पत्राचार गर्ने र सोको जानकारी माननीय मन्त्रीज्यूहरूलाई दिने ।
२. प्रदेश र स्थानीय तहलाई प्रदान गरिने समपूरक र विशेष अनुदानसम्बन्धी कार्यविधि सम्बन्धमा बैठकमा प्रस्तुती एवम् छलफल भयो । सो कार्यविधिमा बैठकमा प्राप्त सुभावहरूलाई समावेश गरी आयोगको प्रतिक्रिया पठाउने ।
३. स्थानीय तहको आवधिक योजनाको लागि मस्यौदा गरिएको दिग्दर्शन सम्बन्धमा बैठकमा प्रस्तुती एवम् छलफल भयो । सो दिग्दर्शनका सम्बन्धमा संघीय संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयलाई नमूना परीक्षण गरी प्रतिक्रिया उपलब्ध गराउन आयोगबाट पहिले नै अनुरोध गरिएकोमा हालसम्म प्राप्त नभएकाले पठाइदिन ताकेता गर्ने । साथै, उक्त दिग्दर्शनलाई थप परिमार्जन र प्रदेश तहको योजना तर्जुमासम्बन्धी मार्गदर्शन र सोसँग अन्तरसम्बन्ध कायम गर्न माननीय कृष्णप्रसाद ओली, माननीय श्री मीनबहादुर शाही र माननीय डा. रामकुमार फुयाँलसमेत पदाधिकारीहरूको समूह गठन गर्ने । यस्तो परिमार्जन १५ दिनभित्र टुङ्ग्याई आयोगमा पेश गर्ने ।
४. संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयबाट पेश हुन आएको ग्रामीण सञ्चाल सुधार आयोग (Rural Connectivity Improvement Project) लाई राष्ट्रिय प्राथमिकता प्राप्त कार्यक्रमको रूपमा सिफारिस गर्ने ।
५. केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागबाट प्रस्तुत भएको जिल्लास्थित तथ्याङ्क कार्यालयहरूको पुनर्संरचनासम्बन्धी प्रस्ताव उपयुक्त देखिएकाले स्वीकृतिका लागि प्रक्रिया अधि बढाउने ।
६. आयोगको आगामी आ.व. को वार्षिक कार्यक्रम कार्यान्वयन कार्ययोजना सम्बन्धमा थप छलफल भयो ।

## २०७५/०३/११ को निर्णय

१. आगामी आ.व. को नीति तथा कार्यक्रम र वार्षिक बजेटमा उल्लिखित राष्ट्रिय योजना आयोगसँग सम्बन्धित नीति तथा कार्यक्रमको कार्यान्वयन कार्ययोजना परिमार्जनसहित स्वीकृत गर्ने ।
२. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रपरिषद्को कार्यालयबाट मिति २०७५/०३/०४ मा गरिबी निवारण कोषसम्बन्धी आयोगबाट भएको अध्ययनको निश्कर्ष र आयोगको धारणा उपलब्ध गराउन

लेखी आएकोमा यसम्बन्धी आयोगबाट भएको मूल्याङ्कनको प्रतिवेदन, सोको सारांश र देहायबमोजिम सुझाव पठाउने,

- क) गरिवी निवारण कोषका कार्यक्रमहरूले गरिव जनताका हजारौं सामुदायिक संगठनहरू सृजना गरेको, धेरै संख्यामा स-साना पूर्वाधारहरू निर्माण गरेको र घुम्ती कोषबाट परिचालन गरेको रकमसहित करिब १९ अर्ब समूहहरूसँग रहेकाले यी सबै सामाजिक तथा आर्थिक पूर्वाधारहरूलाई जोगाउन जरुरी देखिएको ।
  - ख) नयाँ संविधानअनुरूप स्थानीय तहको निर्वाचन सम्पन्न भई विकास निर्माणका कार्यहरू स्थानीय तहको नेतृत्वमा अधि बढिरहेको सन्दर्भमा यस कोषका कार्यक्रमहरूलाई स्थानीय तहको समन्वयमा वा स्थानीय तहलाई हस्तान्तरण गरी सञ्चालन गर्ने सम्बन्धमा नीतिगत निर्णय लिनुपर्ने ।
  - ग) कोषको कार्यक्रममार्फत निर्माण समूहहरूलाई उद्यमशीलता विकासका निमित्त क्षमता विकास र वित्तीय पहुँचको अवसर सृजना गरी दिगो रोजगारी सृजना तथा आय आर्जनमा केन्द्रित गराउन सहयोग पुऱ्याउनुपर्ने । साथै, प्रकोप तथा दुर्घटनाका समयमा समेत ग्रहणशीलता (Resilience) को क्षमता विकास हुनेगरी कार्यक्रम सञ्चालन गरिनुपर्ने ।
  - घ) कोषको कार्य सञ्चालन प्रक्रिया र सांगठनिक संरचना परिवर्तन गरी छरितो संगठनका रूपमा पुनर्संरचना गर्नुपर्ने । यसका लागि आवश्यकतानुसार कोषको ऐन संशोधन गरिनुपर्ने ।
  - ङ) राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिको ४२औं बैठकको निर्णयबमोजिम वैदेशिक सहयोग निरन्तर नभए पछि हालसम्म गरिवी निवारण कोषले सृजना गरेको सम्पत्तिको संरक्षण सामुदायिक संस्था वा व्यक्तिहरूसँग रहेको घुम्ती कोष रकमको सदुपयोग, सामुदायिकस्तरमा रहेको विभिन्न समूहहरूको एकीकरण गरी एउटा व्यक्ति धेरै समूहमा रहने स्थिति अन्त्य, स्थानीय तहहरूको यस्तो कार्यक्रम सञ्चालनमा रहने भूमिका, सामुदायिक संस्थामा बचत रकमको परिचालनमार्फत सिप तथा उद्यमशीलताको विकास र आयआर्जन तथा रोजगारका अवसर सृजना एवम् गरिवी निवारण कोषको पुनर्संरचना सम्बन्धमा तीन महिनाभित्र एकीकृत कार्यक्रम प्रस्ताव तयार गरी अधि बढाउन उपयुक्त हुने ।
३. आगामी आ.व. को नीति तथा कार्यक्रममा समावेश भएको राष्ट्रिय तथ्यगत विवरण (National Resource Profile) तयार गर्नेसम्बन्धी प्रारम्भिक अवधारणापत्र सम्बन्धमा छलफल भयो । उक्त राष्ट्रिय तथ्यगत विवरण तयारी सम्बन्धमा पेश भएको अवधारणापत्रलाई छलफलमा प्राप्त सुझावहरूका आधारमा परिमार्जन गर्ने । उक्त अवधारणापत्र राष्ट्रिय तथ्याङ्क परिषद्को बैठकमा पेश गरी आएको प्रतिक्रिया, सुझाव र निश्कर्षसहित पुनः पेश गर्ने ।

### २०७५/०३/१८ को निर्णय

१. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयबाट तयार गरिएको “तत्काल समस्या समाधानसम्बन्धी नियमावली, २०७५” को मस्यौदाका सम्बन्धमा आयोगको राय र प्रतिक्रिया उपलब्ध गराई दिन प्राप्त हुन आएकोमा आयोगको धारणा देहायबमोजिम रहेको पठाउने,

- क) आर्थिक, सामाजिक, मानवीय एवम् पूर्वाधार विकास तथा अन्तरसम्बन्धित विषयवस्तुहरू लगायतको क्षेत्रमा अनुसन्धान तथा विश्लेषण गरिएका सूचनाका आधारमा नेपाल सरकारलाई सल्लाह र सहयोग प्रदान गर्ने एक विशिष्टीकृत निकायका रूपमा यस आयोगको गठन भएको र विगतदेखिका आयोगको नीतिगत, कानुनी, संस्थागत एवम् कार्यगत व्यवस्थाहरूलाई मध्यनजर गर्दै यसलाई अझ बढी सुदृढीकरण र प्रभावकारी बनाउँदै लैजान प्रस्तावित नियमावलीमा राष्ट्रिय योजना आयोगसँगको सम्बन्धका बारेमा स्पष्ट व्यवस्था गर्न तथा यस अन्तर्गतका संयन्त्रहरूलाई नै अधिकतम् उपयोग गर्ने गरी आवश्यक व्यवस्था गर्न वाञ्छनीय हुने ।
- ख) राष्ट्रिय योजना आयोगमा रहेको अनुगमन तथा मूल्याङ्कनसम्बन्धी संस्थागत एवम् कार्यगत संयन्त्रहरू तथा केन्द्रीय स्तरका निकायहरूमा रहेको संयन्त्रलाई नै सुदृढीकरण र प्रभावकारी बनाउँदै सोही संयन्त्रहरूमार्फत प्रस्तावित तत्काल समस्या समाधानका लागि कार्यगत व्यवस्था गर्न उपयुक्त हुने ।
- ग) प्रस्तुत नियमावलीमा उल्लिखित व्यवस्थाहरूले विद्यमान सूचना अभिलेखीकरण तथा सम्प्रेषणको प्रकृत्यामा दोहोरोपना नआउने र प्रकृत्यागत भन्फट नहुने गरी भैरहेकै संयन्त्रहरूलाई उपयोग गर्ने गरी आवश्यक व्यवस्था गर्ने।
- घ) नियम २ (च) 'तत्काल समस्या समाधान गर्नुपर्ने विषय' अन्तर्गत आयोगका अध्यक्ष एवम् सम्माननीय प्रधानमन्त्रीज्यूको अध्यक्षतामा बस्ने राष्ट्रिय विकास समस्या समाधान समितिले निर्देशन गरेका विषयहरूसमेत उल्लेख गर्नु उपयुक्त हुने।
- ङ) नियम ३ मा उल्लिखित उच्चस्तरीय समितिको संरचनामा आयोगकाको प्रतिनिधित्व समेत रहँदा समन्वय र सहजीकरणमा प्रभावकारिता आउने भएकाले माननीय उपाध्यक्षसमेत रहने व्यवस्था गर्ने ।
- च) परिच्छेद - ३, 'कार्यगत व्यवस्था' अन्तर्गतको 'मन्त्रालयस्तरीय समस्या समाधान निर्देशक समिति' कोसट्टा मन्त्री वा सवैधानिक निकायका प्रमुखको अध्यक्षतामा रहेको विद्यमान मन्त्रालयस्तरीय विकास समस्या समाधान समितिलाई नै क्रियाशील गराउने । एउटै कार्यका लागि दोहोरोपना हुनेगरी थप संयन्त्र खडा नगर्ने । यदि राख्नै पर्ने भएमा उक्त समितिमा आयोगका सम्बन्धित केन्द्रीय निकाय हेर्ने माननीय सदस्य समेत रहने व्यवस्था गर्ने ।
- छ) केन्द्रीय निकायहरूमा रहने प्रस्तावित तत्काल समस्या समाधान कक्षको जिम्मेवारी तथा कार्यलाई विद्यमान योजना, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन महाशाखा वा उपयुक्त महाशाखाभित्र भैरहेकै संरचनामार्फत गराउने व्यवस्था गर्दा प्रस्तावित कार्यको संस्थागत विकास र प्रभावकारीता अभिवृद्धि हुने देखिन्छ ।
- ज) नियम ६ मा 'उच्चस्तरीय समिति आफैँले पहिचान गरेका विषयहरू' थप गर्नुपर्ने ।
- झ) नियम १२ (३) मा भएको समान तहका पदाधिकारीबीच निर्देशन दिने व्यहोरा पुनरावलोकन गर्ने ।



- त्र) भाषा संयोजन एवम् शुद्धाशुद्धि गर्नुपर्ने ।
२. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयबाट कर्णाली विकास आयोग विघटन गर्ने सम्बन्धमा आयोगको राय उपलब्ध गराई दिन प्राप्त हुन आएकोमा नेपालको संविधान जारी भएसँगै मुलुकमा संघीय शासन व्यवस्थाअनुरूप संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका सरकारहरू गठन भई संविधान प्रदत्त अधिकार र जिम्मेवारी सम्पादनका लागि क्रियाशील भैसकेको अवस्था तथा कर्णाली प्रदेश सरकारको आर्थिक वर्ष २०७५/०७६ को नीति तथा कार्यक्रममा प्रदेश नीति तथा योजना आयोग गठन गर्ने विषय उल्लेख भैसकेको परिप्रेक्ष्यमा कर्णाली विकास आयोगलाई निरन्तरता दिन सान्दर्भिक नदेखिएको ।
३. चौधौं योजनाको मध्यावधि समीक्षा तथा दीर्घकालीन सोचसहितको पन्ध्रौं योजना तर्जुमासम्बन्धी कार्यहरूका लागि आर्थिक व्यवस्थापन महाशाखाले सबै महाशाखा तथा केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग समेतको समन्वयमा अवधारणापत्र तयार गरी आगामी बैठकमा पेश गर्ने ।

### २०७५/०३/२६ को निर्णय

१. आर्थिक व्यवस्थापन महाशाखाबाट प्रस्तुत पन्ध्रौं योजना तयारीसम्बन्धी कार्ययोजनाउपर छलफल भयो । उक्त कार्ययोजनालाई बैठकमा प्राप्त सुझावहरूसमेत समेट्नेगरी स्वीकृत गर्ने ।
२. राष्ट्रिय योजना आयोग र प्रदेश सरकारका योजनासँग आवद्ध मन्त्रालय तथा योजना संगठनहरूको सहभागिता रहनेगरी मिति २०७५/०४/२० गते काठमाडौंमा राष्ट्रियस्तरको गोष्ठी सञ्चालन गर्ने । सो सम्बन्धमा पूर्वाधार तथा उत्पादन महाशाखाबाट प्रस्तुत अवधारणापत्र स्वीकृत गर्ने ।
३. परियोजना कार्यसम्पादन सूचना प्रणाली सम्बन्धमा अनुगमन तथा मूल्याङ्कन महाशाखाबाट प्रस्तुती भयो । यस प्रणालीलाई अझ बढी प्रभावकारी बनाउँदै कार्यान्वयन तहमा विस्तार गर्ने ।
४. संघीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयबाट माग भई आएको ब.उ.शी.नं. ३६५८१० 'ग्रामीण पहुँच सुधार कार्यक्रम' लाई राष्ट्रिय प्राथमिकताप्राप्त कार्यक्रमको रूपमा सिफारिस गर्ने ।







नेपाल सरकार

राष्ट्रिय योजना आयोग

सिंहदरवार, काठमाडौं